卐 श्री श्री भूतेश्वर मंदिर 卐

शिव - स्तुति

(पंचम पुष्प)

२००२

संग्रहकर्त्ता व प्राप्ति स्थान

" पुजारी "

बाबा भूतनाथ धाम

नीमतल्ला, कलकत्ता

मूल्य : सप्रेम पाठ

❖ शिव-स्तुति ❖

223106

॥ सर्व विघ्न - विनाशाय सर्व कल्याणहेतवे,
पार्वती प्रिय पुत्राय गणेशाय नमो नमः ॥

श्री गणेशजी

"शिव स्तुति" बाबा भूतनाथ धाम, कोलकाता

॥ जय बाबा की ॥

॥ जय बाबा भूतनाथ ॥

निवेदन

भक्तगण,

आज के इस युग में इन्सान अपने भगवान को, अपनी पुरानी संस्कृति को भूलकर गहरे पतन की ओर जा रहा है। जबकि इस युग जिसे कलयुग कहा जा रहा है, इसमें सुख-शान्ति और मोक्ष का एकमात्र साधन है, प्रभु का चिन्तन, आराधना करना। इसलिए हमें अपना लोक परलोक सुधारने के लिए हरि गुणगान करना चाहिए इससे मोक्ष की प्राप्ति होती है, हरि गुणगान करने के कई प्रकार हैं, इनमें सबसे सरल उपाय है भजन-कीर्तन । आपस में सभी भाइयों और बहनों को मिलकर प्रभु का भजन-कीर्तन करना चाहिए जिससे हमारा लोक-परलोक दोनों सुधर जायें। हमनें इस पुस्तक में इसी प्रकार के भजन-कीर्तन एवं भगवान के पूजन के विधि-विधान दिये हैं।

आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि यह पुस्तक जिस भक्त के हाथ में जायेगी वह उसका पूर्ण रूप से पठन-पाठन करेंगे एवं धार्मिक भावना जागृत करेंगे।

इस पुस्तक में किसी भी प्रकार की भूल या त्रुटी रह गई हो तो उसके लिए हम क्षमा चाहते हैं, तथा आपके अमूल्य सुझाव का स्वागत करते हैं।

धन्यवाद,

निवेदक
-पुजारी

॥ बम् - बम् ॥

:: बाबा भूतनाथ धाम ::

भगवान शिव सनातन धर्म के परम अराध्य देवता हैं। वेद और वैदिक क्रियाओं के संरक्षक भगवान शिव ही हैं। देवाधिदेव भगवान शंकर भूतभावन है। वे भाव से ही रीझते हैं, भोग से नहीं। सांसारिक पदार्थ उन्हें रिझाने में असमर्थ हैं। समुद्र मंथन के समय हलाहल (विष) की उत्पति से सारा विश्व भयभीत हो उठा भगवान शिव ने देवता व दानवों के त्रसित भाव को देख कर गरलपान कर लिया उन्हें भयमुक्त किया। इस पर वे नीलकण्ठ भगवान के रुप में पुज्य हुए।

भगवान शिव के द्वादश ज्योतिलिंग की स्थापना भारत के विभिन्न स्थानों में की गई है। वे सिद्ध स्थल है जैसे केदारनाथ, विश्वनाथ, रामेश्वरम, वैद्यनाथ, सोमनाथ, महाकाल इत्यादि ठीक उसी तरह कलकत्ता में गंगा किनारे स्थित भगवान आशुतोष (शिव) के उस मंदिर को जो भूतनाथ धाम कहलाता है। यह मंदिर कलकत्ता के नीमतल्ला घाट पर स्थित है।

भूतेश्वर (भूतनाथ) मंदिर गंगा (हुगली) के तट पर स्थित है। बाबा भूतनाथ के शिवलिंग को बरसों पहले बाबा श्मशानेश्वर के नाम से जाना जाता था। २०० वर्ष पूर्व यहाँ चारों और महाश्मशान था। चारों तरफ चिताए जलती रहती थी और बीचों बीच था बाबा भूतनाथ का यह शिवलिंग। उस वक्त यहां कोइ मंदिर या इमारत नहीं थी, चारों तरफ यहां मरघट का सन्नाटा ही विराजता था। मंदिर का नाम भूतनाथ पड़ने के बारे में कहा जाता है, कि यहां मंदिर निर्माण के पूर्व श्मशान घाट था, ऐसी मान्यता है कि श्माशान में भूतों का निवास होता है। भगवान शिव के भक्तों में भूत प्रेत भी होते हैं, तो श्मशान में शिव

लिंग होने के कारण इन्हें भूतों के नाथ, भूतनाथ के नाम से पुकारा जाने लगा है। इस शिवलिंग के साथ मन्दिर में गणेश, पार्वती, हनुमान, महाकाल भैरव व नंदीश्वर विराजमान है। इस मंदिर को एक सिद्ध क्षेत्र के रुप में जाना जाता है। यहाँ स्थापित शिवलिंग को "कामना लिंग" भी कहा जाता है, इस शिवलिंग के बारे में ख्यात है कि सच्चे मन से यहाँ आकर की गई कामना अवश्य ही पूर्ण होती है। सुबह चार बजे मंगला आरती होती है, और उसी समय मन्दिर का मुख्य द्वार खोल दिया जाता है। यहाँ प्रात: कालीन आरती एवं संध्या कालीन आरती में श्मशान की जलती हुई चित्ता से अग्रि लेकर बाबा की आरती की जाती है। यहाँ आने पर मनुष्य को अपने जीवन की सत्यता का बोध होता है। एक तरफ जलते हुए शव दिखाई देते हैं तथा दूसरी तरफ शिव का अलौकिक धाम है जहाँ प्रतिदिन बाबा के दर्शनार्थ देश-विदेश से हजारों भक्तगण आते हैं। ऐसी मान्यता है कि बाबा धाम में जो एक बार आता है, वह बार-बार आना चाहता है।

भगवान भूतेश्वर की मूर्ति सोने चांदी के कलेवर से युक्त है। नित्य हजारों नर-नारी परम पावनी (भागीरथी) गंगा में स्थान करके उसका पवित्र जल बाबा भूतनाथ को अर्पण करते हैं। सोमवार को मंदिर में शिवभक्तों का मेला लग जाता है। हजारों लोग पंक्तिबद्ध घंटो खड़े रहकर बाबा के दर्शन तथा पूजन करके अपने को धन्य मानते हैं। यदि कोई भक्त सच्चे मन से भूतनाथ के मन्दिर में अरदास लेकर जाता है तो निश्चय ही उसकी मनोकामनाएं पुरी होती है।

बाबा भूतनाथ की जय

नाथो के नाथ भोल नाथ देवों के देव महादेव

शिव हरे कष्ट हरे॥

विषय सूची

क्रमांक	विवरण	पृष्ठ संख्या
१.	श्री गणेश वन्दना	१
२.	परिवार प्रमुख भगवान शिव	२ - ४
३.	सत्यम, शिवम, सुन्दरम	५ - ७
४.	शिवपूजन का प्रारम्भ तथा महत्व	८ - १५
५.	महादेव नाम की महिमा	१६
६.	द्वादश ज्योतिर्लिंग	१६
७.	शिवपूजन की मुख्य बातें	१७ - १८
८.	शिव निर्माल्य	१९ - २०
९.	शिवपूजन विधि	२१ - २३
१०.	काँवड़ चढ़ाने का वैज्ञानिक विश्लेषण	२४ - २५
११.	शिव महिम्नः स्तोत्र की महिमा	२६
१२.	शिव महिम्नः स्तोत्रम्	२७ - ३४
१३.	शिव तांडव स्तोत्रम्	३५ - ३७
१४.	शिवमानस पूजा स्तोत्रम्	३८
१५.	शिवाष्टकम् (नमामी शमीशान)	३९ - ४०
१६.	शिवाष्टकम् (प्रभु प्राणनाथं विभुं)	४१
१७.	शिवाष्टकम् (जय शिवशंकर, जय गंगाधर)	४२ - ४३
१८.	शिवरामाष्टकम्	४४ - ४५
१९.	शंकराष्टकम्	४६ - ४७
२०.	शिव पंचाक्षर स्तोत्र	४८
२१.	पुष्पांजली	४८
२२.	श्री षडक्षर स्तोत्रम	४९
२१.	लिंगाष्टक स्तोत्रम्	५० - ५१
२२.	भूतपत्यष्टक स्तोत्रम्	५२

फोन नं. - 223106

क्रमांक	विवरण	पृष्ठ संख्या
२३.	विल्व स्तोत्रम्	५३
२४.	शिव कवचम्	५४ - ५६
२५.	गणेशाम्बिका पूजनम्	५७
२६.	अभिषेक	५८
२७.	शिवोपासना में रूद्राक्ष का महत्त्व	५९
२८.	रुद्राक्षकी उत्पत्ति	६० - ६४
२९.	रूद्राक्ष	६५ - ६६
३०.	आत्म चिंतन, शिव स्तुति	६७
३१.	गणेश स्तोत्रम्	६८
३२.	अन्नपूर्णा स्तोत्रम्	६९ - ७०
३३.	अपराजिता स्तोत्रम्	७१ - ७३
३४.	महाकाली स्तोत्रम्	७४
३५.	विष्णु सतनाम स्तोत्रम्	७५ - ७६
३६.	नवग्रह स्तोत्रम्	७७
३७.	त्रिपुर सुन्दरी स्तोत्रम्	७८ - ७९
३८.	रामरक्षा स्तोत्रम्	८० - ८८
३९.	आदित्यहृदय स्तोत्रम्	८९ - ९६
४०.	गायत्री मन्त्र	९७
४१.	महामृत्युंजय एवम् अन्य मन्त्र	९८
४२.	सूर्याष्टकम्	९९
४३.	चन्द्रशेखराष्टकम्	१००
४४.	महालक्ष्म्यष्टकम्	१०१
४५.	शीतलाष्टकम्	१०२
४६.	दुर्गाष्टकम्	१०३
४७.	नौ देवियाँ, दस महाविद्या, तीन महा शक्तियाँ	१०४
४८.	दुर्गाजी के १०८ नाम	१०५ - १०६

क्रमांक	विवरण	पृष्ठ संख्या
	—: चालीसा :—	
४९.	गणेश चालीसा	१०७ - १०८
५०.	शिव चालीसा	१०९ - ११०
५१.	पार्वती चालीसा	१११ - ११२
५२.	दुर्गा चालीसा	११३ - ११४
५३.	काली चालीसा	११५ - ११७
५४.	सरस्वती चालीसा	११८ - ११९
५५.	लक्ष्मी चालीसा	१२० - १२१
५६.	गायत्री चालीसा	१२२ - १२३
५७.	नवग्रह चालीसा	१२४ - १२६
५८.	भैरव चालीसा	१२७ - १२८
५९.	कृष्ण चालीसा	१२९ - १३०
६०.	शनि चालीसा	१३१ - १३२
६१.	राम चालीसा	१३३ - १३४
६२.	हनुमान चालीसा	१३५ - १३६
६३.	हनुमानाष्टक	१३७ - १३८
६४.	बजरंग बाण	१३९ - १४०
६५.	हनुमान साठिका	१४१ - १४३
६६.	हनुमान मंगल कवच	१४४ - १४९
६७.	सुन्दर काण्ड	१५० - १८०
६८.	आरती रामायण जी की	१८०
६९.	राम वन्दना	१८१
७०.	राम स्तुति	१८२
७१.	रामकृष्ण लीला	१८३
	—: आरती :—	
७२.	गणेशजी की (जय गणेश)	१८४

क्रमांक	विवरण	पृष्ठ संख्या
७३.	गणेशजी की (गणपति की सेवा)	१८५
७४.	शिवजी की (जय शिव ओंकारा)	१८६
७५.	शिवजी की शीशगंग	१८७
७६.	जय भूतनाथ बाबा	१८८
७७.	सेवा पूजा बन्दगी	१८९
७८.	बासुकीनाथ जी की	१९० - १९१
७९.	दुर्गाजी की	१९२
८०.	पार्वती जी की	१९३ - १९४
८१.	सरस्वती जी की	१९४
८२.	लक्ष्मी जी की	१९५
८३.	भगवती स्तुति	१९६
८४.	विन्ध्याचल वैष्णोदेवी आरती	१९६
८५.	काली जी की	१९७
८६.	गंगाजी की	१९८
८७.	शीतला माता की	१९९
८८.	संतोषी माता की	२००
८९.	राणीसती जी की	२०१
९०.	जीणमाता जी की	२०२
९१.	बदरीनाथ जी की	२०३
९२.	जगदीश जी की	२०४
९३.	सत्यनारायण जी की	२०५
९४.	जानकीनाथजी की	२०६
९५.	भैरव जी की	२०७
९६.	शनिदेव जी की	२०८
९७.	कृष्ण जी की	२०९
९८.	श्याम जी की	२१०

क्रमांक	विवरण	पृष्ठ संख्या
९९.	हनुमान जी की	२११
१००.	श्रीमदभागवत् जी की	२१२
१०१.	तुलसी जी की	२१२
१०२.	रामदेव जी की	२१३
१०३.	पीतर जी की	२१४
	—: भजन :—	
१०४.	गणेश जी (गणपत बलकारी)	२१५
१०५.	म्हारा प्यारा रे गजानन्द	२१५
१०६.	गणपत न प्रथम मनावां जी	२१६
१०७.	सूँड सूँडाला दूँद दूँदाला	२१७
१०८.	गुरूदेव दया करके	२१८
१०९.	श्री गुरू वन्दना	२१९
११०.	हरि ॐ की तू माला क्यूँ ना फेरे	२२०
१११.	गंगा किनारे मंदिर तेरा	२२१
११२.	शिवजी (भोला नाथ अमली)	२२२ - २२३
११३.	रे बम बम बोलो ना	२२४
११४.	डमरू जो बाजे हाथों में	२२५
११५.	शमशानों के वासी	२२६
११६.	बाबा भूतेश्वर भोलेनाथ	२२७
११७.	मिलता है सच्चा सुख केवल	२२७
११८.	जय-जय हरिहर गौरी शंकर	२२८
११९.	फरियाद मेरी सुनके	२२९
१२०.	हे भूतेश्वर तेरे मन्दिर में	२३०
१२१.	भोला बाबा डमरू वाला	२३१
१२२.	करदे दीनों का दुःख दूर	२३२
१२३.	अरदास हमारी है	२३३

क्रमांक	विवरण	पृष्ठ संख्या
१२४.	प्रभु प्रेम में बलिदान	२३३
१२५.	हम है किस्मत के मारे	२३४
१२६.	शंकर मेरे जगत् पिता	२३५
१२७.	करता रहूँ गुणगान	२३६
१२८.	जैसा चाहे मुझको समझना	२३७
१२९.	देना हो तो दिजिये	२३८
१३०.	मैं तो भीखारी हूँ बाबा तेरे द्वार का	२३९
१३१.	जगदम्बे भवानी मैया	२४०
१३२.	दे - दे थोड़ा प्यार मैया	२४१
१३३.	अम्बे तू है जगदम्बे काली	२४२
१३४.	हर बार तेरे दर पे	२४३
१३५.	इस योग्य हम कहाँ है	२४४
१३६.	दुनिया चले ना श्रीराम के बिना	२४५
१३७.	हनुमानजी - ना स्वर है न सरगम है	२४६
१३८.	सालासर की महिमा	२४७
१३९.	म्हारो साँचो घणी रे हनुमान	२४८
१४०.	रखवाला प्रतिपाला	२४९
१४१.	बजरंगबली मेरी नाव चली	२५०
१४२.	आओ कन्हैया आओ त्रिपुरारी	२५१
१४३.	छोटी छोटी गउएँ	२५२
१४४.	मेरा एक साथी है	२५३
१४५.	क्षमा प्रार्थना	२५४
१४६.	विश्व कल्याणार्थ प्रार्थना	२५५
१४७.	माँ बाप को भूलो नहीं	२५६
१४८.	कुछ विशिष्ट चौपाइयां	२५७
१४९.	पाठ की समाप्ति पर पठनीय	२५७

श्री पुरी के जगदगुरू शंकराचार्य जी
श्री निश्चलानंदजी महाराज द्वारा बाबा का अभिषेक ॥

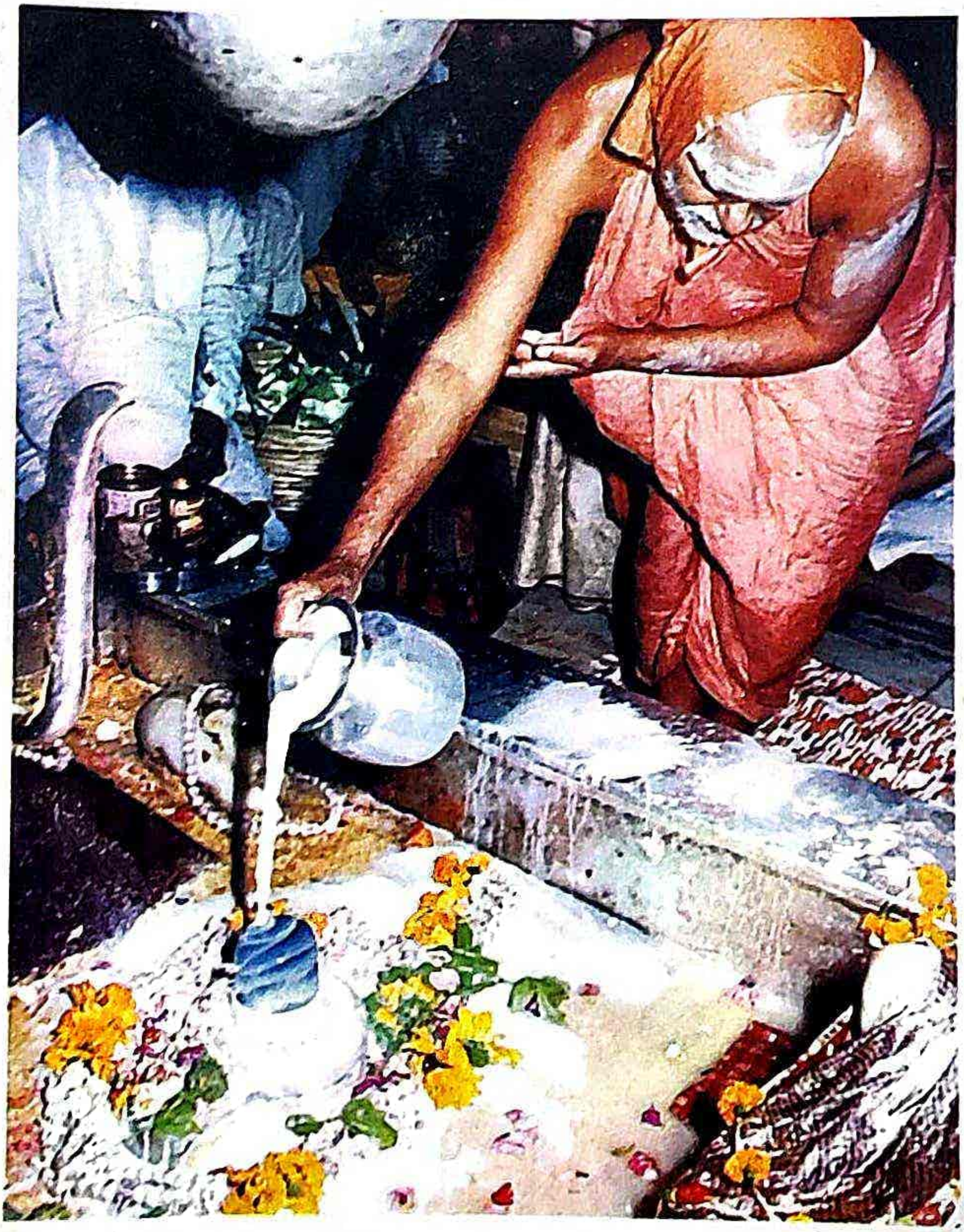

"शिव स्तुति" बाबा भूतनाथ धाम, कोलकाता

''शिव - स्तुति'' विमोचन -

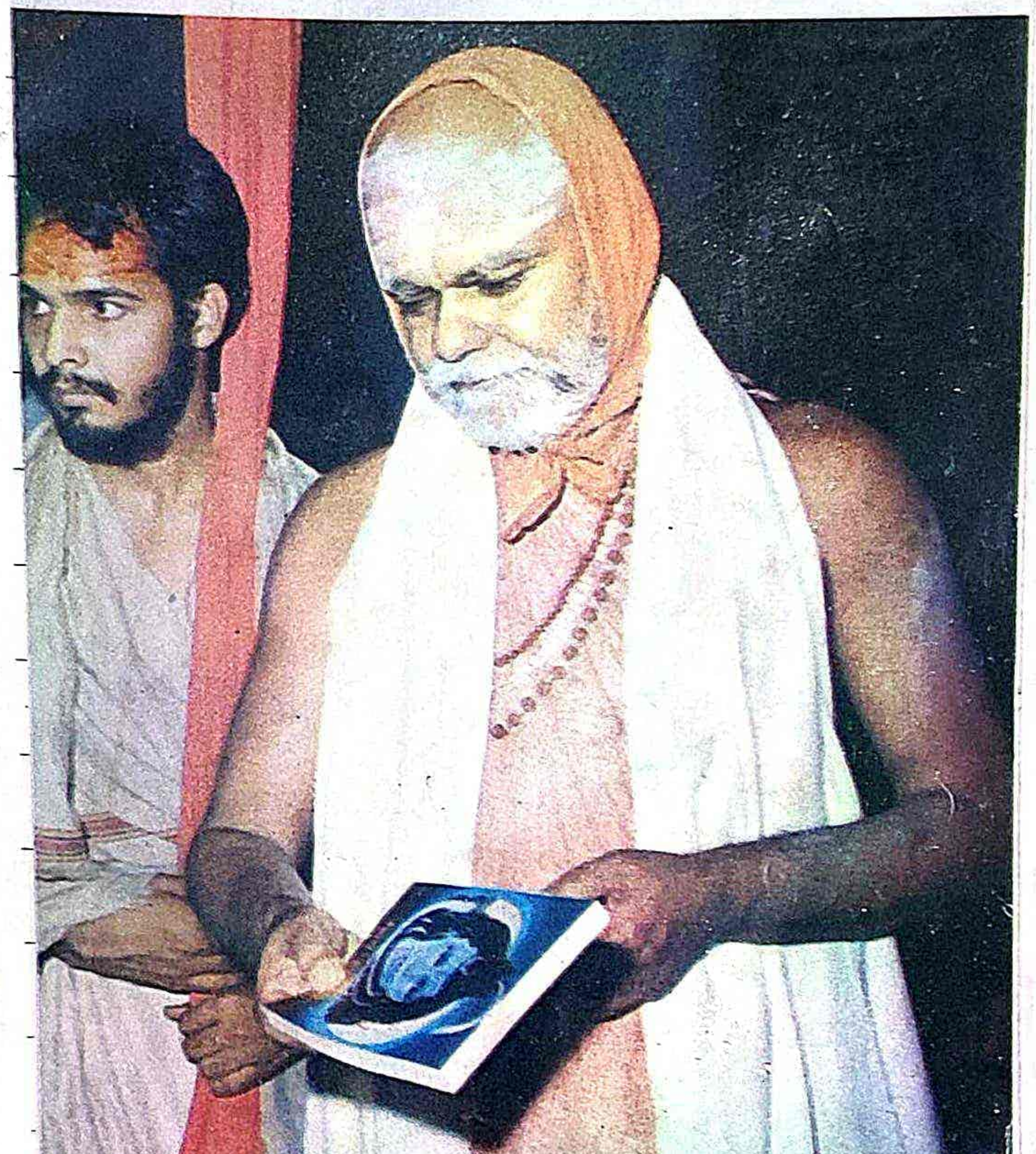

श्री पुरी के जगद्गुरु शंकराचार्यजी श्री निश्चलानंदजी महाराज
द्वारा ''शिव-स्तुति'' (प्रथम पुष्प) का विमोचन

"शिव स्तुति" बाबा भूतनाथ धाम, कोलकाता

॥ श्री गणेशाय नमः॥

॥ श्री गणेश वन्दना॥

गजाननं भूतगणाधिसेवितम् कपित्थ जम्बूफल चारुभक्षणम्।
उमासुतं शोक विनाशकारकम् नमामि विघ्नेश्वर पादपंकजम्॥

:: भजन ::

गाइये गणपति जगबंदन।
शंकर-सुवन भवानी के नन्दन।

सिद्धि-सदन, गज-बदन विनायक।
कृपा-सिन्धु, सुन्दर सब लायक॥

मोदक-प्रिय, मुद-मंगल-दाता।
विद्या-वारिधि, बुद्धि-विधाता।

मांगत तुलसीदास कर जोरे।
बसहि रामसिय मानस मोरे॥

परिवार प्रमुख : भगवान शिव

संसार में जन्म लेने वाले प्रत्येक व्यक्ति को एक न एक दिन परिवार प्रमुख बनना पड़ता है। शिव की पूजा करने वाले या उपासना करने वाले व्यक्ति यदि श्रेष्ठ परिवार प्रमुख बनने के लिये भगवान शिव के स्वरूप में व्याप्त तद्विषयक गुणों का अवलोकन करें और उन्हें अपने जीवन में ढालने की चेष्टा करें तो उन्हें एक वरदान की उपलब्धि होगी।

श्रेष्ठ परिवार प्रमुख में सबसे पहला गुण यह होना चाहिये कि वह अपने सुख से अधिक अपने आश्रितों के सुख की चिन्ता करे और इसके निमित्त त्याग करे। मनुष्य के जीवन में तीन वस्तुयें सर्वाधिक आवश्यक हैं - रोटी, कपड़ा और मकान। भगवान शिव ने इन तीनों ही चीजों की समस्त सुविधायें अपने परिवार को देकर, स्वयं सात्विक जीवन अपनाया है। उन्होंने परिवार के लोगों के लिये नाना प्रकार के स्वादिष्ट व्यंजनों, बहुमूल्य वस्त्रों और भव्य भवनों की व्यवस्था की है। उनका अपना आहार बना आक, धतूरा, विल्वपत्र, वस्त्र बना बाघम्बर और निवास स्थान बनी श्मशान भूमि।

दूसरा गुण ? जिस परिवार में दिन रात कलह मची हो, ईर्ष्या, द्वेष, वैर, स्पर्धा का बोलबाला हो, वह परिवार नर्क बन जाता है। स्वर्ग वहाँ है जहाँ एकता, प्रेम और शान्ति हो। अब देखिये, शिव का वाहन बैल, उमा का वाहन सिंह, शिव का कण्ठहार सर्प, श्री गणेश का वाहन मूषक और कार्तिक का वाहन मयूर। सब आपस में एक दूसरे के पुश्तैनी जानी दुश्मन हैं। मगर वाह रे शिव का प्रताप! सबको प्रेम और एकता के ऐसे धागे में बाँध रखा है कि आपस में हिलमिल कर रहते हैं। श्रेष्ठ परिवार प्रमुख में परिवार के विभिन्न प्रकृति के सदस्यों को परस्पर अटूट स्नेह सूत्र में बाँध कर रखने की क्षमता अनिवार्य है।

'शिवजी को विषपान करते हुए जो दिखलाया जाता है, उसका भी कोई सम्बन्ध परिवार प्रमुख के गुणों से है ?' बिल्कुल है। परिवार

सर्व भूतों के स्वामी, भूतनाथम् नमामी ।

बाबा भूतनाथजी

"शिव स्तुति" बाबा भूतनाथ धाम, कोलकाता

ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका ।
प्रणकक्षर ॐ मध्ये ये तीनों एका ।।

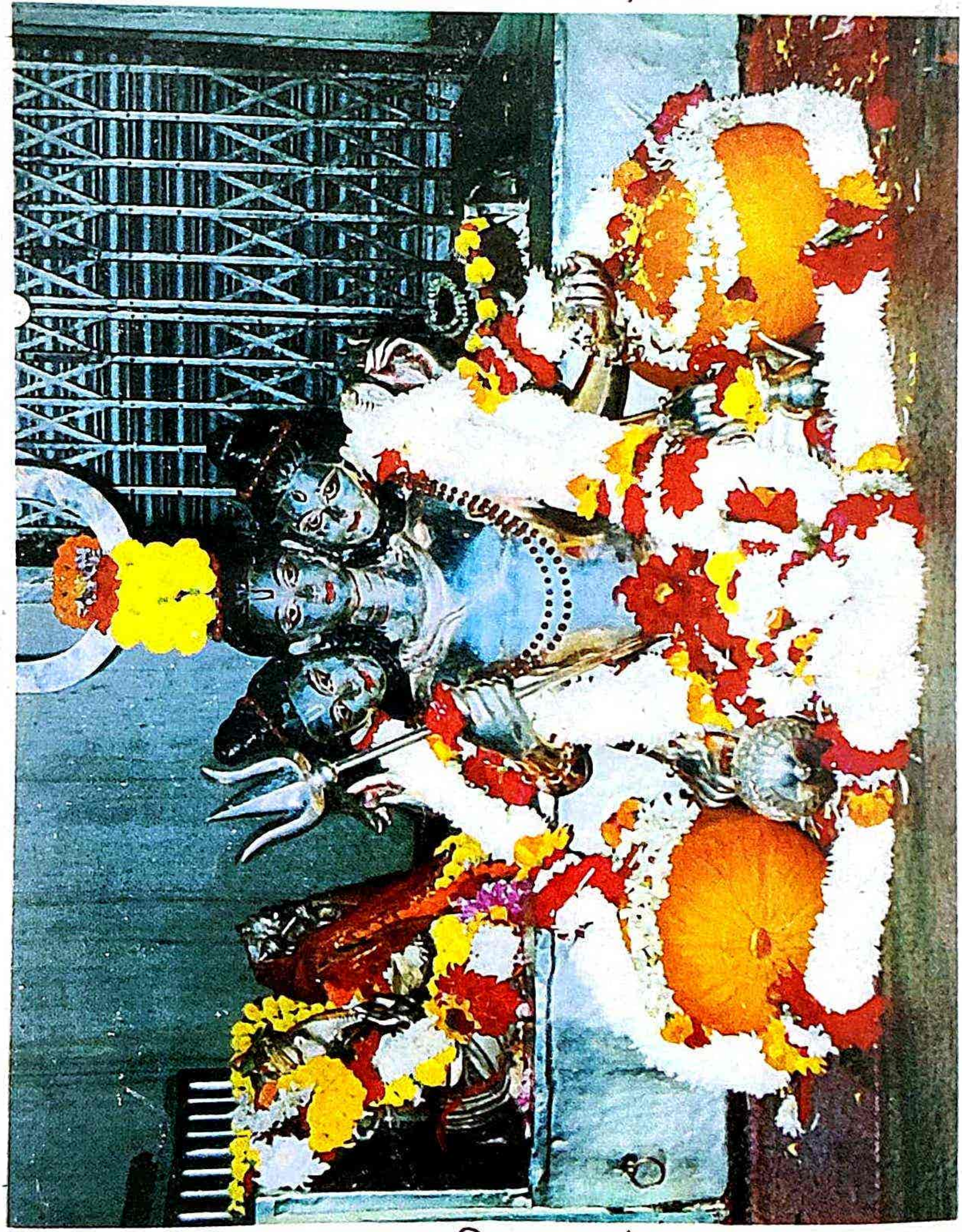

ब्रह्मा - विष्णु - महेश

"शिव स्तुति" - बाबा भूतनाथ धाम, कोलकाता

प्रमुख की जिम्मेदारियाँ पहाड़ की तरह भारी होती हैं। उसे परिवार के गुण दोषों, अवगुणों, झंझट झमेलों और तकरार पैदा करने वाली बातों को विष के घूँट की तरह अपने गले में ही अटकाये रखना पड़ता है। यदि उन चीजों को उगल दे तो परिवार का अनिष्ट होगा और यदि गले के नीचे उतार ले तो स्वयं विक्षिप्त हो जायेगा। शिवने समुद्र मंथन के समय उत्पन्न महाभयंकर हलाहल विष को सृष्टि के कल्याण के लिये अपने कण्ठ में धारण कर लिया था और नीलकण्ठ हो गये थे। परिवार प्रमुख को भी नीलकण्ठ बनना चाहिये।

परिवार प्रमुख को छोटी बड़ी बातों के विषय में उचित निर्णय लेने के लिये अपने मस्तिष्क को सदा सन्तुलित, शीतल और स्वस्थ भी रखना पड़ता है। सर्वमान्य और सर्वोचित निर्णय ठण्डे दिमाग से ही लिये जा सकते हैं।

महाशिव के मस्तक पर चन्द्रमा और गंगा का होना इस बात का संकेत है कि मस्तिष्क को सदा शीतल रखो। चन्द्रमा और गंगाजल दोनों में असीम शीतलता है।

क्रोंध निश्चित ही बुरी चीज है, मगर उसकी भी एक मर्यादा है। अन्याय, उद्दण्डता, अनुशासनहीनता और अराजकता का दमन करने के लिये किया गया क्रोध मंगलकारी होता है। परिवार के सदस्यों में यह भय होना चाहिये कि यदि वे उचित आचरण नहीं करेंगे तो उनका स्वामी उन पर रूष्ट होगा, उन्हें दण्ड देगा। तुलसीदासजी ने भी कहा है, ''भय बिनु होहि न प्रीति''। परिवार प्रमुख के स्वभाव में कठोरता और कोमलता का समन्वय होना अनिवार्य है।

शिव ने काम पर विजय पाकर यह आदर्श सामने रखा है कि परिवार प्रमुख को सदा कामजयी होना चाहिये। यदि वह कुमार्ग पर चलने लगे, कामी, लम्पट और पतित हो जाय तो समूचे परिवार का चरित्र उसी के अनुरूप बनेगा। परिवार प्रमुख को अपने आत्मीयजनों को सुमार्ग पर चलने की प्रेरणा देने के लिये स्वयं चरित्रवान बनना चाहिये।

शिव ने कुरीतियों का बहिष्कार करने, दीन हीनों, सेवक दासों को प्रेम और आदर प्रदान करने का भी अनूठा उदाहरण स्थापित किया। अपने विवाह में दहेज न लेकर पर्वतराज की कन्या का वरण किया। देवों और ऋषियों की भाँति अपने गणों, भूत प्रेतों को भी ससम्मान बारात में साथ चलने का अवसर दिया। परिवार प्रमुख को कुरीतियों का विरोधे होना चाहिये। उसे अपने सम्पर्क में रहने वाले निम्न श्रेणी के व्यक्तियों को भी सम्मान और महत्व देकर अपने बड़प्पन का परिचय देना चाहिये।

श्रेष्ठ परिवार प्रमुख बनने के लिये परिवार का हित का सर्वदा गहन चिन्तन करना एवं पारिवारिक समस्याओं का समाधान ढूँढने के लिये चित्त को एकाग्र करना आवश्यक है। चित्त की एकाग्रता के लिये ध्यान (Concentration & Meditation) विशुद्ध भारतीय वैज्ञानिक पद्धति है। भगवान शिव का ध्यानमग्न होना यह प्रकट करता है कि उनका अधिकांश समय परिवार एवं जगत के कल्याण का चिन्तन करने में बीतता है।

परिवार संतुलन ही पारिवारिक सुखों का मूल आधार है। हम दो हमारे दो एवं छोटा परिवार सुखी परिवार का शाश्वत प्रतीक है – शिव परिवार। उनके केवल दो पुत्र हैं – गणेश एवं कार्तिकेय।

शिव तो महादेव हैं। वे गुणों की खान हैं। उनका अनुकरण मनुष्य तो क्या, किसी भी लोक के प्राणी नहीं कर सकते। हम शिव की उपासना करते हैं, हमें उनके गुणों से प्रेरणा लेनी चाहिये और यही कामना करनी चाहिये कि हम सूर्य भले न बन सकें, कम से कम दीपक तो अवश्य बनें जिससे अपने मन को प्रकाश मिले, दूसरों को प्रकाश मिले और हमारा व्यक्तित्व और चरित्र हमारा मार्गदर्शन करे तो हमारी शिव भक्ति भी सार्थक होगी और हमारा मनुष्य जीवन भी।

सत्यम् शिवम् सुन्दरम्

संहार और सृष्टि प्रकृति का नियम है, जो सृष्टि करता है वही संहार भी करता है। यदि संहार न होगा तो सृष्टि रूक जायेगी। फिर तो जो जन्म लेगा उसकी मृत्यु का प्रश्न ही नहीं उठेगा, वह अमर कहलायेगा, जो अमर हो गया तो मृत्यु का भय न होगा। वह पाप की ओर बढ़ता जायेगा फिर उसका संहार कैसे होगा ?

जब शिव संहार ही नहीं करेंगे तो ब्रह्मा सृष्टि किसकी करेंगे ? इसलिये जीवन मरण का चक्र संसार में चलता रहेगा।

शिव ही सत्य है। शिव ही सुंदर है। सभी देवता शिव के आश्रित है। शिव की आराधना श्रेष्ठ है। शक्ति ही शिव की इच्छायुक्त अभिशिक्त है।

एको हि रूद्रा न द्वितीयाय। तस्युर्य इमाल्लोकानीशत ईशनीभिः ॥

एक ही रूद्र है जो सभी को अपने अधिकार में रखता है वही ईश्वर है, वही रूद्र है, वही सर्व शक्तिमान है।

एत एव त्रयो देवा एत एव त्रयोऽग्रयः।
एत एव त्रयो वेदा एत एव त्रयोगुणाः ॥

तीन देव - ब्रह्मा, विष्णु और महेश, यज्ञ की तीन अग्रियाँ - आहवनीय, गार्हपत्य, क्रव्यादि तीन गुण- सत्व, रज, तम ये सब एक ही तत्व पर आधारित हैं।

भौतिक सृष्टि, चेतन सृष्टि, स्थिति पालन कर्म और वासना का वर्णन, प्रलय और मोक्ष का निरूपण, भगवान और देवताओं का पृथक पृथक कीर्तन ये ही पुराणों के वर्ण्य विषय है।

शिव की शक्ति का प्रचार करके लोगों में परमार्थ की भावनायें जागृत कराना शिव पुराण का उद्देश्य रहा है, दूसरे देवताओं को जहाँ मिष्ठान्न, पकवान, व्यंजन आदि की आवश्यकता हई, वहाँ शिव

बिल्वपत्र, धतूरा जैसे सामान्य पूजन सामग्री से प्रसन्न हो गये। इस प्रकार शिव शंकर भोलेनाथ का चरित्र परम उदार, परमार्थ, परायण और अपरिग्रही प्रमाणित होता है। इसीलिये ऐसे पूज्य इष्टदेव की देवता और दानव पूजा करें तो उसी कारण वह सर्वशक्तिमान शिव कहलाता है।

कभी कभी लोगों में भ्रम पैदा होता है कि ब्रह्मा, विष्णु, महेश में सर्वोपरि कौन है ?

शिव पुराण के अनुसार सृष्टि पूर्व, जगत जलमय था, हर ओर अंधकार व्याप्त था। उस जल से जो तेज निकला वह परमेश्वर के ज्योतिर्लिंग रूप में जल में प्रकट हुआ। वही परमेश्वर परम शिव कहे गये। उस लिंग से एक महाशक्ति उत्पन्न हुई जिसे प्रकृति और महामाया नाम दिया गया। उन दोनों से महाविष्णु की सृष्टि हुई और विष्णु की नाभि से महापद्म उत्पन्न हुआ जिसके पाँच मुख थे ब्रह्मा कहलाया। उन्हीं के साथ कमल पर सरस्वती का जन्म माना गया। ब्रह्मा ने चारों ओर जलमय देखा तो ओंकार का जप किया जिससे विष्णु ने उन्हें दर्शन दिया। ब्रह्मा ने पूछा, 'तुम कौन हो ?' विष्णु ने उत्तर दिया, 'मैं विष्णु हूँ, तुम ब्रह्मा हो मेरी नाभि से उत्पन्न हुए हो। इसलिये तुम सृष्टि की रचना करो।' ब्रह्मा ने अपने को विष्णु से बड़ा माना इसलिये उन्होंने घमंड में आकर कहा, ''तुम मुझे आदेश देने वाले कौन हो ?''

दोनों की वार्ता सुनकर परमेश्वर ज्वालालिंग के रूप मे ब्रह्मा और विष्णु के मध्य प्रत्यक्ष हुए। दोनों ने उस ज्वाला लिंग का आदि और अंत पता लगाना चाहा किंतु दोनों निराश हुए तब ज्वालालिंग से ध्वनि निकली, 'हे ब्रह्मा! तुम सृष्टि की रचना करने हेतु विष्णु की नाभि से निकले हो तुम्हें विष्णु की वाणी का अनुपालन करना होगा। तुम सृष्टि की रचना करो।' इतना कहकर ज्वालालिंग जल में लुप्त हो गया।

ब्रह्मा के चारों ओर केवल जल था उसी समय एक अंडाकार लिंग उनके पास तैरता हुआ पहुँचा उसमें एक ओर सुराख से ॐ शब्द निकला। ब्रह्मा पता लगाने उस छेद के द्वारा अंदर चले गये। पुन: जब निकले तो उनका केवल चार मुख था वह अंडाकार लिंग दो भागों में बंट गया। एक नीचे के भाग पर पृथ्वी बनी ऊपरी भाग पर गगन मंडल आकाश के रूप में बदल गया ।

जल सूखता गया। फिर ब्रह्मा ने सृष्टि रचना शुरू कर दिया। उसी समय महान तेज के साथ शिव प्रकट हुए। शिव ने बतलाया, 'मैं शिव हूँ, रूद्र हूँ, तुम जो सृष्टि करोगे उसका पोषण और संहार मैं करूंगा। मेरे प्रकाश से सबको जीवन मिलेगा। इस प्रकार परमेश्वर शिव के रूप में उत्पन्न हुए। ब्रह्मा, विष्णु ने शिव को ईश्वर माना।'

शिव का पार्षद भूत प्रेत ही हैं। एक बार जब पार्वती का शिव से विवाह न करने की चर्चा की गयी तो पार्वती ने रूष्ट होकर समझाने वाले को अप्रिय माना। वहाँ पार्वती का शिव के प्रति अगाध प्रेम और मोह प्रकट करता है कि उन्हें शिव की निंदा सुनना पसंद नहीं। श्रद्धा रखनेवाली, भूतनाथ से शुद्ध प्रेम करने वाली पार्वती अपने इष्ट देव की वुराई नहीं सुनना चाहती। जहाँ-जहाँ शिव की प्रतिमा का वर्णन आता है वहाँ केवल शिवलिंग ही प्राप्त होता है। जैसे सौराष्ट्र में सोमनाथ, श्री शैल में मल्लिकार्जुन, उज्जैन में महाकाल, ओंकार में अमरेश्वर, हिमालय में केदार, डाकिनी में भीमशंकर, काशी में विश्वनाथ, गौतमी तट पर त्रयंबक, चिताभूमि में बैद्यनाथ, दारूकवन में नागेश, सेतुबंध में रामेश्वर, शिवालय में घुश्मेव, हरिद्वार के कनखल में दक्षेश्वर महादेव आदि। भगवान के समस्त लिंगों की संख्या बतला सकना असंभव होगा। संसार में उनका पूर्ण रूप से वर्णन नहीं किया जा सकता। अस्तु समस्त भूमंडल लिंगमय शिवमय ही है। हर तीर्थ स्थान में शिवलिंग ही पर्याप्त हैं। भगवान शिव का लिंग पृथ्वी, स्वर्ग, पाताल सर्वत्र विद्यमान हैं और देव-असुर तथा मनुष्य द्वारा पूजित हैं।

शिव पूजन का प्रारम्भ तथा महत्व

विश्व को चेतना देने के लिए ही शिव को सर्वशक्ति मान संसार का रचयिता माना गया है। शिव अनादि अनंत, नित्य, निर्विकार, अज, सर्वोपरि तथा सनातन देव हैं। इनकी तुलना किसी अन्य देवता से हो ही नहीं सकती यहां तक कि सृष्टि की रचना करनेवाले ब्रह्मा भी शिव की आराधना करते हैं। शिव ही अविनाशी, सर्वगुणाधार, सर्वज्ञ हैं, जो मंगलमय है वही शिव है। सुख समृद्धि और संपन्नता उसी की देन है। विष्णु ने जब राम का अवतार लिया तो शिव की ही आराधना किया इन्हें ही पूज्य माना। उसी प्रकार जब कृष्ण धरती पर आये तो उन्होंने शिव को ही सर्व व्यापक बतलाया।

कैलाश पर्वत के शिखर पर भगवान शंकर ध्यानमग्न तप में लीन थे। देवी पार्वती उनके पांव के निकट बैठी उन्हें एकटक देखती रहने के उपरांत उनका ध्यान अपनी ओर आकर्षित करते हुए अपने चेहरे पर मुस्कान लाते हुए याचना किया- "हे दीनों पर दया करनेवाले मेरे इष्टदेव प्रभु, दया के स्वामी, कृपालु क्षणभर के लिए मेरी विनती पर ध्यान दीजिए। आपका एक भक्त इस पर्वत के नीचे शिलाखंड पर बैठा कठोर तपस्या में लीन है। वह बर्फ से ढंका जा रहा है केवल चेहरा भर दिखलाई पड़ रहा है फिर भी आप उस पर प्रसन्न होकर उसकी इच्छित मनोकामना पूर्ण नहीं करते, ऐसा क्या कारण है प्रभु?"

भगवान शंकर ने आंख खोलते हुए हँस कर कहा, "हे प्रिय! तुम्हारी बातें सुनकर ऐसा प्रतीत हुआ मानो तुमने मुझ पर अनायास कटाक्ष किया हो। सत्य तो यह है जो भी मुझे ह्रदय से, शुद्ध भक्ति भाव से स्मरण करता है मैं उस पर अवश्य प्रसन्न होकर उसकी विनती

स्वीकार करता हूँ, किंतु जिसका मन केवल स्वार्थपर्ता की ओर है और उसमें भक्ति-भाव का समावेश ही नहीं है, वह मुझे अपने ज्ञान चक्षु से नहीं देखता वह मुझे कदापि प्राप्त नहीं कर पाता। जिस व्यक्ति के प्रति ममता, करुणा से तुम्हारा कोमल हृदय व्याकुल है उसमें लेश मात्र भी मेरे प्रति भक्ति की साधना और विश्वास नहीं है। वह ऐसी निरर्थक धारणा बनाकर कोसने लग जाता है कि उसका इष्टदेव अर्थात् मैं कितना कठोर हूं कि उसकी आराधना पर ध्यान नहीं देता। वह सोचता है आखिरकार मैं पत्थर का लिंग हूं तो मेरा हृदय भी पत्थर ही होगा इसलिए क्यों न मेरी आराधना छोड़कर किसी दूसरे देवी-देवता से अपनी इच्छित भावना की कामना करें। इसी प्रकार वह सभी देवी-देवता को कोसता रहेगा। जब उसके हृदय से यह दुर्भावना निकल जाएगी, उसमें सत्य भक्तिभावना का समावेश होगा वह अपनी इच्छा को भूलकर मेरा स्मरण करेगा तो मैं उसकी मनोकामना अवश्य पूर्ण करूंगा।''

''तो क्या वह भक्त थोड़ी देर में ही पूरे बर्फ से नहीं ढंक जाएगा? फिर वह जीवित कैसे रहेगा?''

''प्रिय। उसके चारों ओर जो बर्फ जमी है वह मेरी माया है जिसका उसके शरीर पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा, वही बर्फ जब उसे पूर्णतया ढंक लेगा तब उसे ज्ञान प्राप्ति होगी, तब वह मुझमें आस्था रखकर मेरा रूप देखेगा और अपनी इच्छित वस्तु प्राप्त कर लेगा। बर्फ गल जाएगी वह मुक्त हो जाएगा। तुम्हें चिंता करने की आवश्यकता नहीं'' इतना कहकर पुनः शंकर भगवान ध्यान मग्न हो गये।

जगत सृष्टिकर्ता प्रभु शिव ही हैं और वही विनाशकारी शिव भी हैं जो अपनी बनाई सृष्टि का संहार कर देते हैं-

'ॐ नमः शंभवाय च मयाभवाय च'

संहार और सृष्टि प्रकृति का नियम है, जो सृष्टि करता है वही संहार भी करता है। यदि संहार न होगा तो सृष्टि रूक जाएगी। फिर तो जो जन्म लेगा उसकी मृत्यु का प्रश्न ही नहीं उठेगा वह अमर कहलाएगा जो अमर हो गया तो मृत्यु का कोई भय न होगा। वह पाप की ओर बढ़ता जाएगा फिर उसका संहार कैसे होगा?

जब शिव संहार ही नहीं करेंगे तो ब्रह्मा सृष्टि किसकी करेंगे? इसलिए जीवन मरण का चक्र संसार में चलता रहेगा।

शिव ही सत्य है! शिव ही सुंदर है सभी देवता शिव के आश्रित हैं, शिव आराधना ही श्रेष्ठ है। शक्ति ही शिव की इच्छायुक्त अभिशक्ति है।

एको हि रुद्रा न द्वितीयाय। तस्युर्य इमाल्लोकानीशत ईशनीभिः ॥

एक ही रुद्र है जो कि सभी को अपने अधिकार में रखता है वही ईश्वर है, वही रुद्र सर्वशक्ति मान है।

एत एव त्रयो देवा एत एव त्रयोऽग्रयः ।
एत एव त्रयो वेदा एत एव त्रयोगुणाः ॥

तीन देव- ब्रह्मा, विष्णु और महेश, यज्ञ की तीन अग्रियां- आहवनीय, गार्हपत्य, क्रव्यादि तीन गुण- सत्व, रज, तम ये सब एक ही तत्व पर आधारित हैं।

भौतिक सृष्टि, चेतन सृष्टि, स्थिति पालन कर्म और वासना का वर्णन, प्रलय और मोक्ष का निरुपण, भगवान और देवताओं का पृथक-पृथक कीर्तन ये ही पुराणों के वर्ण्य विषय हैं।

शिव की शक्ति का प्रचार करके लोगों में परमार्थ की भावनाएं जागृत कराना शिव पुराण का उद्देश्य रहा है, दूसरे देवताओं को जहां

मिष्ठान, पकवान, व्यंजन आदि की आवश्यकता हुई, वहां शिव बिल्वपत्र, धतूरा जैसे सामान्य पूजन सामग्री से प्रसन्न हो गये। इस प्रकार शिव शंकर भोलेनाथ का चरित्र परम उदार, परमार्थ, परायण और अपरिग्रही प्रमाणित होता है। इसीलिए ऐसे पूज्य इष्टदेव की देवता और दानव पूजा करें तो उसी कारण वह सर्वशक्तिमान शिव कहलाता है।

कभी-कभी लोगों में भ्रम पैदा होता है कि ब्रह्मा, विष्णु, महेश में सर्वोपरि कौन है?

शिव पुराण के अनुसार सृष्टि पूर्व, जगत जलमय था, हर ओर अंधकार व्याप्त था। उस जल से जो तेज निकला वह परमेश्वर के ज्योतिर्लिंग रूप में जल में प्रकट हुआ। वही परमेश्वर परम शिव कहे गये। उस लिंग से एक महाशक्ति उत्पन्न हुई जिसे प्रकृति और महामाया नाम दिया गया।

उन दोनों से महाविष्णु की सृष्टि हुई और विष्णु की नाभि से महापद्म उत्पन्न हुआ जिसके पांच मुख थे ब्रह्मा कहलाया। उन्हीं के साथ कमल पर सरस्वती का जन्म माना गया। ब्रह्मा ने चारों ओर जलमय देखा तो ओंकार का जप किया जिससे विष्णु ने उन्हें दर्शन दिया। ब्रह्मा ने पूछा, ''तुम कौन हो?'' विष्णु ने उत्तर दिया, ''मैं विष्णु हूं, तुम ब्रह्मा हो मेरी नाभि से उत्पन्न हुए हो। इसलिए तुम सृष्टि की रचना करो। ''ब्रह्मा ने अपने को विष्णु से बड़ा माना इसलिए उन्होंने घमंड में आकर कहा, ''तुम मुझे आदेश देने वाले कौन हो?''

दोनों की वार्ता सुनकर परमेश्वर ज्वालालिंग के रूपमें ब्रह्मा और विष्णु के मध्य प्रत्यक्ष हुए। दोनों ने उस ज्वाला लिंग का आदि और अंत पता लगाना चाहा किंतु दोनों निराश हुए तब ज्वालालिंग से ध्वनि निकली, 'हे ब्रह्मा! तुम सृष्टि की रचना करने हेतु विष्णु की नाभि से निकले हो तुम्हें विष्णु की वाणी का अनुपालन करना होगा। तुम सृष्टि

की रचना करो।'' इतना कहकर ज्वालालिंग जल में लुप्त हो गया।

ब्रह्मा के चारों ओर केवल जल था उसी समय एक अंडाकार लिंग उनके पास तैरता हुआ पहुंचा उसमें एक ओर सुराख से ॐ शब्द निकला। ब्रह्मा पता लगाने उस छेद के द्वारा अंदर चले गये। पुनः जब निकले तो उनका केवल चार मुख था वह अंडाकार लिंग दो भागों में बंट गया। एक नीचे के भाग पर पृथ्वी बनी ऊपरी भाग पर गगन मंडल आकाश के रूप में बदल गया।

जल सूखता गया। फिर ब्रह्मा ने सृष्टि रचना शुरू कर दिया। उसी समय महान तेज के साथ शिव प्रकट हुए। शिव ने बतलाया, ''मैं शिव हूं, रुद्र हूं, तुम जो सृष्टि रचोगे उसका पोषण और संहार मैं करुंगा। मेरे प्रकाश से सबको जीवन मिलेगा। इस प्रकार परमेश्वर शिव के रूप में उत्पन्न हुए। ब्रह्मा, विष्णु ने शिव को ईश्वर माना।

शिव का पार्षद भूत प्रेत ही हैं। एक बार जब पार्वती का शिव से विवाह न करने की चर्चा की गयी तो पार्वती ने रुष्ट होकर समझाने वाले को अप्रिय माना। वहां पार्वती का शिव के प्रति अगाध प्रेम और मोह प्रकट करता है कि उन्हें शिव की निंदा सुनना पसंद नहीं। श्रद्धा रखनेवाली, भूतनाथसे शुद्ध प्रेम करने वाली पार्वती अपने इष्ट देव की बुराई नहीं सुनना चाहती।

जहां-जहां शिव की प्रतिमा का वर्णन आता है वहां केवल शिवलिंग ही प्राप्त होता है। जैसे सौराष्ट्र में सोमनाथ, श्री शैल में मल्लिकार्जुन, उज्जैन में महाकाल,ओंकार में अमरेश्वर, हिमालय में केदार, डाकिनी में भीमशंकर, काशी में विश्वनाथ, गौतमी तट पर त्रयंबक, चिताभूमि में बैद्यनाथ, दारुकवन में नागेश, सेतुबंध में रामेश्वर, शिवालय में घुश्मेव, हरिद्वार के कनखल में दक्षेश्वर महादेव आदि, भगवान के समस्त लिंगों की संख्या बतला सकना असंभव होगा। संसार

में उनका पूर्ण रूप से वर्णन नहीं किया जा सकता। अस्तु समस्त भूमंडल लिंगमय शिवमय ही है हर तीर्थ स्थान में शिवलिंग ही पर्याप्त हैं। भगवान शिव का लिंग पृथ्वी, स्वर्ग पाताल सर्वत्र विद्यमान हैं और देव-असुर तथा मनुष्य द्वारा पूजित हैं।

देवी पार्वती शिव की आराधना उपासना में लीन थी। भगवान शंकर ब्रह्मचारी ब्राह्मण रूप धारण कर उनकी परीक्षा लेने गये। वृद्ध ब्राह्मण का शरीर धारण कर अपने तेज के प्रकाश से प्रज्वलित तथा मन से प्रसन्न दंड तथा छत्र धारणकर पार्वती के निकट तपोवन में पहुंचे। पद चाप से पार्वती की तंद्रा भंग हुई, ध्यान टूटा, सम्मुख अद्भुत, तेजस्वी, रोमयुक्त अंगोंवाले परमशांत रूपकारी युक्त उस ब्राह्मण का दर्शन किया। पार्वती ने ब्रह्मा की ब्रह्मचर्य से युक्त, वृद्ध और जटा एवं कमंडल धारण किये हुए देखकर अत्यंत प्रीतिपूर्वक अर्चना किया और समुचित सत्कार किया।

फिर पार्वती ने प्रश्न किया, ''हे वेद ज्ञाताओं में परमश्रेष्ठ ब्राह्मण देवता! आप इस ब्रह्मचारी रूप मैं कौन हैं, आपका यहाँ आने का अभिप्राय क्या है जो इस वन को प्रकाशमान कर रहे हैं ?

शिव ने उत्तर दिया, ''महादेवी, में स्वेच्छा से विचरण करता तपस्वी ब्रह्मचारी, दूसरों की मनोकामना पूर्ण करता हूं, मुझसे आपकी यह दशा देखी नहीं जाती। इतनी कोमलांगी, स्वरूपा शरीर धारण करनेवाली, किस उद्देश्य से इस भयावह निर्जन वन में जितेंद्रियों के तुल्य कठिन तप कर रही हो ?''

मेरे इस शरीर का जन्म गिरिराज हिमवान के घर में हुआ है। इसके पूर्व मैं प्रजापति दक्ष की आत्मजा थी और भगवान शंकर की पत्नी हुई थी। परंतु पति की बात न मानकर मायके में पिता द्वारा अपमानित होकर अग्निमें अपना शरीर त्याग दिया। इस जन्म में परम

महान पुण्य से प्राप्त भगवान शिव मुझे त्यागकर कामदेव को भस्म करके चले गये। शिव के त्याग से अति लज्जित होकर बहुत ही दु:खी हूं, उन्हें प्राप्त करने हेतु तप कर रही हूं। मेरी तपस्या मन-वचन और कर्म द्वारा साक्षात् शिव स्वरूप पति देव को पाने के लिए है। अन्य किसी देवता में मेरी कोई आस्था नहीं है।''

शिव ने कहा, ''समस्त देव, ब्रह्मा और विष्णु को त्यागकर एक शिव को ही अपना पति बनाने की इतनी कठोर तपस्या करना व्यर्थ है। मैं तो रुद्र को जानता हूं, बैल पर सवारी करता हैं, विकृत आत्मावाला, जटाधारी, अकेला रहनेवाला परम भक्त, ऐसे वैरागी में मन लगाना शोभा न देगा। उसका स्वरूप तुम्हारे रूप सौंदर्य के विपरीत हैं। मुझे तो अच्छा प्रतीत नहीं होंता।'' इस प्रकार शिव ने अपनी अनेक प्रकार से निंदा की।

पार्वती ने उग्र रूप धारण करके गुस्से में कहा, ''हे ब्राह्मण, तू शिव की निंदा करता है इसलिए मार देने योग्य है। हे मूर्ख, तू बड़ा धूर्त है, कैसे ब्रह्मचारी बनकर यहां आ गया है? तूने भगवान शिव की निंदा की है इसलिए मुझे क्रोध आ गया, तू शंकर से सर्वथा बहिर्मुख है। तू ब्राह्मण कहने योग्य नहीं। तूने असत्य कहा कि तू शिव को जानता है। शिव तो सर्वोपरि सबके स्वामी हैं। भगवान शिव का अपमान करनेवाला सबसे बड़ा पापी होता है। तू यहां से तुरंत चला जा अन्यथा मैं ही किसी दूसरे स्थान पर तपस्या करने चली जाऊंगी।''

इस पर भगवान शिव शंकर ने अपने उसी रूप को दिखलाया जिसका ध्यान पार्वती अपने मन में बसाए थी। भगवान शिव ने कहा, ''हे शिवे, तुम्हें अब कहीं और जाने की आवश्यकता नहीं है। मैंने तो तुम्हारी परीक्षा लिया था। तुम्हारे दृढ़ भक्ति से अति प्रसन्न हूं।'' यह कहकर शिव ने पार्वती को अंगीकार कर लिया।

शिव को सप्तमुखी कहा गया है जो ईश्वरीय रूप कहलाता है। तत्पुरुष, अघोर, सद्योजात, वामदेव, ईश्वर, नीलकंठ आदि स्वरूप हैं।

भगवान असंख्य रूपों मे प्रकट होते हैं। इसलिए उसे असंख्य नामों से संबोधित किया जाता है।

ज़िस प्रकार आकाश के सितारे दिन में नहीं दिखलाई पड़ते उसी प्रकार भगवान शंकर का रूप कोई नहीं देख सकता। उस ईश्वर को देखने पाने हेतु माया और अहंकार का त्याग कर भगवान शंकर का स्मरण करना होगा। किसी न किसी रूप में वे अपने भक्त पर प्रसन्न होते हैं। शिवलिंग केवल एक शिलाखंड नहीं बल्कि शंकर का प्रारूप है जो हर शिवलिंग में व्याप्त रहता है। समस्त कामनाओं का त्याग कर शिवपूजन करें तो साक्षात् शिव पद की प्राप्ति होगी।

इति।

* * *

:: चार बातें ::

(१) *भाई दूज को भाई बहन के हाथ से खाता है तो उम्र बढ़ती है ।*
(२) *गुरू पूर्णिमा पर गुरू के घर खाने से उम्र बढ़ती है ।*
(३) *वसन्त पंचमी पर पत्नी के हाथ से पीला चावल खाने से उम्र बढ़ती है।*
(४) *मातृ नौमी को माँ के हाथ से खाने से उम्र बढ़ती है।*

:: मनुष्य को सातों सुख की इच्छा होती है ::

(१) ***पहला सुख निरोगी काया ।***
(२) ***दूजा सुख घर में माया ।***
(३) ***तीजा सुख पुत्र आज्ञाकारी ।***
(४) ***चौथा सुख पतिव्रता नारी।***
(५) ***पांचवाँ सुख रात में पासा।***
(६) ***छठा सुख नीर निवासा।***
(७) ***सातवां सुख सत्संग वासा ।***

❖ श्री महादेव नाम की महिमा ❖

श्लोक – महादेव महादेव महादेवेतिवादिनम्।
वत्सं गौरिव गौरीशो धावन्तमनुधावति ॥ १ ॥

अर्थ – तीन बार महादेव–महादेव–महादेव नामोच्चारण करने वाले के पीछे भगवान् गौरीशंकर ऐसे दौड़ते हैं जैसे बछड़े वाली गाय अपने बछड़े के पीछे–पीछे दौड़ती है।

श्लोक – महादेव महादेव महादेवेति यो वदेत्।
एकेन मुक्तिमाप्नोति द्वाभ्यां शम्भू ऋणी भवेत् ॥२ ॥

अर्थ — जो पुरूष तीन बार महादेव–महादेव–महादेव इस तरह नामोच्चारण करता है तो एक नाम से ही भगवान् शिव मुक्ति प्रदान कर देते हैं शेष दो नाम से उसके ऋणी हो जाते हैं। श्रीशिव का प्रिय कीर्तन — महादेव! शिव! शंकर! शम्भो! उमाकान्त! हर! त्रिपुरारे!। मृत्युंजय! वृषभध्वज ! शूलिन् ! गंगाधर! मृड़! मदनारे! ॥

बम्–बम् महादेव!

॥ द्वादस ज्योतिर्लिङ्गानि ॥

सौराष्ट्रे सोमनाथं च, श्रीशैले मल्लिकार्जुनम्।
उज्जयिन्यां महाकालं, ओंङ्कारममलेश्वरम् ॥
परल्यां वैद्यनाथं च, डाकिन्या भीमशंकरम्।
सेतुबन्धे तु रामेशं, नागेशं दारुका बने ॥
वाराणस्यां तु विश्वेशं, त्रयम्बकं गौत्तमी तटे।
हिमालये तु केदारं, घुशमेशं च शिवालये ॥
एतानि ज्योतिर्लिङ्गानि सायं प्रातः पठेन्नरः।
सप्त जन्म कृतं पापं, स्मरणेन विनश्यति ॥

❖ शिव निर्माल्य ❖

भगवान शंकर पर चढ़ा हुआ प्रासद ग्रहण किया जाय या नहीं- इस सम्बन्ध में बहुत मति-भ्रम है। शिव के प्रसाद में चण्ड का भाग होता है। भगवान् महेश्वर के मुख-तेज से प्रकट चण्डेश्वर उनके प्रेतगणों में प्रधान हैं, इसलिए उनका प्रसाद ग्राह्य नहीं होता-यह बात ठीक है। किन्तु कौन सा प्रसाद चण्डका भाग है और कौन सा उनका भाग नहीं है- यह बात विचार कर लेनी चाहिए ; क्योंकि प्रसाद के त्याग में भी बहुत बड़ा दोष शास्त्रों में वर्णित है।

(१) जहाँ कहीं भगवान् शंकर की साकार मूर्त्ति (हाथ-पैर वाली) बनी हो, उसका प्रसाद ग्रहण किया ही जाना चाहिए। दूसरे देवताओं के प्रसाद के समान वह पवित्र है।

(२) किसी भी धातु से बने हुए शिव-लिंग के ऊपर चढ़ा हुआ प्रसाद सर्वथा पवित्र है, वह ग्रहण करने योग्य है। यदि किसी दूसरी वस्तु से बना शिव-लिंग हो और उसके ऊपर धातु का कलेवर चढ़ा हो, जैसा कि अनेक स्थानों में है, तो उस पर चढ़ा हुआ प्रसाद भी पवित्र होता है।

(३) जो प्रसाद शिव-लिंग के ऊपर नहीं चढ़ा है, सामने रखकर भोग लगाया गया है वह प्रसाद पवित्र है, उसे ग्रहण किया जाना चाहिए।[1]

---

१. जो पदार्थ उन सिवलिंगों के ठीक ऊपर रख दिया गया है जिनका प्रसाद ग्रहण करना यहाँ वर्जित बतलाया गया है, केवल प्रसाद का उतना ही अंश त्याज्य है। किसी पत्ते पर अथवा वर्त्तन में मूर्त्ति से थोड़ा दूर रखकर जो भोग लगाया जाता है वह किसी भी शिव-लिंग को लगाया हुआ प्रसाद ग्रहण करने योग्य है।

(४) द्वादश ज्योतिर्लिंग, अष्ट उपलिंग तत्वलिंग, स्वयंभू लिंग (जो स्वयं प्रकट हुए हैं), किसी साधु महापुरुष के द्वारा स्थापित लिंग और नर्मदा के जल में से प्राप्त हुआ बाणलिंग (नर्मदेश्वर) - इनके ऊपर चढ़ा हुआ प्रसाद भी पवित्र होता है इसमें चण्डका कोई भाग नहीं होता, इसलिए इसके त्याग में ही दोष है।

(५) अब ऊपर के सब प्रकार के शिवलिंगों को छोड़ दें तो साधारण पत्थर से गढ़े हुए लिंग, नर्मदा के अतिरिक्त किसी दूसरी नदी में से प्राप्त लिंग या मूर्ति अथवा केशर के अतिरिक्त दूसरे पदार्थों से बने मिट्टी, चिनी आदि के शिवलिंगो पर जो प्रसाद चढ़ाया गया हो, उसे किसी को भी ग्रहण नहीं करना चाहिए। इसे मन से चण्ड को अर्पित करके किसी जलाशय में डाल दिया जाना चाहिए।

(६) केशर-चन्दन मिला करके जो लिंगमूर्ति बनती है, उस पर चढ़ा हुआ प्रसाद ग्रहण किया जाता है।

(७) यदि शिवलिंग गण्डकी नदी में पाया गया हो अथवा शिवलिंग के समीप शालिग्राम भी विराजते हों तो शिवलिंग पर चढ़ा हुआ प्रसाद ग्रहण करने योग्य है।

(८) किसी भी शिवलिंग पर चढा हुआ प्रसाद यदि शालिग्रामजी को स्पर्श करा दिया जाता है तो वह ग्रहण करने योग्य है।

---

१. भगवान शंकर की लिंग-मूर्त्ति पर चढ़ाया हुआ प्रसाद, चाहे वह किसी भी लिंग पर चढ़ाया हो, शालिग्राम जी को अर्पित किया जा सकता है; क्योंकि भगवान् विष्णु परम शैव हैं और वैसे ही शिव का प्रसाद ग्रहण करते हैं जैसे हनुमान जी श्री रघुनाथ जी का प्रसाद ग्रहण करते हैं। अतएव शिव-लिंग पर चढ़ा हुआ प्रसाद शालिग्राम जी को अर्पित करके ग्रहण करने योग्य हो जाता है क्योंकि फिर वह भगवान् विष्णु का प्रसाद होता है।

❖ श्री शिव-पूजन विधि ❖

भगवान् श्री शिव का ध्यान

सुन्दर कैलाश पर्वत पर भगवान श्री शंकर विराजमान हैं। रक्ताभ सुन्दर गौरवर्ण है। रत्नसिंहासन पर मृगछाला बिछी है, उसी पर आप आसीन है। चार भुजाएँ हैं, दाहिने ऊपर का हाथ ज्ञान मुद्रा का है, नीचे के हाथ में फरसा है, बायां ऊपर का हाथ मृगमुद्रा से सुशोभित है, नीचे के हाथ जानु पर रक्खे हुए हैं। गले में रुद्राक्षों की माला है, साँप लिपटे हुए हैं, कानों में कुण्डल सुशोभित हैं। ललाट पर त्रिपुण्ड शोभा पा रहा है, सुन्दर तीन नेत्र हैं, नेत्रों की दृष्टि नासिका पर लगी है; मस्तक पर अर्धचन्द्र है, सिर पर जटाजूट सुशोभित है। अत्यन्त प्रसन्न मुख है। देवता और ऋषि भगवान की स्तुति कर रहे हैं। बड़ा ही सुन्दर विज्ञानानन्दमय स्वरूप है।

१. आवाहन् – सब कामनाओं की सिद्धि के लिये मैं आपका आवाहन् करता हूँ। मुझपर कृपा करके इस विग्रह में आकर निवास कीजिए।

२. पाद्य – गंगा आदि सभी तीर्थों से लाये हुए उत्तम जल को आपके पाद-प्रक्षालन के लिये अर्पित करता हूँ। इसे स्वीकार कीजिये।

३. अर्घ्य – गंगा आदि सभी तीर्थों से लाये हुए उत्तम जल को आपके हस्ताञ्जंलि के लिये अर्पित करता हूँ। आप इसे स्वीकार कीजिये।

४. आचमन – गंगा आदि सभी तीर्थों से लाये हुए उत्तम जल को आपके मुखाचमन के लिये अर्पित करता हूँ। आप इसे स्वीकार कीजिये ।

५. पंचामृत स्नान – दूध, दही, घृत, मधु व शर्करा से विनिर्मित पंचामृत को आपके स्नान के लिये अर्पित करता हूँ । आप इसे स्वीकार कीजिये।

६. शुद्ध स्नान – गंगा आदि सभी तीर्थों से लाये हुए उत्तम जल को आपके शुद्धि स्नान के लिये अर्पित करता हूँ। आप इसे स्वीकार कीजिये ।

७. वस्त्र-उपवस्त्र – कलाकौशल पूर्वक सूत्रों द्वारा निर्मित सभी अंगों के आभरण स्वरूप इन दोनों वस्त्रों को आपके धारण के लिये अर्पित करता हूँ। आप इसे स्वीकार कीजिये ।

८. गंध – केसर, अगर, कस्तूरी व कपूर से मिले हुए चन्दन को आपके लेपन के लिये अर्पित करता हूँ आप इसे स्वीकार कीजिये ।

९. अक्षत् – सुन्दर गन्ध-युक्त अक्षत् (चावल) को आपके मस्तक पर धारण के लिये अर्पित करता हूँ। आप इसे स्वीकार कीजिये ।

१०. पुष्प व पुष्प माला – उत्तम सुरभित पुष्प व सुगन्धित पुष्प माला को आपके धारण करने के लिये अर्पित करता हूँ। आप इसे स्वीकार कीजिये।

११. बिल्व – त्रिगुणात्मक, त्रिनेत्र स्वरूप, त्रिजन्म पाप संहारक त्रिदल युक्त अखण्ड बिल्व-पत्र को आपके भालके लिये अर्पित करता हूँ । आप इसे स्वीकार कीजिये।

१२. धूप – अनेक रंगों से युक्त तथा चन्दन आदि से निर्मित सुगन्धित धूप को आपके गन्ध के

लिये अर्पित करता हूँ । आप इसे स्वीकार कीजिये।

१३. दीप – सुन्दर प्रकाश फैलाने वाले तथा चारों ओर के अन्धकार का अपहरण करने वाले एवं बाह्य तथा अभ्यन्तर दोनों प्रदेशों को प्रकाश देने वाले दीपक को आपके दर्शनार्थ अर्पित करता हूँ। आप इसे स्वीकार कीजिये।

१४. नेवैद्य – विविध प्रकार के खाद्य पदार्थों से युक्त तथा दिव्य षड्रस से परिपूर्ण मिष्ठान को आप के भोजन के लिए अर्पित करता हूँ । आप इसे स्वीकार कीजिये ।

१५. ऋतुफल – सुन्दर, सुमधुर नाना प्रकार के फलों को आप के भोग के लिये अर्पित करता हूँ । आप इसे स्वीकार कीजिये ।

१६. ताम्बूल-पूंगी फल – सुपारी, लवंग, इलायची सहित दिव्य ताम्बूल को आप के मुख - शुद्धि के लिये अर्पित करता हूँ। आप इसे स्वीकार कीजिये ।

१७. द्रव्य-दक्षिणा – कुबेर से प्राप्त धन को आप के लिये अर्पित करता हूँ। आपकी वस्तु आपको ही भेंट कर रहा हूँ। आप इसे स्वीकार कीजिये।

आछे दिन पाछे गए, हरि से किया न हेत ।
अब पछतावा क्या करै, चिड़िया चुग गई खेत ॥

कोटि परम लागे रहें, एक क्रोध की लार ।
किया कराया सब गया, जब आया हंकार ॥

कँावड़ चढ़ाने का वैज्ञानिक विश्लेषण

श्रावण के पावन महीने में बाबा भोलेनाथ को कांवड़ चढ़ाने का महत्व जहाँ धर्म के संस्थापकों ने धार्मिक बताया है, वहीं वैज्ञानिक महत्व भी शारीरिक स्वास्थ्य के लिये कम नहीं है। शायद धर्म के प्रकाण्ड विद्वानों ने भी इसी महत्व को ध्यान में रखकर इसे धर्म का जामा पहना दिया ताकि इसी बहाने भक्तगण श्रद्धापूर्वक जनता बाबा भोलेनाथ को कँावड़ चढ़ाने के लिये पद यात्रा करें। वर्ष में ११ माह हम अपने दैनन्दिन कार्यों, विषय- भोगों व कारोबार के झंझटों में उलझे रहते हैं एवं समय ही नहीं मिल पाता है। श्रावण मास में जब वर्षा ऋतु प्रारम्भ होती है, व्यापार मन्दा होता है व प्रकृति में सर्वत्र हरियाली छा जाती है – ऐसे सुहाने मौसम में नंगे पैरों कँावड़ उठाये चतुर्दिक छाई हरियाली को निहारते 'बोल बम' का नारा लगाते हुये दीन दुनिया से बेखबर, समस्त चिन्ताओं से मुक्त होकर सिर्फ एक ही धुन मस्तिष्क में संजोये बाबा धाम पहुँचने व बाबा के दर्शन की लालसा नैनों में लिये काम वासना से दूर जब भक्तजन चलते हैं तो जमीन पर पड़ी ओस की बूंदें पावों को ठंडा रखती हैं, धूप मे सूर्य की किरणें नंगे शरीर के माध्यम से शरीर में प्रवेश कर शरीर को निरोग करती हैं, चारों तरफ छाई हरियाली आँखों की रोशनी में फायदा पहुँचाती हैं, वर्षा में भींगने से शरीर में व्याप्त गर्मी बाहर निकल जाती है, शरीर थका होने से जमीन पर सोने से ठंडी ठंडी हवायें शरीर में उर्जा पैदा करती है व शुद्ध वायु फेफड़ों को राहत पहुँचाती है। जो हमें शहरों में नसीब नहीं होता वही सब हमें बाबाधाम के रास्ते में नसीब होता है जो स्वास्थ्य वर्धक है।

इसके अलावा धूप, बरसात में नंगे पाँव पैदल चलने से पाँव मे फफोले पड़ना, कांटे की चुभन से पैदा हुआ दर्द कष्ट और दुःख सहने की क्षमता को बढ़ाता है। इसके माध्यम से आदमी अपना आत्म निरीक्षण कर सकता है। आजकल के विलासी जीवन से निकल कर जब हम काँवड़ लेकर चलते हैं तो हमें हमारी शारीरिक सहन शक्ति की परीक्षा होती है। हमें पता चलता है कि हमारे शरीर में कितनी प्रतिरोधक क्षमता (Body Resistence Power) है, जो किसी भी रोग से लड़ने की क्षमता रखता है। उससे हमारे मनोबल का भी पता चलता है। जिस तरह काँवड़िया का बाबा को जल चढ़ाने का लक्ष्य रहता है, उसी तरह प्रत्येक मनुष्य को अपने जीवन का एक लक्ष रखना चाहिये एवं उसको पूर्ण करने के लिये काँवड़िया की तरह दृढ़ इच्छा शक्ति रखनी चाहिये। लक्ष्यहीन पुरूष दिशाहीन हो जाता है। अंग्रेजी में कहावत है — A man without purpose is just like a ship without rudder. इस तरह कष्ट पाकर बाबाधाम जाने वाले यात्रियों में आत्मबल बढ़ता है तथा उसी आत्मबल के सहारे उसके सभी मनोरथ पूर्ण होते हैं।

पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुया, पंडित भया न कोय।
ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय॥

वृक्ष कबहु नहि फल भखै, नदी न संचै नीर।
परमानथ के करने, साधु न धरै शरीर॥

जिहिंघर साधु न पुजिए, हरि की सेवा नाहिं।
ते घर मरघट सरिखे, भूत बसै तिन माँहि॥

❖ शिव महिम्नः स्तोत्र की महिमा ❖

इस सर्वोत्तम शिव महिम्न स्तोत्र की रचना पुष्पदन्त नाम के गन्धर्व राजा ने की थी। जो बाबा आशुतोष की आराधनार्थ, अपनी अर्न्तध्यानीं विद्या के बल पर काशीराज के उद्यान से सुन्दर एवं सुगन्धित पुष्प ले जाते थे। हर सम्भव प्रयास के बाद भी पुष्प चोर का पता न लगने पर काशीराज को यह निश्चय हो गया कि जरूर कोई व्यक्ति अदृश्य विद्या द्वारा पुष्पों की चोरी करता है। अतः उन्होंने अपने बगीचे में पुष्प पौधों के पास एवं रास्ते में शिव निर्माल्य (भगवान शंकर को चढ़े हुए पुष्प बिल्व पत्रादि, जिन्हें लांघना निषिद्ध है) बिखेर दिये। गंधर्वराज अपने दैनिक कार्यक्रम के अनुसार पुष्प लेने आये और उनका पैर शिव निर्माल्य पर पड़ते ही उनकी अदृश्य विद्या का प्रभाव जाता रहा। पकड़े जाने के भय से घबराने की बजाय बाबा विश्वनाथ का ध्यान किया तो मालुम हुआ कि भगवान शंकर के प्रति अपराध से ही ऐसी दशा हुई हैं और उनकी प्रसन्नता ही बचने का एक मात्र उपाय है। अतः बाबा आशुतोष को प्रसन्न करने के लिये उसी समय सुन्दर शिखरणी छन्द से "शिव महिम्न स्तोत्र" की रचना की। स्तोत्र गान से भोले बाबा प्रसन्न हो गये और गंधर्वराज को संकट से बचा लिया।

तब से यह स्तोत्र अनेक शिव भक्तों को संकटों से उबारता आया है और पाठ मात्र से ही चमत्कारिक प्रभावों को दिखाता आ रहा है। अकस्मात् आने वाले दुःखों को दूर करने का यह अमोघ उपाय है। भगवान शंकर की प्रसन्नता ही सबकी प्रसन्नता है और निःसन्देह भोले बाबा को प्रसन्न करने के लिये इससे बढ़कर और कोई स्तुति नहीं है। अतः सबको इस पवित्र स्तोत्र का पाठ करना और कराना चाहिये।

पुजारी

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

❖ शिवमहिम्न स्तोत्रम् ❖

महिम्नः पारंते परम विदुषो यद्यसदृशी
स्तुतिर्ब्रह्मादीनामपि तदवसन्नास्त्वयि गिरः।
अथावाच्यः सर्वः स्वमतिपरिणामावधि गृणन्
ममाप्येष स्तोत्रे हर निरवयादः परिकरः ॥१॥

अतीतः पन्थानं तव च महिमा वाङ् मनसयो-
रतद्व्यावृत्त्या यं चकितमभिधत्ते श्रुतिरपि।
स कस्य स्तोतव्यः कतिविधगुणः कस्य विषयः,
पदे त्ववार्चीने पतति न मनः कस्य न वचः ॥२॥

मधुस्फीता वाचः परमममृतं निर्मितवत-
स्तव ब्रह्मन्किं वागपि सुरगुरोर्विस्मयपदम्।
मम त्वेतां वाणीं गुण कथनपुण्येन भवतः
पुनामीत्यर्थेऽस्मिन्पुरमथन बुद्धिर्व्यवसिता ॥३॥

तवैश्वर्यं तत्तज्जग दुदयरक्षाप्रलयकृत्
त्रयीवस्तु व्यस्तं तिसृषु गुणभिन्नासुतनुषु।
अभव्यानामस्मिन् वरद रमणीयामरमणींम्
विहन्तुं व्याक्रोशीं विदधत इहैके जड़धियः॥ ४॥

किमीहः किङ्कायः स खलु किमुपायस्त्रिभुवनम्
किमाधारो धाता सृजति किमुपादान इति च।
अतर्क्यैश्वर्ये त्वय्यनवसरदुःस्थो हतधियः
कुतर्कोऽयं कांश्चिन्मुखरयति मोहाय जगतः ॥५॥

अजन्मानो लोकाः किमवयववन्तोऽपि जगता-
मधिष्ठातारं किं भवविधिरनादृत्य भवति।
अनीशो वा कुर्याद्भुवनजनने कः परिकरो
यतो मन्दास्त्वां प्रत्यमरवर संशेरत इमे ॥६॥

त्रयी सांख्यं योगः पशुपतिमतं वैष्णवमिति
प्रभिन्ने प्रस्थाने परमिदमदः पथ्यमिति च।
रूचिनां वैचित्र्यादृजुकुटिलनानापथजुषां
नृणामेको गम्यस्त्वमसि पयसामर्णव इव ॥७॥

महोक्षः खट्वांङ्गं परशुरजिनं भस्म फणिनः
कपालं चेतीयत्तव वरद तन्त्रोपकरणम् ।
सुरास्तां तामृद्धिं विदधति भवद्भ्रूप्रणिहितां
नहि स्वात्मारामं विषयमृगतृष्णा भ्रमयति ॥८॥

ध्रुवं कश्चित् सर्वं सकलमपरस्त्वध्रुवमिदं
परो ध्रौव्याध्रौव्ये जगति गदति व्यस्तविषये ।
समस्तेऽप्येतस्मिन् पुरमथन तैर्विस्मित इव
स्तुवन् जिह्वेमि त्वां न खलु ननु धृष्टा मुखरता ॥९॥

तवैश्वर्यं यत्नाद्यदुपरि विरिञ्चो हेरिरधः
परिच्छेत्तुं यातावनलमनलस्कन्धवपुषः ।
ततो भक्तिश्रद्धाभरगुरू गृणद्भ्यां गिरिश यत्
स्वयं तस्थे ताभ्यां तव किमनुवृत्तिर्न फलति ॥१०॥

अयत्नादापाद्य त्रिभुवनमवैरव्यतिकरं
दशास्यो यद्बाहूनभृत रणकण्डूपरवशान् ।

शिरः पद्मश्रेणीरचितचरणाम्भोरूहबलेः
स्थिरायास्त्वद्भक्तेस्त्रिपुरहर विस्फूर्जितमिदम् ॥११॥

अमुष्य त्वत्सेवासमधिगतसारं भुजवनम्
बलात्कैलासेऽपि त्वदधिवसतौ विक्रमयतः ।
अलभ्या पातालेऽप्यलसचलिताङ्गुष्ठशिरसि
प्रतिष्ठा त्वय्यासीद्ध्रुवमुपचितो मुह्यति खलः ॥१२॥

यद्द्धि सुत्रांम्णो वरद परमोच्चैरपि सती-
मधश्चक्रे बाणः परिजनविधेयस्त्रिभुवनः ।
नतच्चित्रं तस्मिन् वरिसितरित्वच्चरणयोः
र्नकस्याप्युन्नत्यै भवति शिरसस्त्वय्यवनतिः ॥१३॥

अकाण्ड ब्रह्माण्ड क्षयचकितदेवासुरकृपा-
विधेयस्याऽसीद्यस्त्रीनयन विषं संहृतवतः ।
स कल्माषः कण्ठे तव न कुरुतेनश्रियमहो
विकारोऽअपिश्लाध्यो भुवन भयभंङ्गव्यसनिनः ॥१४॥

असिद्धार्थां नैव क्वचिदपि सदेवासुरनरे
निवर्तन्ते नित्यं जगति जयिनो यस्य विशिखाः ।
स पश्यन्नीश त्वामितरसुरसाधारणमभूत्
स्मरःस्मर्त्तव्यात्मा न हि वशिषु पथ्यः परिभव ॥१५॥

मही पादाघाताद्व्रजति सहसा संशयपदं
पदं विष्णोर्भ्राम्यद्भुजपरिघरूग्णग्रहगणम्
मुहुर्द्यौर्दौस्थ्यं यात्यनिभृतजटाताडिततटा
जगद्रक्षायै त्वं नटसि ननु वमैव विभुता ॥१६॥

वियद्व्यापी तारागणगुणितफेनोद्गमरूचिः
प्रवाहो वारां यः पृषतलघुदृष्टः शिरसि ते ।
जगद्द्वीपाकारं जलधिवलयं तेन कृतमि-
त्यनेनैवोन्नेयं धृतमहिम दिव्यं तव वपुः ॥१७॥

रथः क्षोणी यन्ता शतधृतिरगेन्द्रो धनुरथो
रथांगे चन्द्रार्कौ रथचरणपाणिः शर इति ।
दिधक्षोस्ते कोऽयं त्रिपुरतृणमाडम्बरविधिर्विधेयैः
क्रीडन्त्यो न खलु परतन्त्राः प्रभुधियः ॥१८॥

हरिस्ते साहस्त्रं कमलबलिमाधाय पद्यो-
र्यदेकोने तस्मिन्निजमुदहरन्नेत्रकमलम् ।
गतो भक्त्युद्रेकः परिणतिमसौ चक्रवपुषा
त्रयाणां रक्षायै त्रिपुरहर जागर्ति जगताम् ॥१९॥

क्रतौ सुप्ते जाग्रत्त्वमसि फलयोगे क्रतुमताम्
क्व कर्म प्रध्वस्तं फलति पुरूषाराधनमृते ।
अतस्त्वां सम्प्रेक्ष्य क्रतुषु फलदानप्रतिभुवं
श्रुतौ श्रद्धां बद्ध्वादृढपरिकरः कर्मसु जनः ॥२०॥

क्रियादक्षो दक्षः क्रतुपतिरधीशस्तनुभृता-
मृषीणामार्त्त्विज्यं शरणद सदस्याः सुरगणाः ।
क्रतुभ्रे शस्त्वत्तः कृतुषुफलविदानव्यसनिनो
ध्रुवं कर्तुः श्रद्धाविधुरमभिचाराय हि मखाः ॥२१॥

प्रजानाथं नाथ प्रसभमभिकं स्वां दुहितरं
गतं रोहिद्भूतां रिरमयिषुमृष्यस्य वपुषा ।

धनुपाणेर्यातं दिवमपि सपत्राकृतममुम्
त्रसन्तं न्तेऽद्यापि त्यजति न मृगव्याधर भसः ॥२२॥

स्वलावण्याशंसा धृतधनुषमह्माय तृणवत्
पुरः प्लुष्टं दृष्ट्वा पुरमथन पुष्पायुधमपि
यदि स्त्रैणं देवी यमनिरत देहार्द्धघटनाद
अवैति त्वामद्धा बत वरद मुग्धा युवतयः ॥२३॥

स्मशानेष्वाक्रीडा स्मरहर पिशाचाः सहचरा-
श्चिताभस्मालेपः स्त्रगपि नृकरोटी परिकरः ।
अमङ्गल्यं शीलं तव भवतु नामैवमखिलम्
तथाऽपि स्मर्तृणां वरद परमं मङ्गलमसि ॥२४॥

मनः प्रत्यक् चित्ते सविधमवधायात्तमरूतः
प्रहृष्यद्रोमाणः प्रमदसलिलोत्संगितदृशः ।
यदालोक्याह्लादं ह्रद इव निमज्यामृतमये
दधत्यन्तस्तत्त्वं किमपि यमिनस्तत्किलभवान् ॥२५॥

त्वमर्कस्त्वं सोमस्त्वमसि पवनस्त्वं हुतवह-
स्त्वमापस्त्वं व्योम त्वमु धरणिरात्मा त्वमिति च।
परिच्छिन्नामेवं त्वयि परिणता विभ्रतु गिरम्
न विद्मस्तत्तत्त्वं वयमिह तु यत्त्वं न भवसि ॥२६॥

त्रयीं तिस्त्रो वृत्ति स्त्रिभुवनमथो त्रीनपि सुरा-
नकाराद्यैर्वर्णैस्त्रिभिरभिदधत्तीर्ण विकृति ।
तुरीयं ते धाम ध्वनिभिरवरून्धानमणुभिः
समस्तं व्यस्तं त्वां शरणद गृणात्योमितिपदम् ॥२७॥

भवः शर्वो रूद्रः पशुपतिरथोग्रः सहमहाँ-
स्तथा भीमेशानाविति यदभिधानाष्टकमिदम् ।
अमुष्मिन् प्रत्येकं प्रविचरति देव श्रुतिरपि
प्रियायास्मै धाम्ने प्रणिहितनमस्योऽस्मि भवते ॥२८॥

नमो नेदिष्ठाय प्रियदव दविष्ठाय च नमो
नमः क्षोदिष्ठाय स्मरहर महिष्ठाय च नमः
नमो वर्षिष्ठाय त्रिनयन यविष्ठाय च नमो
नमः सर्वस्मै ते तदिदमिति सर्वाय च नमः ॥२९॥

बहुलरजसे विश्वोत्पत्तौ भवाय नमो नमः
प्रबलतमसे तत्संहारे हराय नमो नमः ।
जनसुखकृते सत्वोद्रिक्तौ मृडाय नमो नमः
प्रमहसि पदे निस्त्रैगुण्ये शिवाय नमो नमः ॥३०॥

कृशपरिणति चेतः क्लेशवश्यं क्व चेदम्
क्व च्च तव गुणसीमोल्लंङ्घिनी शश्वदृद्धिः ।
इति चकितममन्दीकृत्य मां भक्तिराधा-
द्वरद चरणयोस्ते वाक्यपुष्पोपहारम् ॥३१॥

असितगिरिसमं स्यात्कज्जलं सिन्धुपात्रे
सुरतरूवरशाखा लेखनी पत्रमुर्व्वी ।
लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालम्
तदपि तव गुणानामीश पारं न याति ॥३२॥

असुरसुरमुनीन्द्रैरर्चितस्येन्दु मौले-
र्ग्रथितगुणमहिम्नो निर्गुणस्येश्वरस्य ।

सकलगुणवरिष्ठः पुष्पदन्ताभिधानो
रूचिरमलघुवृत्तैः स्तोत्रमेतच्चकार ॥३३॥

अहरहरनवद्यं धूर्जटे स्तोत्रमेतत्
पठति परमभक्त्या शुद्धचितः पुमान्यः ।
स भवति शिवलोके रूद्रतुल्यः स्तथाऽत्र
प्रचुरतरधनायुः पुत्रवान् कीर्तिमांश्च ॥३४॥

महेशान्नापरो देवो महिम्नो नापरा स्तुतिः।
अघोरान्नापरो मन्त्रो नास्ति तत्त्वं गुरोः परम् ॥
दीक्षा दानं तपस्तीर्थं, ज्ञानंयागादिकाः क्रियाः।
महिम्नः स्तवपाठस्य कलां नार्हन्ति षोडशीम् ॥३५॥

कुसुमदशननामा सर्वगन्धर्वराजः
शशिधरवर मौलेर्देवदेवस्य दासः ।
स खलु निजमहिम्नो भ्रष्ट एवास्य रोषात्
स्तवनमिदमकार्षीद्दिव्यदिव्यं महिम्नः ॥३६॥

सुरवरमुनिपूज्यं स्वर्गमोक्षैकहेतुं
पठति यदि मनुष्यः प्रान्जलिर्नान्यचेतः ।
ब्रजति शिवसमीपं किन्नरैः स्तूयमानः
स्तवनमिदममोघं पुष्पदन्तप्रणीतम् ॥३७॥

श्री पुष्पदन्त मुख पंकज निर्गतेन
स्तोत्रेण किल्विष हरेण हर प्रियेण ।
कण्ठस्थितेन पठितेन समाहितेन
सुप्रीणितो भवति भुतपतिर्महेशः ॥३८॥

इत्येषा बाड्मयीपूजा श्री मच्छंकर पादयोः
अर्पिता तेन मे देवः प्रीयतां मे सदाशिवः ॥३९॥

तव तत्त्वं न जानामि की दृशोऽसि महेश्वरः ।
यादृशोऽसि महादेवः तादृशाय नमो नमः ॥४०॥

एककालं द्विकालं वा त्रिकालं यः पठेन्नरः ।
सर्वपापविनिर्मुक्तः शिवलोके महीयते ॥४१॥

समाप्तं तदिदं स्तोत्रं सर्वमीश्वरर्णनम्
अनुपमं मनोहारि पुण्यं गन्धर्वभाषितम् ॥४२॥

।। इति भाषाटीकापेतं श्री शिवमहिम्न स्तोत्रम् समाप्॥

संत वाणी

पल में पवन घणेरी चलती, पल में पत्ते हले ना चल ।
पल में पंछी उड़ते देखे, पल में आय कटादे गल ॥
पल में कूप तालाब सुखा दे, पल में करदे जल ही जल ।
पल भर में वह भीख मंगा दे, जिनके लारे लश्कर दल ॥
पल भर में वह राजा कर दे, जिसके कर्म में स्वाती जल ।
पल भर में वो जवान बना दे, पल में कर दे बृद्धाबल ॥
कहते है करता से ड़रिये, करता लावे घड़ी न पल ।

सौराष्ट्रदेशे विशदेऽतिरम्ये, ज्योतिर्मयं चन्द्रकलावतंसम् ।
भक्तिप्रदानाय कृतावतारम्, तं सोमनाथं शरणं प्रपद्ये ॥
जय सोमनाथ

श्री शैलशृंगे विविधप्रसंगे शेषाद्रिशृंगेऽपि सदावसन्तम् ।
तमर्जुनं मल्लिकपूर्वमेकम् नमामि संसारसमुद्रसेतुम् ।।

श्रीमल्लिकार्जुन

"शिव स्तुति" बाबा भूतनाथ धाम, कोलकाता

॥ ॐ नमः शिवाय ॥

❖ शिवतांडव स्तोत्रम् ❖

जटाटवी गलज्जल प्रवाह पावितस्थले
गलेऽवलम्ब्यलम्बितां भुजंग तुंगमलिकाम्।
डमड्डमड्डमड्डम न्निनाद वड्डमर्वयं
चकार चंड तांडवं तनोतु नः शिवः शिवम् ॥ १ ॥

जटाकटाह संभ्रम भ्रमन्निलिंप निर्झरी
विलोल वीचिवल्लरी विराजमान मूर्द्धनी ।
धगद् धगद् धगज्ज्वलल्ललाट पट्ट पावके
किशोर चन्द्रशेखरे रतिः प्रतिक्षणं मम ॥ २ ॥

धराधरेन्द नन्दिनी विलासबन्धु बन्धुर
स्फुरद्दिगन्त सन्तति प्रमोद मान मानसे ।
कृपा कटाक्ष धोरणी निरूद्ध दुर्धरापदि
क्वचिच्चिदम्बरे मनो विनोदमेतु वस्तुनि ॥ ३ ॥

जटा भुजंग पिंगल स्फुरत्फणा मणिप्रभा
कदम्ब कुंकुमद्रव प्रलिप्तदिग्बधु मुखे ।
मदान्ध सिन्धुरस्फुरत्त्वगुरीयमेदुरे
मनोविनोदमद्भुतं बिभर्तुभूत भर्तरि ॥ ४ ॥

सहस्त्रलोचन प्रभृत्य शेषलेख शेखर
प्रसून धूलि धोरणी विधूसरांध्रि पीठभूः ।
भुजंग राजमालया निबद्ध जाट जूटकः
श्रियै चिराय जायतां चकोर बंधु शेखर : ॥ ५ ॥

ललाट चत्वरज्जवल द्धनञ्जय स्फुलिंगभा
निपीत पंच सायकं नमस्त्रिलिंम्प नायकम्।

सुधा मयूखलेखया विराजमान शेखरं
महाकपालि सम्पदे शिरोजटालमस्तु नः ॥ ६ ॥

कराल भाल पट्टिका धगद् धगद् धगज्जवल-
धनंजया हुरीकृत प्रचंड पंच सायके ।
धरा धरेन्द्र नन्दिनी कुचाग्र चित्र पत्रक
प्रकल्पनैक शिल्पिनि त्रिलोचने मतिमर्म ॥ ७ ॥

नवीन मेघमंडली निरूद्ध दुर्द्धरस्फुर-
त्कुहू निशीथिनीतमः प्रबन्धबन्धु कन्धरः ।
निलिम्प निर्झरी धरस्तनोतु कृत्तिसिन्धुरः
कलानिधानबन्धुरःश्रियं जगद्धुरन्धरः ॥ ८ ॥

प्रफुल्ल नील पंकज प्रपंच कालिम प्रभा
वलम्बिकण्ठ कन्दली रूचिप्रबध कन्धरम् ।
स्मरच्छिदं पुरच्छिंदं भवच्छिंद मखच्छिदं
गजच्छिदान्धकच्छि दंतमंत कच्छिदं भजे ॥ ९ ॥

अगर्वसर्व मंगला कला कदम्ब मन्जरी
रस प्रवाह माधुरी विजृम्भणा मधुव्रतम् ।
स्मरान्तकं पुरान्तकं भवान्तकं मखान्तकं
गजांतकाधकांतकं तमन्तकांतकं भजे ॥ १० ॥

जयत्व दभ्र विभ्रमभ्रमभ्दुजग मश्वस-
द्विनिर्गमत्क्रमस्फुर त्कराल भाल हव्यवाट् ।
धिमिद्धिमिद्धिामिध्वनन्मृदङ्ग तुंग मंगल
ध्वनिक्रम प्रवर्तित प्रचण्ड ताण्डवः शिवः ॥ ११ ॥

दृषद्विचित्रतल्पयोभुंजंगमौक्तिकस्त्राजो-
र्गरिष्ठ रत्न लोष्ठयोः सुहृद्विपक्ष पक्षयोः ॥

तृणारविन्द चक्षुषोः प्रजामहीं महेन्द्रयोः
समप्रवृत्तिकः कदा सदा शिवं भजाम्यहम् ॥ १२॥

कदानिलिम्पनिर्झरी निकुन्ज कोटरे वसन्
विमुक्त दुर्मतिः सदा शिरःस्थ मञ्जलिं वहन्।
विलोल लोललोचनो ललाम भाल लग्नकाः
शिवेति मन्त्र मुच्चरन् सदासुखी भवाम्यहम्॥ १३॥

निलिम्प नाथ नागरीकदम्ब मौलि मल्लिका
निगुम्फ निर्झरक्षरन्म मधूष्णिका मनोहरः ।
तनोतु नो मनो मुदं विनोदिनी अहर्निशं -
परः श्रियः परं पदं तदङ्ग जत्विषाञ्चयः ॥ १४॥

प्रचण्ड वाडवानल प्रभा शुभ प्रचारिणी
महाष्ट सिद्धि कामिनी जना बहूत जल्पना ।
विमुक्तवाम लोचना विवाह कालिक ध्वनिः
शिवेतिमन्त्र भूषणा जगज्जयाय जायताम् ॥ १५॥

इदंहि नित्यमेवमुक्तमुत्तमोत्तमं स्तवं
पठन् स्मरन् ब्रुवन्नरो विशुद्ध मेति सन्ततम् ।
हरे गुरौ सुभक्ति माशु याति नान्यथा गतिं
विमोहनं हि देहिनांसुशंकरस्यचिन्तनम् ॥ १६॥

पूजावसान समये दशवक्त्रगीतं
यः शम्भु पूजनमिदं पठति प्रदोषे ।
तस्य स्थिरां रथ गजेन्द्र तुरंग युक्तां
लक्ष्मीं सदैव सुमुखीं प्रददाति शम्भुः ॥ १७॥

॥ इति श्री शिवतांडव स्तोत्रम् ॥

❖ शिव मानस पूजा स्तोत्रम् ❖

रत्नैः कल्पितमासनं हिमजलैः स्नानं च दिव्याम्वरम्
नानारत्नविभूषितं मृगमदामोदाङ्कितं चन्दनम् ।
जातीचम्पक विल्वपत्ररचितं पुष्पं च धूपं तथा,
दीपं देव! दयानिधे! पशुपते! हृत्कल्पिंत गृह्यताम् ॥ १ ॥

सौवर्णे नवरत्नखण्डरचिते पात्रे घृतं पायसं,
भक्ष्यं पंचविधं पयोदधियुतं रम्भाफलं पानकम् ।
शाकानामयुतं जलं रूचिकरं कूर्पर खण्डोज्वलम्,
ताम्बूलं मनसा मया विरचितं भक्त्या प्रभो स्वीकुरू ॥ २ ॥

छत्रं चामरयोर्युगं व्यजनकं चादर्शकं निर्मलं,
वीणाभेरिमृदंग काहलकला गीतं च नृत्यं तथा ।
साष्टांङ्ग प्रणतिः स्तुतिर्बहुविधा ह्येतत्समस्तं मया,
सङ्कल्पेन समर्पितं तव विभो पूजां गृहाण प्रभो ॥ ३ ॥

आत्मा त्वं गिरिजामतिः सहचराः प्राणाः शरीरं गृहं,
पूजा ते विषयोपभोगरचना निद्रा समाधिस्थितिः ।
संचारः पदयोः प्रदक्षिण विधिः स्तोत्राणि सर्वागिरो-
यद्यत्कर्म करोमि तत्तदखिलं शम्भो तवाराधनम् ॥ ४ ॥

करचरणकृतं वाक्कायजं कर्मजं वा,
श्रवणनयनजं वा मानसं वापराधम् ।
विहितमविहितमं वा सर्वमेतत्क्षमस्व,
जय जय करूणाब्धे श्री महादेव शंभो ॥ ५ ॥

☆ ☆ ☆

❖ शिवाष्टकम् ❖

नमामीशमीशान निर्वाणरूपं ।
विभुं व्यापकं ब्रह्म वेदस्वरूपं ।
निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं ।
चिदाकाशमाकाशवासं भजेऽहं ॥ १ ॥

निराकारमोंकारमूलं तुरीयं ।
गिरा ज्ञान गोतीतमीशं गिरीशं ॥
करालं महाकालकालं कृपालं ।
गुणागार संसारपारं नतोऽहं ॥ २ ॥

तुषाराद्रि संकाश गौरं गभीरं ।
मनोभूत कोटि प्रभा श्रीशरीरं ॥
स्फुरन्मौलिकल्लोलिनी चारू गंगा ।
लसद्भालबालेन्दु कंठे भुजंगा ॥ ३ ॥

चलत्कुंडलं भ्रू सुनेत्रं विशालं ।
प्रसन्नाननं नीलकंठं दयालं ॥
मृगाधीशचर्माम्बरं मुण्डमालं ।
प्रियं शंकरं सर्वनाथं भजामि ॥ ४ ॥

प्रचंडं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं ।
अखंडं अजं भानुकोटिप्रकाशं ॥

भयः शूल निर्मलनं शुलापाणिं ।
भजेऽहं भवानीपतिं भावगम्यं ॥ ५ ॥

कलातीत कल्याण कल्पान्तकारी ।
सदा सज्जनानन्ददाता पुरारी ।
चिदानंद संदोह मोहापहारी ।
प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी ॥ ६ ॥

न यावद् उमानाथ पादारविन्दं ।
भजंतीह लोके परे वा नराणां ।
न तावत्सुखं शान्ति सन्तापनाशं ।
प्रसीद प्रभो सर्वभूतधिवासं ॥ ७ ॥

न जानामि योगं जपं नैव पूजां ।
नतोऽहं सदा सर्वदा शंभु तुभ्यं ॥
जरा जन्म दुःखौधता तप्यमानं ।
प्रभो पाहि आपन्नमामीश शंभो ॥ ८ ॥

रूद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतोषये ।
ये पठन्ति नरा भक्त्या तेषां शम्भुः प्रसिादति ॥ ९ ॥

गुरु गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागू पाय।
बलिहारी गुरु आपकी, गोविन्द दियो बताय।

❖ शिवाष्टकम् ❖

प्रभुं प्राणनाथं विभुं विश्वनाथं जगन्नाथ नाथं सदानन्द भाजम् ।
भवद्भव्यभूतेश्वरं भूतनाथं शिवं शंकरं शम्भुमीशानमीडे ॥ १ ॥

गले रूण्डमालं तनौ सर्पजालं महाकालकालं गणेशाधिपालम् ।
जटाजूटगङ्गैत्तरङ्गैर्विशालं शिवं शंकरं शम्भुमीशानमी ॥ २ ॥

मुदामाकरं मण्डनं मण्डयन्तं महामण्डलं भस्मभूषाधरंतम् ।
अनादि ह्यपारं महामोहमारं शिवं शंकरं शम्भुमीशानमीडे ॥ ३ ॥

तटोधीनिवासं महाट्टाट्टहासं महापापनाशं सदा सुप्रकाशम् ।
गिरीशं गणेशं सुरेशं महेशं शिवं शंकरं शम्भुमीशानमीडे ॥ ४ ॥

गिरीन्द्रात्मजासंगृहीतार्धदेहं गिरौसंस्थितं सर्वदासन्नगेहम् ।
परब्रह्मब्रह्मादिर्भिर्वन्द्यमानं शिवं शंकरं शम्भुमीशानमीडे ॥ ५ ॥

कपालं त्रिशुलं कराभ्यां दधानं पदाम्भोजनभ्राय कामं ददानम् ।
बलीवर्दयानं सुराणां प्रधानं शिवं शंकरं शम्भुमीशानमीडे ॥ ६ ॥

शरच्चन्द्रगात्रं गुणानन्दपात्रं त्रिनेत्रं पवित्रं धनेशस्य मित्रम् ।
अपर्णाकलत्रं चरित्रं विचित्रं शिवं शंकरं शम्भुमीशानमीडे ॥ ७ ॥

हरं सर्पहारं चित्ताभूविहारं भवं वेदसारं सदा निर्विकारम् ।
श्मशाने वसन्तं मनोजं दहन्तं शिवं शंकर शम्भुमीशानमीडे ॥ ८ ॥

स्तवं यः प्रभाते नरः शूलपाणेः पठेत्सर्वदा भर्गभावानुरक्तः
सुपुत्रं धनं धान्यमित्रं कलत्रं विचित्रं समासाद्य मोक्षं प्रयति ॥ ९ ॥

॥ इति श्री शिवाष्टकम् सम्पूर्णम् ॥

❖ शिवाष्टकम् ❖

जय शिवशंकर, जय गंगाधर, करूणाकर करतार हरे,
जय कैलाशी, जय अविनाशी, सुखराशी, सुख-सार हरे,
जय शशि-शेखर, जय- डमरू-धर, जय जय प्रेमागार हरे,
जय त्रिपुरारी, जय मदहारी, अमित अनन्त अपार हरे,
निर्गुण जय जय, सगुण अनामय, निराकार, साकार हरे,
पारवती पति, हर हर शम्भो, पाहि पाहि दातार हरे ॥ १॥
जय रामेश्वर, जय नागेश्वर, बैद्यनाथ, केदार हरे,
मल्लिकार्जुन, सोमनाथ जय, महाकाल ओंकार हरे,
त्र्यम्बकेश्वर, जय घुश्मेश्वर, भीमेश्वर जगतार हरे,
काशीपति, श्री विश्वनाथ जय, मंगलमय अघ-हार हरे,
नीलकण्ठ जय, भूतनाथ जय, मृत्युञ्जंय अविकार हरे,
पारवती पति हर हर शम्भो, पाहि पाहि दातार हरे ॥ २॥
जय महेश, जय जय भवेश, जय आदि देव महादेव विभो,
किस मुख से हे गुणातीत प्रभु, तब अपार गुण वर्णन हो,
जय भवकारक, तारक, हारक, पातक-दारक, शिव शम्भो,
दीन दुःखहर, सर्ब सुखाकर, प्रेम सुधाकर दया करो,
पार लगा दो भवसागर से, बनकर कर्णाधार हरे,
पारवती पति हर हर शम्भो, पाहि पाहि दातार हरे ॥ ३॥
जय मन भावन, जय अतिपावन, शोक नशावन शिव शम्भो,
विपद विदारन, अधम उबारन, सत्य सनातन शिव शम्भो,
सहज वचन हर, जलज-नयन-वर, धवल-वरन-तन शिवशम्भो,
मदन-कदन-कर पाप-हरन-हर, चरन-मनन-धन शिव शम्भो,
विवसन, विश्वरूप, प्रलयंकर, जग के मूला धार हरे,

पारवती पति हर हर शम्भो, पाहि पाहि दातार हरे ॥ ४॥
भोलानाथ कृपालु दयामय, औघड़दानी शिव योगी,
निमिष मात्र में देते हैं नवनिधि मनमानी शिव योगी,
सरल हृदय अतिकरूणा सागर, अकथ कहनी शिव योगी,
भक्तों पर सर्वस्व लुटा कर बने मसाद्री शिव योगी,
स्वयं अकिंचन जनमन रंजन पर शिव परम उदार हरे ।
पारवती पति हर हर शम्भो, पाहि पाहि दातार हरे ॥ ५॥
आशुतोष इस मोह-मयी निद्रा से मुझे जगा देना,
विषय-वेदना से विषयों को माया-धीश छुड़ा देना,
रूप-सुधा की एक बूंद से जीवन मुक्त बना देना,
दिव्य-ज्ञान-भण्डार-युगल-चरणों की लगन लगा देना,
एक बार इस मन मन्दिर में कीजे पद संचार हरे,
पारवती पति हर हर शम्भो, पाहि पाहि दातार हरे ॥ ६॥
दानी हो, दो भिक्षा में अपनी अनपायनि भक्ति प्रभो,
शक्तिमान हो, दो तुम इस संसार से पूर्ण विरक्ति प्रभो,
परमपिता हो, दो तुम अपने चरणों में अनुरक्ति प्रभो,
पूरण ब्रह्म हो, दो तुम अपने रूप का सच्चा ज्ञान प्रभो,
स्वामी हो, निज सेवक की सुन लेना करूण पुकार हरे।
पारवती पति हर हर शम्भो, पाहि पाहि दातार हरे ॥ ७॥
तुम बिन बेकल हूँ प्राणेश्वर आ जाओ भगवन्त हरे,
चरण शरण की बांह गहो, हे उमा-रमण प्रियकन्त हरे,
विरह व्यथित हूँ, दीन दुःखी हूँ, दीन दयालु अनन्त हरे,
आओ तुम मेरे हो जाओ, आ जाओ श्रीमन्त हरे,
मेरी इस दयनीय दशा पर, कुछ तो करो विचार हरे,
पारवती पति हर हर शम्भो, पाहि पाहि दातार हरे ॥ ८॥

❖ श्रीशिवरामाष्टकम् ❖

शिव हरे शिवराम सखे प्रभो,
त्रिविधताप निवारण हे विभो।
अज जनेश्वर यादव पाहिमां,
शिवहरे विजयं कुरु मे वरम् ।१।

कमललोचन राम दयानिधे,
हर गुरो गजरक्षक गोपते।
शिवतनो भवशङ्कर पाहिमां,
शिवहरे विजयं कुरु मे वरम् ।२।

स्वजनरञ्जन मङ्गलमन्दिरं,
भजति ते पुरुषः परमं पदम्।
भवति तस्य सुखं परमाद्भुतं,
शिवहरे विजयं कुरु मे वरम् ।३।

जय युधिष्ठिर बल्लभ भूपते,
जय जयार्जित पुण्य पयोनिधे।
जय कृपामय कृष्णा नमोऽस्तुते,
शिवहरे विजयं कुरु मे वरम् ।४।

भव विमोचन माधव मापते,
सुकविमानस हँस शिवारते।
जनकजारत राघव रक्षमां,
शिवहरे विजयं कुरु मे वरम्।५।

अवनि मण्डल मङ्गल मापते,
जलद सुन्दर राम रमापते।
निगम कीर्ति गणार्णव गोपते,
शिवहरे विजयं कुरु मे वरम् । ६।

पतित पावन नाममयी लता,
तव यशो विमलं परिगीयते।
तदपि मधवमां किमुपेक्षसे,
शिवहरे विजयं कुरु मे वरम् । ७।

अमरता पर देव रमापते,
विजयत्तस्तव नाम घनोपमा।
मयि कथं करुणार्णव जायते,
शिवहरे विजयं कुरु मे वरम् । ८।

हनुमतः प्रियचाप कर प्रभो,
सुरसरिद्रधृत शेखर हे गुरो।
मम विभो किमु विस्मरणं कृतं,
शिवहरे विजयं कुरू मे वरम्। ९।

नरहरे रतिरञ्जन सुन्दरं,
पठति यः शिवराम कृतस्तवम्।
विशति रामरमा चरणांबुजे,
शिवहरे विजयं कुरू मे वरम् । १०।

पूजाकाले च यो भक्त्या पठेदेकाग्रमानसः ।
विजयो जायते तस्य विष्णुमाराध्यमाप्नुयात्। ११॥

❖ शकंराष्टकम् ❖

हे वामदेव शिवशंकर दीनबन्धो
काशीपते पशुपते पशुपाशनाशिन् ।
हे विश्वनाथ भवबीज जनार्तिहारिन्
संसार दुःख - गहनाज्जगदीश रक्ष ॥ १ ॥

हे भक्तवत्सल सदाशिव हे महेश
हे विश्वतात जगदाश्रय हे पुरारे ।
गौरीपते मम पते मम प्राणनाथ
संसार दुःखगहनाज्जगदीश रक्ष ॥ २ ॥

हे दुःखभन्जक विभो गिरिजेश शूलिन्
हे वेदशास्त्र - विनिवेद्य जनैकबन्धो ।
हे व्योमकेश भुवनेश जगद्विशिष्ट
संसार दुःखगहनाज्जगदीश रक्ष ॥ ३ ॥

हे धूर्जटि गिरिश हे गिरिजार्धदेह
हे सर्वभूतजनक प्रथमेश देव ।
हे सर्वदेव -परिपूजित - पादपद्म
संसार दुःखगहनाज्जगदीश रक्ष ॥ ४ ॥

हे देवदेव वृषभध्वज नन्दिकेश
कालीपते गणपते गजचर्मवास ।
हे पार्वतीश परमेश्वर रक्ष शम्भो
संसार दुःखगहनाज्जगदीश रक्ष ॥ ५ ॥

हे वीरभद्र भववैद्य पिनाकपाणे
हे नीलकण्ठ मदनान्त शिवाकलत्र ।
वाराणसीपुरपते भवभीतिहारिन्
संसार दु:खगहनाज्जगदीश रक्ष ॥ ६॥

हे कालकाल मृड शर्व सदासहाय
हे भूतनाथ भवबाधक हे त्रिनेत्र।
हे यज्ञशासक यमान्तक योगिवन्द्य
संसार दु:खगहनाज्जगदीश रक्ष ॥ ७॥

हे वेदवेद्य शशिशेखर हे दयालो
हे सर्वभूतप्रतिपालक शूलपाणे।
हे चन्द्रसूर्य शिखिनेत्र चिदेकरूप
संसार दु:खगहनाज्जगदीश रक्ष ॥ ८॥

श्रीशङ्कराष्टकमिदं स्तोत्रं योगनन्देन निर्मितम् ।
सांय प्रात: पठेन्नित्यं सर्वपापविनाशकम् ॥ ९॥

इति योगानन्दतीर्थविरचितं शङ्कराष्टक सम्पूर्णम् ।

अमृत बिन्दू

* **बच्चे का जन्म क्रन्दन से होता है जन्म संघर्ष के लिये है। क्रन्दन हमारी नियति है। इससे उबर सके–यह कठिन श्रम की अपेक्षा है। श्रम कमल है, जन्म कीचड़ में, पत्ते गन्दे पानी में, सौन्दर्यबोधक पुष्प पानी के ऊपर यह ऊपरी सतह क्रन्दन और श्रम के बाद की स्थिति है।**
* **वस्तु एक है : किसी के लिए निमर्म, किसी के लिए सुखद।**
* **संसार छोड़ना, संसार में रहने से बड़ी बात है। लेकिन संसार में रहना और संसार को छोड़कर रहना, संसार छोड़ने से भी बड़ी बात है।**

❖ शिवपंचाक्षरस्तोत्र ❖

नागेन्द्रहराय त्रिलोचनाय, भस्माङ्गरागाय महेश्वराय।
नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय, तस्मै 'न' काराय नमः शिवाय ॥ १॥

मंदाकिनीसलिलचन्दनचर्चिताय, नन्दीश्वर प्रमथनाथ महेश्वराय ।
मन्दारपुष्प बहुपुष्पसुपूजिताय, तस्मै 'मः' काराय नमः शिवाय ॥ २॥

शिवाय गौरीवदनाब्जवृन्द - सूर्याय दक्षाध्वरनाशकाय ।
श्री नीलकण्ठाय वृषध्वजाय, तस्मै 'शि' काराय नमः शिवाय ॥ ३॥

वसिष्ठकूम्भोद्भव गौतमार्य, मुनीन्द्र देवार्चिशेखराय ।
चन्द्रार्क वैश्वानरलोचनाय, तस्मै 'वा' काराय नमः शिवाय ॥ ४॥

यक्षस्वरूपाय जटाधराय, पिनाकहस्ताय सनातनाय।
दिव्याय देवाय दिगम्बराय, तस्मै 'य' काराय नमः शिवाय ॥ ५॥

पञ्चाक्षरमिदं, पुण्यं, यः पठेच्छिवासन्निधौ ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते ॥ ६॥

❖ पुष्पाञ्जलि ❖

सेवन्तिका वकुल चम्पक पाटलाब्जैः
पुन्नाग जाति करवीर रसाल पुष्पैः
बिल्वप्रवाल तुलसीदास मञ्जरीभिः
त्वाम्पूजयामि जगदीश्वर में प्रसीद ॥
नाना सुगन्धि पुष्पाणि यथा कालोभ्द्वानि च।
पुष्पाञ्जलिर्मयादत्तः गृहाण परमेश्वर ॥

❖ श्रीषडक्षर शिवस्तोत्रम् ❖

ओंकारं विन्दु संयुक्तं नित्यं ध्यायन्ति योगिनः।
कामदं मोक्षदं चैव ॐकाराय नमो नमः ॥ १ ॥

नमन्ति ऋषयो देवाः नमन्त्सप्सरसांगणा।
नराः नमन्ति देवेशं नकाराय नमो नमः ॥ २ ॥

महादेवं महात्मानं महाध्यानपरायणम्।
महापापहरं देवं मकाराय नमो नमः॥ ३ ॥

शिवं शान्तं जगन्नाथं लोकानुग्रहकारकम्।
शिवमेकपदं नित्यं शिकाराय नमो नमः॥ ४ ॥

वाहनं वृषभो यस्य वासुकिः कण्ठभूषणम्।
वामे शक्तिधरं देवं वकाराय नमो नमः॥ ५ ॥

यत्र-यत्र स्थितो देवः सर्वव्यापी महेश्वरः।
यो गुरुः सर्वदेवानां यकाराय नमो नमः॥ ६ ॥

षडक्षरमिदं स्तोत्रं यः पठेच्छिवसन्निधौ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते॥ ७ ॥

॥ इति श्रीषडक्षर स्तोत्रम् ॥

पार्वती-फणि-वालेन्दुः, भस्म-मन्दाकिनी तथा।
पवर्गमण्डिता मूर्तिः अपवर्गफलप्रदा॥

ऐसी वाणी बोलिये, मन का आपा खोय।
औरों को शीतल करे, आपहुँ शीतल होय॥

❖ लिंगाष्टक स्तोत्रम् ❖

ब्रह्म-मुरारि - सुरार्चित - लिंगम्
निर्म्मल - भासित- शोभित- लिंगम् ।
जन्मज - दुख - विनाशक - लिंगम्
तत् प्रणममिसदाशिव-लिंगम् ॥ १॥

देवमुनि प्रवाराच्चिंत -लिंगम्
कामदहं करूणाकर-लिंगम् ।
रावणदर्प - विनाशन - लिंगम्
तत् प्रणमामि सदाशिव-लिंगम् ॥ २॥

सर्व्वसुंगधि - सुलेपित - लिंगम्
बुद्धि-विवर्द्धन - कारण - लिंगम ।
सिद्ध-सुरासुर - व़न्दित - लिंगम्
तत् प्रणमामि सदाशिव-लिंगम् ॥ ३॥

कनक-महामणि -भूषित - लिंगम्
फणिपति - वेष्टित - शोभित - लिंगम् ।
दक्ष - सुयज्ञ - विनाशन - लिंगम् ।
तंत् प्रणमामि सदाशिव-लिंगम् ॥ ४॥

कुंकम - चन्दन - लेपित - लिंगम्
पंकजहार - सुशोभित - लिंगम्
शच्चिंत्पाप - विनाशन - लिंगम्
तत् प्रणमामि सदाशिव-लिंगम् ॥ ५॥

❖ शिव पूजन की मुख्य बातें ❖

किसी भी देव-पूजन में मनुष्य को स्नान आदि से शुद्ध तो होना ही पड़ता है, यदि सम्भव हो और कठिनाई न हो तो पूजा करने वाले को सिले हुए वस्त्र पहने हुए नहीं होना चाहिए। आसन शुद्ध होना चाहिए। पूजा के समय पूर्व या उत्तर मुख बैठ जाना चाहिए। संकल्प किया जाना चाहिए। शिव-पूजन के लिए निम्न बातों पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए -

(१) भस्म, त्रिपुण्ड और रुद्राक्ष माला - ये शिव पूजन के लिए विशेष सामग्री है जो पूजक के शरीर पर होनी चाहिए ।

(२) भगवान शंकर की पूजा में तिल का प्रयोग नहीं होता और किसी भी चम्पा का पुष्प नहीं चढ़ाया जाता।

(३) शिव की पूजा में भी दूर्वा, तुलसी - दल चढ़ाया जाता है- इसमें सन्देह नहीं किया जाना चाहिए। अवश्य ही तुलसी की मंजरियों से पूजा अधिक श्रेष्ठ मानी जाती है।

(४) शंकर जी के लिए विशेष पुष्प और पत्र में बिल्व-पत्र प्रधान है, किन्तु बिल्व-पत्र में चक्र और वज्र नहीं होना चाहिए। बिल्व-पत्र में कीड़ों के द्वारा बनाया हुआ जो सफेद चिन्ह होता है उसे चक्र कहते हैं और बिल्व-पत्र के डण्ठल की ओर जो थोड़ा सा मोटा भाग होता है वह वज्र कहा जाता है। वह भाग तोड़ देना चाहिए। कीड़ों से खाया हुआ, कटा फटा बिल्व-पत्र भी शिव-पूजा के योग्य नहीं होता। आक का फूल, धतूरे का फल भी शिव-पूजा की विशेष सामग्री है, किन्तु सर्वश्रेष्ठ पुष्प है नीलकमल का । उसके अभाव में कोई भी कमल का पुष्प भगवान शंकर को बहुत प्रिय है। कुमुदिनी-पुष्प अथवा कमलिनी-पुष्प का प्रयोग भी शिव-पूजा में होता है। बिल्व-पत्र चढ़ाते समय बिल्व-पत्र का

चिकना भाग मूर्ति की ओर रहे - इस प्रकार चढ़ाया जाना चाहिए ।

(५) बिल्व-पत्रों में तीन से लेकर ग्यारह दलों तक के बिल्व-पत्र प्राप्त होते हैं। ये जितने अधिक पत्रों के हों, उतना ही उत्तम माना जाता है, किन्तु यदि तीन में से कोई दल टूट गया हो तो वह बिल्व-पत्र चढ़ाने योग्य नहीं है।

(६) तुलसी और बिल्व-पत्र सर्वदा शुद्ध माने जाते हैं। ये बासी नहीं होते। कुन्द, तमाल, आँवला, कमल-पुष्प, अगस्त्य पुष्प - ये भी पहले दिन तोड़कर लाए हुए दूसरे दिन उपयोग में आते हैं। एक दिन में इनको बासी नहीं माना जाता है।

(७) भगवान शंकर के पूजन के समय करताल नहीं बजाया जाता।

(८) शिव की परिक्रमा में सम्पूर्ण परिक्रमा नहीं की जाती। जिधर से चढ़ा हुआ जल निकलता है उस नाली का उल्लंघन नहीं किया जाना चाहिए। वहाँ ये प्रदक्षिणा उल्टी की जाती है।

भगवन् प्राप्ति की सात बातें

(१) भगवान की प्राप्ति इच्छा से होती है।

(२) भगवान प्राप्त होने पर कभी बिछुड़ते नहीं ।

(३) भगवान की प्राप्ति जब होती है पूरी होती है ।

(४) भगवान को प्राप्त करने की इच्छा होते ही पापों का नाश होने लगता है।

(५) भगवान को प्राप्त करने की साधना में शांति मिलती है।

(६) भगवान का स्मरण करते हुए मरने वाला सुख शान्ति-पूर्वक मरता है।

(७) भगवान का स्मरण करते हुए मरने वाला निश्चय ही भगवान को प्राप्त होता है।

अवन्तिकायां विहितावतारम् मुक्तिप्रदानाय च सज्जनानाम् ।
अकालमृत्योः परिरक्षणार्थम् वन्दे महाकालमहं सुरेशम् ॥

श्री महाकालेश्वर
"शिव स्तुति" बाबा भूतनाथ धाम, कोलकाता

कावेरिकानर्मदयोः पवित्र समागमे सज्जनतारणाय ।
सदैव मांधातपुरे वसन्तम् ओंकारमीशं शिवमेकमीडे ॥

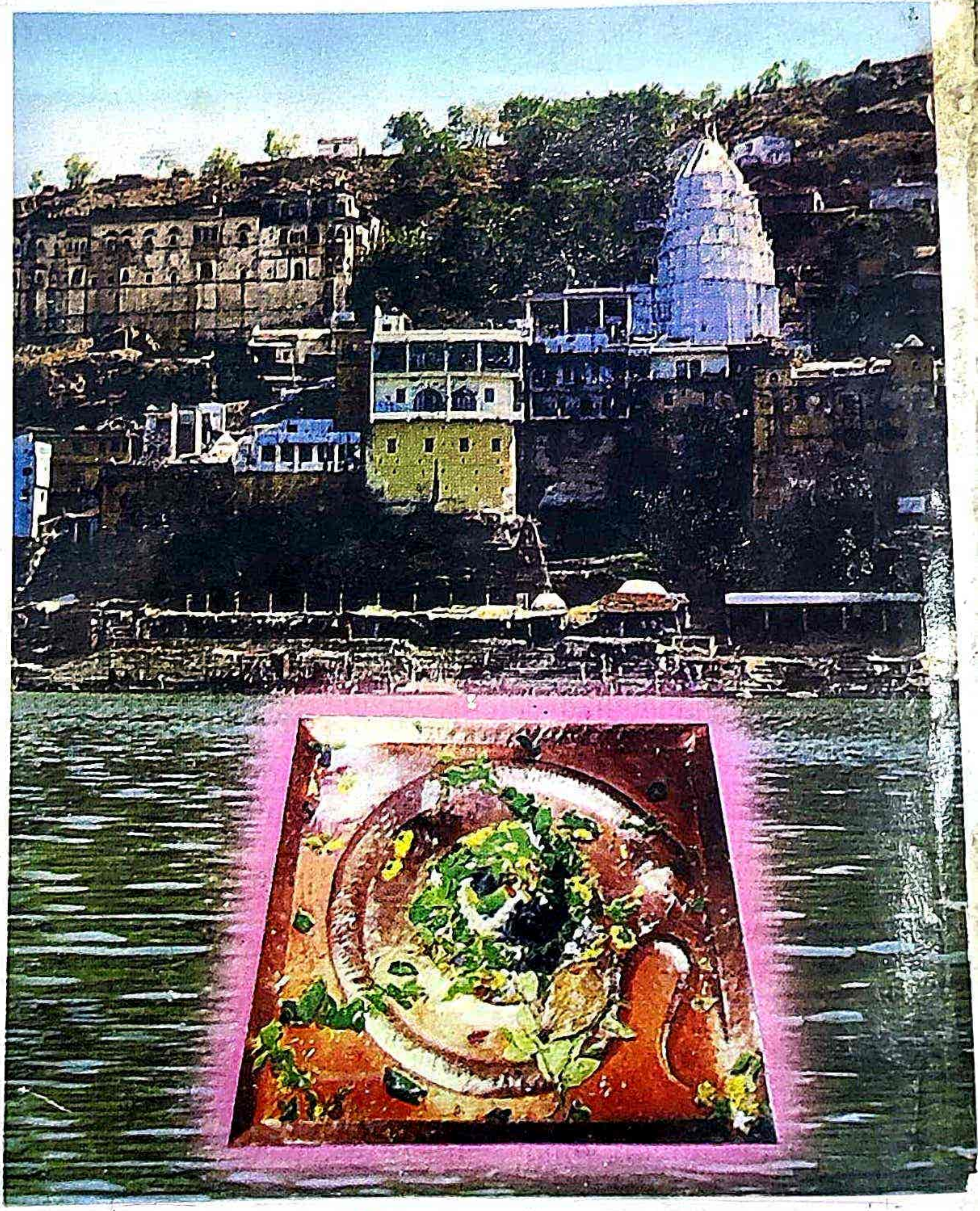

श्री ओंकारेश्वर

"शिव स्तुति" बाबा भूतनाथ धाम, कोलकाता

देवगणार्च्चित - सेवित - लिंगम्
भावैर्भक्तिभिरेव च लिंगम्
दिनकर - कोटि - प्रभाकर - लिंगम्
तत् प्रणमामि सदाशिव-लिंगम् ॥ ६॥

अष्टदक्तोपरि - वेष्टित - लिंगम्
सर्वसमुद्भव - कारण - लिंगम् ।
अष्ट दरिद्र - विनाशित - लिंगम्
तत् प्रणमामि सदाशिव-लिंगम् ॥ ७॥

सुरगुरू - सुरवर - पूजित - लिंगम्
सुर - वनपुष्प - सदार्चित - लिंगम् ।
परमगतिद - परमात्मक - लिंगम्
तत् प्रणमामि सदाशिव-लिंगम् ॥ ८॥

लिंगाष्टकमिदं पुण्यं यः पठेच्छिव सन्निधौ
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते ।

तीन सभ्य है,

१. अकड़ कर न चलने वाले
२. तिरछी नजर से न देखने वाले
३. मुख से गाली न देने वाले

तीन लोगों से दूर रहो

१. धर्म कर्म को न मानने वाले से
२. देश के द्रोह रखने वाले से
३. सत्पुरूषों की निन्दा करने वाले से

❖ भूतपत्यष्टक स्तोत्रम् ❖

पशुपतिं द्युमतिं धरणी पति, भुजगलोक पतिं च सती पतिम् ।
प्रणत भक्त जनार्ति हरं परं, भजत रे मनुजा, गिरिजा पतिम् ॥ १॥

न जननी जनको न च सोदरो, नतनयो न च भूरि बलं कुलम् ।
अवति कोऽपि न कालवशं गतं, भजत रे मनुजा गिरिजा पतिम्॥ २॥

मुरज डिण्डिम वाद्य विलक्षणं, मधुर पञ्चम नाद विशारदम् ।
प्रमथ भूत गणैरपि सेवितं, भजत रे मनुजा, गिरिजा पतिम् ॥ ३॥

शरणदं सुखदं शरणान्वितं, शिव शिवेति शिवेति नतं नृगाम्।
अभयदं करूणा वरूणालयं, भजत रे मनुजा गिरिजा पतिम् ॥ ४॥

नरशिरो रचितं मणि कुण्डलं, भुजंग हारमुदं बृषभध्वजम् ।
चिति रचो ध्वली कृत विग्रहं, भजत रे मनुजा गिरिजा पतिम् ॥ ५॥

मख विनाश करं शशिशेखरं, सतत मध्वर भाजि फलप्रदम् ।
प्रलय दग्ध सुरासुर मानवं, भजत रे मनुजा गिरिजा पतिम् ॥ ६॥

मदमपास्य चिरं हृदि संस्थितं, मरण जन्म-जरा भय पीड़ितम् ।
जग दुदीक्ष्य समपी भया कुलं, भजत रे मनुजा गिरिजा पतिम् ॥ ७॥

हरि विरंचि सुराधिप पूजितं, यम जनेश धनेश नमस्कृतम् ।
त्रिनयनं भुवनं त्रितयाधिपं, भजत रे मनुजा गिरिजा पतिम् ॥ ८॥

पशुपतेरिदमष्टकमद्भुतं तापतं, विरचितं पृथिवी पति सूरिणा ।
पठति सं श्रृणुते मनुजः सदा, शिवपुरी वसते लभते मुदम् ॥ ९॥

★ ★ ★

❖ बिल्व स्तोत्रम् ❖

ॐ त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं च त्रिधायुधम् ।
त्रिजन्म पाप संहारं एक बिल्वं शिवार्पणम् ॥ १ ॥
अखण्डं बिल्वंत्रप च पूजयेनन्दि शंकरम् ।
मुच्यते सर्वपापेभ्यो एक बिल्वं शिवार्पणम् ॥ २ ॥
शालग्रामेतु विप्रांणाम तड़ागादिषु कूपयो: ।
यज्ञकोटि सहस्त्रेण एक बिल्वं शिवार्पणम् ॥ ३ ॥
मेरू कांचन यद्दानं गवां कोटि शतै रपि ।
कोटि कन्या महा दानं एक बिल्वं शिवार्पणम् ॥ ४ ॥
न वर्णो न च गन्धं न च पुष्पं न च कोमलम् ।
यज्ञकोटि सहस्त्रैस्तु एक बिल्वं शिवार्पणम् ॥ ५ ॥
दर्शनं बिल्व पत्रस्य स्पर्शनं पापनाशनम् ।
यज्ञ कोटि समंदानं एक बिल्वं शिवार्पणम् ॥ ६ ॥
त्रिशाखै: बिल्व पत्रैश्च अछिद्रै: कोमलै: शुभै: ।
तव पूजां करिष्यामि एक बिल्वं शिवार्षणम् ॥ ७ ॥
तुलसी बिल्व निवेश्व जंबीरै रामलै: शुभै: ।
पंच बिल्वं मिति ख्यातं प्रसीद परमेश्वर ॥ ८ ॥
नमस्कारादि संयुक्तं शिव इत्यक्षर द्वयं ।
जिह्वाग्रे वसते यस्य सफलं तस्य जीवनम ॥ ९ ॥
उमया संत देवेश वाहनं नन्दि भूषणम् ।
तव पूजां करिष्यामि एक बिल्वं शिवार्पणम ॥ १० ॥
अज्ञानेन कृतं पापं स्मरणेन विनश्यति ।
तव पूजां करिष्यामि एक बिल्वं शिवार्पणम् ॥ ११ ॥

॥ इति बिल्व स्तोत्रम् सम्पूर्णम् ॥

❖ शिव - कवचम् ❖

ॐ नमो भगवते सदाशिवाय सकलतत्त्वात्मकाय सर्वमन्त्रस्वरूपाय सर्वयन्त्राधिष्ठिताय सर्वतन्त्रस्वरूपाय सर्वतत्त्वविदूराय ब्रह्मरुद्रावतारिणे नीलकण्ठाय पार्वतीमनोहरणप्रियाय सोमसूर्याग्निलोचनाय भस्मोद्धूलितविग्रहाय महामणिमुकुटधारणाय माणिक्यभूषणाय सृष्टिस्थिति-प्रलय-कालरौद्रावताराय दक्षाऽध्वरध्वंसकाय महाकालभेदनाय मुलाधारैकनिलयाय तत्त्वातीताय गङ्गाधराय सर्वदेवाधिदेवाय षडाश्रयाय वेदान्तसाराय त्रिवर्गसाधनायाऽनन्तकोटि - ब्रह्माण्डनायकायाऽनन्तवासुकितक्षककर्कोटकशङ्खकुलिक पद्ममहापद्मोणात्यष्टमहानागकुलभूषय प्रणवस्वरूपाय चिदाकाशायऽऽकाशदिक्स्वरूपाया ग्रहनक्षत्र मालिने सकलाय कलङ्करहिताय सकललोकैककर्त्रे सकललोकैकभर्त्रे सकललोकैकसंहर्त्रे सकललोकैकगुरवेसकललोकैकसाक्षिणे सकलनिगम गुह्याय सकल वेदान्तपारगाय सकललोकैकवरप्रदाय सकललोकैक शङ्कराय शंशाङ्कशेखराय शाश्वतनिजावासाय निराभासाय निरामयाय निर्मलाय

निर्लोभाय निर्मदाय निश्चिन्ताय निरहङ्कराय निरङ्कुशाय निष्कलङ्काय निर्गुणाय निष्कामाय निरुपप्लवाय निश्वद्याय निरन्तराय निष्कारणाय निरातङ्काय निष्प्रपञ्चाय नि:सङ्गाय निर्द्वन्द्वाय निराधाराय निरागाय निष्क्रोधाय निर्मलाय निष्पापाय निर्भयाय निर्विकल्पाय निर्भेदाय निष्क्रियाय निस्तुलाय नि:संशयाय निरञ्जनाय निरुपमविभवाय नित्यशुद्धबुद्धपरिपुर्णसच्चिदानन्दाद्वयाय परमशान्तस्वरूपाय तेजोरूपाय तेजामयाय जय जय।

रूद्र! महारौद्र! भद्रावतार! महाभैरव! कालभैरव! कल्पान्तभैरव! कपालमालाधर! खट्वाङ्गखड्गचर्मपाशाङ्कुशडमरुशूलचाप - बाण - गदा - शक्ति - भिन्दि पाल - तोमर - मुसल - मुद्गर -पाश - परिघ - भुशुण्डीशतघ्नी चक्राद्यायुधभीषकर! सहस्त्रमुखदंष्ट्राकरालवदन! विकटाट्टहास - विस्फारित - ब्रह्माण्डमण्डल! नागेन्द्रकुण्डल! नागेन्द्रहार! नागेन्द्रवलय! नागेन्द्रचर्मधर! मृत्युञ्जय! त्र्यम्बक! त्रिपुरान्तक! विश्वरूप! विरूपाक्ष! विश्वेश्वर! वृषभवाह्न! विषविभूषण! विश्वतोमुख! सर्वतो रक्ष रक्ष मां ज्वल ज्वल।

महामृत्युमपमृत्युभयंनाशय नाशय चोरभय मुत्सादयोत्सादय विषसर्पभयंशमय शमय चोरान् मारय मारय मम शत्रूनुच्चाटय्योच्चाटय त्रिशूलेन विदारय विदारय कुठारेण भिन्धि भिन्धि खड्गेन छिन्धि छिन्धि खट्वाङ्गेन विपोथय विपोथय मुसलेन निष्पेषय निष्पेष्य बाणैः सन्ताडय सन्ताडय रक्षांसि भीषय भीषयाऽशेषभूतानि विद्रावय विद्रावय कूष्माण्ड-वेताल-मारीच-ब्रह्मराक्षसगणान् सन्त्रासय सन्त्रासय माम भयं कुरु कुरु वित्रस्तं मामाश्वासयाऽऽश्वासय नरकमहाभयान् मामुद्धरोद्धर सञ्जीवय सञ्जीवय क्षुत्तृड्भ्यां मामाप्याययाप्यायय दुःखातुरं मामानन्दयाऽऽनन्दय शिवकवचेन मामाच्छादयाऽऽच्छादय मृत्युञ्जय! त्र्यम्बक! सदाशिव! नमस्ते नमस्ते ।

इति स्कन्दपुराणे ब्रह्मोत्तरखण्डे शिवकवचं समाप्तम् ।

यह दुःख कहीं भी नहीं है। तुम्हारी कल्पना में है, कामना में है, वासना में है। सुख का सूत्र है – जो तुम्हारे पास है उसके लिये परमात्मा को धन्यवाद दो।

जो नहीं है, उसको देखना, और जो है उसको नहीं देखना इस तरह की विकृत मनोदशा का नाम ही नरक है।

इच्छा– आत्मा और मन का एक मिश्रण है, शुद्ध आत्मा जब माया में आबद्ध होती है, तो उसकी प्रथम अभिव्यक्ति ईच्छा के रूप में होती है। इस प्रकार इच्छा– चैतन्य और जड़, प्रकाश और अन्धकार – इन दो लड़ियों से मिलकर बनी है।

❖ अथ गणेशाम्बिका पूजनम् ❖

ॐश्वेताङ्गं श्वेतवस्त्रं सितकुसुमगणैः पूजितं श्वेत गन्धैः,
क्षीराब्धौ रत्नदीपैः सुरतरूविमले रत्नसिंहासनस्थम्।
दोर्भिर्पाशाङ्कुशेष्टा भयघृति विशदं चन्द्रमौलिं त्रिनेत्रम्,
ध्यायेच्छान्त्यर्थ मीशं गणपति ममलं श्रीसमेतं प्रसन्नम्॥

ॐ गणानान्त्वा गणपति ठः हवामहे,
प्रियाणान्त्वा प्रियपति ठः हमामहे।
निधीनान्त्वा निधिपति ठः हवामहे वसोमम,
आहम जानि गर्ब्भधमात्वमजासि गर्ब्भधम्॥
ॐ अम्बेऽअम्बिकेम्बालिके नमानयति कश्चन।
ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकाङ्कापीलवासिनीम्॥

ध्यायामि, स्थापयामि, आसनार्थे पुष्पाणि, पादयोपर्धि, हस्तयोरअर्ध्य, मुखे अचमनं, सर्वाङ् गे स्नानं, पंचामृत स्नानं,पंचामृत स्नानान्ते शुद्धोदक स्नानं, वस्त्रोपवस्त्रं, वस्त्रान्ते आचमनं, यज्ञोपवीतं यज्ञोपवीतान्ते आचमनं, गन्धं, कुङ्.कुम, अक्षतान्, पुष्पाणि, दूर्वाङ्कुरान्, धूपमाघ्रापयामि। प्रत्यक्षंदीपं दर्शयामि दीपदार्नान्ते हस्त प्रक्षालनम्, हस्तप्रोञ्छनम्, नैवेद्यं निवेदयामि नैवैद्यान्ते आचमनम् अखण्ड ऋतुफलं ऋतुफलान्ते आचमनं, मुखवासार्थे एला लंवग ताम्बुलं, दक्षिणां समर्पयामि॥

अथ विशेपार्घ्यः — रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष! रक्ष त्रैलोक्यरक्षक भक्तानांअभयङ्तार्त्रकता भव भवार्णवान्।। द्वैमातुर! कृपासिन्धो! षाण्मातुराग्रज! प्रभो!, वरदस्त्यं वरं देहि वाञ्छितं वाञ्छितार्थद! गृहाणार्घ्य मिदं देव! सम्पूर्ण फल हेतवे। अनेन सफलर्ध्येण फलदोऽस्तु सदा मम्॥

❖ अभिषेक ❖

ॐ नमस्ते रूद्र मन्यव उतौ त इषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः॥ १॥ या ते रूद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी। तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचकशोहि॥ २॥ यामिषुं गिरिशन्त हस्ते बिभर्व्यस्तवे। शिवं गिरित्र ता कुरू माहि ँ सीः पुरूषं जगत्॥ ३॥ शिवेन वचसा त्वा गिरिशाच्छावदामसि। यथा नः सर्वमिज्जगदयक्ष्म ँ सुमना असत्॥ ४॥ अध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक्। अहींश्च सर्वान् जम्भयन् सर्वाश्च यातुधान्यऽधराचीः परासुव॥ ५॥ असौ यस्ताम्रो अरूण उत बभ्रुः सुमङ्गलः। ये चैन ँ यद्रा अभितो दिक्षु श्रिताः सहस्रशोऽवैषा ँ हेड ईमहे॥ ६॥ असौ योऽवसपीति नीलग्रीवो विलेहितः। उतैनं गोपा अदृश्रन्नदृश्रन्नुदहार्यः स दृष्टो मृडयाति नः॥ ७॥ नमोऽस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे। अथो ये अस्य सत्वानोऽहं तेभ्योऽकरन्नमः ॥ ८॥ प्रभुञ्च धन्वनस्तत्वमुभयोरात्र्योंर्ज्याम्। याश्चते हस्त इषवः परा ता भगतो वप॥ ९॥ विज्यं धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवाँ ३ उत। अनेशन्नस्य या इषव आभुरस्य निषङ्गधिः ॥ १०॥ या ते हेतिर्मीढुष्टम हस्ते बभूव ते धनुः। तयास्मान्विशतस्त्वमयक्ष्मया परिभुज॥ ११॥ परि ते धन्वनो हेतिरस्मान् वृणक्तु विश्वतः। अथो य इषुधिस्तवारे अस्मित्रधेहितम्॥ १२॥ अवतत्य धनुष्ट्व ँ सबस्राक्ष शतेषुधे। निशीर्यशल्यानां मुखाशिवो नः सुमना भव॥ १३॥ नमस्त आयुधायानातताय धृष्णवे। उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यां तव धन्वने॥ १४॥ मा नो महान्तमुत मा नो अर्भकं मा न उक्षन्तमुत मा न उक्षितम्। मा नो वधीः पितरं मौत मातरं मा नः प्रियास्तन्वो रूद्र रीरिषः ॥ १५॥ मा नस्तोके तनये मा न आयुषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः। मा नो वीरान् रूद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे॥ १६॥

॥ अभिषेकं समर्पयामि॥

❖ शिवोपासना में रूद्राक्ष का महत्त्व ❖

वेदमें तीन काण्ड प्रसिद्ध है- कर्मकाण्ड, उपासना काण्ड और ज्ञानकाण्ड। एक लक्ष मन्त्रों में अस्सी सहस्त्र मन्त्र कर्मकाण्ड के, सोलह सहस्त्र मन्त्र उपासना काण्ड के और चार सहस्त्र मन्त्र ज्ञानकाण्ड के हैं।

उपासना के सोलह सहस्त्र मन्त्रो में उपासना की विधि वेद में सूत्ररूप से और कहीं-कहीं विस्तृत रुप से भी वर्णित है। उन्हीं सूत्रों की व्याख्या पुराण में दर्शनो में विस्तृत रूप से वर्णित है। इसी संदर्भ में शिवोपासना का भी वर्णन है। शिवोपासना का मूल शैव सिद्धान्त (पाशुपतदर्शन) है।

शिवोपासना की दार्शनिकता

'दृशिर् प्रेक्षणे' धातु से दर्शन शब्द की निष्पत्ति होती है। प्रेक्षण अर्थात् देखना 'दृश्यते अनेन इति दर्शनम्' पदार्थो के यथार्थ ज्ञान के साधन का नाम दर्शन है, उन साधनों से उस परमतत्त्व का ज्ञान होने में ही दर्शन का तात्पर्य है।

भूतभावन आशुतोष भगवान् शंकरके स्वरूपको जानने में पाशुपत दर्शन में जिन पदार्थों का वर्णन किया गया है, उनका निरूपण संक्षेप में इस प्रकार है- (१) कार्य, (२) कारण, (३) योग, (४) विधि और (५) दुःखान्त। इन पाँच पदार्थो का वर्णन ब्रह्मसूत्र के द्वितीय अध्याय के द्वितीय पाद के सैंतीसवें सूत्र 'पतयुरसामञ्जस्यात्' में भी भाष्यकार तथा टीकाकारों ने उल्लेख किया है। दर्शनकार के अनुसार इन्हीं पाँच पदार्थो का बोधकर जीव के पशुपाश का विमोचन होता है। अर्थात् अज्ञानी जीव पशु है, कर्मादि बन्धन पाश है, ये ही बन्धन जन्म-मरण के हेतु है। इस जन्म-मरण के चक्र से मुक्त होने के लिये ही शैव दर्शन का विधान किया गया है। इसी दार्शनिक शैली में शिवोपासना का वर्णन मिलता है।

शिवोपासना में रूद्राक्ष मुख्य अंग है, इस कारण रूद्राक्ष का विशिष्ट महत्त्व बताया गया है।

❖ रूद्राक्ष की उत्पत्ति ❖

'रूद्रस्य अक्षि रूद्राक्षः, अक्ष्युपलक्षितम् अश्रु तज्जनयः वृक्ष' अर्थात् शंकरजी के अश्रुओं से उत्पन्न हुआ वृक्ष रूद्राक्ष वृक्ष हुआ। श्री मद्देवीभागवत में इस संदर्भ में एक कथा भी उपसब्ध है- एक बार आशुतोष भगवान् शंकर ने देवताओं एवं मनुष्यों के हित की भावना से त्रिपुरासुर का वध करना चाहा और एक सहस्त्र वर्षो तक तपस्या की तथा अघोरास्त्र का चिन्तन किया, भगवान् की आँखों से अश्रुविन्दु गिरे, उन्हीं अश्रुओं से रूद्राक्ष के महान् वृक्षों की उत्पत्ति हुई।

रूद्राक्ष की उत्पत्ति गौड़ देश में हुई, तदनन्तर इन देशों में भी रूद्राक्ष उत्पन्न हुआ जैसे मथुरा, अयोध्या, लंका, मलय, सह्याद्रि और काशी।

रूद्राक्ष के वर्ण और धारण में अधिकार

रूद्राक्ष चार वर्ण का होता है श्वेत, रक्त पीत और कृष्ण। इसी प्रकार वर्ण-भेद से रूद्राक्ष धारण करने की विधि है-ब्राह्मण को श्वेत वर्णका, क्षत्रिय को रक्त वर्ण का, वैश्य को पीत वर्ण का और शूद्र को कृष्ण वर्ण का रूद्राक्ष धारण करने की विधि है।

सर्वाश्रमाणां वर्णानां स्त्रीशुद्राणां

शिवाज्ञया धार्याः सदैव रूद्राक्षाः ।

सभी आश्रमों एवं वर्णो तथा स्त्री और शूद्रों को सदैव रूद्राक्ष धारण करना चाहिये, यह शिवजी की आज्ञा है।

रूद्राक्ष के मुख और धारण-विधि

शास्त्रोंमें रूद्राक्ष के एक मुख से चौदह मुख तक का वर्णन प्रशस्त है। रूद्राक्ष दो जाति के होते है। रूद्राक्ष तथा भद्राक्ष-रूद्राक्षाणां तु

भद्राक्षः स्यान्महाफलम्' (दे॰ भा॰ ११।७।६)। रूद्राक्ष के मध्य में भद्राक्षका धारण करना भी महान् फलदायक होता है।'' रूद्राक्ष में स्वयं छिद्र होता है- 'स्वयमेव कृतं द्वारं रूद्राक्षंस्यादिहोत्तमम् यत्तू पौरूषयत्नेन कृतं तन्मध्यमं भवेत्।

(रूद्रा॰ जाबालो॰ १२-१३)। जिस रूद्राक्ष में स्वयं छिद्र होता है, वह उत्तम होता है, पुरूष-प्रयत्न से किया गया छिद्र मध्यम कोटि का माना गया है ।

एक मुखी रूद्राक्ष के विशिष्ट महत्त्व का वर्णन इस प्रकार किया गया है- 'एकवक्त्रं तु रूद्राक्षं परतत्त्वस्वरूपकम्'

एकमुखी रूद्राक्ष साक्षात् शिव तथा परतत्त्व (परब्रह्म) स्वरूप है और परतत्व प्रकाशक भी है। और 'ब्रह्महत्यां व्यपोहति' (दे. भा॰ ११।४) ब्रह्महत्या का नाश करने वाला है, इसको धारण करने का मन्त्र यह है -

'ॐ ह्री नमः' 'द्विवक्त्रं तु मुनिश्रेष्ठ चार्धनारीश्वरात्मकम्'

द्विमुखी रूद्राक्ष साक्षात् अर्धनारीश्वर है, इसको धारण करने से शिव-पार्वती प्रसन्न हो जाते है। 'ॐ नमः' इस मन से द्विमुखी रूद्राक्ष धारण करना चाहिये।

'त्रिमुखं चैव रूद्राक्षमग्नित्रयस्वरूपकम्'

त्रिमुखी रूद्राक्ष तीनों अग्नियों (गार्हपत्य, आहवनीय और दक्षिणग्नि) का स्वरूप है। तीन मुख वाले रूद्राक्ष को धारण करने से ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है। 'ॐ क्लीं नमः' यह त्रिमुखी रूद्राक्ष धारण करने का मन्त्र है।

'चतुर्मुखं तु रूद्राक्षं चतुर्वक्त्रस्वरूपकम्।'

चर्तुमुखी रूद्राक्ष साक्षात् ब्रह्माजी का स्वरूप है। इस रूद्राक्ष-धारण

से संतति की प्राप्ति होती है। 'ॐ ह्रीं नमः' यह इसके धारण करने का मन्त्र है।

'पञ्चवक्त्रं तु रूद्राक्षं पञ्चब्रह्मस्वरूपकम्'

पञ्चमुखी रूद्राक्ष पञ्चदेवों (विष्णु, शिव, गणेश, सूर्य और देवी) का स्वरूप है। इसके धारण करनेसे नरहत्याके पापसे प्राणी मुक्त हो जाता है। पञ्चमुखी को 'ॐ ह्रीं नमः' इस मन्त्र से धारण करना चाहिये।

'षड्वक्त्रमपि रूद्राक्षं कार्तिकेयाधिदैवतम्'

षण्मुखी रूद्राक्ष साक्षात् कार्तिकेय है। इसके धारण करने से श्री एवं आरोग्य की प्राप्ति होती है। 'ॐ हृीं नमः' इस मन्त्र से इसे धारण करना चाहिये।

'सप्तवक्त्रो महाभागो ह्यनंगो नाम नामतः'

सप्तमुखी रूद्राक्ष अनंग नाम वाला है। इसके धारण करने से स्वर्णतेयी स्वर्णचोरी के पाप से मुक्त हो जाता है। 'ॐ हुं नमः' यह धारण करनेका मन्त्र है।

'अष्टवक्त्रो महादेवः साक्षी देवो विनायकः'

अष्टमुखी रूद्राक्ष साक्षात् साक्षी विनायक है और इसके धारण करने से पञ्च पातकों का विनाश होता है। 'ॐ हूं नमः' इस मन्त्र से धारण करने से परमपद की प्राप्ति होती है।

नववक्त्रं तु रूद्राक्षं नवशक्त्याधिदैवतम् ।
तस्य धारणमात्रेण प्रीयन्ते नव शक्तयः।।

नवमुखी रूद्राक्ष नव दुर्गा का प्रतीक है। उसको 'ॐ ह्रीं हुं नमः' इस मन्त्र से बायें भुजदण्ड पर धारण करने से नव शक्तियाँ प्रसन्न हो जाती है।

'दशवक्त्रस्तु देवेश: साक्षाद्देवो जनार्दन:

दशमुखी रूद्राक्ष साक्षात् भगवान् जनार्दन है। 'ॐ ह्रीं नम:' इस मन्त्रसे धारण करने पर साधक की पूर्णायु होती है और शान्ति प्राप्त करता है।

'एकादशमुखं त्वक्षं रूद्रैकादशदैवतम्'
एकदशमुखो यस्तु रूद्राक्ष: परमेश्वरि।
स रूद्रो धारणात् तस्य सर्वत्र विजयी भवेत्॥

(शि० पु० वि० सं० २५ । ७५)

एकादशमुखी रूद्राक्ष 'ॐ ह्रीं हुं नम:' इस मन्त्र से धारण करना चाहिये। धारक साक्षात् रूद्ररूप होकर सर्वत्र विजयी होता है।

रूद्राक्षं द्वादशमुखं महाविष्णुस्वरूपकम् ।
द्वादशादित्यरूपं च बिभर्त्येव हितत्परम् ॥

द्वादशमुखी रूद्राक्ष साक्षात् महाविष्णु का स्वरूप है। 'ॐ क्रौं क्षौं रौं नम:' इस मन्त्र से धारण करने से धारक साक्षात् विष्णु को ही धारण करता है। इसे कानमें धारण करे। इससे अवश्मेधादि का फल प्राप्त होता है।

त्रयोदशमुखं त्वक्षं कामदं सिद्धिदं शुभम् ।
तस्य धारणमात्रेण कामदेव: प्रसीदति ॥

त्रयोदशमुखी रूद्राक्ष धारण करने से सम्पूर्ण कामनाओं की पूर्तिपूर्वक कामदेव प्रसन्न हो जाते है। 'ॐ ही नम:' इस मन्त्र से इसे धारण करना चाहिये।

चतुर्दशमुखं त्वक्षं रूद्रनेत्रसमुभ्दवम्।
सर्वव्याधिहरं चैव सर्वदारोग्यमाप्नुयात्॥

(रूद्राक्षजाबाल ०१६)

चतुर्दशमुखी रूद्राक्ष रूद्र की अक्षि से उत्पन्न हुआ, वह भगवान् का नेत्र-स्वरूप है। 'ॐ नमः' इस मन्त्र से धारण करने पर यह रूद्राक्ष सभी व्याधियों को हर लेता है ।

रूद्राक्ष धारण करने में वर्जित पदार्थ

रूद्राक्ष धारण करने वाले को निम्नलिखित पदार्थो का वर्जन (त्याग) करना चाहिये-

मद्यं मांसं च लसुनं पलाण्डुं शिग्रुमेव च ।
श्लेष्मातकं विड्वराहमभक्ष्यं वर्जयेन्नरः ॥

रूद्राक्ष धारण करने पर मद्य, मांस, लहसुन, प्याज, सहजन, लिसोडा और विड्वराह (ग्राम्यसूकर) इन पदार्थो का परित्याग करना चाहिये।

रूद्राक्षको मन्त्रपूर्वक ही धारण करे

विना मन्त्रेण यो धत्ते रूद्राक्षं भुवि मानवः ।
स याति नरकं घोरं यावदिन्द्राश्चतुर्दश ॥

बिना मन्त्रोच्चारण के रूद्राक्ष धारण करने वाला मनुष्य घोर नरक में तब तक रहता है, जब तक चौदह इन्द्रों का राज्य रहता है।

रूद्राक्ष को शुभ मुहूर्त में धारण करे

ग्रहणें विषुवे चैवमयने संक्रमेऽपि वा ।
दुर्शेषु पूर्णमासे च पूर्णेषु दिवसेषु च ।
रूद्राक्षधारणात् सद्यः सर्वपापैर्विमुच्यते ॥

ग्रहण विषुवसंक्रान्ति (मेषार्क तथा तुलार्क) के दिन कर्क-संक्रान्ति और मकर-संक्रान्ति, अमावास्या, पूर्णिमा एवं पूर्णा तिथि को रूद्राक्ष धारण करने से सद्यः सम्पूर्ण पापों से निवृत्ति हो जाती है।

❖ रुद्राक्ष ❖

आंवले के सदृश्य रुद्राक्ष श्रेष्ठ है। बेर के सदृश्य रुद्राक्ष मध्यम है तथा छोटे आकार का रुद्राक्ष सम्पूर्ण कामनाओं को पूर्ण करने वाला है। रुद्राक्ष गोल तथा कीट भक्षित, क्षत-विक्षत रहित होना चाहिए। रुद्राक्ष में स्वभावतः छिद्र रहते हैं यह प्रायः देखने में आता है और वहीं रुद्राक्ष सर्वोत्तम है और सब मध्यम है ।

रुद्राक्ष एक मुखी से चौदह मुखी तक प्राप्त है ऐसा शिव पुराण-देवी भागवतादि पुराणों में वर्णन है। इन सबों का प्रभाव भी भिन्न-भिन्न है। जैसे :-

एक मुखी – यह सभी प्रकार के उपद्रवों का नाश करता है और जहाँ रहता है वहाँ लक्ष्मी स्थिर रहती है।

दो मुखी – यह सभी प्रकार की कामनाओं की सिद्धि देता है तथा गोहत्या जैसे पाप का भी दोष दूर करता है।

तीन मुखी – यह विद्या प्रदान करने वाला है ।

चार मुखी – यह धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का देने वाला है तथा मनुष्य हत्या के पाप के दोष को भी दूर करता है ।

पाँच मुखी – यह सभी मनोकामनाओं को पूर्ण करता है तथा सभी पाप दोष दूर करता है। मोक्ष भी प्रदान करता है। यही अधिक पाया जाता है।

छः मुखी – यह ब्रह्म हत्या आदि पापों के दोष को दूर करता है।

सात मुखी – यह दरिद्रता को दूर कर धनवान बनाता है ।

आठ मुखी – यह सभी प्रकार के विघ्नों का नाश करता है। अल्पायु को दीर्घायु प्रदान करता है।

नौ मुखी – यह ऐश्वर्य की वृद्धि करता है।

दस मुखी – यह सभी कामनाओं की पूर्ति करता है ।

ग्यारह मुखी – यह सभी जगह विजय कराता है।

बारह मुखी – यह नेत्र के दोषों को दूर करता है तथा बुद्धि तथा स्वास्थ में उन्नति करता है।

तेरह मुखी – यह सौभाग्य तथा मंगल दायक है ।

चौदह मुखी – यह सभी पापों का क्षय करता है और परमोच्च पद प्राप्त कराता है। यह रुद्राक्ष दुलर्भ है।

३० रुद्राक्षों से बनाई गई माला जपने से धन देने वाली, २७ रुद्राक्षों से बनी माला जपने से मुक्ति देने वाली, १५ रुद्राक्षों से निर्मित माला जपने से आभिचारक फल (मारण सिद्धि) प्रदान करने वाली और १०८ रुद्राक्षों की माला से किया गया जप सभी कामना सिद्ध करता है।

❖ आत्म चिंतन ❖

जो हुआ अच्छा हुआ।
जो हो रहा है वह अच्छा हो रहा है।
जो होगा वह भी अच्छा होगा।

तुम्हारा क्या गया जो तुम रोते हो ?
तुम क्या लाये थे जो तुमने खो दिया।
जो आज तुम्हारा है, कल किसी और का था।
परसों किसी और का होगा।
परिवर्त्तन संसार का नियम है।
क्यों व्यर्थ चिंता करते हो।
न यह शरीर तुम्हारा है न ही तुम शरीर के हो।
आत्मा तुम्हारी है, आत्मा अमर है।
तेरा मेरा, छोटा बड़ा, अपना पराया मन से मिटा दो।
फिर सब तुम्हारा है तुम सबके हो।

❖ शिव-स्तुति ❖

वन्दे देवउमापतिं सुरगुरूं वन्दे जगत्कारणं।
वन्दे पन्नगभूषणं मृगधरं वन्दे पशूनां पतिम्।
वन्दे सूर्यशशाङ्कवाहिनयनं वन्दे मुकुन्दप्रियं
वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शङ्करम् ॥१॥

असितगिरिसमं स्यात् कज्जलं सिन्धुपात्रे
सुरतरूवरशखा लेखनी पत्रमुर्वी
लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं
तदपि तव गुणानामीश पारं न याति ॥२॥

❖ गणेशस्तोत्रम् ❖

प्रणम्य शिरसा देवं गौरीपुत्रं विनायकम् ।
भक्तावासं स्मरेन्नित्यमायु: कामार्थसिद्धये ॥ १ ॥

प्रथमं वक्रतुण्डं च एकदन्तं द्वितीयकम्
तृतीयं कृष्णपिंङ्गक्षं गजवक्त्रं चतुर्थकम् ॥ २ ॥

लम्बोदरं पचमं च षष्ठं विकटमेव च ।
सप्तम विध्नराजं च धूम्रवर्ण तथाष्टकम् ॥ ३ ॥

नवमं भालचन्द्रं च दशमं तु विनायकम् ।
एकादशं गणपतिं द्वादशं तु गजाननम् ॥ ४ ॥

द्वादशैतानि नामानि त्रिसन्ध्यं य पठेन्नर: ।
न च विध्नभयं तस्य सर्वासिद्धिकरं प्रभो ॥ ५ ॥

विद्यार्थी लभते विद्यां धनार्थी लभते धनम् ।
पुत्रार्थी लभते पुत्रान्मोक्षार्थी लभते गतिम् ॥ ६ ॥

जपेद्गणपतिस्तोत्रं षडभिर्मासै: फलं लभेत् ।
संवत्सरेण सिद्धिं च लभते नात्र संशय: ॥ ७ ॥

अष्टभ्यो ब्राह्मणेभ्यश्च लिखित्वा य: समर्पयेत् ।
तस्य विद्या भेवेत्सर्वा गणेशस्य प्रसादत: ॥ ८ ॥

* * *

❖ अन्नपुर्णास्तोत्रम् ❖

नित्यानन्दकरी वराभयकरी सौन्दर्यरत्न करी
निर्धूताखिलघोरपावनकरी प्रत्यक्षमाहेश्वरी ।
प्रालेयाचलवंशपावनकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ॥ १ ॥

नानारत्नविचित्रभूषणकरी हेमाम्बराडम्बरी
मुक्ताहारविलम्बमानविलसद्वक्षोजकुम्भान्तरी ।
काश्मीराऽगुरुवासिता रुचिकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ॥ २ ॥

योगानन्दकरी रिपुक्षयकरी धर्माऽर्थनिष्ठाकरी
चन्द्राकनिलभासमानलहरी त्रैलोक्यरक्षाकरी ।
सर्वैंश्वर्य-समस्त-वाञ्छितकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकारी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ॥ ३ ॥

कैलासाचलकन्दरालयकरी गौरी उमा शंकरी
कौमारी निगमार्थगोचरकरी ओङ्कारबीजाक्षरी ।
मोक्षद्वारकपाटपाटनकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ॥ ४ ॥

दृश्याऽदृश्य-प्रभूतवाहनकरी ब्रह्मण्डभाण्डोदरी
लीलानाटकसुत्रभेदनकरी विज्ञानदीपाङ्करी ।
श्रीविश्वेशमनः प्रसादनकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ॥ ५ ॥

उर्वी सर्वजनेश्वरी भगवती माताऽन्नपूर्णेश्वरी
वेणीनील - समान - कुन्तलहरी नित्यान्नदानेश्वरी

सर्वानन्दकरी दृशां शुभकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ॥ ६॥

आदिक्षान्त - समस्तवर्णनकरी शम्भोस्त्रिभावाकरी
काश्मीरा त्रिजलेश्वरी त्रिलहरी नित्याङ्करा शर्वरी ।
कामाकांक्षकरी जनोदयकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ॥ ७॥

देवी सर्वविचित्ररत्नरचिता दाक्षायणी सुन्दरी
वामस्वादु - पर्योधर - प्रियकरी सौभाग्यमाहेश्वरी ।
भक्ताभीष्टकरी दशाशुभकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ॥ ८॥

चन्द्रार्कानिलकोटि-कोटिसदृशा चन्द्रांशुबिम्बाधरी
चन्द्रार्काग्निसमानकुन्तलहरी चन्द्रार्कवर्णेश्वरी ।
माला-पुस्तक-पाश - साङ्कशधरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ॥ ९॥

क्षत्रत्राणकरी महाऽभयकारी माता कृपासागरी
साक्षान्मोक्षकरी सदा शिवकरी विश्वेश्वरी श्रीधरी ।
दक्षाक्रन्दकरी निरामयकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ॥ १०॥

अन्नपूर्णे सदापूर्णे शङ्करप्राणवल्लभे ।
ज्ञान-वैराग्यसिद्ध्यर्थं भिक्षां देहि च पार्वती ॥ ११॥

माता च पार्वती देवी पिता देवो महेश्वरः।
बान्धवाः शिवभक्ताश्च स्वदेशो भुवनत्रयम् ॥ १२॥

❖ अपराजितास्तोत्रम् ❖

गणेशाय नमः -ॐ अस्य श्री अपराजिता मन्त्रस्य वेदव्यास ऋषिरनुष्टुप् छन्दः। क्लीं बीजं हूँ शक्तिः सर्वाभिष्टसिद्ध्यर्थे जपे पाठे विनियोगः।

मार्कण्डेय उवाच "श्रृणुध्वं मुनयः सर्वे सर्वकामार्थसिद्धिदाम्। असिद्धसाधनीं देवी वैष्णवीमपराजिताम्॥" ध्यानम्-

नीलोत्पल-दल श्यामां भुजङ्गाभरणोज्वलाम्,
बालेन्दु-मौलिसदृशीं नयनत्रितयान्विताम्।
शंखचक्रधरां देवी वरदां भयशालिनीम्,
पीनोत्तुङ्गस्तनीं साध्वीं बद्ध-पद्मासनां शिवाम्।
अजितां चिन्तयेद्देवीं वैष्णवीमपराजिताम्॥
शुद्धस्फटिक संकाशां चन्द्रकोटि -सुशीतलाम् ,
अभयां वर-हस्तां च श्वेतवस्त्रैरलंकृताम्।
नानाभरण-संयुक्तां जयन्तीमपराजिताम्,
त्रिसन्ध्यं यः स्मरेद्दें वीं ततः स्तोत्रं पठेत्सुधीः॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय। ॐ नमोस्त्वनन्ताय सहस्त्रशीर्षाय क्षीरार्णवशायिने, शेषभोग-पर्यङ्काय गरुड़-वाहनाय अमोघाय अजाय अजिताय अपराजिताय पीतवाससे। वसुदेव-संकर्षण-प्रद्युम्नानिरुद्ध-हयशीर्ष-मत्स्यकूर्मवराहनृसिंहवामनरामराम वर-प्रद! नमोस्तु ते। असुर दैत्यदानव-यक्ष-राक्षस -भूत-प्रेत-पिशाचकिन्नर कूष्माण्ड-सिद्ध-योगिनी-डाकिनी-स्कन्दपुरोगान् ग्रहान्नक्षत्रग्रहांश्चा न्यान् हन हन, पच, पच, मथ, मथ विध्वसय, विध्वंसय , विद्रावय, विद्रावय, चूर्णय, चूर्णय शंखेन, चर्केण, वज्रेण, शूलेन, गदया, मुसलेन, हलेन, भस्मीकुरु, कुरु, स्वाहा ॥ ॐ सहस्त्रवाहो सहस्त्रप्रहरणायुध जय, जय, विजय,

विजय, अजित अमित अपराजित अप्रतिहत सहस्त्रनेत्र ज्वल, ज्वल, प्रज्वल, प्रज्वल, विश्वरुप, बहुरूप मधुसूदन महावराहच्युत महापुरुष पुरुषोत्तम पद्मनाभ वैकुण्ठानिरुद्ध नारायण-गोविन्द दामोदर हृषीकेश केशव सर्वासुरोत्सादन सर्वमन्त्र-प्रभञ्जन, सर्वदेवनमस्कृत सर्वबन्धनविमोचन, सर्वशत्रुवशंकर, सर्वाहितप्रमर्दन, सर्वग्रहनिवारण, सर्वरोगप्रशमन, सर्व-पाप विनाशन, जनार्दन नमोस्तु ते स्वाहा। य इमां अपराजितां परमवैष्णवीं पठति, सिद्धां जपति, सिद्धां महाविद्यां पठति, जपति, स्मरति, श्रृणोति, धारयति, कीर्तयति वा न तस्याग्निवायुर्वज्रोपलाशनिभयं नववर्षणि भयं, न समुद्रभयं न ग्रह-भयं न चौर-भयं वा भवेत्। कच्चिद्रात्र्यन्धकारस्त्रीराजकुविषो-पविषगरलवशीकरणविद्वेषोच्चाटनवधवन्धनभयं वा न भवेत्। एतैर्मन्त्रः सदाहतैः सिद्धैः संसिद्ध पूजितैः तद्यथा ॐ नमस्तेस्त्वनघेऽजितेऽपराजिते, पठति सिद्धे, पठति सिद्धे, जपति सिद्धे, जपति सिद्धे, स्मरति सिद्धे महाविद्ये एकादशे उमे ध्रुवे अरुन्धति सावित्रि, गायत्रि, जातवेदसि मानस्तो के सरस्वति धरणि धारिणि सौदामिनि अदिति दिति गौरि गांधारी मातंगी कृष्णे यशोदे सत्यवादिनि ब्रह्मवादिनि कालि कपालि करालनेत्रे सद्योपयाचितकरिजलगतस्थलगतमंतरिक्षगं वा मां रक्ष रक्ष सर्वभूतेभ्यः

सर्वोपद्रवेभ्यः, स्वाहा।

यस्याः प्रणश्यते पुष्पं गर्भो वा पतते यदि ।
म्रियन्ते बालका यस्याः काकवन्ध्या च या भवेत्॥
भूर्जपत्रेत्विमां विद्यां लिखित्वा धारयेद्यदि।
एतैर्दोषैर्न लिप्येत सुभगा पुत्रिणी भवेत्॥
शस्त्रं वार्यते ह्येषा समरे काण्डवारिणी।
गुल्मशूलाक्षि-रोगाणां क्षिप्रं नाशयते व्यथाम्॥

शिरोरोगज्वराणां च नाशिनी सर्वदेहिनाम् तद्यथा-एकाहिक द्वयाहिक-त्र्याहिक-चातुर्थिकार्धमासिक-द्वैमासिक-त्रैमासिक-चतुर्मासिक पञ्चमासिक षाण्मासिक-वातिक-पैत्तिक श्लेष्मिक, सान्निपातिक सततज्वर-विषमज्वराणां नाशिनी सर्व देहिनां ओं हर हर कालि सर सर गौरि धम धम विद्ये आले ताले माले गन्धे पच पच विद्ये मथ मथ विद्यं, नाशय पापं , हर दुःस्वप्नं, विनाशय मातः, रजनि सन्ध्ये दुन्दुभिनादे मानसवेगे शंखिनी चक्रिणी वज्रिणी शूलिनी अपमृत्यु विनाशिनी विश्वेश्वरी द्राविडि द्राविडि केशवदयिते, पशुपतिसहिते, दुन्दुभिनादे मानसवेगे दुन्दुभि-दमनी शवरि किराती मातंगी ॐ ह्रां ह्रींह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः ओं ओं श्रां श्रुं श्रैं श्रौं श्रः ॐ क्ष्वौ तुरु तुरु स्वाह । ॐ ये इमां द्विषन्ति प्रत्यक्षं परोक्षं वा तान् दम दम मर्दय मर्दय पातय पातय शोषय शोषय उत्सादय उत्सादय ब्रह्माणि माहेश्वरि ।

वैष्णवी वैनायकी कौमारी नारसिंही ऐन्द्री चान्द्री आग्नेयी चामुंडे वारुणि वायव्ये रक्ष रक्ष प्रचण्डविद्ये ॐ इन्द्रोपेन्द्र-भगिनी जये विजये शान्तिपुष्टितुष्टिविवर्द्धिनी ॥ कामांकुशे कामदुधे सर्व कामफलप्रदे सर्वभूतेषु मां प्रियं कुरु कुरु स्वाह । ॐ आकर्षिणी आवेशिनी तापिनी, धरणि धारिणी मदोन्मादिनी शोषिणी सम्मोहिनी महानीले नीलपताके महागौरि महाप्रिये महानान्द्रिका महासौरि महामायूरि आदित्यरश्मिनी जाह्नवी यमघण्टे किलि किलि चिन्तामणि सुरभिसुरोत्पन्ने सर्व-काम-दुधे यथाभिलषिंत कार्य तन्मे सिध्यतु स्वाहा। ॐ भूः स्वाहा। ॐ भुवः स्वाहा। ॐ स्वः स्वाहा। ॐ भूर्भुवः स्वःस्वाहा। ॐ यत एवागतं पापं तत्रैव प्रतिगच्छतु स्वाहा। ॐ बले बले महाबले असिद्धि साधिनी स्वाहा।

॥ इति श्रीत्रैलोक्यविजया अपराजिता सम्पूर्णा ॥

यह स्तोत्र सुख शान्ति के लिये, धन के लिये, समृद्धि के लिये और सर्वत्र विजय प्राप्ति के लिये है।

❖ महाकाली स्तोत्रम् ❖

(अथ काली तंत्रोक्त ध्यानम्)

ॐ शवा रूढ़ां महा भीमां घोर दृंष्टां हसन्मुखीम् ।
चतुर्भुजां खण्ड़ बराभय करां शिवाम् ॥

मुंड माला धरां देवी लल जिह्वां दिगम्बराम् ।
एवं संचितंये काली श्मशानां लय वासिनीम् ॥

कराल वंदना घोरां मुक्त केशीं चतुर्भुजाम्
कालिकां दक्षिणां दिव्यां मुंड मा लाम् विभूषिताम् ॥

संद्यश्छिन्न शिरः खंङ्ग वामोर्ध्वाधः करां वुजाम्
अभयं वरदं चैव दक्षिणा धोर्ध्व पाणि काम् ॥

महा मेघ प्रभां श्यामां तथा चैव दिगम्बराम्
कंठाव सक्त मुंडाली गल द्रुधिर चर्चिताम् ॥

शव रूप महादेव हृदयो परिसंस्थिताम्।
शिवामिधेरि रूपामि ञ्चतुदिक्षु समन्विताम् ॥

महाकालेन सार्द्धोद्धः मुपं विष्टरता तुराम्
सुख प्रसन्न वदनां स्मेरान न सरो रूहाम् ॥
एवं संचितं येत देवीं श्मशाना लय वासिनीम्।

* * *

❖ विष्णुशतनामस्तोत्रम् ❖

ॐ वासुदेवं हृषीकेशं वामनं जलशायिनम्।
जनार्दनं हरिं कृष्णं श्रीवक्षं गरूड़ध्वजम्॥
वाराहं पुण्ड़रीकाक्षं नृसिंहं नरकान्तकम् ।
अव्यक्तं शाश्वतं विष्णुमनन्तमजमव्ययम्॥
नारायणां गदाध्यक्षं गोविन्दं कीर्तिभाजनम्।
गोवर्धनोद्धरं देवं भूधरं भुवनेश्वरम्॥
वेत्तारं यज्ञपुरूष यज्ञेशं यज्ञवाहकम् ।
चक्रपाणिं गदापाणिं शङ्कपाणिं नरोत्तमम्॥
बैकुण्ठं दुष्टदमनं भूगर्भ पीतवाससम्।
त्रिविक्रमं त्रिकालज्ञं त्रिमूर्मि नन्दकेश्वरम्॥
रामं रामं हयग्रीवं भीमं रौद्रं भवोद्वम्
श्रीपतिं श्रीधरं श्रीशं मंगल मंगलायुधम् ॥
दामोदरं दमोपेतं केशवं केशिसूदनम्
वरेण्यं वरदं विष्णुमानन्दं वसुदेवजम् ॥
हिरण्यरेतसं दीप्तं पुराणं पुरूषोत्तम्
सकलं निष्कलं शुद्धं निर्गुणं गुणशाश्वतम् ॥
हिरण्यतनुसंकाश सूर्यायुतसमप्रभम्
मेघश्यामं चतुर्वाहुँ कुशलं कमलेक्षणम् ॥
ज्योतिरूपमरूपं च स्वरूपं रूपसंस्थितम्
सर्वज्ञं सर्वरूपस्थं सर्वेशं सर्वतोमुखम् ॥
ज्ञानं कूटस्थमचलं ज्ञानदं परमं प्रभुम्
योगीशं योगनिष्णातं योगिनं योगरूपिणम्॥
ईश्वर सर्वभूतानां वन्दे भूतमयं प्रभुम्
इति नामशतं दिव्यं बैष्णवं खलु पापहम् ॥

व्यासेन कथितं पूर्व सर्वपापप्रणाशनम्

य: पठेत्प्रातरूतथाय स भवेद्वैष्णवो नरः ॥

सर्वपापविशुद्धत्मा विष्णुसायुज्यमाप्नुयात्।

चान्द्रायणसहस्त्राणि कन्यादानशतानि च ॥

गवां लक्षसहस्त्रणि मुक्तिभागी भवेन्नरः ।

अश्वमेधायुतं पुण्यं फलं प्राप्नोति मानवः ॥

।। इति विष्णुशतनामस्तोत्रम्॥

❁ ❄ ❁

जिसे हम 'बन्दर' कह कर निकृष्ट समझते है, उस वानर में जितना सद्गुण, संयम और नियम है, उतना मनुष्य में कहाँ है? चाहे कितना भी भूखा रहे पर बानर रामफल अथवा सीताफल नहीं खायेगा। कारण, इन फलों के साथ इसके आराध्यदेव का नाम जुड़ा हुआ है। इसी तरह जिसके जीवन में संयम नहीं, जिसके जीवन में प्रभु-भक्ति का कोई नियम नहीं, उसका जीवन निरर्थक है।

❁ ❄ ❁

क्षमा बड़न को चाहिये, छोटन को उत्पात।
कहा हरि को घट गयो, जो भृगु मारी लात॥

मन चाहे तो धर्म कर, रूप चाहे तो शील।
मुक्ति चाहे तो भजन कर, तीनों बात सुशील॥

साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।
जाके हिरदै साँच है, ताके हिरदै आप॥

रहिमन वे नर मर चुके, जे कहुँ माँगन जाहिं।
तिनके पहले वे मुए, जिन मुख निकसत नाहिं॥

:: श्री नवग्रह-स्तोत्रम् ::

जपाकुसुमसंकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम् ।
तमोऽरिं सर्वपापध्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम् ॥ १ ॥
दधिशङ्खतुषाराभं क्षीरोदार्णवसम्भवम् ।
नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम् ॥ २ ॥
धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्कान्ति-समप्रभम् ।
कुमारं शक्तिहस्तं तं मंगलं प्रणमाम्यहम् ॥ ३ ॥
प्रियंगुफलिकाश्यामं रूपेणात्रतिमं बुधम् ।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम् ॥ ४ ॥
देवानां च ऋषाणां च गुरुं कांचनसन्निभम् ।
बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि वृहस्पतिम् ॥ ५ ॥
हिमकुन्दभृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम् ।
सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम् ॥ ६ ॥
नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाप्रजम् ।
छायामार्तण्डसंभूतं तं नमामि शनैश्चरम् ॥ ७ ॥
अर्द्धकायं महाचार्य चन्द्रादित्यविसर्दनम् ।
सिंहिकागर्भसम्भूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम् ॥ ८ ॥
पलाशपुष्पसंकाश तारकाग्रहमस्तकम् ।
रौद्रं रोद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम् ॥ ९ ॥
इतव्यिासमुखोद्गीतं यः पठेत् सुसमाहितः ।
दिवा वा यदि वा रात्रौ विघ्नशान्तभविष्यति ॥ १० ॥
नरनादीनृपाणां च भवेद् दुःस्वप्ननाशनम् ।
ऐश्वर्यभतुलं तेषामारोग्य पुष्टिवर्धनम् ॥ ११ ॥

॥ श्री व्यासविरचितं नवग्रहस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

:: त्रिपुरसुन्दरीस्तोत्रम् ::

कदम्बवनचारिणीं मुनिकदम्ब-कादम्बिनीं,
नितम्बजितभूधरां सुरनितम्बिनीसेविताम्।
नवाम्बुरुह-लोचनामभिनवाम्बुद-श्यामलां
त्रिलोचनकुटुम्बिनीं त्रिपुरसुन्दरीमाश्रये॥ १॥

कदम्बवनवासिनीं कनक - वल्लकी - धारिणीं
महार्हमणिहारिणीं मुखसमुल्लसद्वारुणीम्।
दयाविभवकारिणीं विशदलोचनीं चारिणीं
त्रिलोचनकुटुम्बिनीं त्रिपुरसुन्दरीमाश्रये॥ २॥

कदम्बवनशालया कुचभरोल्लसन्मालया
कुचोपमितशैलया गुरुकृपालसद्वेलया।
मदारुणकपोलया मधुरगीतवाचालया कयाऽपि
घननीलया कवचिता वयं लीलया॥ ३॥

कदम्बवनमध्यगां कनकमण्डलोपस्थितां
षडम्बुरुहवासिनीं सततसिद्धसौदामिनीम्।
विडम्बितजपारुचिं विकचचन्द्रचूड़ामणिं
त्रिलोचनकुटुम्बिनीं त्रिपुरसुन्दरीमाश्रये॥ ४॥

कुचाञ्चितविपञ्चिकां कुटिलकुन्तलालङ् - कृतां
कुशेशयनिवासिनीं कुटिलचित्तविद्वेषिणीम्।
मदारुणविलोचनां मनसिजारिसम्मोहनीं
मतङ्गमुनिकन्यकां मधुभाषिणीमाश्रये॥ ५॥

स्मरेत्प्रथमपुष्पिणीं रुधिर-बिन्दु-नीलाम्बरां
गृहीतमधुपात्रिकां मधुविघूर्णनेत्राञ्चलाम्।
घनस्तन-भरोन्नतां गलितचूलिकां श्यामलां
त्रिलोचनकुटुम्बिनीं त्रिपुरसुन्दरीमाश्रये॥ ६॥

सकुङ्कुम - विलेपनामलक - चुम्बिकस्तूरिकां
समन्दहसितेक्षणां स-शरचाप-पाशाङ्कुशाम्।
अशेषजनमोहिनी मरुणमाल्यभूषाम्बरां
जपाकुसुम-भासुरां जपविधौ स्मराम्यम्बिकाम्॥ ७॥

पुरन्दर - पुरन्धिका - चिकुरबन्ध - सैरन्धिकां
पितामहपतिव्रतां पटुपाटीर - चर्चारताम्।
मुकुन्दरमणीं मणिलसदलंक्रियाकारिणीं
भजामि भुवनाम्बिकां सुरवधूटिकाचेटिकाम॥ ८॥

-: इति श्रीमच्छङ्कराचार्य विरचितं त्रिपुरसुन्दरीस्तोत्रं सम्पूर्णम् :-

:: शान्ति पाठ ::

ओ३म् द्यौः शान्तिरन्तरिक्षँ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वं शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्ति रेधि। - यजुर्वेद ३६/१७

हे प्रभो! यह सौर मण्डल और अन्तरिक्ष सुखशान्तिदायक हो, भूमण्डल सुख शान्ति दायक हो, जल, औषधियां और वनस्पतियां सुख शान्तिदायक हों, विश्व के दिव्य पदार्थ और ब्रह्म सुख शान्तिदायक हों, सब कुछ सुख शान्तिदायक हों और ऐसी शान्ति मुझको प्राप्त हो।

ओ३म् शान्तिः! शान्तिः!! शान्तिः!!!

श्रीरामरक्षास्त्रोत्म

विनियोग :

अस्य श्रीरामरक्षास्तोत्रमन्त्रस्य बुधकौशिक ऋषिः श्रीसीतारामचन्द्रो देवता अनुष्टुप् छन्दः सीता शक्तिः श्रीमान् हनुमान कीलकं श्रीरामचन्द्रप्रीत्यर्थे रामरक्षास्तोत्रजपे विनियोगः ।

इस रामरक्षास्तोत्र-मन्त्र के बुधकौशिक ऋषि हैं । सीता और रामचन्द्र देवता हैं, अनुष्टुप् छन्द है, सीता शक्ति हैं, श्रीमान् हनुमानजी कीलक हैं तथा श्रीरामचन्द्रजीकी प्रसन्नाताके लिये रामरक्षास्तोत्रके जपमें विनियोग किया जाता है।

ध्यानम्

ध्यायेदाजानुबाहुं धृतशरधनुषं बद्धपद्मासनस्थं
पीतं वासो वसानं नवकमलदलस्पर्धिनेत्रं प्रसन्नम।
वामाङ्कारुढसीतामुखकमलमिलल्लोचनं नीरदाभं
नानालंकारदीप्तं दधतमुरुजटामण्डलं रामचन्द्रम्॥

जो धनुष-बाण धारण किये हुए हैं, बद्ध पद्मासनसे बिराजमान हैं, पीताम्बर पहने हुए हैं, जिनके प्रसन्न नयन नूतन कमलदलसे स्पर्धा करते तथा वामभागमें विराजमान श्रीसीताजीके मुखकमलसे मिले हुए हैं, उन आजानुबाहु, मेघश्याम, नाना प्रकारके अलंकारोंसे विभूषित तथा विशाल जटाजूटधारी श्रीरामचन्द्रजीका घ्यान करे।

स्तोत्रम्

चरितं रघुनाथस्य शतकोटिप्रविस्तरम्।
एकैकमक्षरं पुंसां महापातकनाशनम् ॥ १ ॥

श्री रघुनाथजीका चरित्र सौ करोड़ विस्तारवाला है और उसका एक-एक अक्षर भी मनुष्यों के महान् पापों को नष्ट करनेवाला है ॥१ ॥

ध्यात्वा नीलोत्पलश्यामं रामं राजीवलोचनम् ।
जानकीलक्ष्मणोपेतं जटामुकुटमण्डितम्॥ २॥
सासितूणधनुर्बाणपाणिं नक्तंचरान्तकम्।
स्वलीलया जगत्त्रातुमाविर्भूतमजं विभुम् ॥ ३॥
रामरक्षां पठेत्प्राज्ञः पापघ्नीं सर्वकामदाम्।
शिरो मे राघवः पातु भालं दशरथात्मजः ॥ ४॥

जो नीलकमलके समान श्यामवर्ण, कमल –नयन, जटाओंके मुकुटसे सुशोभित, हाथोंमें खड्ग, तूणीर, धनुष और बाण धारण करनेवाले, राक्षसोंके संहारकारी तथा संसारकी रक्षाके लिये अपनी लीलासे ही अवतीर्ण हुए हैं, उन अजन्मा और सर्वव्यापक भगवान् रामका जानकी और लक्ष्मणजी के सहित स्मरण कर प्राज्ञ पुरुष इस सर्वकामप्रदा और पापविनाशिनी रामरक्षाका पाठ करे। मेरे सिरकी राघव और ललाटकी दशरथात्मज रक्षा करें॥ २–४॥

कौसल्येयो दृशौ पातु विश्वामित्रप्रियः श्रुती।
घ्राणं पातु मखत्राता मुखं सौमित्रिवत्सलः ॥ ५॥

कौसल्यानन्दन नेत्रों की रक्षा करें, विश्वामित्रप्रिय कानों को सुरक्षित रक्खें तथा यज्ञरक्षक घ्राणकी और सौमित्रिवत्सल मुखकी रक्षा करें॥ ५॥

जिह्वां विद्यानिधिः पातु कण्ठं भरतनवन्दितः।
स्कन्धौ दिव्यायुधः पातु भुजौ भग्नेशकार्मुकः॥ ६॥

मेरी जिह्वाकी विद्यानिधि, कण्ठकी भरतवन्दित, कंधोंकी दिव्यायुध्ध और भुजाओं की भग्नेशकार्मुक (महादेवजीका धनुष तोड़नेवाले) रक्षा करें॥ ६॥

करौ सीतापतिः पातु हृदयं जामदग्न्यजित् ।
मध्यं पातु खरध्वंसी नाभिं जाम्बवदाश्रयः ॥ ७॥

हाथों की सीतापति, हृदयकी जामदग्न्यजित् (परशुरामजी को जीतनेवाले), मध्यभागकी खरध्वंसी (खर नाम के राक्षसका नाश करनेवाले) और नाभिकी जाम्बवदाश्रय (जाम्बवान्के आश्रयस्वरुप) रक्षा करें ॥ ७ ॥

सुग्रीवेशः कटी पातु सक्थिनी हनुमत्प्रभुः ।
ऊरु रघूत्तमः पातु रक्षःकुलविनाशकृत् ॥ ८ ॥

कमरकी सुग्रीवेश (सुग्रीवके स्वामी), सक्थियोंकी हनुमत्प्रभु और ऊरुओंकी राक्षसकुल-विनाशक रघुश्रेष्ठ रक्षा करें ॥ ८ ॥

जानुनी सेतुकृत्पातु जङ्घे दशमुखान्तकः ।
पादौ विभीषणश्रीदः पातु रामोऽखिलं वपुः ॥ ९ ॥

जानुओंकी सेतुकृत्, जङ्घाओंकी दशमुखान्तक (रावणकों मारनेवाले), चरणोंकी विभीषणश्रीद (विभीषणको एश्वर्य प्रदान करनेवाले) और सम्पूर्ण शरीरकी श्रीराम रक्षा करें ॥ ९ ॥

एतां रामबलोपेतां रक्षां यः सुकृती पठेत् ।
स चिरायुःसुखी पुत्री विजयी विनयी भवेत् ॥ १० ॥

जो पुण्यावान् पुरुष रामबलसे सम्पन्न इस रक्षाका पाठ करता है, वह दीर्घायु, सुखी, पुत्रवान्, विजयी और विनयसम्पन्न हो जाता है ॥ १० ॥

पातालभूतलव्योमचारिणश्छद्मचारिणः ।
न द्रष्टुमपि शक्तास्ते रक्षितं रामनामभिः ॥ ११ ॥

जो जीव पाताल, पृथ्वी अथवा आकाशमें विचरते हैं और जो छद्मवेशसे घूमते रहते हैं, वे रामनामोंसे सुरक्षित पुरुषकों देख भी नहीं सकते ॥ ११ ॥

रामेति रामभद्रेति रामचन्द्रेति वा स्मरन् ।
नरो न लिप्यते पापैर्भुक्तिं मुक्तिं च विन्दति ॥ १२ ॥

हिमाद्रिपार्श्वे च समुल्लसन्तम् सम्पूज्यमानं सततं मुनीन्द्रैः ।
सुरासुरैर्यक्षमहोरगाद्यैः केदारसंज्ञं शिवमीशमीडे ॥

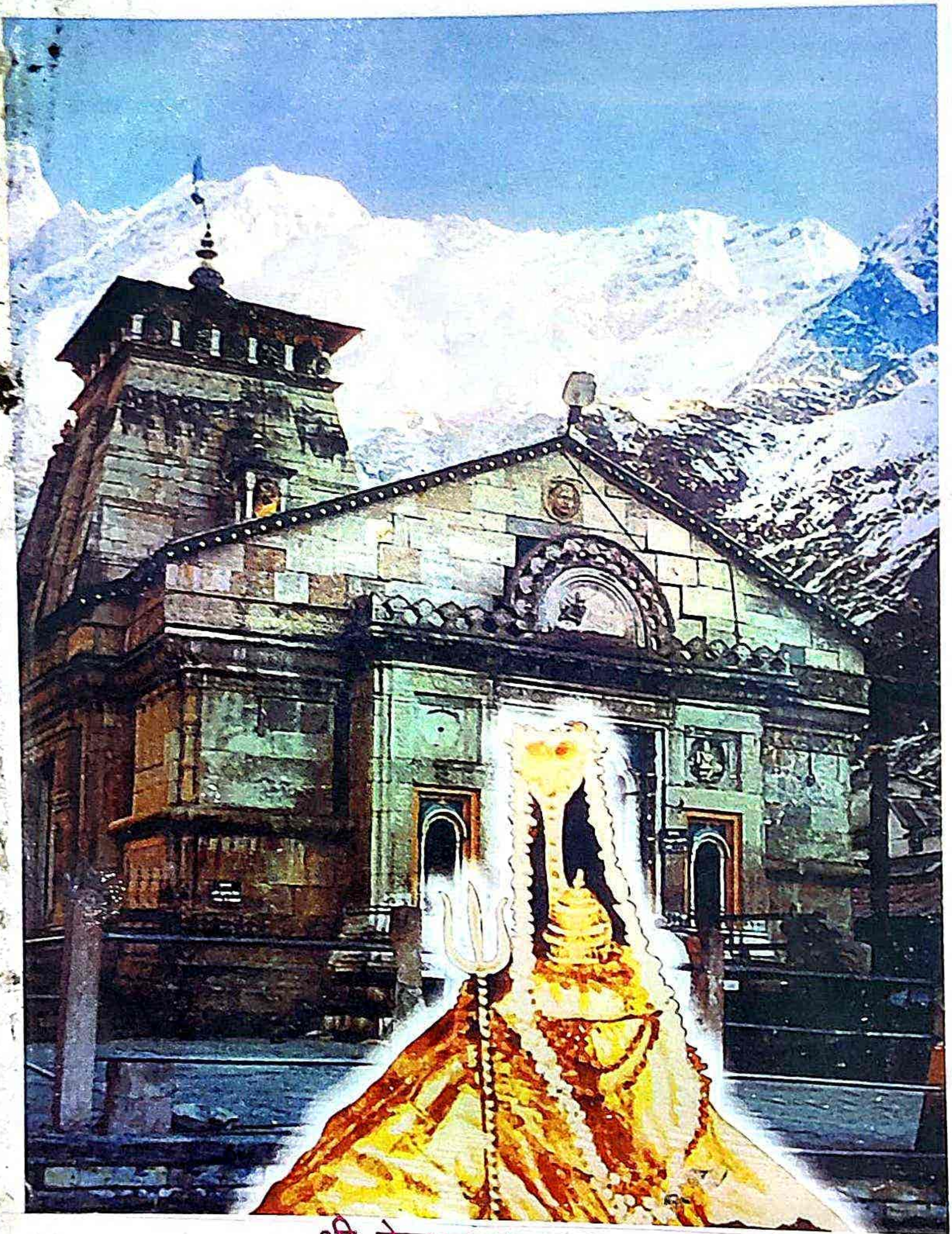

श्री केदारनाथ

"शिव स्तुति" बाबा भूतनाथ धाम, कोलकाता

यो डाकिनीशाकिनिकासमाजैः निषेव्यमाणः पिशिताशनैश्च ।
सदैव भीमेशपदप्रसिद्धम् तं शंकरं भक्तहितं नमामि ॥

श्री भीमशंकर

"शिव स्तुति" बाबा भूतनाथ धाम, कोलकाता

'राम', 'रामभद्र' 'रामचन्द्र' — इन नामोंका स्मरण करनेसे मनुष्य पापोंसे लिप्त नहीं होता तथा भोग और मोक्ष प्राप्त कर लेता है ॥ १२ ॥

जगज्जैत्रैकमन्त्रेण रामनाम्नाभिरक्षितम् ।
यः कण्ठे धारयेत्तस्य करस्थाः सर्वसिद्धयः ॥ १३ ॥

जो पुरुष जगत्को विजय करनेवाले एकमात्र मन्त्र रामनामसे सुरक्षित इस स्तोत्र को कण्ठ में धारण करता है (अर्थात् इसे कण्ठस्थ कर लेता है), सम्पुर्ण सिद्धियाँ उसके हस्तगत हो जाती हैं ॥ १३ ॥

वज्रपञ्जरनामेदं यो रामकवचं स्मरेत् ।
अव्याहताज्ञः सर्वत्र लभते जयमङ्गलम् ॥ १४ ॥

जो मनुष्य वज्रपञ्जर नामक इस रामकवचका स्मरण करता है, उसकी आज्ञा का कहीं उल्लङ्घन नहीं होता और उसे सर्वत्र जय और मङ्गलकी प्राप्ति होती है ॥ १४ ॥

आदिष्टवान्यथा स्वप्ने रामरक्षामिमां हरः ।
तथा लिखितवान्प्रातः प्रबुद्धो बुधकौशिकः १५ ॥

श्रीशंकरने रात्रिके समय स्वप्नमें इस रामरक्षाका जिस प्रकार आदेश दिया था, उसी प्रकार प्रातःकाल जागनेपर बुधकौशिकने इसे लिख दिया ॥१५ ॥

आरामः कल्पवृक्षाणां विरामः सकलापदाम् ।
अभिरामस्त्रिलोकानां रामः श्रीमान्स नःप्रभुः ॥ १६ ॥

जो मानो कल्पवृक्षोंके बगीचे हैं तथा समस्त आपत्तियोंका अन्त करनेवाले हैं, जो तीनों लोकोंमें परम सुन्दर हैं, वे श्रीमान् राम हमारे प्रभु हैं ॥ १६ ॥

तरुणौ रुपसम्पन्नौ सुकुमारौ महाबलौ ।
पुण्डरीकविशालाक्षौ चीरकृष्णाजिनाम्बरौ ॥१७ ॥

फलमूलाशिनौ दान्तौ तापसौ ब्रह्मचारिणौ।
पुत्रौ दशरथस्यैतो भ्रातरौ रामलक्ष्मणौ॥ १८॥
शरण्यौ सर्वसत्त्वानां श्रेष्ठौ सर्वधनुष्मताम्।
रक्षः कुलनिहन्तारो त्रायेतां नो रघुत्तमौ॥१९॥

जो तरुण अवस्थावाले, रुपवान, सुकुमार, महाबली, कमलके समान विशाल नेत्रोवाले,चीरवस्त्र और कृष्णमृग-चर्मधारी,फल-मूल आहार करनेवाले,संयमी, तपस्वी, ब्रह्मचारी, सम्पूर्ण जीवोंको शरण देनेवाले, समस्त धनुर्धारियोमें श्रेष्ठ और राक्षसकुलका नाश करनेवाले हैं, वे रघुश्रेष्ठ दशरथकुमार राम और लक्ष्मण दोनों भाई हमारी रक्षा करें। ।१७-१९॥

आत्तसज्जधनुषाविषुस्पृशावक्षयाशुगनिषङ्गसङ्गिनौ।
रक्षणाय मम रामलक्ष्मणावग्रतः पथि सदैव गच्छताम्॥

जिन्होंने संधान किया हुआ धनुष ले रक्खा है, जो बाणका स्पर्श कर रहे हैं तथा अक्षय बाणोंसे युक्त तूणीर लिये हूए हैं, वे राम और लक्ष्मण मेरी रक्षा करनेके लिये मार्गमें सदा ही मेरे आगे चले ॥२०॥

संनद्धः कवची खड्गी चापबाणधरो युवा।
गच्छन्मनोरथान्नश्च रामः पातु सलक्ष्मणः॥ २१॥

सर्वदा उद्यत, कवचधारी, हाथमें खड्ग लिये, धनुषबाण धारण किये तथा युवा अवस्थावाले भगवान् राम लक्ष्मणजीसहित आगे-आगे चलकर हमारे मनोरथोकी रक्षा करें॥ २१॥

रामो दाशरथिः शूरो लक्ष्मणानुचरो बली।
काकुत्स्थः पुरुषः पूर्णः कौसल्येयो रघूत्तमः॥ २२॥

वेदान्तवेद्यो यज्ञेशः पूराणपुरुषोत्तमः ।
जानकीवल्लभः श्रीमानप्रमेयपराक्रमः ॥ २३ ॥
इत्येतानि जपन्नित्यं मद्भक्तः श्रद्धयान्वितः ।
अश्वमेधाधिकं पुण्यं सम्प्राप्नोति न संशयः ॥ २४ ॥

(भगवान्‌का कथन है कि) राम, दाशरथि, शूर, लक्ष्मणानुचर, बली क़ाकुत्स्थ, पुरुष, पूर्ण, कौसल्येय, रघुत्तम, वेदान्तवेद्य, यज्ञेश, पुराणपुरुषोत्तम, जानकीवल्लभ, श्रीमान् और अप्रमेयपराक्रम—इन नामोंका नित्यप्रति श्रद्धापूर्वक जप करनेसे मेरा भक्त अश्वमेघायज्ञसे भी अधिक फल प्राप्त करता है—इसमें कोई संदेह नहीं है ॥ २२-२४ ॥

रामं दूर्वादलश्यामं पद्माक्षं पीतवाससम् ।
स्तुवन्ति नामभिर्दिव्यैर्न ते संसारिणो नराः ॥ २५ ॥

जो लोग दुर्वादलके समान श्यामवर्ण, कमलनयन पीताम्बरधारी भगवान् रामका इन दिव्य नामोंसे स्तवन करते हैं, वे संसारचक्रमें नहीं पड़ते ॥२५ ॥

रामं लक्ष्मणपूर्वजं रघुवरं सीतापतिं सुन्दरं
काकुत्स्थं करुणार्णवं गुणनिधिं विप्रप्रियं धार्मिकम् ।
राजेन्द्रं सत्यसंधं दशरथतनयं श्यामलंशान्तमूर्तिं
वन्दे लोकाभिरामं रघुकुलतिलकं राघवं रावणारिम् ॥

लक्ष्मणजीके पूर्वज, रघुकुलमें श्रेष्ठ, सीताजीके स्वामी, अतिसुन्दर, काकुत्स्थकुलनन्दन, करुणासागर, गुणनिधान, बाह्मणभक्त, परम धार्मिक, राजराजेश्वर, सत्यनिष्ठ, दशरथपुत्र, श्याम और शान्तमूर्ति, सम्पूर्ण लोकोंमें सुन्दर, रघुकुलतिलक, राघव और रावणारि भगवान् रामकी मैं वन्दना करता हूँ ॥२६ ॥

रामाय रामभद्राय रामचन्द्राय वेधसे।
रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः ॥ २७॥

राम, रामभद्र, रामचन्द्र, विधातृस्वरुप, रघुनाथ, प्रभु सीतापतिको नमस्कार है॥ २७॥

श्रीराम राम रघुनन्दन राम राम
श्रीराम राम भरताग्रज राम राम।
श्रीराम राम रणकर्कश राम राम
श्रीराम राम शरणं भव राम राम॥ २८॥

हे रघुनन्दन श्रीराम हे भरताग्रज भगवान् राम हे रणधीर प्रभु राम आप मेरे आश्रय होइये॥ २८॥

श्रीरामचन्द्रचरणौ मनसा स्मरामि
श्रीरामचन्द्रचरणौवचसा गृणामि।
श्रीरामचन्द्रचरणौ शिरसा नमामि
श्रीरामचन्द्रचरणौ शरणं प्रपद्ये ॥ २९॥

मैं श्रीरामचन्द्रके चरणोंका मनसे स्मरण करता हुँ, श्रीरामचन्द्रके चरणोंका वाणीसे कीर्तन करता हूँ, श्रीरामचन्द्रके चरणोंको सिर झुकाकर प्रणाम करता हूँ तथा श्रीरामचन्द्रके चरणोंकी शरण लेता हूँ॥२९॥

माता रामो मत्पिता रामचन्द्रः
स्वामी रामो मत्सखा रामचन्द्रः।
सर्वस्वं मे रामचन्द्रो दयालु-
र्नान्यं जाने नैव जाने न जाने॥ ३०॥

राम मेरी माता हैं, राम मेरे पिता हैं, राम स्वामी हैं और राम ही मेरे सखा हैं। दयामय रामचन्द्र ही मेरे सर्वस्व हैं, उनके सिवा और किसीको मैं नहीं जानता— बिल्कुल नहीं जानता॥ ३०॥

दक्षिणे लक्ष्मणो यस्य वामे च जनकात्मजा ।
पुरतो मारुतिर्यस्य तं वन्दे रघुनन्दनम्॥ ३१ ॥

जिनकी दायीं ओर लक्ष्मणजी, बायीं ओर जानकीजी और सामने हनुमान्‌जी विराजमान हैं, उन रघुनाथजीकी मैं वन्दना करता हूँ ॥ ३१ ॥

लोकाभिरामं रणरङ्गधीरं
राजीवनेत्रं रघुवंशनाथम् ।
कारुण्यरूपं करुणाकरं तं
श्रीरामचन्द्रं शरणं प्रपद्ये ॥ ३२ ॥

जो सम्पूर्ण लोकोंमें सुन्दर, रणक्रीडामें धीर, कमलनयन, रघुवंशनायक, करुणामूर्ति और करुणाके भण्डार हैं, उन श्रीरामचन्द्रजीकी मैं शरण लेता हूँ॥ ३२ ॥

मनोजवं मारुततुल्यवेगं
जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम् ।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं
श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये ॥ ३३ ॥

जिनकी मनके समान गति और वायुके समान वेग है, जो परम जितेन्द्रिय और बुद्धिमानोंमें श्रेष्ठ हैं, उन पवननन्दन वानराग्रगण्य श्रीरामदूतकी मैं शरण लेता हूँ ॥३३ ॥

कूजन्तं रामरामेति मधुरं मधुराक्षरम् ।
आरुह्य कविताशाखां वन्दे वाल्मीकिकोकिलम् ॥ ३४ ॥

कवितामयी डालीपर बैठकर मधुर अक्षरोंवाले राम-राम इस मधुर नामको कूजते हुए वाल्मीकिरूप कोकिलकी मैं वन्दना करता हूँ ॥ ३४ ॥

आपदामपहर्तारं दातारं सर्वसम्पदाम् ।
लोकाभिरामं श्रीरामं भूयो भूयो नमाम्यहम्॥ ३५ ॥

आपत्तियोंको हरनेवाले तथा सब प्रकारकी सम्पत्ति प्रदान करनेवाले लोकाभिराम भगवान् रामको में बारंबार नमस्कार करता हूँ॥ ३५॥

भर्जनं भवबीजानामर्जनं सुखसम्पदाम्।
तर्जनं यमदुतानां रामरामेति गर्जनम्॥ ३६॥

'राम-राम' ऐसा घोष करना सम्पूर्ण संसारबीजोंको भून डालनेवाला, समस्त सुख-सम्पत्तिकी प्राप्ति करानेवाला तथा यमदुतोंको भयभीत करनेवाला है॥ ३६॥

रामो राजमणिः सदा विजयते रामं रमेशं भजे
रामेणाभिहता निशाचरचमू रामाय तस्मै नमः।
रामान्नास्ति परायणं परतरं रामस्य दासोऽस्म्यहं
रामे चित्तलयः सदा भवतु मे भो राम मामुद्धर॥

राजाओमें श्रेष्ठ श्रीरामजी सदा विजयको प्राप्त होते है। मैं लक्ष्मीपति भगवान् रामका भजन करता हूँ। जिन रामचन्द्रजीने सम्पूर्ण राक्षससेनाका ध्वंस कर दिया था, मैं उनको प्रणाम करता हुँ। रामसे बड़ा और कोई आश्रय नहीं है। मैं उन रामचन्द्रजीका दास हूँ। मेरा चित्त सदा राममें ही लीन रहे; हे राम! आप मेरा उद्धार कीजिये।।३७॥

राम रामेति रामेति रमे रामे मनोरमे।
सहस्रनाम तत्तुल्यं रामनाम वरानने॥ ३८॥

(श्रीमहादेवजी पार्वतीजीसे कहते हैं—) हे सुमुखि! रामनाम विष्णुसहस्रनामके तुल्य है। मैं सर्वदा 'राम, राम, राम' इस प्रकार मनोरम रामनाममें ही रमण करता हुँ। ३८॥

इति श्रीबुधकौशिकमुनिविरचितं श्रीरामरक्षास्तोत्रं सम्पूर्णम्।

श्री आदित्य हृदय स्तोत्रम्

विनियोग

ॐ अस्य आदित्यहृदयस्तोत्रस्यागस्त्यऋषिरनुष्टुप्छन्दः, आदित्यहृदयभूतो भगवान् ब्रह्मा देवता निरस्ताशेषविघ्नतया ब्रह्म - विद्यासिद्धौ सर्वत्र जयसिद्धौ च विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास

ॐ अगस्त्यऋषये नमः, शिरसि। अनुष्टुप्छन्दसे नमः, मुखे। आदित्यहृदयभूतब्रह्मदेवतायै नमः, हृदि। ॐ बीजाय, नमः, गुह्ये। रश्मिमते शक्तये नमः, पादयोः। ॐ तत्सवितुरित्यादिगायत्रीकीलकाय नमः, नाभौ।

करन्यास

इस स्तोत्रके अङ्गन्यास और करन्यास तीन प्रकारसे किये जाते हैं। केवल प्रणवसे, गायत्रीमन्त्रसे अथवा 'रश्मिमते नमः' इत्यादि छः नाम-मंत्रोसे। यहाँ नाम-मत्रोंसे किये जानेवाले न्यासका प्रकार बताया जाता है -

ॐ रश्मिमते अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ समुद्यते तर्जनीभ्यां नमः। ॐ देवासुरनमस्कताय मध्यमाभ्यां नमः। ॐ विवस्वते अनामिकाभ्या नमः। ॐ भास्कराय कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ भुवनेश्वराय करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादि अङ्गन्यास

ॐ रश्मिमते हृदयाय नमः। ॐ समुद्यते शिरसे स्वाहा। ॐ देवासुरनमस्कृताय शिखायै वषट्। ॐ विवस्वते कवचाय हुम्। ॐ भास्कराय नेत्रत्रयाय वोषट्। ॐ भुवनेश्वराय अस्त्राय फट्। इस प्रकार न्यास करके निम्नाङ्कित मन्त्रसे भगवान् सूर्यका ध्यान

एंव नमस्कार करना चाहिये-

ॐ भूभुर्वः स्वः तत्सवितुर्थरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

तत्पश्चात् 'आदित्यहृदय' स्तोत्रका पाठ करना चाहिये।

अगस्त्य मुनिका श्रीरामको विजयके लिए,
'आदित्यहृदय' के पाठकी सम्मति देना

ततो युद्धपरिश्रान्तं समरे चिन्तया स्थितम्।
रावणं चाग्रतो दृष्ट्वा युद्धाय समुपस्थितम्॥ १॥
दैवतैश्च समागम्य द्रष्टुमभ्यागतो रणम्।
उपगम्याब्रवीद्र राममगस्त्यो भगवांस्तदा॥ २॥

श्रीरामचन्द्रजी युद्धसे थककर चिन्ता करते हुए रणभूमिमें खड़े थे। इतने में रावण भी युद्धके लिये उनके सामने उपस्थित हो गया। यह देख भगवान् अगस्त्य मुनि, जो देवताओंके साथ युद्ध देखनेके लिये आये थे, श्रीरामके पास जाकर बोले-॥ १-२॥

राम राम महाबाहो शृणु गुह्यं सनातनम्।
येन सर्वानरीन् वत्स समरे विजयिष्यसे॥ ३॥

सबके हृदयमें रमण करनेवाले महाबाहो राम! यह सनातन गोपनीय स्तोत्र सुनो, वत्स! इसके जपसे तुम युद्धमें अपने समस्त शत्रुओंपर विजय पा जाओगे॥ ३॥

आदित्यहृदयं पुण्यं सर्वशत्रु विनाशनम्।
जयावहं जपं नित्यमक्षयं परमं शिवम्॥ ४॥
सर्वमङ्गलमाङ्गल्यं सर्वपापप्रणाशनम्।
चिन्ताशोकप्रशमनमायुर्वर्धनमुत्तमम्॥ ५॥

'इस गोपनीय स्तोत्रका नाम है 'आदित्यहृदय'। यह परम पवित्र और सम्पूर्ण शत्रुओंका नाश करने वाला है। इसके जपसे सदा विजयकी प्राप्ति होती है। यह नित्य अक्षय और परम कल्याणमय स्तोत्र है। सम्पूर्ण मङ्गलोका भी मङ्गल है। इससे सब पापोंका नाश हो जाता है। यह चिन्ता और शोकको मिटाने तथा आयुको बढ़ानेवाला उत्तम साधन है॥ ४-५॥

रश्मिमन्तं समुद्यन्तं देवासुरनमस्कृतम्।
पूजयस्व विवस्वन्तं भास्करं भुवनेश्वरम्॥ ६॥

'भगवान् सूर्य अपनी अनन्त किरणोंसे सुशोभित (रश्मिमान्) हैं। ये नित्य उदय होनेवाले (समुद्यन्), देवता और असुरोंसे नमस्कृत, विवस्वान् नामसे प्रसिद्ध, प्रभाका विस्तार करनेवाले (भास्कर) और संसारके स्वामी (भुवनेश्वर) हैं। तुम इनका (रश्मिमते नमः, समुद्यते नमः, देवासुरनमस्कृताय नमः, विवस्वते नमः, भास्कराय नमः, भुवनेश्वराय नमः - इन नाम-मन्त्रोंके द्वारा) पूजन करो॥

सर्वदेवात्मको ह्येष तेजस्वी रश्मिभावनः।
एष देवासुरगणाँल्लोकान् पाति गभस्तिभिः॥ ७॥

'सम्पूर्ण देवता इन्हींके स्वरुप है। ये तेजकी राशि तथा अपनी किरणोंसे जगत्‌को सत्ता एवं स्फूर्ति प्रदान करनेवाले है। ये ही अपनी रश्मियोंका प्रसार देवता और असुरों-सहित सम्पूर्ण लोकोंका पालन करते हैं॥ ७॥

एष ब्रह्माच विष्णुश्च शिवः स्कन्दः प्रजापतिः।
महेन्द्रो धनदः कालो यमः सोमो ह्यपां पतिः॥ ८॥
पितरो वसवः साध्या अश्विनौ मरुतो मनुः।
वायुर्वह्निः प्रजाः प्राण ऋतुकर्ता प्रभाकरः॥ ९॥

'ये ही ब्रह्मा, विष्णु शिव, स्कन्द, प्रजापति, इन्द्र, कुबेर, काल. यम, चन्द्रमा, वरुण, पितर, वसु, साध्य, अश्विनीकुमार, मरुद्‌गण, मनु, वायु,

अग्नि, प्रजा, प्राण, ऋतुओंको प्रकट करनेवाले तथा प्रभाके पुञ्ज है ॥ ८-९ ॥

आदित्य : सविता सूर्य : खगः पूषा गभस्तिमान्।
सुवर्ण सदृशो भानुहिरण्यरेता दिवाकर : ॥ १० ॥
हरिदश्वः सहस्त्रार्चिः सप्तसप्तिर्मरीचिमान् ।
तिमिरोन्मथनः शम्भुस्त्वष्टा मार्तण्ड कोंऽशुमान् ॥ ११ ॥
हिरण्यगर्भः शिशिरस्तपनोऽहस्करो रविः।
अग्निगर्भोऽदितेःपुत्रःशङ्खः शिशिरनाशनः ॥ १२ ॥
व्योमनाथस्तमोभेदी ऋग्यजुःसामपारगः।
घनवृष्टिरपां मित्रो विन्ध्यवीथीप्लवंगम्:: ॥ १३ ॥
आतपी मण्डली मृत्युः पिंगलः सर्वतापनः।
कविर्विश्वो महातेजा रक्तः सर्वभवोद्भवः ॥ १४ ॥
नक्षत्रग्रहताणामधिपो विश्वभावनः।
तेजसामपि तेजस्वी द्वादशात्मन् नमोऽस्तु ते ॥ १५ ॥

'इन्हीं के नाम-आदित्य (अदितिपुत्र), सविता (जगत्को उत्पन्न करनेवाले), सूर्य (सर्वव्यापक), खग (आकाश में विचरनेवाले), पूषा (पोषण करनेवाले), गभस्तिमान् (प्रकाशमान), सुवर्णसदृश, भानु (प्रकाशक), हिरण्यरेता (ब्रह्माण्डकी उत्पत्तिके बीज), दिवाकर (रात्रि का अन्धकार दूर करके दिनका प्रकाश फैलानेवाले), हरिदश्व (दिशओंमें व्यापक अथवा हरे रंगके घोड़ेवाले), सहस्त्रार्चि (हजारों किरणोंसे सुशोभित), सप्तसप्ति (सात घोड़ोंवाले), मरीचिमान् (किरणोंसे सुशोभित), तिमिरीन्मथन (अन्धकारका नाश करनेवाले), शम्भु (कल्याणके उद्गमस्थान), त्वष्टा (भक्तोंका दुःख दूर करने अथवा जगत् संहार करनेवाले), मार्तण्डक (ब्रह्माण्डको जीवन प्रदान करनेवाले), अंशुमान् (किरण धारण करनेवाले), हिरण्यगर्भ (ब्रह्मा),

शिशिर (स्वभावसे ही सुख देनेवाले), तपन (गर्मी पैदा करनेवाले), अहस्कर (दिनकर), रवि (सबकी स्तुतिके पात्र), अग्निगर्भ (अग्निको गर्भमें धारण करनेवाले), अदितिपुत्र, शङ्ख (आनन्दस्वरुप एवं व्यापक), शिशिरनाशक (शीतका नाश करनेवाले),व्योमनाथ (आकाश के स्वामी), तमोभेदी (अन्धकारको नष्ट करनेवाले) ऋग्, यजुः और सामवेदके पारगामी, घनवृष्टि (घनी वृष्टिके कारण), अपां मित्र (जलको उत्पन्न करनेवाले), विन्ध्य वीथीप्लवङ्गम (आकाश में तीव्र वेग से चलने वाले) आतपी (धूप उत्पन्न करनेवाले) मण्डली (किरणसमूहको धारण करनेवाले), मृत्यु (मौत के कारण), पिङ्गल (भूरे रंगवाले), सर्वतापन (सब को ताप देनेवाले) कवि (त्रिकालदर्शी), विश्व (सर्वस्वरुप) महातेजस्वी, रक्त (लाल रंगवाले), सर्वभवोद्भव (सबकी उत्पत्तिके कारण), नक्षत्र, ग्रह और तारोंके स्वामी, विश्वभावन (जगत्‌की रक्षा करनेवाले), तेजस्वियोंमें भी अति तेजस्वी तथा द्वादशात्मा (बारह स्वरुपोंमें अभिव्यक्त) हैं । (इन सभी नामोंसे प्रसिद्ध सूर्यदेव!) आपको नमस्कार है॥ १०-१५ ॥

नमः पूर्वाय गिरये पश्चिमायाद्रये नमः।
ज्योतिर्गणानां पतये दिनाधिपतये नमः॥ १६॥

पूर्वगिरि—उदयाचल तथा पश्चिमगिरि अस्ताचलके रूपमें आपको नमस्कार है। ज्योतिर्गणों (ग्रहों और तारों) के स्वामी तथा दिनके अधिपति आपको प्रणाम है॥ १६॥

जयाय जयभद्राय हर्यश्वाय नमो नमः।
नमो नमः सहस्त्रांशो आदित्याय नमो नमः॥१७॥

'आप जयस्वरूप तथा विजय और कल्याणके दाता हैं। आपके रथमें हरे रंगके घोड़े जुते रहते हैं। आपको बारंबार नमस्कार है। सहस्त्रों

किरणोंसे सुशोभित भगवान् सूर्य! आपको बारंबार प्रणाम है। आप अदितिके पुत्र होनेके कारण आदित्यनामसे प्रसिद्ध हैं, आपको नमस्कार है ॥ १७ ॥

नमः उग्राय वीराय सारङ्गाय नमो नमः।
नमः पद्मप्रबोधाय प्रचण्डाय नमोऽस्तु ते ॥ १८ ॥

'उग्र (अभक्तोंके लिये भयंकर), वीर (शक्ति सम्पन्न) और सारंग (शीघ्रगामी) सूर्यदेवको नमस्कार है। कमलोंको विकसित करनेवाले प्रचण्ड तेजधारी मार्तण्डको प्रणाम है ॥ १८ ॥

ब्रह्मेशानाच्युतेशाय सूरायादित्यवर्चसे।
भास्वते सर्वभक्षाय रौद्राय वपुषे नमः॥ १९ ॥

(परात्पर-रूपमें) आप ब्रह्मा, शिव और विष्णुके भी स्वामी हैं। सूर आपकी संज्ञा है, यह सूर्यमण्डल आपका ही तेज है, आप प्रकाशसे परिपूर्ण हैं, सबको स्वाहा कर देनेवाला अग्नि आपका ही स्वरूप है, आप रौद्ररूप धारण करनेवाले हैं; आपको नमस्कार है ॥१९ ॥

तमोघ्नाय हिमघ्नाय शत्रुघ्नायामितात्मने।
कृतघ्नघ्नाय देवाय ज्योतिषां-पतये नमः ॥ २० ॥

'आप अज्ञान और अन्धकारके नाशक, जड़ता एवं शीतके निवारक तथा शत्रुका नाश करनेवाले हैं, आपका स्वरुप अप्रमेय है। आप कृतघ्नोंका नाश करनेवाले, सम्पूर्ण ज्योतियोंके स्वामी और देवस्वरूप हैं; आपको नमस्कार है ।। २० ॥

तप्तचामीकराभाय हरये विश्वकर्मणे।
नमस्तमोऽभिनिघ्नाय रूचये लोकसाक्षिणे ॥ २१ ॥

आपकी प्रभा तपाये हुए सुवर्ण के समान है, आप हरि (अज्ञानका हरण करनेवाले) और विश्वकर्मा (संसारकी सृष्टि करनेवाले) हैं; तमके नाशक, प्रकाशस्वरूप और जगत्के साक्षी हैं, आपको नमस्कार है ।। २१ ॥

नाशयत्येष वै भूतं तमेव सृजति प्रभुः।
पायत्येष तपत्येष वर्षत्येष गभास्तिभिः ॥२२॥

'रघुनन्दन! ये भगवान् सूर्य ही सम्पूर्ण भूतोंका संहार, सृष्टि और पालन करते हैं। ये ही अपनी किरणोंसे गर्मी पहुँचाते और वर्षा करते हैं॥ २२॥

एष सुप्तेषु जागर्ति भूतेषु परिनिष्ठितः।
एष चैवाग्निहोत्रं च फलं चैवाग्निहोत्रिणाम् ॥२३॥

'ये सब भूतोंमें अन्तर्यामीरूपसे स्थितहोकर उनके सो जानेपर भी जागते रहते हैं। ये हीअग्निहोत्र तथा अग्निहोत्री पुरूषोंको मिलनेवाले फल हैं॥ २३॥

देवाश्च क्रतवश्चैव क्रतूनां फलमेव च।
यानि कृत्यानि लोकेषु सर्वेषु परमप्रभुः ॥२४॥

(यज्ञमें भाग ग्रहण करनेवाले) देवता, यज्ञ और यज्ञोंके फल भी ये ही हैं। सम्पूर्ण लोकोंमें जितनी क्रियाएँ होती हैं ठन सबका फल देनेमें ये ही पूर्ण समर्थ हैं ॥ २४॥

एनमापत्सु कृच्छ्रेषु कान्तारेषु भयेषु च।
कीर्तयन् पुरूषः कश्चिन्नावसीदति राघव॥ २५॥

'राघव! विपत्तिमें, कष्टमें, दुर्गम मार्गमें तथा और किसी भयके अवसर पर जो कोई पुरूष इन सूर्यदेवका कीर्तन करता है, उसे दुःख नही भोगना पड़ता॥ २५॥

पूजयस्वैनमेकाग्रो देवदेवं जगत्पतिम्।
एतत् त्रिगुणितं जप्त्वा युद्धेषु विजयिष्यति ॥ २६॥

'इसलिये तुम एकाग्रचित होकर इन देवाधिदेव जगदीश्वरकी पूजा करो। इस आदित्यहृदयका तीन बार जप करनेसे तुम युद्धमें विजय पाओगे॥ २६॥

अस्मिन् क्षणे महाबाहो रावणं त्वं जहिष्यसि।
एवमुक्त्वा ततोऽगस्त्यो जगाम स यथागतम् ॥ २७॥

महाबाहो! 'तुम इसीक्षण रावणका वध कर सकोगे।' यह कहकर अगस्त्ययजी जैसे आये थे, उसी प्रकार चले गये ।। २७ ॥

एतच्छ्रुत्वा महातेजा नष्टशोकोऽभवत् तदा ।
धारयामास सुप्रीतो राघवः प्रयतात्मवान्।। २८ ॥

आदित्यं प्रेक्ष्य जप्त्वेदं परं हर्षमवाप्तवान्।
त्रिराचम्य शुचिर्भूत्वा धनुरादाय वीर्यवान्॥ २९ ॥

रावणं प्रेक्ष्य हृष्टात्मा जयार्थे समुपागमत्।
सर्वयत्नेन महता वृतस्तस्य वधेऽभवत् ।। ३० ॥

उनका उपदेश सुनकर महातेजस्वी श्रीरामचन्द्रजीका शोक दूर हो गया। उन्होंने प्रसन्न होकर शुद्धचित्तसे आदित्यहृदयको धारण किया और तीन बार आचमन करके शुद्ध हो भगवान् सूर्यकी ओर देखते हुए इसका तीन बार जप किया। इससे उन्हें बड़ा हर्ष हुआ। फिर परम पराक्रमी रघुनाथजीने धनुष उठाकर रावणकी ओर देखा और उत्साहपूर्वक विजय पानके लिये वे आगे बढ़े। उन्होंने पूरा प्रयत्न करके रावणके वधका निश्चय किया॥ २८-३० ॥

अथ रविरवदन्निरीक्ष्य रामं
मुदितमनाः परमं प्रहृष्यमाणः।
निशिचरपतिसंक्षयं विदित्वा,
सुरगणमध्यगतो वचस्त्वरेति ।।३१ ॥

उस समय देवताओंके मध्यमें खड़े हुए भगवान् सूर्यने प्रसन्न होकर श्रीरामचन्द्रजीकी ओर देखा और निशाचरराज रावणके विनाशका समय निकट जानकर हर्षपूर्वक कहा — 'रघुनन्दन! अब जल्दी करो' ।। ३१ ॥

इति श्री आदित्य हृदय स्तोत्रम्

:: गायत्री - मन्त्र ::

ओ३म् भूर्भुवः स्वः ।
तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि
धियो यो नःप्रचोदयात् ॥

हे प्राणस्वरूप, दुःखहर्ता और सर्वव्यापक, आनन्द के देने वाले प्रभो ! जो आप सर्वज्ञ और सकल जगत् के उत्पादक हैं, हम आपके उस पूजनीयतम, पापनाशक स्वरूप तेज का ध्यान करते हैं, जो हमारी बुद्धियों को प्रकाशित करता है । पिता ! आपसे हमारी बुद्धि कदापि विमुख न हो । आप हमारी बुद्धियों में सदैव प्रकाशित रहें और हमारी बुद्धियों को सत्कर्मों में प्रेरित करें, ऐसी प्रार्थना है ।

:: गायत्री मन्त्र का भजनात्मक ::
सरल विश्लेषण

ॐ ही रक्षक हमारे सब गुणों की खान है ।
भूः सदा सब प्राणियों के प्राण के भी प्राण हैं ॥
र्भुवः सब दुःख दूर करते दूर कृपा निधान हो ।
स्वः सदा सुख रूप सुखमय सतत् सुख महान हो ॥
तत् वही विख्यात ब्राह्मण वेद वर्णित सार हो ।
देवसवितुर सर्व उत्पादन हो पालनहार हो ॥
शुभ **वरेण्यम्** वरण करने योग्य भगवान् आप हो ।
शुभ **भर्गो** मल रहित निर्लेप हो निष्पाप हो ॥
दिव्यगुण **देवस्य** दिव्य स्वरूप देव अनूप हो ।
धीमहि धारे हृदय में दिव्य गुण गुणरूप हो ॥
धियोयोनः वह हमारी बुद्धियों का हित करे ।
अमर **प्रचोदयात्** नित सन्मार्ग में प्रेरित करे ॥

– "गायत्री रहस्य" पुस्तक से साभार

:: महामृत्युंजय मन्त्र और उसका शब्दार्थ ::

"ॐ हौं जूं सः, भूर्भूवः स्वः, ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम् पुष्टिवर्धनम् । उर्वारूकमिव बन्धनान्मृम्त्योर्मुक्षीय मामृ। स्वः भुवः भूः ॐ । सः जूं हौं ॐ ।"

यह सम्पुटित महामृत्युंजय मन्त्र है ।

इसका अर्थ इस प्रकार है :-

"मैं ब्रह्मा, विष्णु एवं रूद्र - इन तीनों के उत्पादक - पिता उन परमब्रह्म परमात्मा की वन्दना करता हूँ, जिनका यश तीनों लोकों में फैला हुआ है और जो विश्व के बीज एवं उपासकों के अणिमादि एश्वर्यों के वर्धक हैं । वे अपने मूल से पृथक हुए ककड़ी के फल की तरह मुझे मृत्यु या मर्त्यलोक से मुक्त कर अमृतत्व (सायुज्य मोक्ष) प्रदान करें ।"

॥ बगलामुखी मन्त्र ॥

ॐ ह्रीं बगलामुखी सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तंभय जिह्वा कीलय बुद्धिं नाशय ह्रीं ॐ स्वाहा।

॥ लक्ष्मी प्राप्ति के लिए ॥

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः।

॥ आपत्ति निवारक मन्त्र ॥

ॐ कृष्णाय वासुदेवाय हरये परमात्मने ।
प्रणतः क्लेश नाशाय गोविन्दाय नमो नमः ॥

॥ पंच्चाक्षर मन्त्र ॥

ॐ नमः शिवाय।

॥ द्वादशाक्षर मन्त्र ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

❖ सूर्याष्टकम् ❖

आदिदेव नमस्तुभ्यं प्रसीद मम भास्कर ।
दिवाकर नमस्तुभ्यं प्रभाकर नमोऽस्तु ते ॥ १ ॥

सप्ताश्वरथमारूढं प्रचण्डं कश्यपात्मजम् ।
श्वेतपद्मधरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम् ॥ २ ॥

लोहितं रथमारूढं सर्वलोकपितामहम् ।
महापापहरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम् ॥ ३ ॥

त्रैगुण्यं च महाशूरं ब्रह्माविष्णुमहेश्वरम् ।
महापापहरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम् ॥ ४ ॥

बृंहितं तेजः पुन्जं च वायुमाकाशमेय च।
प्रभुं च सर्वलोकानां तं सूर्यं प्रणमाम्यहम् ॥ ५ ॥

बन्धूकपुष्पसंकाशं हारकुण्लभूषितम्।
एकचक्रधरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम् ॥ ६ ॥

तं सूर्यं जगत्कर्तारं महातेजः प्रदीपनम् ।
महापापहरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम् ॥ ७ ॥

तं सूर्यं जगतां नाथं ज्ञानविज्ञानमोक्षदम् ।
महापापहरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम् ॥ ८ ॥

अमृत वचन

* जिस कर्म से बन्धन, दुःख संताप तथा पीड़ा पैदा हो, उस कर्म को अज्ञान से निकला हुआ जानना।
* जहां विश्वास और श्रद्धा हो, वह जगह मंदिर तुल्य है ।

॥ श्री ॥

:: चन्द्रशेखराष्टकम् ::

श्री गणेशाय नमः। चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर पाहिमाम्। चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर रक्ष माम्॥ १॥ रलसानुशरासनं रजताद्रिश्रृंगनिकेतनं सिंजिनीकृतपन्नगेश्वरम्- च्युताननसायकम्। क्षिप्रदग्धपुरत्रयं त्रिदिवालयैरमिवंदितं चन्द्रशेखरमाश्रये मम कि करिष्यति वै यमः॥ २॥ पंचपादपपुष्पगंधपदांबुजद्वयशोभितं भाल लोचन जातपावक -दग्धमन्मथविग्रहम्। भस्मदिग्धकलेवरं भवनाशनं भवमव्ययं चंन्द्रशेखर माश्रये॰ ॥ ३॥ मत्तवारणमुख्य चर्मकृतोन्तरीय मनोहरं पंकजासनपद्मलोचन पूजितां घ्रिसरोरुहम्। देवसिंधुतरंगसीकरसिक्त - शुभ्रजटाधरं चंन्द्रशेखर॰ ॥ ४॥ यक्षराजसखं भगाक्षहरं भुजंगविभूषणं शैलराजसुता परिष्कृत चारुवाम कलेवरम क्ष्वेडनीलगलं परश्वधारिणं मृगधारिणं चन्द्रशेखर ॰ ॥ ५॥ कुंडलीकृत कुण्डलेश्वर कुण्डलं वृषवाहनं नारदादिमुनीश्वरस्तुती वैभव भुवनेश्वरम्। अन्धकांत कमाश्रितामरपादपं शामनांतकं चंन्द्रशेखर माश्रये॥ ६॥ भेषजं भवरोगिणामखिलापदामपहारिणं दक्षयज्ञविनाशनं त्रिगुणात्मकं त्रिविलोचनम्। मुक्तिमुक्ति फलप्रदं सकलाधसंधनिबर्हण चंन्द्रशेखर॰॥ ७॥ भक्तवत्सलमर्चितं निधिमक्षयं हरिदंबरं सर्वभूतपतिं परात्परमप्रमेय मनुत्तमम्। सोमवारिनभूहुताशन सोमपानिलखाकृतिं चन्द्रशेखर॰ ॥ ८॥ विश्वसृष्टिविधायिनं पुनरेव पालनतत्परं संहरंतमपि प्रपञ्चशेषलोक निवासिनम्। क्रीडयंतमहर्निशं गणनाथयूथसमन्वितं चन्द्रशेखर॰ ॥ ९॥ मृत्युभीतमृकंडसूनुकृतस्तवं शिवसंनिधौ यत्र कुत्र च यः पहेन्नहि तस्य मृत्युभयं भवेत्। पूर्णमायुररोगितामखिलार्थसम्पदमादरं चंन्द्रशेखर एवं तस्य ददाति मुक्तिमयलतः॥ १०॥

इति श्री चंन्द्रशेखराष्टकस्तोत्र संपूर्णम।

❖ महालक्ष्म्यष्टकम् ❖

नमस्तेऽस्तु ते महामाये श्रीपीठे सुरपूजिते ।
शङ्खचक्र गदाहस्ते महालक्ष्मि नमोऽस्तुते ॥
नमस्ते गरुड़ारुढे कोलासुरभयंकरि ।
सर्वपापहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥
सर्वज्ञे सर्ववरदे सर्व दुष्ट भयंकरी ।
सर्वदु:खहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥
सिद्धिबुद्धिप्रदे देवि भुक्ति मुक्ति प्रदायिनी ।
मन्त्रमूर्ते सदा देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥
आद्यन्तरहिते देवि आद्यशक्ते महेश्वरे ।
योगजे योगसम्भूते महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥
स्थूले सूक्ष्मे महारौद्रे महाशक्तें मनोहरे ।
महापाप हरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥
पद्मासनास्थिते देवि परब्रह्मस्वरूपिणी ।
परमेशि जगन्मातर्महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥
श्वेताम्बर धरे देवि नानालङ्कारभूषिते ।
जगत्स्थिते जगन्मातर्महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥
महालक्ष्म्यष्टकं स्तोत्रं य: पठेभ्दक्ति मान्नर: ।
सर्व सिद्धिमवाप्रोति राज्यं प्राप्नोति सर्वदा ॥
एककाले पठेन्नित्यं महापाप विनाशनम् ॥
द्विकालं य: पठेन्नित्यं समन्वित: ॥
त्रिकालं य: पठेन्नित्यं महाशत्रुविनाशनम् ।
महालक्ष्मीर्भवेन्नित्यं प्रसन्ना वरदा शुभा ॥

❖ शीतलाष्टकम् ❖

इश्वरोवाच

वन्देऽहं शीतलां देवीं रास भस्थां दिगम्बराम् मार्जनी कलशोपेतांशूर्पालंकृत मस्तकाम ॥ १ ॥ वन्देऽहं शीतलां देवी सर्वरोगभया पहाम् यामासाद्य निवर्त्तेत विस्फोटक भयंमहत् ॥ २ ॥ शीतले शीतले चेति योब्रूया द्दाहपीड़ितः विस्फोटक भंयघोरं क्षिप्रं तस्य प्रणश्यति ॥ ३ ॥ यस्त्वा मुदकमध्येतु घृत्वा पूजयतेनरः। विस्फोटक भयं घोरं गृहे तस्य न जायते ॥ ४ ॥ शीतले ज्वर दग्धस्य पूति गंध युतस्त च प्रणष्ट चक्षुषः पुंसस्त्वा माहु र्जीव नौषधम र्जीवनौषधम् ॥ ५ ॥ गलगंड ग्रहारोगाः ये चान्ये दारुणा नृणाम्। त्वदनु ध्यानः मात्रेण शीतले यान्ति संक्षयम् ॥ ६ ॥ न मंत्रो नौषधंतस्य पाप रोगस्य विद्यते । त्वामेका शीतले धात्री नान्यं पश्यामि देवताम ॥ ७ ॥ श्रोतव्यं पठि तब्यं च श्रद्धा भक्ति समन्वितैः उपसर्ग विनाशाय परं स्वस्त्य यनं महत् ॥ ८ ॥ शीतलेत्वं जगन्माता शीतले त्वं जगत्पिता। शीतले त्वं जगद्धात्री शीतलायै नमो नमः॥

***

नारायण हरि भजन में ये पाँचों न सुहाते ।
विषय-भोग, निद्रा, हँसी, जगत प्रीति, बहुबात ॥

:: दुर्गाष्टकम् ::

नमस्ते शरण्ये शिवे ! सानुकम्पे ! नमस्ते जग व्यापिके ! विश्वरूपे ।।
नमस्ते जगद्वन्द्य-पादारविन्दे ! नमस्ते जगत्पालिनि ! त्राहि दुर्गे ! ॥ १ ॥
नमस्ते जगच्चिन्त्यमानस्वरूपे ! नमस्ते महायोगिनि ! ज्ञानरूपे ।।
नमस्ते सदानन्दनन्दस्वरूपे ! नमस्ते जगत्तारिणि ! त्राहि दुर्गे ॥ २ ॥
अनाथस्य दीनस्य तृष्णातुरस्य भयार्तस्य भीतस्य बद्धस्य जन्तोः ॥
त्वमेका गतिर्देवि ! निस्तारदात्रि ! नमस्ते जगत्तारिणि ! त्राहि दुर्गे ! ॥ ३ ॥
अरण्ये रणे दारुणे शत्रुमध्ये- ऽनले सागरे प्रान्तरे राजगेहे ।।
त्वमेका गतिर्देवि ! निस्तारहेतु- र्नमस्ते जगत्तारिणि ! त्राहि दुर्गे ! ॥ ४ ॥
अपारे महादुस्तरेऽत्यन्तघोरे विपत्सागरे मज्जतां देहभाजाम् ।।
त्वमेका गतिर्देवि ! निस्तारनौका नमस्ते जगत्तारिणि ! त्राहि दुर्गे ॥ ५ ॥
नमश्चण्डिके ! चण्डदोर्दण्ड-लीला- लसत्खण्डिता-खण्डलाशेषभीते ।।
त्वमेका गतिर्विघ्नसन्दोहहन्त्री नमस्ते जगत्तारिणि ! त्राहि दुर्गे ! ॥ ६ ॥
त्वमेका जिताराधिता सत्यवादि- न्यमेया जिता क्रोधनात् क्रोधनिष्ठा ।।
इडा पिङ्गला त्वं सुषुम्ना च नाडी नमस्ते जगत्तारिणि! त्राहि दुर्गे ॥ ७ ॥
नमो देवि! दुर्गे! शिवे! भीमनादे! सरस्वत्यरुन्धत्यमोघस्वरूपे ! ।
विभूतिः शची कालरात्रिः सती त्वं नमस्ते जगत्तारिणि! त्राहि दुर्गे! ॥ ८ ॥
शरणमपि सुराणां सिद्धविद्याधराणां मुनिदनुजनराणां व्याधिभिः पीडितानाम्।
नृपतिगृहगतानां दस्युभिस्त्रासितानां त्वमसि शरणमेका देवि! दुर्गे! प्रसीद ॥ ९ ॥

इदं स्तोत्रं मया प्रोक्तमापदुद्धारहेतुकम् ! ।
त्रिसन्ध्यमेकसन्ध्यं वा पठनादेव सङ्कटात् ॥ १० ॥
मुच्यते नात्र सन्देहो भुवि स्वर्गे रसातले ।
सर्व वा श्लोकमेकं वा यः पठेद् भक्तिमान् सदा॥ ११ ॥
स सर्व दुष्कृतं त्यक्त्वा प्राप्नोति परमं पदम् ।
पठनादस्य देवेशि किं न सिध्यति भूतले ॥ १२ ॥
स्तवराजमिमं देवि संक्षेपात् कथितं मया ॥ १३ ॥

॥ इति दुर्गाष्टकमं सम्पूर्णम् ॥

:: नौ देवियाँ, दसमहाविद्या, तीन महाशक्तियाँ ::

यह देवी अपने असंख्य रूपों के द्वारा भाँति-भाँति की लीला प्रस्तुत करती है और सर्वदा शिव की अर्द्धांगिनी बनी रहती है ।

शिव की शक्ति विभिन्न रूपों के द्वारा जानी जाती है जिसमें से सर्वप्रथम उसका नौ दुर्गा वाला रूप है। जब यह शक्ति नौ दुर्गा कहलाती है तो इसके निम्नलिखित नाम होते हैं-

१. शैलपुत्री
२. ब्रह्मचारिणी
३. चन्द्रघण्टा
४. कूष्माण्डा
५. स्कन्दमाता
६. कात्यायनी
७. कालरात्रि
८. महागौरी
९. सिद्धिदात्री

पूर्वोक्त वर्णन की भाँति जब यह शक्ति दस महाविद्या बनती है तब निम्नलिखित नामों से अपना स्वतन्त्र परिचय प्रदान करती है-

१. काली
२. तारा
३. षोडशी (त्रिपुर सुन्दरी)
४. भुवनेश्वरी (राजराजेश्वरी, ललिता)
५. छिन्नमस्ता (छिन्नमस्तिका, छिन्ना)
६. भैरवी (त्रिपुर भैरवी)
७. धूमावती (अलक्ष्मी)
८. बगलामुखी (वल्गामुखी)
९. मातंगी
१०. कमला (लक्ष्मी)

सम्पूर्ण देवताओं की शक्ति बनकर जो शक्ति अवतरित हुआ करती है तथा जिसने अपने कारण अपने आप में ही इस चराचर जगत् को व्यास कर रखा है जो आदि शक्ति है, जिसका विचार हम पुस्तक के अंतिम चरण में करेंगे। यहाँ पर यह स्पष्ट करना है कि यह आदि शक्ति तीन महाशक्तियों के रूप में प्रधानतः मानी जाती है जो निम्नलिखित हैं-

१. महाकाली
२. महासरस्वती
३. महालक्ष्मी

:: दुर्गाजी के एक सौ आठ नाम ::

भगवती दुर्गा भवानी के एक हजार नामों का दुर्गा सहस्रनाम तो है ही, उनके इन एक सौ आठ प्रमुख नामों को तो स्वयं भगवान शिवजी ने संकलित किया है। एक समय मातेश्वरी पार्वती ने भगवान शिव से प्रार्थना की- प्रभु कलयुग में जबकि व्यक्तियों की आयु कम होगी और उससे भी कम होगी उनकी धर्म में अभिरुचि, उस काल के लिए कुछ नामों का कोई ऐसा स्तोत्र बतलाइए जो लगभग दुर्गा सहस्रनाम जितना ही प्रभावशाली हो। तब भगवान शिव ने मातेश्वरी पार्वती को भगवती दुर्गा के सबसे प्रमुख एक सौ आठ नाम इस प्रकार बतलाए-

१. सती, २. साध्वी, ३. भवप्रीता, ४. भवानी, ५. भवमोचनी, ६. आर्या, ७. दुर्गा, ८. जया. ९. आद्या, १०. त्रिनेत्रा, ११. सूलधारिणी, १२. पिनाकधारिणी, १३. चित्रा, १४. चन्द्रघण्टा, १५. महातपा, १६. मनः, १७. बुद्धि, १८. अहंकारा, १९. चित्तरूपा, २०. चिता, २१. चिति, २२. सर्वमन्त्रमयी, २३. सत्ता, २४. सत्यानन्द स्वरूपणी, २५. अनन्ता, २६. भाविनी, २७. भाव्या, २८. भव्या, २९. अभव्या, ३०. सदागति, ३१. शाँभवी, ३२. देवमाता, ३३. चिन्ता, ३४. रत्नप्रिया, ३५. सर्वविद्या, ३६. दक्षकन्या, ३७. दक्षयज्ञविनाशिनी, ३८. अपर्णा, ३९. अनेकवर्णा, ४०. पाटला, ४१. पाटलावती, ४२. पट्टाम्बरपरीधाना, ४३. कलमंजीररंजिनी, ४४. अमेय विक्रमा, ४५. क्रूरा, ४६. सुन्दरी, ४७. सुरसुन्दरी, ४८. वनदुर्गा, ४९. मातंगी, ५०. मतंगमुनि पूजिता, ५१. ब्राह्मी, ५२. माहेश्वरी, ५३. ऐन्द्री, ५४. कौमारी, ५५. वैष्णवी, ५६. चामुण्डा, ५७. वाराही, ५८. लक्ष्मी, ५९. पुरुषाकृति, ६०. विमला,

६१. उत्कर्षिनी, ६२. ज्ञाना, ६३. क्रिया, ६४. नित्या, ६५. बुद्धिदा, ६६. बहुला, ६७. बहुलप्रेमी, ६८. सर्ववाहनवाहना, ६९, निशुम्भशुम्भ हननी, ७०. महिषासुरमर्दिनी, ७१. मधुकैटभहन्त्री, ७२. चण्डमुण्ड-विनाशिनी, ७३. सर्वअसुरविनाशा, ७४. सर्वदानवघातिनी, ७५. सत्या, ७६. सर्वास्त्रधारिणी, ७७. अनेकशस्त्रहस्ता, ७८. अनेकास्त्रधारिणी, ७९. कुमारी, ८०. एककन्या, ८१. कैशोरी, ८२. युवती, ८३. यतिः, ८४. अप्रौढ़ा, ८५. प्रौढ़ा, ८६. वृद्धमाता, ८७ बलप्रदा, ८८. महोदरी, ८९. मुक्तकेशी, ९०. घोररूपा, ९१. महाबला, ९२. अग्निज्वाला, ९३. रौद्रमुखी, ९४. कालरात्रि, ९५. तपस्विनी, ९६. नारायणी, ९७. भद्रकाली, ९८. विष्णुमाया, ९९. जलोदरी, १००. शिवदूती, १०१. कराली, १०२. अनन्ता, १०३. परमेश्वरी, १०४. कात्यायनी, १०५ सावित्री, १०६. प्रत्यक्षा, १०७. ब्रह्मवादिनी, १०८. सर्वशास्त्रमयी।

इस अष्टोत्तर शतनाम की फलश्रुति बतलाते हुए भगवान शिव ने कहा– हे पार्वती! जो साधक इस दुर्गा अष्टोत्तर शतनाम का नित्य पाठ करता है, उसके लिए तीनों लोकों में कुछ भी असाध्य नही रह जाता। वह साधक धन-धान्य, पुत्र-पुत्री, पत्नी, हाथी, घोड़ा तथा धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष प्राप्त करता है और आवागमन के चक्र से मुक्त हो जाता है। हे पार्वती! जो उपासक-आराधक कुमारी पूजन करके भगवती दुर्गा की पूजा, आराधना, उपासना अथवा दुर्गा सप्तशती का पाठ करने के पश्चात इन एक सौ आठ नामों का पाठ करता है, उसे सभी प्रकार की सिद्धियाँ प्राप्त होती है,। इन्द्र आदि सभी देवगणों ने भी सभी सिद्धियाँ इस दुर्गा अष्टोत्तर शतनाम का जप करके ही प्राप्त की हैं।

:: गणेश चालीसा ::

।। दोहा ।।

जय गणपति सद्गुण सदन, करि वर बदन कृपाल॥
विघ्न हरण मंगल करण, जय जय गिरिजालाल ॥

जय-३ गणपति गणराजू । मंगल भरण करण शुभ काजू ॥
जय गजबदन सदन सुखदाता । विश्व विनायक बुद्धि विधाता ॥
वक्र तुण्ड शुचि शुण्ड सुहावन । तिलक त्रिपुण्ड भाल मन भावन॥
राजत मणि मुक्तन उर माला । स्वर्ण मुकुट शिर नयन विशाला ॥
पुस्तक पाणि कुठार त्रिशूलं । मोदक भोग सुगन्धित फूलं ॥
सुन्दर पीताम्बर तन साजित । चरण पादुका मुनि मन राजित ॥
धनि शिव सुवन षडानन भ्राता । गौरी ललन विश्व विख्याता ॥
ऋद्धि सिद्धि तब चंवर सुधारें । मूषक वाहन सोहत द्वारे ॥
कहौं जन्म शुभ कथा तुम्हारी । अति शुचि पावन मंगल कारी ॥
एक समय गिरि राज कुमारी । पुत्र हेतु तप कीन्हों भारी ॥
भयो यज्ञ जब पूर्ण अनूपा । तब पहुँच्यो तुम धरि द्विज रूपा ॥
अतिथि जानि के गौरी सुखारी । बहु विधि सेवा करी तुम्हारी ॥
अति प्रसन्न ह्वै तुम वर दीन्हा । मातु पुत्र हित जो तप कीन्हा ॥
मिलहिं पुत्र तुहि, बुद्धि विशाला । बिना गर्भ धारण, यहि काला ॥
गणनायक, गुण ज्ञान निधाना । पूजित प्रथम, रूप भगवाना ॥
अस केहि अन्तर्धान रूप ह्वै । पलना पर बालक स्वरूप ह्वै ॥
बनि शिशु रुदन जबहिं तुम ठाना । लखि मुख सुख नहिं गौरी समाना ॥
सकल मगन, मुख मंगल गावहिं । नभ ते सुरन, सुमन वर्षावहिं ॥
शम्भु उमा, बहुदान लुटावहिं । सुर मुनिजन, सुत देखन आवहिं ॥
लखि अति आनन्द मंगल साजा । देखन भी आए शनि राजा ॥

निज अवगुणगुनि शनि मन माहीं । बालक, देखन चाहत नाहीं ॥
गिरिजा कछु मन भेद बढ़ायों । उत्सव मोर न शनि तुहि भायो ॥
कहन लगे शनि, मन सकुचाई । का करिहों, शिशु मोहि दिखाई ॥
नहिं विश्वास, उमा उर भयऊ । शनि सों बालक देखन कहाऊ ॥
पड़तहिं, शनि दृग कोण प्रकाशा । बालक सिर उड़ि गयो अकाशा ॥
गिरिजा गिरी विकल ह्वै धरणी । सो दुख दशा गयो नहिं बरणी ॥
हाहाकार मच्यो कैलाशा । शनि कीन्हों लखि सुत का नाशा ॥
तुरत गरुड़ चढ़ि विष्णु सिधाये । काटि चक्र सों गजशिर लाये ॥
बालक के धड़ ऊपर धारयो । प्राण, मन्त्र पढ़ि शंकर डारयो ॥
नाम 'गणेश' शम्भु तब कीन्हें । प्रथम पूज्य बुद्धि निधि, वर दीन्हें ॥
बुद्धि परीक्षा जब शिव कीन्हा । पृथ्वी कर प्रदक्षिणा लीन्हा ॥
चले षडानन, मरमि भुलाई । रचे बैठि तुम बुद्धि उपाई ॥
चरण मातु पितु के धर लीन्हें । तिनके सात प्रदक्षिण कीन्हें ॥
धनि गणेश, कहि शिव हिय हर्ष्यो । नभ ते सुरन सुमन बहु वर्ष्यो ॥
तुम्हारी महिमा बुद्धि बड़ाई । शेष सहस मुख सके न गाई ॥
मैं मति हीन मलीन दुखारी । करहुँ कौन विधि विनय तुम्हारी ॥
भजत 'राम सुन्दर' प्रभुदासा । लग प्रयाग, ककरा, दुर्वासा ॥
अब प्रभु दया दीन पर कीजे । अपनी भक्ति शक्ति कछु दीजे ॥

॥ दोहा ॥

श्री गणेश यह चालीसा, पाठ करै धर ध्यान ।
नित नव मंगल गृह बसै, लहै जगत सनमान ॥
सम्बन्ध अपने सहस्त्र दश, ऋषि पंचमी दिनेश ।
पूरण चालीसा भयो, मंगल मूर्ति गणेश ॥

॥ इति श्री गणेश चालीसा ॥

:: शिव चालीसा ::

दोहा – जय गणेश गिरजा सुवन, मंगल मूल सुजान।
कहत अयोध्यादास अब, देव अभय बरदान ॥

चौपाई

जय गिरिजा पति दीन दयाला। सदा करत सन्तन प्रति पाला ॥
भाल चन्द्रमा सोहत नीके। कानन कुण्डल नागफनी के ॥
संग गौरा सिर गंग बहाये। मुण्ड माल तन छार लगाये ॥
वस्त्र खाल बाघम्बर सोहे। छवि को देखि नाग मुनि मोहे ॥
मैना मातु की हुवै दुलारी। बाम अंग सोहत छवि भारी ॥
कर त्रिशूल सोहत छवि न्यारी। करत सदा शत्रुन छयकारी ॥
नन्दीगण सोहत हैं कैसे। सागर मध्य कमल हैं जैसे॥
कार्तिक श्याम और गण राऊ। इन छबि को कहि जात न काऊ ॥
देवन जबहीं जाय पुकारा। तबहीं दुख प्रभु आप निवारा ॥
किया उपद्रव तारक भारी। देवन सब मिलि तुमहिं पुकारी ॥
तुरत षड़ानन आपं पठायउ। नव निमेष महं मारि गिरायउ ॥
आप जलंधर असुर संहारा। सुयश तुम्हार बिदित संसारा ॥
त्रिपुरा सुर सन युद्ध मचाई। सबहिं कृपा करि लीन बचाई ॥
किया तपहिं भागीरथ भारी। पुरऊ प्रतिज्ञा तासु पुरारी ॥
दानिन मह तब सम कोउ नाहीं। सेवक स्तुति करत सदाहीं ॥
वेद नाम महिमा तुम गाई। अकथ अनादि भेद नही पाई ॥
प्रगटीउ दधिमथंन में ज्वाला। जरत सुरासुर भये बेहाला ॥
कीन्ह दया तब करी सहाई। नील कण्ठ तब नाम कहाई ॥
पूजन रामचन्द्र तब कीन्हा। जीत के लंक बिभीषण दीन्हा ॥

सहस कमल में हो रहे धारी। कीन्ह परीक्षा तबहिं पुरारी ॥
एक कमल प्रभु राखेउ जोई। कमल नयन पूजन चहं सोई ॥
कठिन भक्ति देखी प्रभु शंकर। भये प्रसन्न दिये इच्छित वर ॥
जय जय जय अनन्त अविनाशी। करत कृपा सब के घटवासी ॥
दुष्ट सकल नित मोहि सतावै। भ्रमत रहो मोहि चैन न आवै ॥
त्राहि त्राहि मैं नाथ पुकारो। संकट से मोहि आन उबारो ॥
माता पिता भ्राता सब कोई। संकट में पूछत नहिं कोई ॥
स्वामी एक है आश तुम्हारी। आय हरहु मम संकट भारी ॥
धन निरधन को देत सदाही। जो कोई जांचत वह फल पाई ॥
स्तुति केहि विधि करों तुम्हारी। क्षमहुं नाथ अब चूक हमारी ॥
शंकर हो संकट के नाशन। विघ्न विनाशन मंगल कारण ॥
योगी मुनिगण ध्यान लगावै। नारद शारद शीश नवावै ॥
नमो नमो जय नमः शिवाये। सुर ब्रह्मादिक पार न पाये ॥
जो यह पाठ करै मन लाई । ता पर निश्चय शम्भु सहाई ॥
ऋनियां जो कोई हो अधिकारी। पाठ करै सो पावन हारी ॥
पुत्र हेतु इच्छा कर जोई। निश्चय शिव प्रसाद ते होई ॥
पण्डित त्रयोदशी को लावै। ध्यान पुर्वक होम करावै ॥
त्रयोदशी व्रत करै हमेशा। तन नहिं ताके रहे कलेशा ॥
धूप दीप नैवेद्य चढ़ावे, शंकर सन्मुख पाठ सुनावे ॥
जन्म जन्म के पाप नसावे, अन्त वास शिव पुर में पावे ॥
कहै "भक्त" आस तुम्हारी। नाथ सकल दुःख हरहु हमारी ॥

दोहा- नित्य नेम करि प्रातहि पाठ करूँ चालीस ।
तुम मेरी मन कामना, पूर्ण करो जगदीश ॥
मंगसर छठ हेमन्त ऋतु, सम्बत् चौंसठ जान ।
स्तुति चालीसा शिवहिं, पूर्ण कीन्ह कल्याण ॥

श्री पार्वती चालीसा

दो॰ - जय गिरी तनये दक्षजे शंभु प्रिये गुणखानि।
गणपति जननी पार्वती अम्बे! शक्ति! भवानि ॥

चौपाई

ब्रह्मा भेद न तुम्हरो पावे। पंच बदन नित तुमको ध्यावे।
षटमुखकहि न सकतयश तेरो। सहसबदन श्रम करत घनेरो॥
तेऊ पार न पावत माता। स्थित रक्षा लय हित सजाता॥
अधर प्रवाल सदृश अरुणारे। अति कमनीय नयनकजरारे॥
ललित लालट विलेपित केशर। कु कुम अक्षतशोभामनहर॥
कनक बसन कंचुकी सजाए। कटि मेखला दिव्य लहराए ॥
कंठ मदार हार की शोभा। जाहि देखिं सहजहि मन लोभा॥
बालारुण अनन्त छबि धारी। आभूषण की शोभा प्यारी॥
नाना रत्न जटित सिंहासन। तापर राजति हरि चतुरानन॥
इन्द्रादिक परिवार पूजित। जग मृग नाग यज्ञ रव कूजित॥
गिरकैलासनिवासिनी जै जै। कोटिकप्रभा विकासिन जै जै॥
त्रिभुवन सकलकुटुम्ब तिहारी, अणु२ महंतुम्हारी उजियारी॥
हैं महेश प्राणेश! तुम्हारे। त्रिभुवन के जो नित रखवारे॥
उनसोपति तुमप्रासकीन्ह जब। सुकृत पुरातनउदितभए तब॥
बूढो बैल सवारी जिनकी। महिमा का गावे कोउ तिनकी॥
सदा श्मशान बिहारी शंकर। आभूषण है भुजंग भयंकर॥
कण्ठ हलाहल को छबिछायी। नीलकण्ठ की पदवी पायी॥
देव मगनके हितअसकीन्हों। विषलैआपु तिनहि अमिदीन्हों॥
ताकीतुम पत्नी छविधारिणि। दूरित विदारिणिमंगलकारिणि॥

देखि परम सौन्दर्य तिहारो। त्रिभुवन चकित बनावन हारो॥
भय भीता सो माता गंगा। लज्जा मय है सलिल तरंगा॥
सौत समान शम्भु पहआयी। विष्णुपदाब्जछोड़ि सो धायी॥
तेहिकोकमल बदनमुरझायो। लखिसत्वरशिवशीश चढ़ायो॥
नित्यानन्दकरीबरदायिनी। अभयभक्तकरनित अनपायिनि॥
अखिलपाप त्रयतापनिकन्दनि। माहेश्वरीहिमालयनन्दिनि॥
काशी पुरी सदा मन भायी। सिद्ध पीठ तेहि आपु बनायी॥
भगवती प्रतिदिन भिक्षा दात्री। कृपा प्रमोद सनेह विधात्री॥
रिपुक्षय कारिणि जै जै अम्बे। वाचा सिद्ध करि अबलम्बे॥
गौरी उमा शंकरी काली। अन्नपूर्णा जग प्रति पाली॥
सब जन की ईश्वरी भगवती। पति प्राणा परमेश्वरी सती॥
तुमने कठिन तपस्या कीनी। नारद सों जब शिक्षा लीनी॥
अन्न न नीर न वायु अहारा। अस्थिमात्रतन भयउतुम्हारा॥
पत्र धास को खाद्य न भायउ। उमा नाम तब तुमने पायउ॥
तपबिलोकि रिषि सात पधारे। लगे डिगावन डिगी न हारे॥
तब तव जयजय जयउच्चारेउ। सप्तरिषीनिज गेहसिधारेउ॥
सुर विधि विष्णु पास तब आए। वर देने के वचन सुनाए॥
मांगे उवाउरपतितुमतिनसों। चाहतजगत्रिभुवननिधिजिनसों॥
एवमस्तु कहि ते दोऊ गए। सुफल मनोरथ तुमने लए॥
करि विवाह शिव सों हे भामा। पुनः कहाई हर की बामा॥
जो पढ़िहै जन यह चालीसा। धन जनसुख देइहै तेहि ईसा॥

दो॰ - कूट चंद्रिका सुभग शिर जयति जयति सुख खानि।
पार्वती निज भक्त हित रहहु सदा वरदानि॥

॥ श्री गणेशाय नमः॥

:: दुर्गा चालीसा ::

नमो नमो दुर्गे सुख करनी। नमो नमो अम्बे दुखहरणी ॥
निरंकार है ज्योति तुम्हारी। तिहुँलोक फैली उजियारी ॥
शशि ललाट मुख महा विशाला। नेत्र लाल भृकुटी विकराला ॥
रूप मातु को अधिक सुहावे। दरश करत जन अति सुख पावे ॥
तुमही संसार शक्ति लै कीना । पालन हेतु अन्न धन दीना ॥
अन्न पूरणा हुई जग पाला तुमही आदि सुन्दरी बाला ॥
प्रलयकाल सब नाशनहारी। तुम गौरी शिवशंकर प्यारी ॥
शिव योगी तुम्हारे गुण गावे। ब्रह्मा विष्णु तुम्हें नित ध्यावे ॥
रूप सरस्वती का तुम धारा। दे सुबुद्धि ऋषि मुनिन उबारा ॥
धरा रूप नरसिंह को अम्बा। प्रगट भई फाड़कर खम्भा ॥
रक्षा कर प्रहलाद बचायो। हिरण्याक्ष को स्वर्ग पठायो ॥
लक्ष्मी रूप धरो जग माही। श्री नारायण अंग समाहिं ॥
क्षीर-सिन्धु में करत विलासा। दया सिन्धु दीजे मन आशा ॥
हिंगलाज में तुम्ही भवानी। महिमा अमित न जात बखानी ॥
मातंगी धूमावती माता। भुवनेश्वरी बगला सुखदाता ॥
श्री भैरव तारा जगतारिणि। छिन्नभाल भव दुःख निवारिणि ॥
केहरि वाहन सोह भवानी। लंगुर वीर चलत अगवानी ॥
कर में खप्पर खड़ग विराजे। जाको देखि काल डर भगे ॥
सोहै कर मे अस्त्र त्रिशूल। जाते उठत शत्रु हिय शूला ॥
नगर कोट में तुम्हीं विराजत। तिहुँ लोक में डंका बाजत ॥

शुम्भ-निशुम्भ दानव तुम मारे। रक्तबीज शंखन संहारे ॥
महिषासुर नृप अति अभिमानी। जेहि अध भार मही अकुलानी ॥
रूप कराल काली को धारा। सेन सहित तुम तेहि संहारा ॥
परी पीर सन्तन पर जब जब। भई सहाय मातु तुम तब-तब ॥
आभापुर अरूवासब लोका। तब महिमा सब कहे अशोका ॥
ज्वाला मे है ज्योति तुम्हारी। तुम्हें सदा पूजै नर नारी ॥
प्रेम भक्ति से जो यश गावै। दुःख दरिद्र निकट नहिं आवै ॥
ध्यावै तुम्हें जो नर मन लाई। जनम मरण ताकर छुटि जाई ॥
योगी सुर मुनि कहत पुकारी। योग न होई बिनु शक्ति तुम्हारी ॥
शंकर आश्चर्य तप कीनों। काम अरू क्रोध जीति सब लीनों ॥
निशदिन ध्यान धरो शंकर को। काहु काल नहिं सुमिरो तुमको ॥
शक्ति रूप को मरम न पायो। शक्ति गई तब मन पछितायो ।
शरणागत होई कीर्ति वखानी। जै जै जै जगदम्ब भवानी ॥
भई प्रसन्न आदि जगदम्बा। दई शक्ति नाहिं कीन विलम्बा ॥
मोको मातु कष्ट अति घेरो। तुम बिन कौन हरे दुःख मेरो ॥
आशा तृष्णा निपट सतावै। रिपु मुरख मोहि अति डर पावै ॥
शत्रु नाश कीजै महारानी। सुमिरों एकचित तुम्हें भवानी ॥
करो कृपा हे मातु दयाला। रिद्धि सिद्धि देई करहुँ निहाला ॥
जब लगि जियों दया फल पाऊँ। तुम्हरो यश मैं सदा सुनाऊँ ॥
दुर्गा चालीसा जो गावे। सब सुख भोग परम पद पावै ॥
देवीदास शरण निज जानी। करहु कृपा जगदम्बे भवानी ॥

सानन्दमानन्दवने वसन्तमानन्दकन्दं हतपापवृन्दम् ।
वाराणसीनाथमनाथनाथम् श्री विश्वनाथं शरणं प्रपद्ये ॥

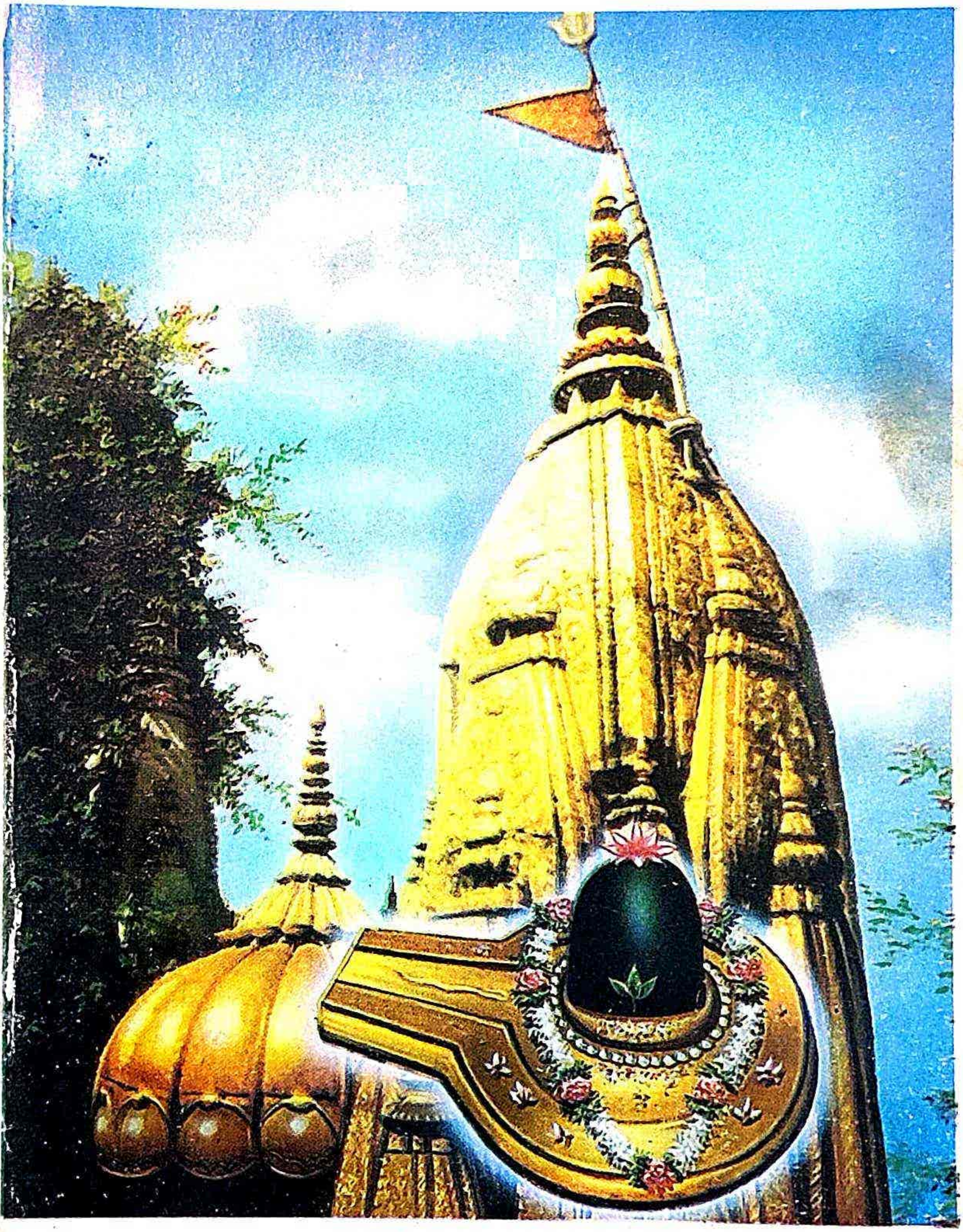

श्री विश्वनाथ

"शिव स्तुति" बाबा भूतनाथ धाम, कोलकाता

सह्याद्रिशीर्षे वमले वसन्तम् गोदावरीतारपवित्रदेशे ।
यद्दर्शनात् पातकमाशु नाशम् प्रयाति तं त्र्यम्बकमीशमांडे ॥

:: काली चालीसा ::

दोहा– जय काली जगदम्ब जय, हरनि ओघ अघ पुंज।
वास करहु निज दास के, निशदिन हृदय-निकुंज॥
जयति कपाली कालिका, कंकाली सुख दानि।
कृपा करहु वरदायिनी, निज सेवक अनुमानि॥

जय-३ काली कंकाली। जय कपालिनी, जयति कराली॥
शंकर प्रिया, अपर्णा, अम्बा। जय कपर्दिनी, जय जगदम्बा॥
आर्या, हला, अम्बिका, माया। कात्यायनी उमा जगजाया॥
गिरिजा गौरी दुर्गा चण्डी। दाक्षाणायिनी शाम्भवी प्रचंडी॥
पार्वती मंगला भवानी। विश्वकारिणी सती मृडानी॥
सर्वमंगला शैल- नन्दिनी। हेमवती तुम जगत वन्दिनी॥
ब्रह्मचारिणी कालरात्रि जय। महारात्रि जय मोहरात्रि जय॥
तुम त्रिमूर्ति रोहिणी कालिका। कूष्माण्डा कार्तिकी चण्डिका॥
तारा भुवनेश्वरी अनन्या। तुम्हीं छिन्नमस्ता शुचिधन्या॥
धूमावती षोड़शी माता। बगला मातंगी विख्याता॥
तुम भैरवी मातु तुम कमला। रक्तदन्तिका कीरति अमला॥
शाकम्भरी कौशिकी भीमा। महातमा अग जग की सीमा॥
चन्द्रघण्टिका तुम सावित्री। ब्रह्मवादिनी मां गायत्री॥
रूद्राणी तुम कृष्ण पिंगला। अग्निज्वाल तुम सर्वमंगला॥
मेघस्वना तपस्विनि योगिनी। सहस्त्राक्षि तुम अगजग भोगिनी॥
जलोदरी सरस्वती डाकिनी। त्रिदशेश्वरी अजेय लाकिनी॥
पुष्टतुष्टि धृति स्मृति शिव दूती। कामाक्षी लज्जा आहूती॥
महोदरी कामाक्षि हारिणी। विनायकी श्रुति महा शाकिनी॥
अजा कर्ममोही ब्रह्माणी। धात्री बाराही शर्वाणी॥
स्कन्द मातु तुम सिंह वाहिनी। मातु सुभद्रा रहहु दाहिनी॥

नाम रूप गुण अमित तुम्हारे। शेष शारदा बरणत हारे॥
तनु छवि श्यामवर्ण तव माता। नाम कालिका जग विख्याता॥
अष्टादश तब भुजा मनोहर। तिनमहं अस्त्र विराजत सुंदर॥
शंख चक्र अरू गदा सुहावन। परिघ भुशुण्डी घण्टा पावन॥
शूल बज्र धनुबाण उठाये। निशिचर कुल सब मारि गिराये॥
शुंभ निशुंभ दैत्य संहारे। रक्तबीज के प्राण निकारे॥
चौंसठ योगिनी नाचत संगा। मद्यपान कीन्हैउ रण गंगा॥
कटि किंकिणी मधुर नूपुर धुनि। दैत्यवंश कांपत जेहि सुनि-सुनि॥
कर खप्पर त्रिशूल भयकारी। अहै सदा सन्तन सुखकारी॥
शव आरूढ़ नृत्य तुम साजा। बजत मृदंग भेरि के बाजा॥
रक्त पान अरिदल को कीन्हा। प्राण तजेउ जो तुम्हिं न चीन्हा॥
लपलपाति जिव्हा तव माता। भक्तन सुख दुष्टन दुःख दाता॥
लसत भाल सेंदुर को टीको। बिखरे केश रूप अति नीको॥
मुंडमाल गल अतिशय सोहत। भुजामाल किंकण मनमोहत॥
प्रलय नृत्य तुम करहु भवानी। जगदम्बा कहि वेद बखानी॥
तुम मशान वासिनी कराला। भजत तुरत काटहु भवजाला॥
बावन शक्ति पीठ तव सुन्दर। जहाँ बिराजत विविध रूप धर॥
विन्धवासिनी कहूँ बड़ाई। कहँ कालिका रूप सुहाई॥
शाकम्भरी बनी कहँ ज्वाला। महिषासुर मर्दिनी कराला॥
कामाख्या तव नाम मनोहर। पुजवहिं मनोकामना द्रुततर॥
चंड मुंड वध छिन महं करेउ। देवन के उर आनन्द भरेउ॥
सर्व व्यापिनी तुम माँ तारा। अरिदल दलन लेहु अवतारा॥
खलबल मचन सुनत हुँकारी। अगजग व्यापक देह तुम्हारी॥
तुम विराट रूपा गुणखानी। विश्व स्वरूपा तुम महारानी॥
उत्पत्ति स्थिति लय तुम्हरे कारण। करहु दास के दोष निवारण॥
माँ उर वास करहू तुम अंबा। सदा दीन जन की अवलंबा॥

तुम्हारो ध्यान धरै जो कोई। ता कहँ भीति कतहुँ नहिं होई॥
विश्वरूप तुम आदि भवानी। महिमा वेद पुराण बखानी॥
अति अपार तव नाम प्रभावा। जपत न रहन रंच दुःख दावा॥
महाकालिका जय कल्याणी। जयति सदा सेवक सुखदानी॥
तुम अनन्त औदार्य विभूषण। कीजिये कृपा क्षमिये सब दूषण॥
दास जानि निज दया दिखावहु। सुत अनुमानित सहित अपनावहु॥
जननी तुम सेवक प्रति पाली। करहु कृपा सब विधि माँ काली॥
पाठ करै चालीसा जोई। तापर कृपा तुम्हारी होई॥

दोहा– जय तारा, जय दक्षिणा, कलावती सुखमूल।
शरणागत "भक्त" है, रहहु सदा अनुकूल॥

सरल और कठिन

१. उपदेश देना सरल है – अमल करना कठिन है।
२. खर्च करना सरल है – कमाना कठिन है।
३. शत्रु बनाना सरल है – मित्र बनाना कठिन है।
४. विवाह करना सरल है – निबाह करना कठिन है।
५. वचन देना सरल है – पालन करना कठिन है।
६. काम बिगाड़ना सरल है – काम बनाना कठिन है।
७. उधार बेचना सरल है – वसूल करना कठिन है।

योग्यता

कहने योग्य	–	सत्य।	खाने योग्य	–	गम।
पीने योग्य	–	क्रोध।	लेने योग्य	–	ज्ञान।
देने योग्य	–	दान।	बोलने योग्य	–	मधुर वचन।
धारण योग्य	–	सन्तोष।	दिखाने योग्य	–	दया।
जीतने योग्य	–	मोह।	पढ़ने योग्य	–	सद्ग्रंथ।
छोड़ने योग्य	–	ईर्ष्या।	समझने योग्य	–	अपनी त्रुटियाँ।
व्यवहार योग्य	–	सहनशीलता।	स्मरण करने योग्य	–	हरिनाम।
करने योग्य	–	दूसरों की भलाई।	सम्पूर्ण योग्य	–	इंसानियत।

॥ अथ श्री सरस्वती चालीसा ॥

॥ दोहा ॥

जनक जननिपदमदुरज, निज मस्तक पर धारि।
बन्दौं मातु सरस्वती, बुद्धि बल दे दातारि॥
पूर्ण जगत में व्याप्त तब, महिमा अमित अनंतु।
रामसागर के पाप को, मातु तुही अब हन्तु॥

जय श्रीसकल बुद्धि बलरासी, जय सर्वज्ञ अमर अविनाशी।
जय जय जय वीणाकर धारी, करती सदा सुहंससवारी।
रूप चर्तुभुजधारी माता, सकल विश्व अन्दर विख्याता।
जगमें पापा बुद्धि जब होती, तबही धर्म की फीकी ज्योति।
तबहि मातु का निज अवतारा, पाप ही न करती महितारा।
बाल्मीकि जी थे हत्यारा, तब प्रसाद जानै संसारा।
रामचरित जो रचे बनाई, आदि कवि पदवी को पाई।
कालीदास जो भये विख्याता, तेरी कृपा दृष्टि से माता।
तुलसी सूर आदि विद्वाना, भये जो और ज्ञानी नाना।
तिन्ह न और रहेउ अवलम्बा, केवल कृपा आपकी अम्बा।
करहु कृपा सोई मातु भवानी, दुखित दीन निज दाय हिजानी।
पुत्र करई अपराध बहूता, तेहि न घर इचित सुन्दरमाता।
राखुलाज जननि अब मेरी, विनय करु भाँति बहुतेरी।
मैं अनाथ तेरी अवलंबा, कृपा करऊ जय जय जगदंबा।
मधुकैटभ जो अति बलवाना, बाहुयुद्ध विष्णु से ठाना।
समर हजार पांच में घोरा, फिर भी मुख उनसे नहीं मोरा।
मातु सहाय कीन्ह ते हि काला, बुद्धि विपरीत भई खलहाला।
तेहि ते मृत्यु भई खल केरी, पुरवहु मातु मनोरथ मेरी।
चंड मुण्ड जो थे विख्याता, छणमहु संहारे उते हिमाता।

रक्त बीज से समरथ पापी, सुरमुनि हृदयधरा सबकाँपी।
काटेउ सिर जिम कदली खम्बा, बार बिन ॐ जगदंबा।
जगप्रसिद्ध जो शुंभनिशुंभा, छण में बधें ताहि तूँ अम्बा।
भरत-मातु बुद्धि फेरेऊ जाई, रामचन्द्र बनवास कराई।
एहिविधि रावन वध तू कीन्हा, सुर नर मुनि सबको सुख दीन्हा।
को समरथ तव यश गुन गाना, निगम अनादि अनंत बखना।
विष्णुरूद्र अजसकहिन मारी, जिनकी हो तुम रक्षाकारी।
रक्त दन्तिका और शताक्षी, नाम अपार है दानव भक्षी।
दुर्गम काज धरा पर कीन्हा, दुर्गा नाम सकल जगलीन्हा।
दुर्ग आदि हरनी तू माता, कृपा करहु जब जब सुखदाता।
नृप कोपिन को मारन चाहे, कानन में घेरे मृग नाहै।
सागर मध्य पोत के भंजे, अति तूफान नहिं कोऊ संगे।
भूत प्रेत बाधा या दुःख में, हो दरिद्र अथवा संकट में।
नाम जपे मंगल सब होई, संशय इसमें करई न कोई।
पुत्रहीन जो आतुर भाई, सबै छाँडि पूजें एहि भाई।
करै पाठ नित यह चालीसा, होय पुत्र सुन्दर गुण ईशा।
धूपादिक नवैद्य चढ़ावै, संकट रहित अवश्य हो जावै।
भक्तिमातुकी करैं हमेशा, निकट न आवै ताहिकलेशा।
बंदी पाठ करें सत बारा, बंदी पाश दूर हो सारा।
रामसागर बाँधि हेतु भवानी, कीजै कृपा दास निज जानी॥

॥ दोहा॥

मातु सूर्य कान्ति तव, अन्धकार मम रूप।
डूबन से रक्षा करहु परूँ न मैं भव कूप॥
बलबुद्धि विद्या देहु मोहि, सुनहु सरस्वतीमातु।
राम सागर अधम को आश्रय तू ही ददातु॥

:: लक्ष्मी चालीसा ::

दोहा-मातु लक्ष्मी करि कृपा, करो हृदय में वास ।
मनोकामना सिद्ध करि, पुरवहु मेरी आस ॥

सोरठा-यही मोरअरदास, हाथ जोरि विनती करूँ ।
सब विधि करौ सुवास, जयजननि जगदम्बिका ॥

सिन्धु सुता मैं सुमिरों तोही, ज्ञान बुद्धि विद्या दे मोही ।
तुम समान नहीं कोई उपकारी, सब विधि पुरवहु आस हमारी ।
जै जै जय जननी जगदम्बा, सब के तुम ही हो अवलम्बा ।
तुम हो सब घट घट के वासी, विनती यही हमारी खासी ।
जग जननी जै सिन्धु कुमारी, दीनन के तुम हो हितकारी ।
बिनवों नित्य तुमहिं महारानी, कृपा करो जगजननि भवानी ।
केहि विधि स्तुति करौं तिहारी, सुधि लीजै अपराध बिसारी ।
कृपा दृष्टि चितवो मम ओरी, जगजननि विनती सुन मोरी ।
ज्ञान बुद्धि सब सुख की दाता, संकट हरो हमारो माता ।
क्षीरसिन्धु जब विष्णु मथायो, चौदह रत्न सिन्धु में पायो ।
चौदह रत्न में तुम सुखरासी, सेवा कियो प्रभु बन दासी।
जो जो जन्म प्रभु जहाँ लीना, रूप बदल तहं सेवा कीन्हा ।
स्वयं विष्णु जब नर तनु धारा, लीन्हेउ अवधपुरी अवतारा ।
तब तुम प्रगट जनकपुर माहीं, सेवा कियो हृदय पुलकाहीं ।
अपनायी तोही अन्तर्यामी, विश्व विदित त्रिभुवन के स्वामी ।
तुम सम प्रबल शक्ति नहिं आनि, कंहलौ महिमा कहौं बखानी ।
मन क्रम वचन करे सेवकाई, मन इच्छित वाँछित फल पाई ।
तजि छल और चतुराई, पूजहिं विविध भाँति मन लाई ।

और हाल मैं कहौं बुझाई, जो यह पाठ करै मन लाई।
ताको कोई कष्ट न होई, मन इच्छित पावै फल सोई ।
त्राहि-त्राहि जय दुख निवारिणी, ताप भव बंधन हारिणी ।
जो यह पढ़े और पढ़ावे, ध्यान लगाकर सुनै सुनावै ।
ताको कोई रोग न सतावे, पुत्र आदि धन सम्पति पावै ।
पुत्रहीन अरु सम्पति हीना, अन्ध वधिर कोढ़ी अति दीना ।
विप्र बोलाय के पाठ करावै, शंका दिल में कभी न लावै ।
पाठ करावें दिन चालीसा, तापर कृपा करें गौरीशा ।
सुख सम्पति बहुत सो पावै, कमी नहीं काहु की आवै ।
बारह मास करै सो पूजा, तेहि सम धन्य और नहिं दूजा ।
प्रति दिन पाठ करै मन माही, उन सम कोई जग में कहुं नाहीं ।
बहु विधि क्या मैं करौं बड़ाई, लेय परीक्षा ध्यान लगाई ।
करि विश्वास करै व्रत नेमा, होय सिद्ध उपजै उर प्रेमा ।
जय जय जय लक्ष्मी भवानी । सब में व्यापति हो गुणखानी ।
तुम्हरो तेज प्रबल जग माहीं, तुम सम कोऊ दयालु कहुं नाहिं ।
मोहि अनाथ की सुध अब लीजे, संकट काटि भक्ति मोहि दीजै।
भूल चूक करि क्षमा हमारी, दर्शन दीजै दशा निहारी ।
केहि प्रकार मैं करौं बड़ाई, ज्ञान बुद्धि मोहि नहिं अधिकाई ।
बिन दर्शन व्याकुल अधिकारी, तुमहि अछत दुख सहते भारी ।
नहिं मोहि ज्ञान बुद्धि है मन में, सब जानत हो अपने मन में ।
रूप चतुर्भुज करके धारण, कष्ट मोर अब करहु निवारण।

दोहा-त्राहि त्राहि दुख हारिणी, हरो बेगि सब त्रास ॥
जयति जयति जय लक्ष्मी, करो दुश्मन का नाश ॥
रामदास धरि ध्यान नित, विनय करत कर जोर ॥
मातु लक्ष्मी दास पै, करहु दया की कोर ॥

॥ इति लक्ष्मी चालीसा समाप्तम् ॥

:: गायत्री चालीसा ::

ह्रीं श्रीं क्लीं मेधा, प्रभा, जीवन ज्योति प्रचंड ।
शांति, क्रांति, जागृति, प्रगति, रचना शक्ति अखण्ड ॥
जगत जननि, मंगल करनि, गायत्री सुखधाम ॥
प्रणवो सावित्री, स्वधा, स्वाहा - पूरन काम ॥
भूभुर्वः स्वः ॐ युत जननी, गायत्री नित कलिमल दहनी ।
अक्षर चौबीस परम पुनीता, इसमें बसें शास्त्र श्रुति, गीता ॥
शाश्वत सतोगुणी सत रूपा, सत्य सनातन सुधा अनूपा ॥
हँसारूढ़ श्वेताम्बर धारी, स्वर्ण कान्ति शुचि गगन बिहारी ॥
पुस्तक, पुष्प, कमण्डल, माला, शुभ्र वर्ण तनु नयन विशाला।
ध्यान धरत पुलकित हिय होई, सुख उपजत दुख- दुरमति खोई ॥
कामधेनु तुम सुर तरु छाया, निरंकार की अद्भुत माया ।
तुम्हारी शरण गहै जो कोई, तरै सकल संकट सों सोई ॥
सरस्वती लक्ष्मी तुम काली, दिपै तुम्हारी ज्योति निराली।
तुम्हारी महिमा पार न पावै, जो शारद शत मुख गुण गावे ॥
चार वेद की मातु पुनीता, तुम ब्रह्माणी गौरी सीता ।
महामन्त्र जितने जग मांही, कोऊ गायत्री सम नाहीं ॥
सुमिरत हिय में ज्ञान प्रकासै, आलस पाप अविद्या नासे ।
सृष्टि बीज जग जननी भवानी, कालरात्रि वरदा कल्याणी ॥
ब्रह्मा विष्णु रुद्र सुर जेते, तुम सों पावे सुरता तेते ।
तुम भक्तन की, भक्त तुम्हारे, जननिहिं पुत्र प्राण ते प्यारे ॥
महिमा अपरम्पार तुम्हारी, जय जय जय त्रिपदा भय हारी ।
पूरति सकल ज्ञान विज्ञाना, तुम सम अधिक न जग में आना ॥

तुमहिं जानि कछु रहै न शेषा, तुमहिं पाय कछु रहै न कलेशा ।
जानत तुमहि तुमहिं ह्यो जाई, पारस परसि कुधातु सुहाई ॥
तुम्हरी शक्ति दिपै सब ठाई, माता तुम सब ठौर समाई ।
ग्रह नक्षत्र ब्रह्माण्ड घनेरे, सब गतिवान तुम्हारे प्रेरे ॥
सकल सृष्टि की प्राण विधाता, पालक पोषक नाशक त्राता ।
मातेश्वरी दया व्रत धारी, तुम सन तरे पातकी भारी ।
जांपर कृपा तुम्हारी होई, तापर कृपा करे सब कोई ।
मन्द बुद्धि से बुद्धि बल पावें, रोगी रोग रहित हो जावे ॥
दारिद्र मिटै कटै सब पीरा, नाशै दुःख हरे भव पीरा ।
गृह क्लेश चित चिन्ता भारी, नासै गायत्री भय हारी ॥
सन्तति हीन सुसन्तति पावें, सुख सम्पति युत मोद मनावें ।
भूत पिशाच सबै भय खावें, यम के दूत निकट नहिं आवें ॥
जो सधवा सुमिरें चित लाई, अक्षत सुहाग सदा सुखदाई ।
घर वर सुखप्रद लहैं कुमारी, विधवा रहे सत्य व्रत धारी ॥
जयति जयति जगदम्ब भवानी, तुम सम और दयालु न दानी ।
जो सदगुरु सों दीक्षा पावें, सो साधन को सफल बनावें ।
सुमिरन करें सुरुचि बड़िभागी, लहैं मनोरथ गृही विरागी ।
अष्ट सिद्धि नवनिधि की दाता, सब समर्थ गायत्री माता ॥
ऋषि मुनि यती, तपस्वी जोगी, आरत, अर्थी, चिन्तित भोगी ।
जो जो शरण तुम्हारी आवे, सो सो मनवांछित फल पावे ॥
बल बुधि विद्या शील स्वभाऊ, धन वैभव यश तेज उछाऊ ।
सकल बढ़े उपजे सुख नाना, जो यह पाठ करै धरि ध्याना ॥

:: श्री नवग्रह चालीसा ::

दोहा

श्री गणपति गुरुपद कमल, प्रेम सहित सिरनाँय ।
नवग्रह चालीसा कहत, शारद होत सहाय ॥ १॥
जय जय रवि शशि सोम बुध, जय गुरु भृगु शनि राज।
जयति राहु अरु केतु ग्रह, करहु अनुग्रह आज ॥ २॥

चौपाई

श्री सूर्य स्तुति (श्री सूर्याय नमः)

प्रथमहि रवि कहं नावों माथा। करहु कृपा जनि जानि अनाथा ॥
हे आदित्य दिवाकर भानू। मैं मति मन्द महा अज्ञानू ॥
अब निज जन कहं हरहु कलेषा। दिनकर द्वादश रूप दिनेशा ॥
नमो भास्कर सूर्य प्रभाकर। अर्क मित्र अघ मोघ छमाकर ॥

श्री चन्द्र स्तुति (श्री चन्द्राय नमः)

शशि मयंक रजनीपति स्वामी। चन्द्र कलानिधि नमो नमामि ॥
राकापति हिमांशु राकेशा। प्रणवत जन तन हरहु कलेशा ॥
सोम इन्दु विधु शान्ति सुधाकर। शीत रश्मि औषधि निराकर ॥
शोभित सुन्दर भाल महेषा। जनहि भक्ति उर भरहु हमेशा ॥

श्री मंगल स्तुति (श्री भौमाय नमः)

जय जय जय मंगल सुखदाता । लोहित भौमादिक विख्याता ॥
अंगारक कुज रूज ऋणहारी। करहु दया यही विनय हमारी ॥
हे माहि सुत छिति सुत सुखराशी। लोहितांग जय जन अधराशी ॥
अगम अमंगल अब हर लीजै। सकल मनोरथ पूरण कीजै ॥

श्री बुध स्तुति (श्री बुधाय नमः)

जय शशि नन्दन बुध महाराजा। करहु सकल जन कहं शुभ काजा॥
दीजै बुद्धिबल सुमति सुजाना। कठिन कष्ट हरि करि कल्याना ॥
हे तारा सुत रोहिणी नन्दन। चन्द्रसुवन दुख द्वन्द्व निकन्दन ॥
पूजहु आस दास कहुँ स्वामी। प्रणत पाल प्रभु नमो नमामी ॥

श्री वृहस्पति स्तुति (श्री गुरुवेय नमः)

जयति जयति जय श्री गुरुदेवा। करों सदा मैं तुम्हारी प्रभु सेवा॥
देवाचार्य तुम देव गुरु ज्ञानी । इन्द्र पुरोहित विद्यादानी ॥
वाचस्पति बागीश उदारा। जीव वृहस्पति नाम तुम्हारा ॥
विद्या सिन्धु अंगिरा नामा। करहु सकल विधि पूरण कामा ॥

श्री शुक्र स्तुति (श्री शुक्राय नमः)

शुक्र देव पद तल जल जाता। दास निरन्तर ध्यान लगाता ॥
हे उशना भार्गव भृगु नन्दन। दैत्य पुरोहित दुष्ट निकन्दन ॥
भृगुकुल भूषण दूषण हारी। हरहु नेष्ट ग्रह करहु सुखारी॥
तुहिं द्विजवर जोशी शिरताजा। नर शरीर के तुमहीं राजा ॥

श्री शनि स्तुति (श्री शनिश्चराय नमः)

जय श्री शनिदेव रवि नन्दन। जय कृष्णो सौरी जग वन्दन ॥
पिंगल मन्द रौद्र यम नामा। वप्र आदि कोणस्थ ललामा ॥
वक्र दृष्टि पिप्पल तन साजा। क्षण मंह करत रंक क्षण राजा ॥
घरहु स्वर्ग नदल धरहु पिहाका। हरहु विपत्ति छाया के लाला ॥

श्री राहु स्तुति (श्री राहुवे नमः)

जय जय राहु गगन प्रविसइया। तुमही चन्द्र आदित्य ग्रसइया ॥
रवि शशि अरि स्वर्भानु धारा। शिखी आदि बहु नाम तुम्हारा ॥

सहिकेय तुम निशाचर राजा। अर्धकाय जग राखहु लाजा ॥
यदि ग्रह समय पाई कहिं आवहु। सदा शान्ति और सुख उपजावहु॥

श्री केतु स्तुति (श्री केतवे नमः)

जय श्री केतु कठिन दुखहारी। करहु सुजन हित मंगल कारी ॥
ध्वजयुत रुण्ड रूप विकराला। घोर रौद्र तन अघमन काला ॥
शिखीं तारिका ग्रह बलवाना। महा प्रताप न तेज ठिकाना ॥
वाहनं मीन महा शुभकारी। दीजै शान्ति दया उर धारी ॥

ग्रहशाँति फल

वेद पुराण सदा गुण गावत। बरणत कोऊ पार नहिं पावत ॥
जहं जहं पद चिन्ह तुम कर ग्रह नाना। दर्शन करत हरत अघनाना॥
नवग्रह शान्ति करत सबै सुख वेतू। जन तन कष्ट निवारण सेतू ॥
जो नित पाठ करत चित लावत। सब सुख भोगि परम पद पावत ॥

दोहा

धन्य नवोग्रह देव प्रभु महिमा अपरम्पार ।
चित नव मंगल मोद ग्रह जगत जनन सुख द्वार ॥
यह चालीसा नवोग्रह पढ़त मन लगाय दास ।
पढ़त प्रेम युत बढ़त सुख सर्वानन्द हुलास ॥

तीन को मत रोको

(१) दान देने वाले दाता को
(२) धर्म प्रचार करने वाले सन्तों को
(३) सेवा करने वाले सेवक को

:: भैरव चालीसा ::

दोहा

बटुकनाथ भैरव प्रभु, गल मुण्डन की माल ।
निज जन पर कर कृपा, श्री जगदम्बा के लाल ॥

जय –२ जय काली के लाला, करौ कृपा सन्तन प्रतिपाला ।
गल सोहे मुण्डन की माला, कर सोहे त्रिशूल विशाला ।
श्याम स्वरूप वर्ण विशाला, पीकर मद रहते मतवाला ।
एक हाथ में खप्पर राजे, दूजे कर त्रिशूल विराजे ।
श्वान सवारी सुन्दर सोहे, रुद्र बटुक भक्तन मन मोहे ।
संग साथ भूतन की सेना, रहे मस्त मतवारे नैना ।
चक्र तुण्ड अमरेश पियारा, त्रास-हरन है नाम तिहारा ।
प्रेतनाथ श्मशान विराजै, जय जय श्री स्वामी की गाजै ।
भैरव भीषण भीम कपाली, क्रोधी भूतेश भुजंगी हाली ।
त्रास हरन है नाम तुम्हारा, दुष्ट दलन है काल तुम्हारा ।
शिव अखिलेश चण्ड के स्वामी, काशी के कुतवाल नमामी ।
अश्वनाथ क्रोधेश नमामी, भैरव काल जगत के स्वामी ।
क्षेत्रपाल दुःख पान कहाये, चक्रनाथ मंजुल कहलाये ।
दुष्टन के संहारक स्वामी, नमो नमामि अन्तरयामी ।
करहु भक्त के पूरण काजा, सुर असुरन के हो तुम राजा ।
नाथ पिशाचन के हो प्यारे, संकट काटो सकल हमारे ।
जगत पति उन्नत आडम्बर, रहते निशिदिन नाथ दिगम्बर ।
संहारक सुनन्द तुम नाना, करहु जनम के पूरन कामा ।
तुम्हरी कृपा सकल आनन्दा, भक्त जनन के काटो फन्दा ।
नमो नमो जय जय मन रंजन, कारण लम्ब आप भय भंजन ।
हो तुम देव त्रिलोचन नाथा, भक्त चरणों में नावत माथा ।

ताप विमोचन अरिदल नासै, भक्तन के मन कमल विकासै ।
भाल चन्द्रमा तिलक विराजै, श्वान सवारी पै प्रभु गाजै ।
महाकाल कालों के काला, शंकर के अवतार कृपाला ।
त्व अश्तांग रुद्र के लाला, रहो मस्त पी मद का प्याला ।
श्वेत, लाल अरु काल शरीरा, मस्तक मुकुट शीश पर चीरा ।
जो जन तुम्हरे यश को गावे, संकट टार सफल सुख पावे ।
भोपा करे आपकी सेवा, दोनो हाथ लुटावत मेवा ।
रविवार है वार तिहारो, संकट हरो सकल जन भारो ।
धूप दीप नैवेद्य चढ़ावे, सुन्दर लडडुन को भोग लगावे ।
दरशन कर भक्त सिहावै, जय जय तुमरो यश कूँ गावै ।
कंचन के सिंहासन राजत, मन्दिर घण्टा सुरीले बाजत ।
नमो नमामि अन्तरयामी, नमो नमो काशी के स्वामी ।
भक्त जनन के काटो फन्दा, नाम जपे सो होय अनन्दा ।
जो जन तुम्हरे यश कूँ गावे, बस बैकुण्ठ अमर पद पावे ।
नर - नारी जो तुमकूँ ध्यावहि, मन वाँछित इच्छा फल पावहि ।
जो सत बार पढ़े चालीसा, भैरव कृपा कटै सब किस्सा ।
नमौ नमामि काशी वासी, तुम्हारी कृपा पावे सुखरासी ।
काली के लाला बलधारी, कहाँ तक शोभा कहूँ तुम्हारी ।
तुम्हरी कृपा तुम्हें जो ध्यावे, शत्रु पक्ष पर विजय है पावे ।

दोहा

जय जय श्री भैरव बटुक शम्भु ने अवतार ।
भक्तन पर कीजै कृपा जन के संकट टार ॥
भैरव चालीसा पढ़े प्रेम सहित सत बार ।
श्री भैरव की हो कृपा सम्पत्ति बढ़े अपार ॥

:: कृष्ण चालीसा ::

दोहा– बन्शी शोभित कर मधुर, नील जलद तन श्याम।
अरुण अधर जनु बिम्ब फल, नयन कमल अभिराम॥
पूर्ण इन्द्र अरविन्द मुख, पीताम्बर शुभ साज ।
जय मन मोहन मदन छवि, कृष्ण चन्द्र महाराज ॥

॥ चौपाई ॥

जय यदु नन्दन जय जगबन्दन। जय वसुदेव देवकी नन्दन॥
जय यशुदा सुत नन्द दुलारे। जय प्रभु भक्तन के दृग तारे॥
जय नट नागर, नाथ नथइया। कृष्ण कन्हैया धेनु चरइया॥
पुनि नख पर प्रभु गिरिवर धारो। आओ दीनन कष्ट निवारो॥
बंशी मधुर अधर धरि टेरी। होवे पूर्ण विनय यह मेरी॥
आओ हरि पुनि माखन चाखो। आज लाज भारत की राखो॥
गोल कपोल-चिबुक अरूणारे। मृदु मुस्कान मोहिनी डारे॥
रंजित राजीव नयन विशाला। मोर मुकुट बैजन्ती माला॥
कुण्डल श्रवण पीतपट आछे। कटिकिंकणी काछन काछे॥
नील जलज सुन्दर तनु सोहै। छवि लखि, सुरनर मुनि मन मोहै॥
मस्तक तिलक, अलक घुंघराले। आओ कृष्ण बांसुरी वाले॥
करि पय पान, पूतनहिं तारयो। अका बका कागासुर मारयो॥
मधुवन जलत अग्नि जब ज्वाला। भ शीलत, लखतहिं नंदलाला॥
सुरपति जब ब्रज चढ़यो रिसाई। मूसर धार वारि वर्षाई॥
लगत-लगत ब्रज चहन बहायो। गोवर्धन नखधारि बचायो॥
लखि यसुदा मन भ्रम अधिकाई। मुख महं चौदह भुवन दिखाई॥
दुष्ट कंस अति ऊधम मचायो। कोटि कमल जब फूल मंगायो॥
नाथि कालियहिं तब तुम लीन्हें। चरण चिन्ह दे निर्भय कीन्हें॥
करि गोपिन संग रास विलासा। सबकी पूरण करि अभिलाषा॥

केतिक महा असुर संहारियो। केसहि केस पकड़ि दै मारयो॥
मात पिता की बन्दि छुड़ाई। उग्रसेन कहँ राज दिलाई॥
महि से मृतक छहों सुत लायो। मातु देवकी शोक मिटायो॥
भौमासुर मुर दैत्य संहारी। लाये षट दस सहस कुमारी॥
दें भीमहिं तृण चीर संहारा। जरासिंधु राक्षस कहँ मारा॥
असुर बकासुर आदिक मारयो। भक्तन के तब कष्ट निवारियो॥
दीन सुदामा के दुःख टारयो। तंदुल तीन मूंठि मुख डारयो॥
प्रेम के साग विदुर घर मांगे। दुर्योधन के मेवा त्यागे॥
लखी प्रेम की महिमा भारी। ऐसे श्याम दीन हितकारी॥
मारथ के पारथ रथ हाँके। लिए चक्र कर नहिं बल ताके॥
निज गीता के ज्ञान सुनाये। भक्त हृदय सुधा वर्षाये॥
मीरां थी ऐसी मतवाली विष पी गई, बजा कर ताली॥
राना भेजा सांप पिटारी। शालिग्राम बने बनवारी॥
निज माया तुम विधिहिं दिखायो। उरते संशय सकल मिटायो॥
तव शत निन्दा करि तत्काला। जीवन मुक्त भयो शिशुपाला॥
जबहिं द्रौपदी टेर लगाई। दीनानाथ लाज अब जाई॥
तुरतहि बसन बने नन्दलाला। बढ़े चीर भै अरि मुँह काला॥
अस अनाथ के नाथ कन्हैया। डूबत भँवर बचावत नइया॥
सुन्दरदास आस उरधारी। दगा दृष्टि कीजै बनवारी॥
नाथ सकल मम कुमति निवारो। क्षमहु वेगि अपराध हमारो॥
खोलो पट अब दर्शन दीजै। बोलो कृष्ण कन्हैया की जै॥

दोहा– यह चालीसा कृष्ण का, पाठ करे उर धारि।
अष्ट सिद्धि नवनिद्धि फल, लहै पदारथ चारि॥

॥ इति कृष्ण चालीसा समाप्त॥

श्री रामचन्द्र कृपालु भजु मन, हरण भवभय दारूणम् ।
नवकंज-लोचन कंजमुख कर कंज पद कंजारूणम् ॥

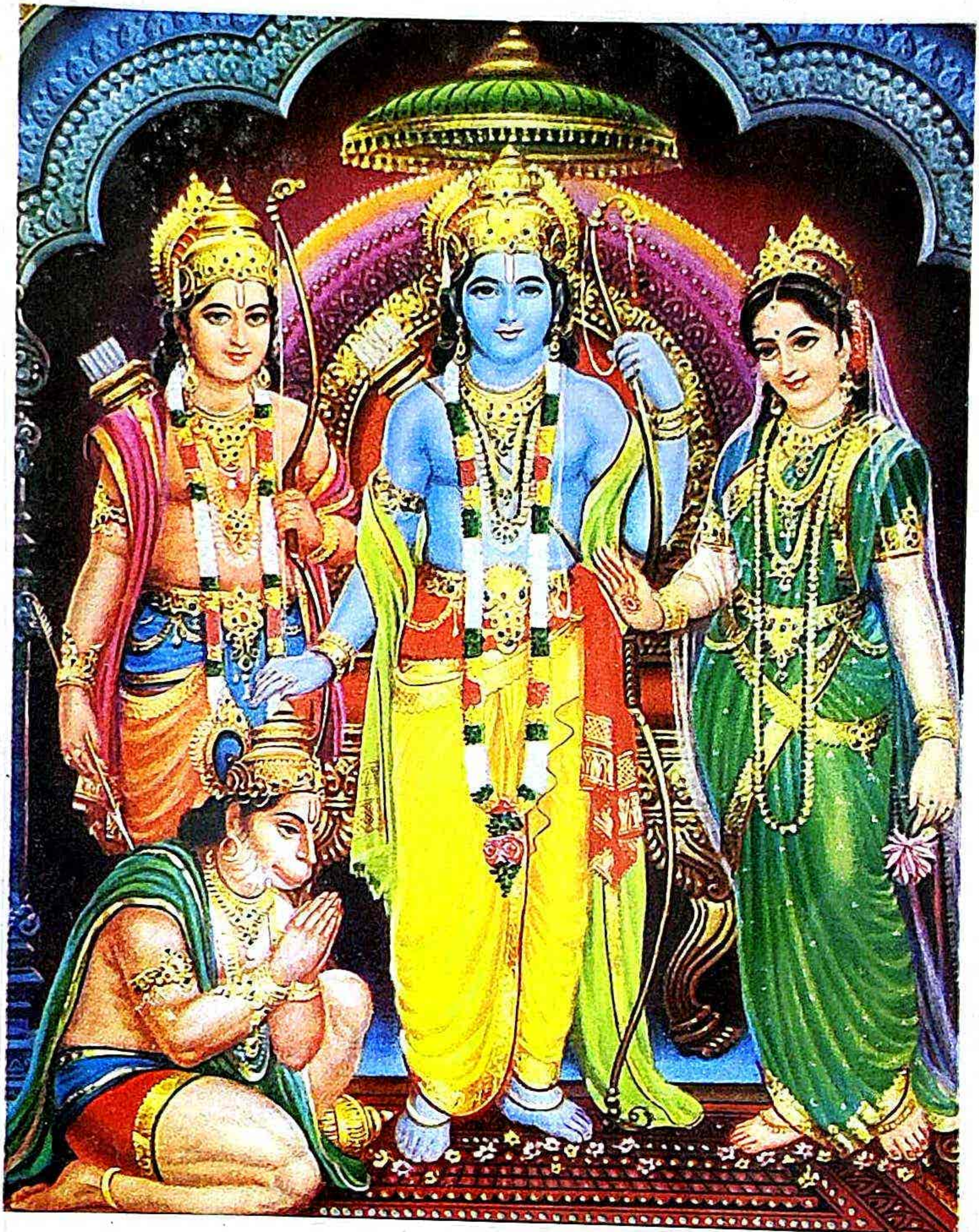

श्री राम-दरवार

"शिव स्तुति" बाबा भूतनाथ धाम, कोलकाता

मनोजवं मारुत-तुल्य-वेगं, जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम् ।
वातात्मजं वानरयुथ-मुख्यं, श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये ॥

श्री सालसर धाम (राजस्थान) **श्री हनुमानजी**

"शिव स्तुति" बाबा भूतनाथ धाम, कोलकाता

:: शनि चालीसा ::

दोहा– श्री शनिश्चर देवजी, सुनहु श्रवण मम् टेर।
कोटि विघ्ननाशक प्रभो, करो न मम हित बेर॥
सोरठा– तव स्तुति हे नाथ, जोरि जुगल कर करत हों।
करिये मोहिं सनाथ, विघ्नहरन हे रवि सुवन॥

॥ चौपाई ॥

शनिदेव मैं सुमिरौ तोही, विद्या बुद्धि ज्ञान दो मोही।
तुम्हरो नाम अनेक बखानौ, क्षुद्रबुद्धि मैं जो कुछ जानों।
अन्तक, कोण, रौद्रय मगाऊँ, कृष्ण बभ्रु शनि सबहिं सुनाऊं।
पिंगल मन्दसौरि सुखदाता, हित अनहित सब जग के ज्ञाता।
नित जपै जो नाम तुम्हारा, करहु व्याधिदुःख से निस्तारा।
राशि विषमवस असुरन सुरनर, पन्नग शेष रहित विद्याधर।
राजा रंक रहहिं जो नीको, पशु पक्षी वनचर सबही को।
कानन किला शिविर सेनाकर, नाश करत सब ग्राम्य नगर भर।
डालत विघ्न सबहि के सुख में, व्याकुल होहिं पड़े सब दुःख में।
नाथ विनय तुमसे यह मेरी, करिये मोहिं पर दया घनेरी।
ममहित विषमराशि महंबासा, करियन नाथ यही मम आशा।
जो गुड़ उड़द दे वार शनीचर, तिल जव लोह अन्न धन बस्तर
दान दिये से होंय सुखारी, सोह शनिसुन यह विनय हमारी।
नाथ दया तुम मोपर कीजै, कोटिक विघ्न क्षणिक मँह छीजै।
वंदत नाथ जुगल कर जोरी, सुनहु दया कर विनती मोरी।
कबहुंक तीरथ राज प्रयागा, सरयू तोर सहित अनुरागा।
कबहुं सरस्वती शुद्धनार महं, या कहुंगिरी खोहकंदर महं।
ध्यान धरत हैं जो जोगीजन, ताहिध्यान महं सूक्ष्महोहि शनि।

है अगम्य क्या करूं बड़ाई, करत प्रणाम चरण शिर नाई।
जो विदेश से वार शनिचर, मुड़कर आवेगा निज घर पर।
रहैं सुखी शनि देव दुहाई, रक्षा रवि सुत रखैं बनाई।
जो विदेस जावैं शनिवारा, गृह आवै नहिं सहै दुखारा।
संकट देय शनिचर ताही, जेते दुखी होई मन माही।
सोई रवि नन्दन कर जोरी, वन्दन करत मूढ़ मति थोरी।
ब्रह्मा जगत बनावन हारा, विष्णु सबहिं नित देत अहारा।
हैं त्रिशूलधारी त्रिपुरारी, विभू देव मूरति एक वारी।
इकहोइ धारणा करत शनि नित, वंदत सोई शनि कोदमनचित।
जो नर पाठ करे मन चित्त से,सोनर छूटै व्यथाअमित से।
हौं सुपुत्र धन सन्मति बाढ़े, कलि काल कर जोड़े ठाढ़े।
पशु कुटुम्ब बांधन आदि से, भरो भवन रहिहैं नित सबसे।
नाना भांति भोग सुख सारा, अन्तसमय तजकर संसारा।
पावैमुक्ति अमर पद भाई, जो नित शनिसम ध्यान लगाई।
पढ़ै प्रातजो नामशनि दस, रहैं शनीश्चर नित उसके बस।
पीड़ा शनिकी कवहुं न होई, नित उठ ध्यान धरे जो कोई।
जो यह पाठ करैं चालीसा, होय सुखी साखी जगदीशा।
चालीसा दिन नित पढ़ै सबेरे, पातक नाशै शनी घनेरे।
रवि नन्दन की अस प्रभुताई, जगत मोहतम नाशै भाई।
याको पाठ करै जो कोई, सुख सम्पत्ति की कमी न होई।
निशिदिन ध्यान धरै मनमाहीं, आधिव्याधि ढिंग आवै नाहीं।

दोहा– पाठ शनीश्चर देव को, की हों 'भक्तन' तैयार।
करत पाठ चालीस दिन, हो भवसागर पार॥
जो स्तुति दशरथजी कियो, सम्मुख शनि निहार।
सरस सुभाषा में वही, ललिता लिखें सुधार॥

श्री राम चालिसा

श्री रघुवीर भक्त हितकारी। सुनि लीजै प्रभु अरज हमारी॥
निशि दिन ध्यान धरै जो कोई। ता सम भक्त और नहिं होई॥
ध्यान धरे शिवजी मन माहीं। ब्रह्मा इन्द्र पार नहिं पाहीं॥
जय जय जय रघुनाथ कृपाला। सदा करो सन्तन प्रतिपाला॥
दूत तुम्हार वीर हनुमाना। जासु प्रभाव तिंहु पुर जाना॥
तव भुज दण्ड प्रचण्ड कृपाला। रावण मारि सुरन प्रतिपाला॥
तुम अनाथ के नाथ गोसांई। दीनन के दो सदा सहाई॥
बह्मादिक तव पार न पावैं। सदा ईश तुम्हरो यश गावैं॥
चारिउ वेद भरत हैं साखी। तुम भक्तन की लज्जा राखी॥
गुण गावत शारद मन माहीं। सुरपति ताको पार न पाहीं॥
नाम तुम्हार लेत जो कोई। ता सम धन्य और नहिं होई॥
राम नाम है अपरम्पारा। चारिहु वेदन जाहि पुकारा॥
गणपति नाम तुम्हारो लीन्हौ। तिनको प्रथम पूज्य तुम कीन्हौ॥
शेष रटत नित नाम तुम्हारा। महि को भार शीश पर धारा॥
फूल समान रहत सो भारा। पाव न कोउ तुम्हारो पारा॥
भरत नाम तुम्हारो उर धारो। तासों कबहुँ न रण में हारो।
नाम शत्रुहन हृदय प्रकाशा। सुमिरत होत शत्रु कर नाशा॥
लहषन तुम्हारे आज्ञाकारी। सदा करत सन्तन रखवारी॥
ताते रण जीते नहिं कोई। युद्ध जुरे यमहूँ किन होई॥
महा लक्ष्मी धर अवतारा। सब विधि करत पाप को छारा॥
सीता नाम पुनीता गायो। भुवनेश्वरी प्रभाव दिखायो ॥
घट सों प्रकट भई सो आई। जाको देखत चन्द्र लजाई॥
सो तुमरे नित पाँव पलोटत। नवों निद्धि चरणन में लोटत॥
सिद्धि अठारह मंगल कारी। सो तुम पर जावै बलिहारी॥
औरहु जो अनेक प्रभुताई। सो सीतापति तुमहिं बनाई॥
इच्छा ते कोटिन संसारा । रचत न लागत पल की वारा ।।

जो तुम्हरे चरणन चित लावै। ताकी मुक्ति अवसि हो जावै॥
जय जय जय प्रभु ज्योति स्वरुपा। निर्गुण ब्रह्म अखण्ड अनूपा॥
सत्य सत्य सत्य ब्रत स्वामी। सत्य सनातन अन्तर्यामी॥
सत्य भजन तुम्हरो जो गावै। सो निश्चय चारों फल पावै॥
सत्य शपथ गौरिपति कीन्हीं। तुमने भक्तिहिं सब सिधि दीन्हीं॥
सुनहु राम तुम तात हमारे। तुमहिं भरत कुल पूज्य प्रचारे॥
तुमहिं देव कुल देव हमारे। तुम गुरु देव प्राण के प्यारे॥
जो कुछ हो सो तुम ही राजा। जय जय जय प्रभु राखो लाजा॥
राम आत्मा पोषण हारे। जय जय जय दशरथ दुलारे॥
ज्ञान हृदय दो ज्ञान स्वरुपा। नमो नमो जय जय जगपति भूपा॥
धन्य धन्य तुम धन्य प्रतापा। नाम तुम्हार हरत संतापा॥
सत्य शुद्ध देवन मुख गाया। बजी दुन्दुभी शंख बजाया॥
सत्य सत्य तुम सत्य सनातन। तुम ही हो हमारे तन मन धन॥
याको पाठ करे जो कोई। ज्ञान प्रकट ताके उर होई॥
आवागमन मिटै तिहि केरा। सत्य वचन माने शिव मेरा॥
और आस मन में जो होई। मन वांछित फल पावे सोई॥
तीनहुं काल ध्यान जो ल्यावैं। तुलसी दल अरु फूल चढ़ावै॥
साग पत्र सो भोग लगावैं। सो नर सकल सिद्धता पावैं॥
अन्त समय रघुवर पुर जाई। जहां जन्म हरि भक्त कहाई॥
श्री हरिदास कहै अरु गावै। सो बैकुण्ठ धाम को जावै॥

दो० - सात दिवस जो नेम कर, पाठ करे चितलाय।
हरिदास हरि कृपा से, अवसि भक्ति को पाय॥
राम चालिसा जो पढ़े, राम चरण चित लाय।
जो इच्छा मन मे करै, सकल सिद्ध हो जाय।

॥ इति राम चालीसा समाप्त ॥

:: हनुमान चालीसा ::

दोहा : श्री गुरू चरण सरोज रज, निज मन मुकुर सुधार ।
वरणौं रघुवर विमल यश, जो दायक फल चार ।
बुद्धि हीन तनु जानिके, सुमिरौं पवन कुमार ।
बल बुद्धि विद्या देहु मोहिं , हरहुँ कलेश विकार ।

चौपाई

जय हनुमान ज्ञान गुण सागर। जय कपीस तिहुँ लोक उजागर ॥
रामदूत अतुलित बल धामा । अंजनि-पुत्र पवन सुत नामा ॥
महावीर विक्रम बजरंगी। कुमति निवार सुमति के संगी ॥
कंचन-बरण विराज सुवेसा। कानन कुण्डल कुंचित केसा ॥
हाथ बज्र औ ध्वजा विराजै। कांधे मूँज जनेऊ साजै ॥
शंकर सुवन केसरीनन्दन। तेज प्रताप महा जग वन्दन ॥
विद्यावान गुणी अति चातुर। राम काज करिबे को आतुर ॥
प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया। राम लखन सीता मन वसिया ॥
सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा। विकट रूप धरि लंक जरावा ॥
भीम रूप धरि असुर संहारे। रामचन्द्र के काज संवारे ॥
लाय संजीवन लखन जियाये । श्री रघुवीर हरषि उर लाये ॥
रघुपति कीन्हीं बहुत बड़ाई । तुम मम प्रिय भरत सम भाई ॥
सहस बदन तुम्हरो यश गावैं। अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं ॥
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा। नारद शारद सहित अहीसा ॥
यम कुबेर दिग्पाल जहाँ ते। कवि कोविद कहि सकै कहाँ ते ॥
तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा। राम मिलाय राज पद दीन्हा ॥
तुम्हरो मन्त्र विभीषण माना। लंकेश्वर भये सब जग जाना ॥
युग सहस्त्र योजन पर भानू। लील्यो ताहि मधुर फल जानू ॥

प्रभु मुद्रिका मेलि मुख मांही। जलधि लांघि गये अचरज नाही ॥
दुर्गम काज जगत के जेते। सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ॥
राम दुआरे तुम रखवारे। होत न आज्ञा बिनु पैसारे ॥
सब सुख लहै तुम्हारी शरणा। तुम रक्षक काहू को डरना॥
आपन तेज सम्हारो आपे। तीनों लोक हाँकते काँपे ॥
भूत-पिसाच निकट नहिं आवे। महावीर जब नाम सुनावे ॥
नाशै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा ॥
संकट तें हनुमान छुड़ावै। मन क्रम वचन ध्यान जो लावै ॥
सब पर राम तपस्वी राजा। तिनके काज सकल तुम साजा ॥
और मनोरथ जो कोई लावै। सोई अमित जीवन फल पावै ॥
चारों युग प्रताप तुम्हारा। है प्रसिद्ध जगत उजियारा ॥
साधु सन्त के तुम रखवारे। असुर निकंदन राम दुलारे ॥
अष्ट सिद्धि नवनिधि के दाता। असवर दीन्ह जानकी माता ॥
राम रसायन तुम्हरे पासा। सदा रहो रघुपति के दासा ॥
तुम्हरे भजन राम को भावै। जन्म-जन्म के दुख बिसरावै ॥
अंतकाल रघुपति पुर जाई। जहाँ जन्म हरि भक्त कहाई ॥
और देवता चित न धरई। हनुमत सेई सर्व सुख करई ॥
संकट हरै मिटे सब पीरा। जो सुमिरै हनुमत बलबीरा ॥
जय-जय-जय हनुमान गोसाई। कृपा करहुँ गुरू देव की नाई ॥
यह सत बार पाठ कर जोई। छूटहि बंदी महा सुख होई ॥
जो यह पढ़ै हनुमान चालीसा। होय सिद्धि साखी गौरीसा ॥
तुलसीदास सदा हरि चेरा। कीजै नाथ हृदय महँ डेरा ॥

दौहा :- पवन तनय संकट हरण, मंगल मूरति रूप ।
राम लखन सीता सहित, हृदय बसहुँ सुर भूप ॥

।। श्री हनुमते नमः ।।

।। संकटमोचन हनुमानाष्टक ।।

बाल समय रवि भक्षि लियो तब, तीनहुँ लोक भयो अंधियारो ।
ताहि सो त्रास भयो जग को, यह संकट काहु सों जात न टारो ।।
देवन आनि करी विनती तब, छाड़ि दियो रवि कष्ट निवारो ।
को नहिं जानत है जग में कपि, संकटमोचन नाम तिहारो ।।

बालि की त्रास कपीस बसै गिरि, जात महाप्रभु पंथ निहारो ।
चौंकि महामुनि शाप दियो तब, चाहिये कौन विचार विचारो ।
कै द्विज रुप लिवाय महाप्रभु, सो तुम दास के शोक निवारो ।। को0 ।।

अंगद के संग लेन गये सिय, खोज कपीस यह बैन उचारो ।
जीवत ना बचिहौं हम सों जु, बिना सुधि लाए इहाँ पगु धारो ।।
हेरि थके तट सिंधु सबै तब, लाय सिया सुधि प्रान उबारो ।। को0 ।।

रावन त्रास दई सिय को सब, राक्षसि सों कहि शोक निवारो ।
ताहि समय हनुमान महाप्रभु, जाय महा रजनीचर मारो ।।
चाहत सीय असोक सों आगि सु, दै प्रभु मुद्रिका सोक निवारो ।। को0 ।।

बान लग्यो उर लक्ष्मिन के तब, प्रान तजे सुत रावन मारो ।
लै गृह बैद्य सुषेन समेत , तबै गिरि द्रोन सु बीर उपारो ।।
आनि संजीवन हाथ दई तब, लछिमन के तुम प्राण उबारो ।। को0 ।।

रावन जुद्ध अजान कियो तब, नाग कि फाँस सबै सिर डारो ।
श्रीरघुनाथ समेत सबै दल, मोह भयो अति संकट भारो ।।
आनि खगेस तबै हनुमान जु, बंधन काटि सुत्रास निवारो ।। को0 ।।

बंधु समेत जबै अहिरावन , लै रघुनाथ पताल सिधारो ।
देविहिं पूजि भली विधि सों बलि, देउ सबै मिलि मंत्र विचारो ।
जाय सहाय भयो तब ही, अहिरावन सैन्य समेत संहारो ॥ को० ॥

काज किये बड़ देवन के तुम, वीर महाप्रभु देखि विचारो ।
कौन सो संकट मोर गरीब को, जो तुमसों नहिं जात है टारो ॥
बेगि हरो हनुमान महाप्रभु, जो कछु संकट होय हमारो ॥ को० ॥

दोहा - लाल देह लाली लसे, अरु धरि लाल लंगूर ।
बज्र देह दानव दलन, जय जय जय कपि सूर ।

॥ इति संकटमोचन हनुमानाष्टक सम्पूर्ण ॥

:: बजरंग बाण ::

दोहा :-

निश्चय प्रेम प्रतीत ते, विनय करै सनमान
तेहि के कारज सकल शुभ, सिद्ध करैं हनुमान ॥

चौपाई :-

जय हनुमन्त संत हितकारी। सुनि लीजै प्रभु अरज हमारी ॥
जन के काज विलम्ब न कीजै। आतुर दौर महा सुख दीजै ॥
जैसे कूदि सिन्धु वहि पारा। सुरसा बदन पैठि विस्तारा ॥
आगे जाई लंकिनी रोका। मारेहु लात गई सुर लोका ॥
जाय विभीषण को सुख दीन्हा। सीता निरखि परम पद लीन्हा ॥
बाग उजारि सिन्धु महँ बोरा। अति आतुर यम कातर तोरा ॥
अक्षय कुमार को मार सँहारा। लूम लपेटि लंका को जारा ॥
लाह समान लंक जरि गई। जय जय धुनि सुर पुर में भई ॥
अब बिलम्ब केहि कारण स्वामी। कृपा करहु उर अन्तर यामी ॥
जय जय लक्ष्मण प्राण के दाता। आतुर होई दुख क़रहु निपाता ॥

जय गिरिधर जय -२ सुख सागर। सुर समूह समरथ भट नागर ॥
ॐ हनु हनु हनु हनुमन्त हठीले। बैरिहिं मारू बज्र की कीले ॥
गदा बज्र ले बैरिहिं मारो। महाराज प्रभु दास उबारो ॥
ऊँकार हुँकार महाबीर धावो। बज्र गदा हनु विलम्ब न लावो ॥
ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं हनुमन्त कपीशा। ॐहुँ हुँ हुँ हनु अरि उर शीशा ॥
सत्य होहु हरि सत्य पायके । राम दूत धरू मारु धायके ॥
जय जय जय हनुमन्त अगाधा। दुख पावत जन केहि अपराधा ॥
पूजा जप तप नेम अचारा। नहिं जानत है दास तुम्हारा ॥
वन उपवन मग गिरि गृह माहीं। तुमरे बल हम डरपत नाहीं ॥
पांय परौं कर जोड़ि मनावों । यहि अवसर अब केहि गोहरावों ॥
जय अंजनि कुमार बलवन्ता। शंकर सुवन वीर हनुमन्ता ॥
वदन कराल काल कुल घालक। राम सहाय सदा प्रति पालक ॥
भूत प्रेत पिशाच निशाचर। अग्नि वैताल काल मारीमर ॥
इन्हें मारु तोहिं सपथ राम की। राखु नाथ मर्यादा नामकी ॥
जनक सुता हरि दास कहावो। ताकी सपथ बिलम्ब न लावो ॥
जय जय जय धुनि होत अकाशा। सुमिरत होत दुसह दुख नाशा ॥
शरण करण कर जोड़ि मनावों। यहि अवसर अब केहि गोहरावों ॥
उठु उठु चलु तोहि राम दोहाई। पायँ परौं कर जोरि मनाई ॥
ॐ चं चं चं चपल चलन्ता। ॐ हनु हनु हनु हनु हनुमन्ता ॥
ॐ हं हं हाँक देत कपि चंचल। ॐ सं सं सहमि पराने खल दल ॥
अपने जन को तुरन्त उबारो। सुमिरत होय आनन्द हमारो ॥
ताते विनती करौं पुकारी। हरहु सकल दुःख विपति हमारी ॥
ऐसौ बल प्रभाव प्रभु तोरा। कस न हरहु दुःख संकट मोरा ॥
हे बजरंग, बाण सम धावौ। मैटि सकल दुःख दरस दिखावौ ॥
हे कपिराज काज कब ऐहौ। अवसर चूकि अन्त पछतेहौ ॥

जन की लाज जात एहि बारा। धावहु हे कपि पवन कुमारा ॥
जयति-जयति जै-जै हनुमाना। जयति-जयति - गुण ज्ञान निधाना ॥
जयति-जयति जै-जै कपिराई। जयति-जयति जै-जै सुखदाई ॥
जयति-जयति जय राम पियारे। जयति-जयति जय सिया दुलारे ॥
जयति-जयति-मुद मंगल दाता । जयति-जयति त्रिभुवन विख्याता ॥
एहि प्रकार गावत गुण शेषा। पावत पार नहीं लवलेसा ॥
राम-रूप सर्वत्र समाना । देखत रहत सदा हर्षाना ॥
विधि सारदा सहित दिन राती । गावत कपि के गुण बहु भाँति ॥
तुम सम नही जगत बलवाना। करि विचार देखेऊँ विधि नाना ॥
यह जिय जानि शरण तब आई। ताते विनय करों चित लाई ॥
सुनि कपि आरत वचन हमारे। मैटहु सकल दुःख भ्रम भारे ॥
एहि प्रकार विनती कपि केरी । जो जन करै लहै सुख ढेरी ॥
याके पढ़त वीर हनुमाना। धावत बाण तुल्य बलवाना ॥
मैटत आय दुःख छिन माही । दै दर्शन रघुपति ढिग जाहीं ॥
पाठ करे बजरंग बाण की। हनुमत रक्षा करैं प्राण की ॥
डीठ मूठ टौना दिक नासै। पर-कृत यन्त्र-मन्त्र नहिं त्रासें ॥
भैरवादि सुर करै मिताई। आयुसि मानि करैं सेवकाई ॥
प्रण करि पाठ करै मन लाई । अल्प-मृत्यु ग्रह दोष नसाई ॥
आवृत ग्यारह प्रतिदिन जापै । ताकी. छांह काल नहिं व्यापै ॥
दै गुगुल की धूप हमेशा । करै पाठ तन मिटै कलेशा ॥
यहि बजरंग बाण जेहि मारै । ताहि कहो फिरि कौन उबारै ॥
शत्रू समूह मिटै सब आपै । देखत ताहि सुरासुर कापै ॥
तेज प्रताप बुद्धि अधिकाई। रहे सदा कपिराज सहाई ॥

दोहा - प्रेम के प्रतीतहिं कपि भजै, सदा धरै उर ध्यान ।
तेहि के कारज सकल शुभ, सिद्ध करे हनुमान ॥

अथ हनुमान साठिका

०चौपाई०

जय जय जय हनुमान अडंगी। महाबीर बिक्रम बजरङ्गी॥
जय कपीश जय पवन कुमारा। जय जग बंदन शील अगारा॥
जय आदित्य अमर अविकारी। अरिमरदन जय जय गिरिधारौ॥
अंजनि उदर जन्म तुम लीन्हा। जय जय कार देवता कीन्हा॥
बाजे दुँदुभि गगन गंभीरा। सुर मन हर्ष असुर मन पीरा॥
कपि के डर गढ़ लङ्क सकानी। छूटी बँदि देवतन जानी॥
ऋषी समूह निकट चलि आये। पवन तनय के पदशिर नाये॥
चार बार अस्तुतिकरि नाना। निर्मल नाम धरा हनुमाना॥
सकल ऋषिन मिलि अस मत ठाना। दीन बताय लाल फल खाना॥
सुनत बचंन कपि मन हर्षाना। रबिरथ उदय लाल फल जाना॥
रथ समेत कपि कीन अहारा। सूर्य्य बिना भये अति अँधिमारा॥
बिनय तुम्हार करें अकुलाना। तब कपीश की अस्तुति ठाना॥
सकल लोक वृत्तान्त सुनावा। चतुरानन तब रवि उगिलावा॥
कहा बहोरि सुनो बल शीला। रामचन्द्र करि हैं बहु लीला॥
तब तुम उनकर करब सहाई। अबहिं बसहु कानन में जाई॥
अस कहि बिधि निज लोक सिधारे। मिले सखा संग पवन कुमारे॥
खेलैं खेल महा तरु तोरें। ढेर करें बहु पर्वत फोरैं॥
जेहि गिरि चरण देहिं कपि धाई। गिरि समेत पातलहिं जाई॥
कपि सुग्रीव बालि की त्रासा। निरखत रहे राम मगु आसा॥
मिले राम तहँ पवन कुमारा। अति आनन्द सप्रेम दुलारा॥
मणिमुन्दरी रघुपति सों पाई। सीता खोज चले सिर नाई॥

शत योजन जल निधि विस्तारा। अगम अपार देबतन हारा॥
जिमि सर गोखुर सरिस कपीशा। नांघि गये कपि कहि जगदीशा॥
सीता चरण सीसतिन नाये । अजर अमर के आशिष पाये॥
रहे दनुज उपवन रखवारी। एक से एक महाभट भारी॥
तिन्हें मारि पुनि कहेउ कपीशा। दहेउ लंक कोप्यो भुज बीसा॥
सिया बोध दे पुनि फिर आये। रामचन्द्र के पद सिर नाये॥
मेरु उपारि आप छिन माहीं। बांधे सेतु निमिष इक माहीं॥
लक्ष्मण शक्ती लागी जबहीं। राम बुलाय कहा पुनि तबही॥
भवन समेत सुषेण लै आये। तुरत सजीवन को पुनि धाये॥
मग महँ काल नेम कहँ मारा। अमित सुभट निश्चर संहारा॥
आनिं सजीवन गिरी समेता। धरि दीन्ही जहँ कृपा निकेता॥
फनपति केर शोक हरि लीना। बर्षि सुमन सुर जय जय कीना॥
महिरावन हरि अनुज समेता। लै गयो तहां पताल निकेता॥
जहां रही देवी अस्थाना। दीन चहै बलि काढ़ि कृपाना॥
पवन तनय प्रभु कीन गुहारी। कटक समेत निशाचर मारी॥
रीछ कीशपति सवै बहोरी। राम लषन कीने यक ठोरी॥
सब देवतन की बंदि छुड़ाये। सो कीरत मुनि नारद गाये॥
अक्षय कुमार दनुज बलवाना। सानकेत कह सब जग जाना॥
कुम्भकरन रावन कर भाई। ताहि निपात कीन्ह कपिराई॥
मेघनाद पर शक्ती मारा। पवन तनय सब सों बरियारा॥
रहा तनय नारान्तक जाना। पलमें हते ताहि हनुमाना॥
जहँ लगि नान दनुज कर पावा। पवन तनय सब मारि नसावा॥
जय मारुत सुत जय अनुकूला। माम कृशानु शोक सम तूला॥
जहँ जीवन कर सङ्कट होई। रवि तम सम सो सङ्कट खोई॥

बंदि परै सुमिरै हनुमाना। संकट कटै धरै जो ध्याना॥
जमको बाँध बाम पद दीन्हा। मारुत सुत ब्याकुल बह कीन्हा॥
सो भुजबल का कीन कृपाल। अच्छत तुम्हें मोर यह हाला॥
आरत हरन नाम हनुमाना। सादर सुरपति कीन बखाना॥
संकट रहे न एक रतीको। ध्यान धरे हनुमान जती को॥
धावहु देखि दीनता मोरी। कहौ पवन सुत युग कर जोरी॥
कपि पति बेगि अनुग्रह करहूं। आतर आई दुसह दुख हरहू॥
राम शपथ मैं तुमहिं सुनाया। जवन गुहार लाग सिय जाया॥
पैज तुम्हार सकल जग जाना। भव बन्धन भंजन हनुमाना॥
यह बंधन कर केतिक बाता। नाम तुम्हार जगत सुखदाता॥
करो कृपा जय जय जग स्वामी। बार अनेक नमामि नमामी॥
भौमवार कर होम बिधाना। धूप दीप नैवेद्य सुजाना॥
मङ्गल दायक कोलौ लावै। सुरनर मुनि वांछित फल पावै॥
जयति २ जय जय जगस्वामी। सम रथ पुरुष सुअंतरजामी॥
अंजनि तनय नाम हनुमाना। सो तुलसी के प्राण समाना॥

दो॰ - जय कपीस सुग्रीव तुम, जय अंगद हनुमान।
राम लखन सीता सहित, सदा करो कल्यान॥
बन्दौ हनुमत नाम यह, भौमवार परमान।
ध्यान धरें नर निश्चय, पावैं पद कल्यान॥
जो नित पढ़ यह साठिका, तलसी कहै बिचारि
रहै न सङ्कट ताहिको, साक्षी हैं त्रिपुरारि॥

इहि हनुमान साठिका समाप्तः

❖ श्री हनुमान मंगल कवच ❖

मंगल कवच करे जो धारण , उसका बाल न बांका होवे।
अंजनिपुत्र पवन सुत हनुमत, महाबीर सब संकट खोवे॥

नाम लेत ही हनुमान का, सारे संकट कट जाते है।
राम भक्त हनुमान भक्त के, निकट नहीं दुख भय आते है॥

कितनी ही चिन्ता मन में हो, तुरन्त नष्ट हो जाती क्षण मे।
ध्यान धरत ही हनुमान का, विश्व विजय हो जाती रण मे॥

महावीर बजरंग बली की, जय बोलो जी जय बोलो ।
कर्म वचन मन तीनों ही के, पाप ताप सारे धोलो॥

सिया राम के पायक हनुमत, तीन लोक के देव विशेष।
ब्रह्मा विष्णु शंकर, सुमिरे, सुमिरे नारद सारद शेष॥

भक्ति भाव से जो कोई भी, हनुमानजी को ध्याता है।
अष्ट सिद्धियाँ, नवों निद्धियाँ, सारे जग की वह पाता है ॥

पार लगा देते हैं हनुमत, भक्तों की नैया को भवपार।
परम प्रतापी हनुमान जी, देते निज भक्तों को तार॥

दर्शन करते ही हनुमत के, लाखों विघ्न भाग जाते हैं।
रोग, शोक,भय संकट विपदा, पास नहीं आने पाते हैं॥

कैसी भी करनी खराब हो, सब सुधार देते हनुमान।
बल बुद्धि विद्या बढ़ जाती, पाता है वह जग मे मान॥

लाल लंगोटा लाल ही घोटा, लाल देह भारी बलवान।
जग के पालक, पोषक, रक्षक, जय जय जय जय हनुमान॥

राम चरण के सेवक हनुमत , राम चरण के सच्चे दास।
जो हनुमत की सेवा करते, उनकी पूरी होती आस॥

कर सहायता रामचन्द्र की, हनुमत ने सुग्रीव मिलाया।
परिचय आपस में करवा कर, परम सनेही मित्र बनाया॥

फिर रघुनायक रामचन्द्र का, विकट काम करने हनुमान।
लेकर मुंदरी राम प्रभु की, सीता खोजन कीन्ह प्रयाण॥

कटक बांदरो का कपीस ले, जामवन्त को लेकर साथ।
सीता खोजन गये विश्व में, राम चरण मे रखकर साथ॥

जल थल नभ सब जगह खोजकर, सीता माँ का पता लगाया।
भक्त जटायु के भ्राता ने, संपाती ने पता बताया॥

तब हर्षित हो हनुमान ने, कसकर कमर लंगोटा टांग।
सौ योजन का समुद्र लांघा, मार जोर से एक छलांग॥

सुरसा सिंहनी से छल करके , लंका में पहुँचे हनुमान।
और वहाँ लंकिनी को मारा, सीता खोज थके बलवान॥

मिली नहीं जब सीता माता, तब उदास हो हनुमत मन में।
राम इष्ट का ध्यान लगाया, आँख मीच योगी हो मन मे॥

तुरत राम का जाप सुना तब , हो आनन्दित अमित विभोर।
भक्त विभीषण से मिल हनुमत, कीन्हा कीर्तन भोर ही भोर॥

भक्त राम का लंका में पा, सुख से हनुमत नाचन लागे।
हनुमान के दर्शन करके, सोये भाग्य विभीषण जागे॥

मिले राम के भक्त प्रेम से, छाती गला अंग लिपटाय।
भक्त विभीषण हनुमान जी, एक दुसरे से हर्षाय॥

अपनी अपनी कथा सुनाई, दोनों ने रघुपति यश गाय।
गये अशोक वाटिका हनुमत, विभीषण से पता लगाय॥

देख वहाँ सीता माता को, सबसे पहिले कीन्ह प्रणाम।
सुखी अपार हुए हनुमन्ता, सरा देख रघुपति का काम॥

राम राम श्री राम राम रट, झट मिलने की मन मे ठान।
ज्योहीं आगे पाँव बढ़ाया, पहुँचा रावण दैत्य महान॥

उछल चढ़े छिप गये पेड़ पर, जहाँ विराजी थी सिय मात।
क्रोध उठा हनुमत के मन में, सुनकर रावण की सब बात॥

पर रघुपति का कार्य किये बिन, प्रगट न हो जाऊँ यह सोच।
अंजनि पुत्र पवन सुत रुक गये, कर अपने मन में संकोच॥

चला गया जब रावण राक्षस , पाकर के हनुमत अवकाश।
रामनाम से अंकित डाली, मुंदरी सीता जी के पास॥

झोली में जा गिरी मुंदरी, देख सिया ने ली पहिचान।
बड़ा अचम्भा करके देखा, गिरे चरण पर जब हनुमान॥

देख जरा से बानर शिशु को, सीता माँ मन मे हर्षाय।
बोली हनुमत से दो वाणी, दीन्ह कहा मे मुंदरी लाय॥

माँ मै लाया राम प्रभु की, भेजी मुंदरी अमिट निशानी।
और सुनाई हनुमत ने झट, सारी बीती कथा कहानी ।।

सुनकर बाते हनुमान की, नही हुआ विश्वास सिया को।
बोली सीता तुम छलिया हो, ना होता विश्वास जिया को॥

बोले हनुमत रामदूत मै, ले सन्देशा उनका आया।
राम प्रभु ने माँ को खोजन, देकर मुंदरी मुझे पठाया॥

तब हनुमत ने बढ़ा रूप निज, महा विराट बना दिखलाया।
तब सीता माता को उन पर, सच्चा हृदय भरोसा आया॥

पूर्वोत्तरे पारलिकाभिधाने सदाशिवं तं गिरिजासमेतम् ।
सुरासुराराधितपादपद्मम् श्रीवेद्यनाथं सततं नमामी ।।

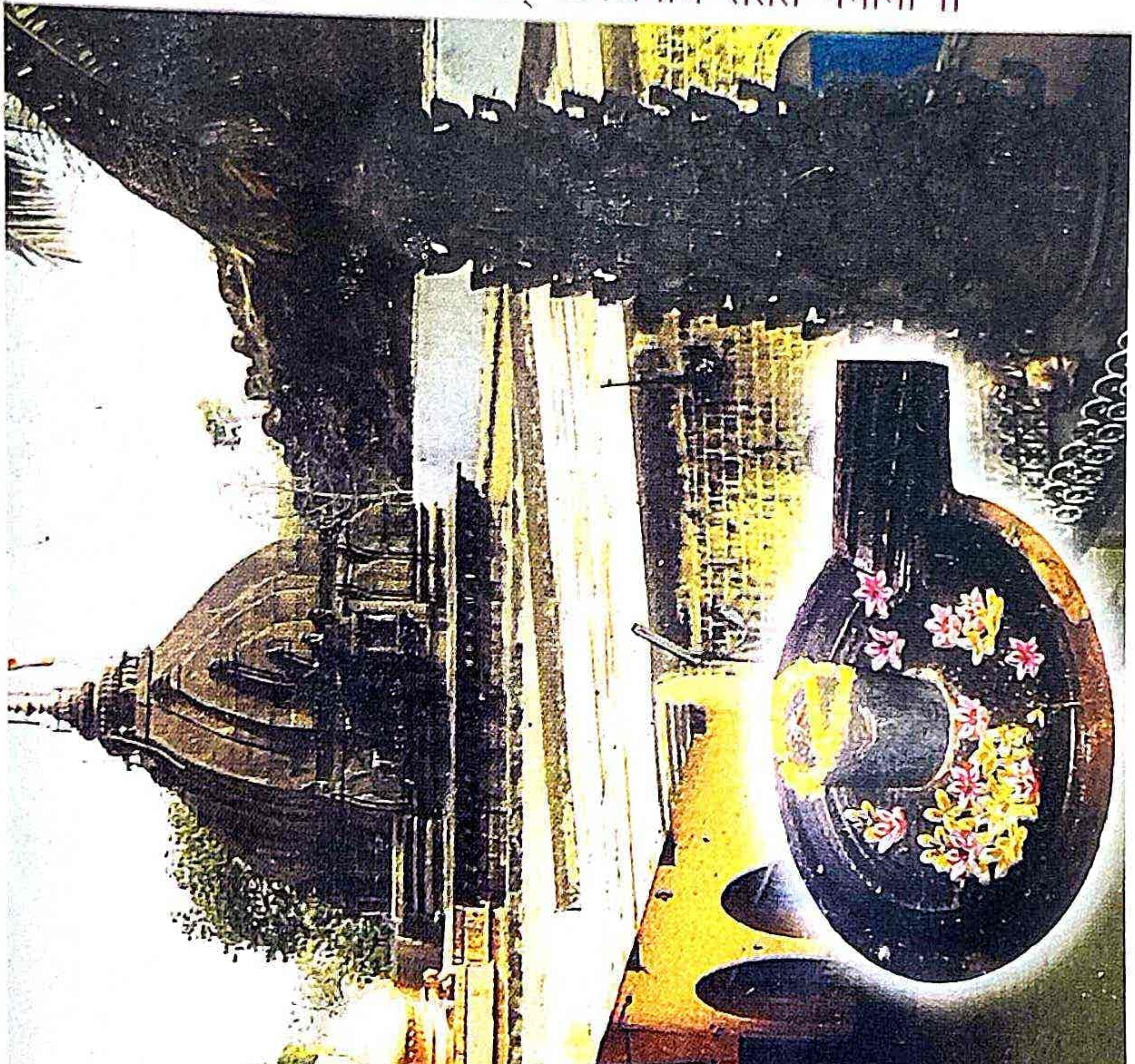

श्री वैद्यनाथ

"शिव स्तुति" बाबा भूतनाथ धाम, कोलकाता

याम्ये सदंगे नगरेऽतिरम्ये विभूषितांगं विविधैश्च भोगैः ।
सद्भक्ति मुक्ति प्रदमीशमेकम् श्रीनागनाथं शरणं प्रपद्ये ॥

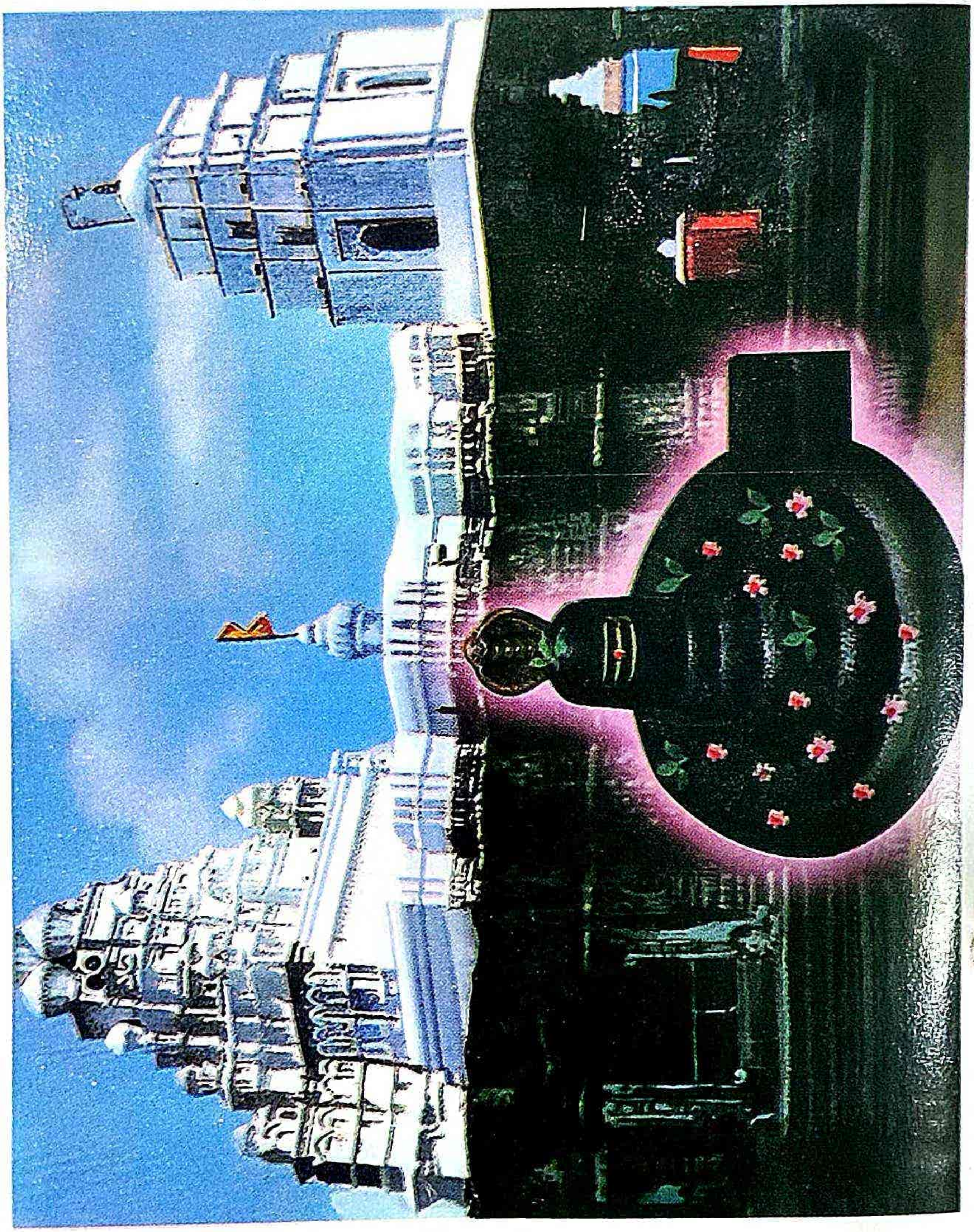

श्री नागेश्वर

"शिव स्तुति" बाबा भूतनाथ धाम, कोलकाता

बस रहने दो जान गई मैं, रम दूत तुम हनुमान हो।
लो चूड़ामणि प्रभु को देना, जिससे मिलने का प्रमाण हो॥

और उन्हे कहदेना हनुमत, जल्दी आकर दर्शम देवें।
कोटि प्रणाम चरण मे कहना, मेरी डूबत नैया खेवें॥

जब हनुमत ले चूड़ामणि को, सिया चरण मे शीश झुकाया।
ऊपर हाथ शीश पर रख कर, सीता जी ने अमर बनाया॥

सीता बोली हनुमान जो, नाम तुम्हारा लेगा मन से।
उसके संकट मिट जावेंगे, घर भर जावेगा जन धन से॥

शीश झुका कर बोले हनुमत, आज्ञा दो बस अब जाऊँ ।
भूख लगी है आज्ञा हो तो, वन के कन्द मूल फल खाऊँ।।

पा आज्ञा सीता माता की, प्रमदा वन के वृक्ष उखाड़े।
अरू तड़ाग मथ डाले सारे, तोड़ फोड़ कर भवन उजाड़े॥

तब रखवाले रक्षक, राक्षस, हनुमान डर कर भागे।
रावण के दरबार पहुँच कर, रो कर कथा सुनावन लागे॥

महाराज एक बानर ने हा! प्रमदा वन के वृक्ष उखाड़े।
और अशोक वन के सब तरुवर, बाग बगीचे भवन उजाड़े॥

सुनकर रावण ने झट भेजे, उन्हें पकड़ने राक्षस सारे।
अरु अक्षय कुमार को भेजा, जिन सबको हनुमत ने मारे॥

जब छोटा सा बानर भी ना, किसी तरह से बस मे आया।
तब रावण ने मेघनाथ को, उन्हें पकड़ने तुरन्त पठाया॥

मेघनाथ की ब्रह्मपाश में, निज इच्छा से बंध हनुमान।
रावण के दरबार पहुँच कर, मन में हर्षित हुये महान॥

विकट रुप लख बजरंगी का, थर्राया रावण घबराया।
अरे बानरे सत्य बोल तू, मेरी लंका में क्यो आया॥
सीता माता की सुध लेने, राम प्रभु ने मुझे पठाया।
और तुम्हारे लिये सन्देशा, रामदूत मैं बनकर लाया॥
भला यदि रावण चाहते हो, झटपट सीता को लौटावो।
मांग क्षमा श्री रामप्रभु से, चरणो में जाकर पड़ जावो॥
क्रोधित हो रावण झट बोला, पकड़ इसे राक्षस खा जावो।
विभीषण के कहने से रुक, बोला इसकी पूँछ जलाओ॥
रुई तेल लपेट पूँछ के, हनुमान की पूँछ जला दी।
जला पूँछ से सारी लंका, हनुमान निज ज्योति जगा दी॥
बुझा पूँछ मिल सीता माँ से, ले चूड़ामणि हनुमत आए।
रामचरण छू चूड़ामणि दे, सीता के सन्देश सुनाए॥
हनुमान जो भी संकट में, तुमको याद करेगा जब ही।
निर्भय हो जावेगा वो ही, मिट जावेंगे संकट सब ही॥
परम प्रसन्न हुए रघुराई, हनुमान को गले लगाया।
इस पृथ्वी पर तुम सम कोई, महावीर ना जननी जाया॥
बोले राम प्रभु हो गद्‌गद् , अजर अमर हो तुम हनुमान।
भक्त तुम्हारे सदा सुखी हो, मैं देता तुमको वरदान॥
फिर लंका पर करी चढ़ाई, लेकर हनुमान को साथ।
लड़ी लड़ाई महा भयंकर, रावण से जाकर रघुनाथ॥
शक्ति बाण से जब लक्ष्मण जी, मूर्छित हुये राम अकुलाये।
ला संजीवनी हनुमान ने, लक्ष्मण जी के प्राण बचाये॥

अहिरावण हर राम लखन को, देवी के बलि लगा चढ़ाने।
पहुँचे तब पाताल लोक में, राम लखन हनुमत बचाने॥

अहिरावण को मार पवन सुत, अपने कंधो पर बैठाये।
नाचत नाचत अपने दल मे, झटपट राम लखन को लाये॥

महायुद्ध में हनुमान ने, रावण के सब राक्षस मारे।
रघुनायक ने रावण मारा, बजे जीत के विजय नगाड़े॥

राम लखन सीता के संग में, अंजनि पुत्र अवध को धाये।
रामचन्द्र के साथ सभी जन, हनुमान के यश को गाये॥

गौ ब्राह्मण अरु साधु सन्त के, भक्तों के रक्षक हनुमान।
धर्म सनातन के संरक्षक, महवीर बजरंग महान।

नारद शारद, वेद ब्रह्म, सब, गाते हैं, जिनका गुण गान।
ऐसे ज्ञानी राम भक्त हैं, अंजनि पुत्र वीर हनुमान॥

जो कोई भी भक्त प्रेम से, मंगल कवच करेगा पाठ।
उसके दुख दारिद्र मिटेंगे, और रहेगा सब कुछ ठाठ॥

भक्त ''गिरीश'' जयन्ती के दिन, सम्वत् दो हजार चौबीस।
आषाढ़स्य शुक्ल द्वितीया, झुका चरण हनुमत के शीश॥

मंगल कवच किया ये पूरा, जो कोई भी गायेगा।
संकट मिट जावेगा सारे, परम मोक्ष पद पावेगा॥

॥ सियावर रामचन्द्र की जय॥

॥ पवनसुत हनुमान की जय॥

" श्री राम चरितमानस "

प्रनवउँ पवनकुमार खल बन पावक ग्यानघन।
जासु हृदय आगार बसहिं राम सर चाप धर॥

॥ किष्किन्धाकाण्ड ॥

दो० बलि बाँधत प्रभु बाढ़ेउ सो तनु बरनि न जाइ।
उभय घरी महँ दीन्हीं सात प्रदच्छिन धाइ॥

अंगद कहइ जाउँ मैं पारा। जियँ संसय कछु फिरती बारा॥
जामवंत कह तुम्ह सब लायक। पठइअ किमि सब ही कर नायक॥
कहइ रीछपति सुनु हनुमाना। का चुप साधि रहेहु बलवाना॥
पवन तनय बल पवन समाना। बुधि बिबेक बिग्यान निधाना॥
कवन सो काज कठिन जग माहीं। जो नहिं होइ तात तुम्ह पाहीं॥
राम काज लगि तव अवतारा। सुनतहिं भयउ पर्बताकारा॥
कनक बरन तन तेज बिराजा। मानहुँ अपर गिरिन्ह कर राजा॥
सिंहनाद करि बारहिं बारा। लीलहिं नाघउँ जलनिधि खारा॥
सहित सहाय रावनहि मारी। आनउँ इहाँ त्रिकूट उपारी॥
जामवंत मैं पूँछउँ तोही। उचित सिखावनु दीजहु मोही॥
एतना करहु तात तुम्ह जाई। सीतहि देखि कहहु सुधि आई॥
तब निज भुज बल राजिवनैना। कौतुक लागि संग कपि सेना॥

छं०- कपि सेन संग सँघारि निसिचर रामु सीतहि आनिहैं।
त्रैलोक पावन सुजसु सुर मुनि नारदादि बखानिहैं॥
जो सुनत गावत कहत समुझत परम पद नर पावई।
रघुबीर पद पाथोज मधुकर दास तुलसी गावई॥

दो० - भव भेषज रघुनाथ जसु सुनहिं जे नर अरु नारि।
तिन्ह कर सकल मनोरथ सिद्ध करहिं त्रिसिरारि॥३०क॥

सो० - नीलोत्पल तन स्याम काम कोटि सोभा अधिक।
सुनिअ तासु गुन ग्राम जासु नाम अघ खग बधिक॥३०ख॥

"श्री राम चरितमानस"

:: सुन्दरकाण्ड ::

:: श्लोक ::

शान्तं शाश्वतमप्रमेयमनघं निर्वाणशान्तिप्रदं ।
ब्रह्माशम्भुफणीन्द्रसेव्यमनिशं वेदान्तवेद्यं विभुम् ॥
रामाख्यं जगदीश्वरं सुरगुरुं मायामनुष्यं हरिं ।
वन्देऽहं करुणाकरं रघुवरं भूपालचूडामणिम् ॥ १ ॥
नान्या स्पृहा रघुपते हृदयेऽस्मदीये,
सत्यं वदामि च भवानखिलान्तरात्मा ।
भक्तिं प्रयच्छ रघुपुङ्गव निर्भरां मे,
कामादिदोषरहितं कुरु मानसं च ॥ २ ॥
अतुलितबलधामं हेमशैलाभदेहं,
दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम् ।
सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं,
रघुपतिप्रियभक्तं वातजातं नमामि ॥ ३ ॥

जामवंत के बचन सुहाए । सुनि हनुमंत हृदय अति भाए ॥
तब लगि मोहि परिखेहु तुम्ह भाई । सहि दुख कंद मूल फल खाई ॥
जब लगि आवौं सीतहि देखी । होइहि काजु मोहि हरष बिसेषी ॥
यह कहि नाइ सबन्हि कहुँ माथा । चलेउ हरषि हियँ धरि रघुनाथा ॥
सिंधु तीर एक भूधर सुंदर । कौतुक कूदि चढ़ेउ ता ऊपर ॥
बार बार रघुबीर सँभारी । तरकेउ पवनतनय बल भारी ॥
जेहि गिरि चरन देइ हनुमंता । चलेउ सो गा पाताल तुरंता ॥
जिमि अमोघ रघुपति कर बाना । एही भाँति चलेउ हनुमाना ॥
जलनिधि रघुपति दूत बिचारी । तैं मैनाक होहि श्रमहारी ॥

दो॰ – हनुमान तेहि परसा कर पुनि कीन्ह प्रनाम ।
राम काजु कीन्हें बिनु मोहि कहाँ बिश्राम ॥ १॥

जात पवनसुत देवन्ह देखा । जानै कहुँ बल बुद्धि बिसेषा ॥
सुरसा नाम अहिन्ह कै माता । पठइन्हि आइ कही तेहि बाता ॥
आजु सुरन्ह मोहि दीन्ह अहारा । सुनत बचन कह पवनकुमारा ॥
राम काजु करि फिरि मैं आवौं । सीता कइ सुधि प्रभुहि सुनावौं ॥
तब तव बदन पैठिहउँ आई । सत्य कहउँ मोहि जान दे माई ॥
कवनेहुँ जतन देइ नहि जाना । ग्रससि न मोहि कहेउ हनुमाना ॥
जोजन भरि तेहि बदनु पसारा । कपि तनु कीन्ह दुगुन बिस्तारा ॥
सोरह जोजन मुख तेहि ठयऊ । तुरत पवनसुत बत्तिस भयऊ ॥
जस जस सुरसा बदनु बढ़ावा । तासु दून कपि रूप देखावा ॥
सत जोजन तेहि आनन कीन्हा । अति लघु रूप पवनसुत लीन्हा ॥
बदन पइठि पुनि बाहेर आवा । मागा बिदा ताहि सिरु नावा ॥
मोहि सुरन्ह जेहि लागि पठावा । बुधि बल मरमु तोर मैं पावा ॥

दो॰ – राम काजु सबु करिहहु तुम्ह बल बुद्धि निधान।
आसिष देइ गई सो हरषि चलेउ हनुमान ॥ २॥

निसिचरि एक सिंधु महुँ रहई । करि माया नभु के खग गहई ॥
जीव जंतु जे गगन उड़ाहीं । जल बिलोकि तिन्ह कै परिछाहीं ॥
गहइ छाहँ सक सो न उड़ाई । एहि बिधि सदा गगनचर खाई ॥
सोइ छल हनूमान कहँ कीन्हा । तासु कपटु कपि तुरतहि चीन्हा ॥
ताहि मारि मारुतसुत बीरा । बारिधि पार गयउ मतिधीरा ॥
तहाँ जाइ देखी बन सोभा । गुंजत चंचरीक मधु लोभा ॥
नाना तरु फल फूल सुहाए । खग मृग बृंद देखि मन भाए ॥
सैल बिसाल देखि एक आगे । ता पर धाइ चढ़ेउ भय त्यागे ॥
उमा न कछु कपि कै अधिकाई । प्रभु प्रताप जो कालहि खाई ॥
गिरि पर चढ़ि लंका तेहि देखी । कहि न जाइ अति दुर्ग बिसेषी ॥
अति उतंग जलनिधि चहु पासा । कनक कोट कर परम प्रकासा ॥

छं० – कनक कोट बिचित्र मनि, कृत सुंदरायतना घना ।
चउहट्ट हट्ट सुबट्ट बीथीं, चारु पुर बहु बिधि बना ॥
गज बाजि खच्चर निकर पदचर, रथ बरूथन्हि को गनै ।
बहुरूप निसिचर जूथ अतिबल, सेन बरनत नहि बनै ॥ १ ॥
बन बाग उपबन बाटिका, सर कूप बापीं सोहहीं ।
नर नाग सुर गंधर्व कन्या, रूप मुनि मन मोहहीं ॥
कहुँ माल देह बिसाल सैल, समान अतिबल गर्जहीं ।
नाना अखारेन्ह भिरहि बहु बिधि, एक एकन्ह तर्जहीं ॥ २ ॥
करि जतन भट कोटिन्ह बिकट, तन नगर चहुँ दिसि रच्छहीं ।
कहुँ महिष मानुष धेनु खर, अज खल निसाचर भच्छहीं ॥
एहि लागि तुलसीदास इन्ह की, कथा कछु एक है कही ।
रघुबीर सर तीरथ सरीरन्हि, त्यागि गति पैहहि सही ॥ ३ ॥

दो० – पुर रखवारे देखि बहु, कपि मन कीन्ह बिचार ।
अति लघु रूप धरौं निसि, नगर करौं पइसार ॥ ३ ॥

मसक समान रूप कपि धरी । लंकहि चलेउ सुमिरि नरहरी ॥
नाम लंकिनी एक निसिचरी । सो कह चलेसि मोहि निंदरी ॥
जानेहि नहीं मरमु सठ मोरा । मोर अहार जहाँ लगि चोरा ॥
मुठिका एक महा कपि हनी । रुधिर बमत धरनीं ढनमनी ॥
पुनि संभारि उठी सो लंका । जोरि पानि कर विनय ससंका ॥
जब रावनहि ब्रह्म बर दीन्हा । चलत बिरंचि कहा मोहि चीन्हा ॥
बिकल होसि तैं कपि कें मारे । तब जानेसु निसिचर संघारे ॥
तात मोर अति पुन्य बहूता । देखेउँ नयन राम कर दूता ॥

दो० – तात स्वर्ग अपबर्ग सुख, धरिअ तुला एक अंग ।
तूल न ताहि सकल मिलि, जो सुख लव सतसंग ॥ ४॥

प्रबिसि नगर कीजे सब काजा । हृदयँ राखि कोसलपुर राजा ॥
गरल सुधा रिपु करहिं मिताई । गोपद सिंधु अनल सितलाई ॥
गरुड़ सुमेरु रेनु सम ताही । राम कृपा करि चितवा जाही ॥
अति लघु रूप धरेउ हनुमाना । पैठा नगर सुमिरि भगवाना ॥
मंदिर मंदिर प्रति करि सोधा ॥ देखे जहँ तहँ अगनित जोधा ॥
गयउ दसानन मंदिर माहीं । अति बिचित्र कहि जात सो नाहीं ॥
सयन किएँ देखा कपि तेही । मंदिर महुँ न दीखि बैदेही ॥
भवन एक पुनि दीख सुहावा । हरि मंदिर तहँ भिन्न बनावा ॥

दो० – रामायुध अंकित गृह, सोभा बरनि न जाइ ।
नव तुलसिका बृंद तहँ, देखि हरष कपिराइ ॥ ५॥

लंका निसिचर निकर निवासा । इहाँ कहाँ सज्जन कर बासा ॥
मन महुँ तरक करैं कपि लागा । तेहीं समय विभीषनु जागा ॥
राम राम तेहिं सुमिरन कीन्हा । हृदयँ हरष कपि सज्जन चीन्हा ॥
एहि सन हठि करिहउँ पहिचानी । साधु ते होइ न कारज हानी ॥

विप्र रूप धरि बचन सुनाए । सुनत विभीषन उठि तहँ आए ॥
करि प्रनाम पूँछी कुसलाई । विप्र कहहु निज कथा बुझाई ॥
की तुम्ह हरि दासन्ह महँ कोई । मोरें हृदय प्रीति अति होई ॥
की तुम्ह रामु दीन अनुरागी । आयहु मोहि करन बड़भागी ॥

दो० – तब हनुमंत कही सब, राम कथा निज नाम ।
सुनत जुगल तन पुलक मन, मगन सुमिरि गुन ग्राम ॥ ६ ॥

सुनहु पवनसुत रहनि हमारी । जिमि दसनन्हि महुँ जीभ बिचारी ॥
तात कबहुँ मोहि जानि अनाथा । करिहहि कृपा भानुकुल नाथा ॥
तामस तनु कछु साधन नाहीं । प्रीति न पद सरोज मन माहीं ॥
अब मोहि भा भरोस हनुमंता । बिनु हरि कृपा मिलहि नहि संता ॥
जौं रघुवीर अनुग्रह कीन्हा । तौं तुम्ह मोहि दरसु हठि दीन्हा ॥
सुनहु विभीषन प्रभु कै रीती । करहिं सदा सेवक पर प्रीती ॥
कहहु कवन मैं परम कुलीना । कपि चंचल सबहीं बिधि हीना ॥
प्रात लेइ जो नाम हमारा । तेहि दिन ताहि न मिलै अहारा ॥

दो० – अस मैं अधम सखा सुनु, मोहू पर रघुबीर ।
कीन्ही कृपा सुमिरि गुन, भरे विलोचन नीर ॥ ७ ॥

जानतहूँ अस स्वामि बिसारी । फिरहिं ते काहे न होहिं दुखारी ॥
एहि बिधि कहत राम गुन ग्रामा । पावा अनिर्बाच्य विश्रामा ॥
पुनि सब कथा विभीषन कही । जेहि विधि जनकसुता तहँ रही ॥
तब हनुमंत कहा सुनु भ्राता । देखी चहउँ जानकी माता ॥
जुगुति विभीषन सकल सुनाई । चलेउ पवनसुत विदा कराई ॥
करि सोइ रूप गयउ पुनि तहवाँ । वन अशोक सीता रह जहवाँ ॥
देखि मनहि महुँ कीन्ह प्रनामा । बैठेहि बीति जात निसि जामा ॥
कृस तनु सीस जटा एक बेनी । जपति हृदयँ रघुपति गुन श्रेनी ॥

दो० – निज पद नयन दिएँ मन, राम पद कमल लीन ।
परम दुखी भा पवनसुत, देखि जानकी दीन ॥ ८॥

तरु पल्लव महुँ रहा लुकाई । करइ बिचार करौं का भाई ॥
तेहि अवसर रावनु तहँ आवा । संग नारि बहु किएँ बनावा ॥
बहु बिधि खल सीताहि समुझावा । साम दाम भय भेद देखावा ॥
कह रावनु सुनु सुमुखि सयानी । मंदोदरी आदि सब रानी ॥
तव अनुचरी करउँ पन मोरा । एक बार बिलोकु मम ओरा ॥
तृन धरि ओट कहति बैदेही । सुमिरि अवधपति परम सनेही ॥
सुनु दसमुख खद्योत प्रकासा । कबहुँ कि नलिनी करइ बिकासा ॥
अस मन समुझु कहति जानकी । खल सुधि नहि रघुबीर बान की ॥
सठ सूनें हरि आनेहि मोही । अधम निलज्ज लाज नहि तोही ॥

दो० – आपुहि सुनि खद्योत सम, रामहि भानु समान ।
परुष बचन सुनि काढ़ि असि, बोला अति खिसिआन ॥ ९॥

सीता तैं मम कृत अपमाना । कटिहउँ तव सिर कठिन कृपाना ॥
नाहि त सपदि मानु मम बानी । सुमुखि होति न त जीवन हानी ॥
स्याम सरोज दाम सम सुंदर । प्रभु भुज करि कर सम दसकंधर ॥
सो भुज कंठ कि तव असि घोरा । सुनु सठ अस प्रवान पन मोरा ॥
चंद्रहास हरु मम परितापं । रघुपति बिरह अनल संजातं ॥
सीतल निसित बहसि बर धारा । कह सीता हरु मम दुख भारा ॥
सुनत बचन पुनि मारन धावा । मयतनयाँ कहि नीति बुझावा ॥
कहेसि सकल निसिचरिन्ह बोलाई । सीतहि बहु बिधि त्रासहु जाई ॥
मास दिवस महुँ कहा न माना । तौ मैं मारबि काढ़ि कृपाना ॥

दो० – भवन गयउ दसकंधर, इहाँ पिसाचिनि बृंद ।
सीतहि त्रास देखावहिं, धरहि रूप बहु मंद ॥ १०॥

त्रिजटा नाम राच्छसी एका । राम चरन रति निपुन बिबेका ॥
सबन्हौ बोलि सुनाएसि सपना । सीतहि सेइ करहु हित अपना ॥
सपने बानर लंका जारी । जातुधान सेना सब मारी ॥
खर आरूढ़ नगन दससीसा । मुंडित सिर खंडित भुज बीसा ॥
एहि बिधि सो दच्छिन दिसि जाई । लंका मनहुँ विभीषन पाई ॥
नगर फिरी रघुबीर दोहाई । तब प्रभु सीता बोलि पठाई ॥
यह सपना मैं कहउँ पुकारी । होइहि सत्य गएँ दिन चारी ॥
तासु बचन सुनि ते सब डरीं । जनकसुता के चरनन्हि परीं ॥

दो॰ – जहँ तहँ गईं सकल तब, सीता कर मन सोच ।
मास दिवस बीतें मोही, मारिहि निसिचर पोच ॥ ११॥

त्रिजटा सन बोलीं कर जोरी । मातु बिपति संगिनि तैं मोरी ॥
तजौं देह करु बेगि उपाई । दुसह बिरहु अब नहिं सहि जाई ॥
आनि काठ रचु चिता बनाई । मातु अनल पुनि देहि लगाई ॥
सत्य करहि मम प्रीति सयानी । सुनै को श्रवन सूल सम बानी ॥
सुनत बचन पद गहि समुझाएसि । प्रभु प्रताप बल सुजसु सुनाएसि ॥
निसि न अनल मिल सुनु सुकुमारी । अस कहि सो निज भवन सिधारी ॥
कह सीता विधि भा प्रतिकूला । मिलिहि न पावक मिटिहि न सूला ॥
देखिअत प्रगट गगन अंगारा । अवनि न आवत एकउ तारा ॥
पावकमय ससि स्त्रवत न आगी । मानहुँ मोहि जानि हत भागी ॥
सुनहि विनय मम विटप असोका । सत्य नाम करु हरु मम सोका ॥
नूतन किसलय अनल समाना । देहि अगिनि जनि करहि निदाना ॥
देखि परम विरहाकुल सीता । सो छन कपिहि कलप सम बीता ॥

दो॰ – कपि करि हृदय बिचार, दीन्हि मुद्रिका डारि तब ।
जनु असोक अंगार दीन्ह, हरषि उठि कर गहेउ ॥ १२॥

तब देखी मुद्रिका मनोहर । राम नाम अंकित अति सुंदर ॥
चकित चितव मुदरी पहिचानी । हरष विषाद हृदयँ अकुलानी ॥
जीति को सकइ अजय रघुराई । माया तें असि रचि नहि जाई ॥
सीता मन बिचार कर नाना । मधुर वचन बोलेउ हनुमाना ॥
रामचंद्र गुन बरनै लागा । सुनतहिं सीता कर दुख भागा ॥
लागीं सुनैं श्रवन मन लाई । आदिहु तें सब कथा सुनाई ॥
श्रवनामृत जेहि कथा सुहाई । कही सो प्रगट होति किन भाई ॥
तब हनुमंत निकट चलि गयऊ । फिरि बैठीं मन विसमय भयऊ ॥
राम दूत मैं मातु जानकी । सत्य सपथ करुनानिधान की ॥
यह मुद्रिका मातु मैं आनी । दीन्हि राम तुम्ह कहँ सहिदानी ॥
नर बानरहि संग कहु कैसे । कही कथा भइ संगति जैसे ॥

दो॰ – कपि के बचन सप्रेम सुनि, उपजा मन बिस्वास ।
जाना मन क्रम बचन यह, कृपासिंधु कर दास ॥ १३ ॥

हरिजन जानि प्रीति अति गाढ़ी । सजल नयन पुलकावलि बाढ़ी ॥
बूड़त विरह जलधि हनुमाना । भयहु तात मो कहुँ जल जाना ॥
अब कहु कुसल जाउँ बलिहारी । अनुज सहित सुख भवन खरारी ॥
कोमलचित कृपाल रघुराई । कपि केहि हेतु धरी निठुराई ॥
सहज बानि सेवक सुख दायक । कबहुँक सुरति करत रघुनायक ॥
कबहुँ नयन मम सीतल ताता । होइहहिं निरखि स्याम मृदु गाता ॥
बचनु न आव नयन भरे बारी । अहह नाथ हौं निपट बिसारी ॥
देखि परम विरहाकुल सीता । बोला कपि मृदु बचन बिनीता ॥
मातु कुसल प्रभु अनुज समेता । तव दुख दुखी सुकृपा निकेता ॥
जनि जननी मानहु जियँ ऊना । तुम्ह ते प्रेमु राम के दूना ॥

दो॰ – रघुपति कर संदेसु अब, सुनु जननी धरि धीर ।
अस कहि कपि गदगद भयउ, भरे बिलोचन नीर ॥ १४ ॥

कहेउ राम बियोग तव सीता । मो कहुँ सकल भए बिपरीता ॥
नव तरु किसलय मनहुँ कृसानू । काल निसा सम निसि ससि भानू ॥
कुबलय बिपिन कुंत बन सरिसा । बारिद तपत तेल जनु बरिसा ॥
जे हित रहे करत तेइ पीरा । उरग स्वास सम त्रिबिध समीरा ॥
कहेहू तें कछु दुख घटि होई । काहि कहौं यह जान न कोई ॥
तत्व प्रेम कर मम अरु तोरा । जानत प्रिया एकु मनु मोरा ॥
सो मनु सदा रहत तोहि पाहीं । जानु प्रीति रसु एतनेहि माहीं ॥
प्रभु संदेसु सुनत बैदेही । मगनप्रेम तन सुधि नहि तेही ॥
कह कपि हृदयँ धीर धरु माता । सुमिरु राम सेवक सुखदाता ॥
उर आनहु रघुपति प्रभुताई । सुनि मम बचन तजहु कदराई ॥

दो॰ – निसिचर निकर पतंग सम, रघुपति बान कृसानु ।
जननी हृदय धीर धरु, जरे निसाचर जानु ॥ १५ ॥

जौं रघुबीर होति सुधि पाई । करते नहि बिलंबु रघुराई ॥
राम बान रबि उएँ जानकी । तम बरूथ कहँ जातुधान की ॥
अबहिं मातु मैं जाउँ लवाई । प्रभु आयसु नहि राम दोहाई ॥
कछुक दिवस जननी धरु धीरा । कपिन्ह सहित अइहहि रघुबीरा ॥
निसिचर मारि तोहि लै जैहहिं । तिहुँ पुर नारदादि जसु गैहहिं ॥
है सुत कपि सब तुम्हहि समाना । जातुधान अति भट बलवाना ॥
मोरें हृदय परम संदेहा । सुनि कपि प्रगट कीन्हि निज देहा ॥
कनक भूधराकार सरीरा । समर भयंकर अतिबल बीरा ॥
सीता मन भरोस तब भयऊ । पुनि लघु रूप पवनसुत लयऊ ॥

दो॰ – सुनु माता साखामृग, नहि बल बुद्धि बिसाल ।
प्रभु प्रताप तें गरुड़हि, खाइ परम लघु ब्याल ॥ १६ ॥

मन संतोष सुनत कपि बानी । भगति प्रताप तेज बल सानी ॥

आसिष दीन्हि रामप्रिय जाना । होहु तात बल सील निधाना ॥
अजर अमर गुननिधि सुत होहू । करहुँ बहुत रघुनायक छोहू ॥
करहुँ कृपा प्रभु अस सुनि काना । निर्भर प्रेम मगन हनुमाना ॥
बार बार नाएसि पद सीसा । बोला बचन जोरि कर कीसा ॥
अब कृतकृत्य भयउँ मैं माता । आसिष तव अमोघ बिख्याता ॥
सुनहु मातु मोहि अतिसय भूखा । लागि देखि सुंदर फल रूखा ॥
सुनु सुत करहिं बिपिन रखवारी । परम सुभट रजनीचर भारी ॥
तिन्ह कर भय माता मोहि नाहीं । जौं तुम्ह सुख मानहु मन माहीं ॥

दो० – देखि बुद्धि बल निपुन कपि, कहेउ जानकीं जाहु ।
रघुपति चरन हृदयँ धरि, तात मधुर फल खाहु ॥ १७॥

चलेउ नाइ सिरु पैठेउ बागा । फल खाएसि तरु तोरैं लागा ॥
रहे तहाँ बहु भट रखवारे । कछु मारेसि कछु जाइ पुकारे ॥
नाथ एक आवा कपि भारी । तेहि असोक बाटिका उजारी ॥
खाएसि फल अरु बिटप उपारे । रच्छक मर्दि मर्दि महि डारे ॥
सुनि रावन पठए भट नाना । तिन्हहि देखि गर्जेउ हनुमाना ॥
सब रजनीचर कपि संघारे । गए पुकारत कछु अधमारे ॥
पुनि पठयउ तेहिं अच्छकुमारा । चला संग लै सुभट अपारा ॥
आवत देखि बिटप गहि तर्जा । ताहि निपाति महाधुनि गर्जा ॥

दो० – कछु मारेसि कछु मर्देसि, कछु मिलएसि धरि धूरि ।
कछु पुनि जाइ पुकारे, प्रभु मर्कट बल भूरि ॥ १८॥

सुनि सुत बध लंकेस रिसाना । पठएसि मेघनाद बलवाना ॥
मारसि जन सुत बाँधेसु ताही । देखिअ कपिहि कहाँ कर आही ॥
चला इंद्रजित अतुलित जोधा । बंधु निधन सुनि उपजा क्रोधा ॥
कपि देखा दारुन भट आवा । कटकटाइ गर्जा अरु धावा ॥

अति बिसाल तरु एक उपारा । बिरथ कीन्ह लंकेस कुमारा ॥
रहे महाभट ताके संगा । गहि गहि कपि मर्दई निज अंगा ॥
तिन्हहि निपाति ताहि सन बाजा । भिरे जुगल मानहुँ गजराजा ॥
मुठिका मारि चढ़ा तरु जाई । ताहि एक छन मुरुछा आई ॥
उठि बहोरि कीन्हिसि बहु माया । जीति न जाइ प्रभंजन जाया ॥

दो॰ – ब्रह्म अस्त्र तेहि साँधा, कपि मन कीन्ह बिचार ।
जौन ब्रह्मसर मानउँ, महिमा मिटइ अपार ॥ १९ ॥

ब्रह्मबान कपि कहुं तेहि मारा । परतिहुँ बार कटकु संघारा ॥
तेहि देखा कपि मुरुछित भयऊ । नागपास बाँधेसि लै गयऊ ॥
जासु नाम जपि सुनहु भवानी । भव बंधन काटहि नर ग्यानी ॥
तासु दूत कि बंध तरु आवा । प्रभु कारज लगि कपिहि बँधावा ॥
कपि बंधन सुनि निसिचर धाए ॥ कौतुक लागि सभाँ सब आए ॥
दसमुख सभा दीखि कपि जाई । कहि न जाइ कछु अति प्रभुताई ॥
कर जोरें सुर दिसिप बिनीता । भृकुटि बिलोकत सकल सभीता ॥
देखि प्रताप न कपि मन संका । जिमि अहिगन महुँ गरुड़ असंका ॥

दो॰ – कपिहि बिलोकि दसानन, बिहसा कहि दुर्बाद ।
सुत बध सुरति कीन्हि, पुनि उपजा हृदयँ बिषाद ॥ २० ॥

कह लंकेस कवन तैं कीसा । केहि कें बल घालेहि बन खीसा ॥
की धौं श्रवन सुनेहि नहि मोही । देखउँ अति असंक सठ तोही ॥
मारे निसिचर केहिं अपराधा । कहु सठ तोहि न प्रान कइ बाधा ॥
सुनु रावन ब्रह्मांड निकाया । पाइ जासु बल बिरचति माया ॥
जाकें बल बिरंचि हरि ईसा । पालत सृजत हरत दससीसा ॥
जा बल सीस धरत सहसानन । अंडकोस समेत गिरि कानन ॥
धरइ जो बिबिध देह सुरत्राता । तुम्ह से सठन्ह सिखावनु दाता ॥

हर कोदंड कठिन जेहि भंजा । तेहि समेत नृप दल मद गंजा ॥
खर दूषन त्रिसिरा अरु बाली । बधे सकल अतुलित बलसाली ॥

दो० – जाके बल लवलेस तें, जितेहु चराचर झारि ।
तासु दूत मैं जा करि, हरि आनेहु प्रिय नारि ॥ २१॥

जानउँ मैं तुम्हारि प्रभुताई । सहसबाहु सन परी लराई ॥
समर बालि सन करि जसु पावा । सुनि कपि बचन बिहसि बिहरावा ॥
खायउँ फल प्रभु लागी भूँखा । कपि सुभाव तें तोरेउँ रूखा ॥
सब के देह परम प्रिय स्वामी । मारहि मोहि कुमारग गामी ॥
जिन्ह मोहि मारा ते मैं मारे । तेहि पर बाँधेउँ तनयँ तुम्हारे ॥
मोहि न कछु बाँधे कइ लाजा । कीन्ह चहउँ निज प्रभु कर काजा ॥
बिनती करउँ जोरि कर रावन । सुनहु मान तजि मोर सिखावन ॥
देखहु तुम्ह निज कुलहि बिचारी । भ्रम तजि भजहु भगत भय हारी ॥
जाकें डर अति काल डेराई । जो सुर असुर चराचर खाई ॥
तासों बयरु कबहुँ नहि कीजै । मोरे कहें जानकी दीजै ॥

दो० – प्रनतपाल रघुनायक, करुना सिंधु खरारि ।
गएँ सरन प्रभु राखिहैं, तव अपराध बिसारि ॥ २२॥

राम चरन पंकज उर धरहू । लंका अचल राजु तुम्ह करहू ॥
रिषि पुलस्ति जसु बिमल मयंका । तेहि ससि महुँ जनि होहु कलंका ॥
राम नाम बिनु गिरा न सोहा । देखु बिचारि त्यागि मद मोहा ॥
बसन हीन नहि सोह सुरारी । सब भूषन भूषित बर नारी ॥
राम बिमुख संपति प्रभुताई । जाइ रही पाई बिनु पाई ॥
सजल मूल जिन्ह सरितन्ह नाहीं । बरषि गएँ पुनि तबहि सुखाहीं ॥
सुनु दसकंठ कहउँ पन रोपी । बिमुख राम त्राता नहिं कोपी ॥
संकर सहस विष्णु अज तोही । सकहिं न राखि राम कर द्रोही ॥

दो० – मोहमूल बहु सूल प्रद, त्यागहु तम अभिमान ।
भजहु राम रघुनायक, कृपा सिंधु भगवान ॥ २३॥

जदपि कही कपि अति हित बानी । भगति बिबेक बिरति नय सानी ॥
बोला बिहसि महा अभिमानी । मिला हमहि कपि गुर बड़ ग्यानी ॥
मृत्यु निकट आई खल तोही । लागेसि अधम सिखावन मोही ॥
उलटा होइहि कह हनुमाना । मतिभ्रम तोर प्रगट मैं जाना ॥
सुनि कपि बचन बहुत खिसियाना । बेगि न हरहु मूढ़ कर प्राना ॥
सुनत निसाचर मारन धाए । सचिवन्ह सहित बिभीषनु आए ॥
नाइ सीस करि बिनय बहूता । नीति बिरोध न मारिअ दूता ॥
आन दंड कछु करिअ गोसाँई । सबहीं कहा मंत्र भल भाई ॥
सुनत बिहसि बोला दसकंधर । अंग भंग करि पठइअ बंदर ॥

दो० – कपि कें ममता पूँछ पर, सबहि कहउँ समुझाइ ।
तेल बोरि पट बाँधि, पुनि पावक देहु लगाइ ॥ २४॥

पूँछ हीन बानर तहँ जाइहि । तब सठ निज नाथहि लइ आइहि ॥
जिन्ह कै कीन्हिसि बहुत बड़ाई । देखउँ मैं तिन्ह कै प्रभुताई ॥
बचन सुनत कपि मन मुसुकाना । भइ सहाय सारद मैं जाना ॥
जातुधान सुनि रावन बचना । लागे रचै मूढ़ सोइ रचना ॥
रहा न नगर बसन घृत तेला । बाढ़ी पूँछ कीन्ह कपि खेला ॥
कौतुक कहँ आए पुरबासी । मारहि चरन करहि बहु हाँसी ॥
बाजहि ढोल देहि सब तारी । नगर फेरि पुनि पूँछ प्रजारी ॥
पावक जरत देखि हनुमंता । भयउ परम लघुरूप तुरंता ॥
निबुक चढ़ेउ कपि कनक अटारी । भई सभीत निसाचर नारी ॥

दो० – हरि प्रेरित तेहि अवसर, चले मरुत उनचास ।
अट्टहास करि गर्जा कपि, बढ़ि लाग अकास ॥ २५॥

देह बिसाल परम हरुआई । मंदिर तें मंदिर चढ़ धाई ॥
जरइ नगर भा लोग बिहाला । झपट लपट बहु कोटि कराला ॥
तात मातु हा सुनिअ पुकारा । एहि अवसर को हमहि उबारा ॥
हम जो कहा यह कपि नहि होई । बानर रूप धरें सुर कोई ॥
साधु अवग्या कर फलु ऐसा । जरइ नगर अनाथ कर जैसा ॥
जारा नगरु निमिष एक माही । एक बिभीषन कर गृह नाही ॥
ता कर दूत अनल जेहि सिरिजा । जरा न सो तेहि कारन गिरिजा ॥
उलटि पलटि लंका सब जारी । कूदि परा पुनि सिंधु मझारी ॥

दो॰ – पूँछ बुझाइ खोइ श्रम, धरि लघु रूप बहोरि ।
जनकसुता के आगे, ठाढ़ भयउ कर जोरि ॥ २६॥

मातु मोहि दीजे कछु चीन्हा । जैसे रघुनायक मोहि दीन्हा ॥
चूड़ामनि उतारि तब दयऊ । हरष समेत पवनसुत लयऊ ॥
कहेहु तात अस मोर प्रनामा । सब प्रकार प्रभु पूरनकामा ॥
दीन दयाल बिरिदु संभारी । हरहु नाथ मम संकट भारी ॥
तात सक्रसुत कथा सुनाएहु । बान प्रताप प्रभुहि समुझाएहु ॥
मास दिवस महुँ नाथु न आवा । तौ पुनि मोहि जिअत नहि पावा ॥
कहु कपि केहि बिधि राखौं प्राना । तुम्हहू तात कहत अब जाना ॥
तोहि देखि सीतलि भइ छाती । पुनि मो कहुँ सोइ दिनु सो राती ॥

दो॰ – जनकसुतहि समुझाइ करि, बहु बिधि धीरजु दीन्ह ।
चरन कमल सिरु नाइ कपि, गवनु राम पहि कीन्ह ॥ २७॥

चलत महाधुनि गर्जेसि भारी । गर्भ स्त्रवहिं सुनि निसिचर नारी ॥
नाघि सिंधु एहि पारहि आवा । सबद किलिकिला कपिन्ह सुनावा ॥
हरषे सब बिलोकि हनुमाना । नूतन जन्म कपिन्ह तब जाना ॥
मुख प्रसन्न तन तेज बिराजा । कीन्हेसि रामचंद्र कर काजा ॥

मिले सकल अति भए सुखारी । तलफत मीन पाव जिमि बारी ॥
चले हरषि रघुनायक पासा । पूँछत कहत नवल इतिहासा ॥
तब मधुबन भीतर सब आए । अंगद संमत मधु फल खाए ॥
रखवारे जब बरजन लागे । मुष्टि प्रहार हनत सब भागे ॥

दो॰ – जाइ पुकारे ते सब, बन उजार जुबराज ।
सुनि सुग्रीव हरष कपि, करि आए प्रभु काज ॥ २८॥

जौं न होति सीता सुधि पाई । मधुबन के फल सकहि कि खाई ॥
एहि बिधि मन बिचार कर राजा । आइ गए कपि सहित समाजा ॥
आइ सबन्हि नावा पद सीसा । मिलेउ सबन्हि अति प्रेम कपीसा ॥
पूँछी कुसल कुसल पद देखी । राम कृपाँ भा काजु बिसेषी ॥
नाथ काजु कीन्हेउ हनुमाना । राखे सकल कपिन्ह के प्राना ॥
सुनि सुग्रीव बहुरि तेहि मिलेऊ । कपिन्ह सहित रघुपति पहिं चलेऊ ॥
राम कपिन्ह जब आवत देखा । किएँ काजु मन हरष बिसेषा ॥
फटिक सिला बैठे द्वौ भाई । परे सकल कपि चरनन्हि जाई ॥

दो॰ – प्रीति सहित सब भेटे, रघुपति करुना पुंज ।
पूँछी कुसल नाथ अब, कुसल देखि पद कंज ॥ २९॥

जामवंत कह सुनु रघुराया । जा पर नाथ करहु तुम्ह दाया ॥
ताहि सदा सुभ कुसल निरंतर । सुर नर मुनि प्रसन्न ता ऊपर ॥
सोइ बिजई बिनई गुन सागर । तासु सुजसु त्रैलोक उजागर ॥
प्रभु की कृपा भयउ सबु काजू । जन्म हमार सुफल भा आजू ॥
नाथ पवनसुत कीन्हि जो करनी । सहसहुँ मुख न जाइ सो बरनी ॥
पवनतनय के चरित सुहाए । जामवंत रघुपतिहि सुनाए ॥
सुनत कृपानिधि मन अति भाए । पुनि हनुमान हरषि हियं लाए ॥
कहहु तात केहि भाँति जानकी । रहति करति रच्छा स्वप्रान की ॥

दो० - नाम पाहरू दिवस निसि, ध्यान तुम्हार कपाट ।
लोचन निज पद जंत्रित, जाहि प्रान केहिं बाट ॥ ३०॥

चलत मोहि चूड़ामनि दीन्ही । रघुपति हृदयँ लाइ सोइ लीन्ही ॥
नाथ जुगल लोचन भरि बारी । बचन कहे कछु जनककुमारी ॥
अनुज समेत गहेहु प्रभु चरना । दीन बंधु प्रनतारति हरना ॥
मन क्रम बचन चरन अनुरागी । केहि अपराध नाथ हौं त्यागी ॥
अवगुन एक मोर मैं माना । बिछुरत प्रान न कीन्ह पयाना ॥
नाथ सो नयनन्हि को अपराधा । निसरत प्रान करहि हठि बाधा ॥
बिरह अगिनि तनु तूल समीरा । स्वास जरइ छन माहि सरीरा ॥
नयन स्त्रवहि जलु निज हित लागी । जरैं न पाव देह बिरहागी ॥
सीता कै अति बिपति बिसाला । बिनहि कहें भलि दीनदयाला ॥

दो० - निमिष निमिष करुनानिधि, जाहिं कलप सम बीति ।
बेगि चलिअ प्रभु आनिअ, भुज बल खल दल जीति ॥ ३१॥

सुनि सीता दुख प्रभु सुख अयना । भरि आए जल राजीव नयना ॥
बचन कायँ मन मम गति जाही । सपनेहुँ बूझिअ बिपति कि ताही ॥
कह हनुमंत बिपति प्रभु सोई । जब तव सुमिरन भजन न होई ॥
केतिक बात प्रभु जातुधान की । रिपुहि जीति आनिबी जानकी ॥
सुनु कपि तोहि समान उपकारी । नहि कोउ सुर नर मुनि तनुधारी ॥
प्रति उपकार करौं का तोरा । सनमुख होई न सकत मन मोरा ॥
सुनु सुत तोहि उरिन मैं नाहीं । देखेउँ करि बिचार मन माहीं ॥
पुनि पुनि कपिहि चितव सुरत्राता । लोचन नीर पुलक अति गाता ॥

दो० - सुनि प्रभु बचन बिलोकि, मुख गात हरषि हनुमंत ।
चरन परेउ प्रेमाकुल, त्राहि त्राहि भगवंत ॥ ३२॥

बार बार प्रभु चहइ उठावा । प्रेम मगन तेहि उठब न भावा ॥
प्रभु कर पंकज कपि कें सीसा । सुमिरि सो दसा मगन गौरीसा ॥
सावधान मन करि पुनि संकर । लागे कहन कथा अति सुंदर ॥
कपि उठाइ प्रभु हृदयँ लगावा । कर गहि परम निकट बैठावा ॥
कहु कपि रावन पालित लंका । केहि बिधि दहेउ दुर्ग अति बंका ॥
प्रभु प्रसन्न जाना हनुमाना । बोला बचन बिगत अभिमाना ॥
साखामृग कै बड़ि मनुसाई । साखा तें साखा पर जाई ॥
नाधि सिंधु हाटकपुर जारा । निसिचर गन बधि बिपिन उजारा ॥
सो सब तव प्रताप रघुराई । नाथ न कछू मोरि प्रभुताई ॥

दो॰ : ता कहुँ प्रभु कछु अगम नहि, जा पर तुम्ह अनुकूल ।
तव प्रभावँ बड़वानलहि, जारि सकइ खलु तूल ॥ ३३॥

नाथ भगति अति सुखदायनी । देहु कृपा करि अनपायनी ॥
सुनि प्रभु परम सरल कपि बानी । एवमस्तु तब कहेउ भवानी ॥
उमा राम सुभाउ जेहि जाना । ताहि भजनु तजि भाव न आना ॥
यह संवाद जासु उर आवा । रघुपति चरन भगति सोइ पावा ॥
सुनि प्रभु बचन कहहि कपिबृंदा । जय जय जय कृपाल सुखकंदा ॥
तब रघुपति कपिपतिहि बोलावा । कहा चलैं कर करहु बनावा ॥
अब बिलंबु केहि कारन कीजे । तुंरत कपिन्ह कहुं आयसु दीजे ॥
कौतुक देखि सुमन बहु बरषी । नभ तें भवन चले सुर हरषी ॥

दो॰ - कपिपति बेगि बोलाए, आए जूथप जूथ ।
नाना बरन अतुल बल, बानर भालु बरूथ ॥ ३४॥

प्रभु पद पंकज नावहि सीसा । गर्जहि भालु महाबल कीसा ॥
देखी राम सकल कपि सेना । चितई कृपा करि राजीव नैना ॥
राम कृपा बल पाई कपिंदा । भए पच्छजुत मनहुँ गिरिंदा ॥

हरषि राम तब कीन्ह पयाना । सगुन भए सुंदर सुभ नाना ॥
जासु सकल मंगलमय कीती । तासु पयान सगुन यह नीती ॥
प्रभु पयान जाना बैदेहीं । फरकि बाम अंग जनु कहि देहीं ॥
जोइ जोइ सगुन जानकिहि होई । असगुन भयउ रावनहि सोई ॥
चला कटुक को बरनै पारा । गर्जहिं बानर भालु अपारा ॥
नख आयुध गिरि पादपधारी । चले गगन महि इच्छाचारी ॥
केहरिनाद भालु कपि करहीं । डगमगाहि दिग्गज चिक्करहीं ॥

छं॰– *चिक्करहि दिग्गज डोल महि, गिरि लोल सागर खरभरे ।*
मन हरष सभ गंधर्ब सुर, मुनि नाग किनर दुख टरे ॥
कटकटहिं मर्कट बिकट भट, बहु कोटि कोटिन्ह धावहीं ।
जय राम प्रबल प्रताप, कोसलनाथ गुन गन गावहीं ॥ १ ॥
सहि सक न भार उदार, अहिपति बार बारहि मोहई ।
गह दसन पुनि पुनि कमठ पृष्ठ, कठोर सो किमि सोहई ॥
रघुवीर रुचिर प्रयान प्रस्थिति, जानि परम सुहावनी ।
जनु कमठ खर्पर सर्पराज सो, लिखत अबिचल पावनी ॥ २ ॥

दो॰ - एहि बिधि जाइ कृपानिधि, उतरे सागर तीर ।
जहं तहँ लागे खान फल, भालु बिपुल कपि बीर ॥ ३५ ॥

उहाँ निसाचर रहहि ससंका । जब तें जारि गयउ कपि लंका ॥
निज निज गृहँ सब करहि बिचारा । नहि निसिचर कुल केर उबारा ॥
जासु दूत बल बरनि न जाई । तेहि आएँ पुर कवन भलाई ॥
दूतिन्ह सन सुनि पुरजन बानी । मंदोदरी अधिक अकुलानी ॥
रहसि जोरि कर पति पग लागी । बोली बचन नीति रस पागी ॥
कंत करष हरि सन परिहरहू । मोर कहा अति हित हियँ धरहू ॥
समुझत जासु दूत कइ करनी । स्त्रवहि गर्भ रजनीचर धरनी ॥

तासु नार निज सचिव बोलाई । पठवहु कंत जो चहहु भलाई ॥
तव कुल कमल बिपिन दुखदाई । सीता सीत निसा सम आई ॥
सुनहु नाथ सीता बनु दीन्हें । हित न तुम्हार संभु अज कीन्हें ॥

दो॰ - राम बान अहि गन सरिस, निकर निसाचर भेक ।
जब लगि ग्रसत न तब लगि, जतनु करहु तजि टेक ॥ ३६॥

श्रवन सुनी सठ ता करि बानी । बिहसा जगत बिदित अभिमानी ॥
सभय सुभाउ नारि कर साचा । मंगल महुँ भय मन अति काचा ॥
जौं आवइ मर्कट कटकाई । जिअहिं बिचारे निसिचर खाई ॥
कंपहिं लोकप जाकीं त्रासा । तासु नारि सभीत बड़ि हासा ॥
अस कहि बिहसि ताहि उर लाई । चलेउ सभाँ ममता अधिकाई ॥
मंदोदरी हृदयँ कर चिंता । भयउ कंत पर बिधि बिपरीता ॥
बैठेउ सभाँ खबरि असि पाई । सिंधु पार सेना सब आई ॥
बूझेसि सचिव उचित मत कहहू । ते सब हँसे मष्ट करि रहहू ॥
जितेहु सुरासुर तब श्रम नाही । नर बानर केहि लेखे माहीं ॥

दो॰ - सचिव बैद गुर तीनि जौं, प्रिय बोलहिं भय आस ।
राज धर्म तन तीनि कर, होइ बेगिहीं नास ॥ ३७॥

सोइ रावन कहुँ बनी सहाई । अस्तुति करहिं सुनाई सुनाई ॥
अवसर जानि बिभीषनु आवा । भ्राता चरन सीसु तेहिं नावा ॥
पुनि सिरु नाइ बैठ निज आसन । बोला बचन पाइ अनुसासन ॥
जौ कृपाल पूँछिहु मोहि बाता । मति अनुरूप कहउँ हित ताता ॥
जो आपन चाहै कल्याना । सुजसु सुमति सुभ गति सुख नाना ॥
सो परनारि लिलार गोसाई । तजउ चउथि के चंद कि नाई ॥
चौदह भुवन एक पति होई । भूतद्रोह तिष्टइ नहिं सोई ॥
गुन सागर नागर नर जोऊ । अलप लोभ भल कहइ न कोऊ ॥

दो॰ - काम क्रोध मद लोभ सब, नाथ नरक के पंथ ।
सब परिहरि रघुबीरहि, भजहु भजहिं जेहि संत ॥ ३८॥

तात राम नहिं नर भूपाला । भुवनेश्वर कालहु कर काला ॥
ब्रह्म अनामय अज भगवंता । ब्यापक अजित अनादि अनंता ॥
गो द्विज धेनु देव हितकारी । कृपा सिंधु मानुष तनुधारी ॥
जन रंजन भंजन खल ब्राता । बेद धर्म रच्छक सुनु भ्राता ॥
ताहि बयरु तजि नाइअ माथा । प्रनतारति भंजन रघुनाथा ॥
देहु नाथ प्रभु कहुँ बैदेही । भजहु राम बिनु हेतु सनेही ॥
सरन गएँ प्रभु ताहु न त्यागा । बिस्व द्रोह कृत अघ जेहि लागा ॥
जासु नाम त्रय ताप नसावन । सोइ प्रभु प्रगट समुझु जियँ रावन ॥

दो॰- बार बार पद लागउँ, बिनय करउँ दससीस ।
परिहरि मान मोह मद, भजहु कोसलाधीस ॥ ३९ (क)॥
मुनि पुलस्ति निज सिष्य सन, कहि पठई यह बात ।
तुरत सो मैं प्रभु सन कही, पाइ सुअवसरु तात ॥ ३९ (ख)॥

माल्यवंत अति सचिव सयाना । तासु बचन सुनि अति सुख माना ॥
तात अनुज तव नीति बिभूषन । सो उर धरहु जो कहत बिभीषन ॥
रिपु उतकरष कहत सठ दोऊ । दुरि न करहु इहाँ हइ कोऊ ॥
माल्यवंतगृह गयउ बहोरी । कहइ बिभीषनु पुनि कर जोरी ॥
सुमति कुमति सब कें उर रहहीं । नाथ पुरान निगम अस कहहीं ॥
जहाँ सुमति तहँ संपति नाना । जहाँ कुमति तहँ बिपति निदाना ॥
तव उर कुमति बसी बिपरीता । हित अनहित मानहु रिपु प्रीता ॥
कालराति निसिचर कुल केरी । तेहि सीता पर प्रीति घनेरी ॥

दो॰ – तात चरन गहि मागउँ, राखहु मोर दुलार ।
सीता देहु राम कहुँ, अहित न होइ तुम्हार ॥ ४०॥

बुध पुरान श्रुति संमत बानी । कही बिभीषन नीति बखानी ॥
सुनत दसानन उठा रिसाई । खल तोहि निकट मृत्यु अब आई ॥
जिअसि सदा सठ मोर जिआवा । रिपु कर पच्छ मूढ़ तोहि भावा ॥
कहसि न खल अस को जग माहीं । भुज बल जाहि जिता मैं नाहीं ॥
मम पुर बसि तपसिन्ह पर प्रीती । सठ मिलु जाइ तिन्हहि कहु नीती ॥
अस कहि कीन्हेसि चरन प्रहारा । अनुज गहे पद बारहिं बारा ॥
उमा संत कइ इहइ बड़ाई । मंद करत जो करइ भलाई ॥
तुम्ह पितु सरिस भलेहिं मोहि मारा । रामु भजें हित नाथ तुम्हारा ॥
सचिव संग लै नभ पथ गयऊ । सबहि सुनाइ कहत अस भयऊ ॥

दो॰ - रामु सत्यसंकल्प प्रभु, सभा कालबस तोरि ।
मैं रघुबीर सरन अब, जाउँ देहु जनि खोरि ॥ ४१ ॥

अस कहि चला बिभीषनु जबहीं । आयूहीन भए सब तबहीं ॥
साधु अवग्या तुरत भवानी । कर कल्यान अखिल कै हानी ॥
रावन जबहिं बिभीषन त्यागा । भयउ बिभव बिनु तबहिं अभागा ॥
चलेउ हरषि रघुनायक पाहीं । करत मनोरथ बहु मन माहीं ॥
देखिहउँ जाइ चरन जलजाता । अरुन मृदुल सेवक सुखदाता ॥
जे पद परसि तरी रिषिनारी । दंडक कानन पावनकारी ॥
जे पद जनकसुताँ उर लाए । कपट कुरंग संग धर धाए ॥
हर उर सर सरोज पद जेई । अहोभाग्य मैं देखिहउँ तेई ॥

दो॰ - जिन्ह पायन्ह के पादुकन्हि, भरतु रहे मन लाइ ।
तेपद आजु बिलोकिहउँ, इन्ह नयनन्हि अब जाइ ॥ ४२ ॥

एहि बिधि करत सप्रेम बिचारा । आयउ सपदि सिंधु एहिं पारा ॥
कपिन्ह बिभीषनु आवत देखा । जाना कोउ रिपु दूत बिसेषा ॥
ताहि राखि कपीस पहिं आए । समाचार सब ताहि सुनाए ॥

कह सुग्रीव सुनहु रघुराई । आवा मिलन दसानन भाई ॥
कह प्रभु सखा बूझिऐ काहा । कहइ कपीस सुनहु नरनाहा ॥
जानि न जाइ निसाचर माया । कामरुप केहि कारन आया ॥
भेद हमार लेन सठ आवा । राखिअ बाँधि मोहि अस भावा ॥
सखा नीति तुम्ह नीकि बिचारी । मम पन सरनागत भयहारी ॥
सुनि प्रभु बचन हरष हनुमाना । सरनागत बच्छल भगवाना ॥

दो० – सरनागत कहुँ जे तजहि, निज अनहित अनुमानि ।
ते नर पावँर पापमय, तिन्हहि बिलोकत हानि ॥ ४३ ॥

कोटि बिप्र बध लागहिं जाहू । आएँ सरन तजउँ नहिं ताहू ॥
सनमुख होइ जीव मोहि जबहीं । जन्म कोटि अघ नासहिं तबहीं ॥
पापवंत कर सहज सुभाऊ । भजनु मोर तेहि भाव न काऊ ॥
जौं पै दुष्टहृदय सोइ होई । मोरें सनमुख आव कि सोई ॥
निर्मल मन जन सो मोहि पावा । मोहि कपट छल छिद्र न भावा ॥
भेद लेन पठवा दससीसा । तबहुँ न कछु भय हानि कपीसा ॥
जग महुँ सखा निसाचर जेते । लछिमनु हनइ निमिष महुँ तेते ॥
जौं सभीत आवा सरनाई । रखिहउँ ताहि प्रान की नाई ॥

दो० – उभय भाँति तेहि आनहु, हँसि कह कृपानिकेत ।
जय कृपाल कहि कपि चले, अंगद हनू समेत ॥ ४४ ॥

सादर तेहि आगें करि बानर । चले जहाँ रघुपति करुनाकर ॥
दूरिहि ते देखे द्वौ भ्राता । नयनानंद दान के दाता ॥
बहुरि राम छबिधाम बिलोकी । रहेउ ठटुकि एकटक पल रोकी ॥
भुज प्रलंब कंजारुन लोचन । स्यामल गात प्रनत भय मोचन ॥
सिंध कंध आयत उर सोहा । आनन अमित मदन मन मोहा ॥
नयन नीर पुलकित अति गाता । मन धरि धीर कहीं मृदु बाता ॥

नाथ दसानन कर मैं भ्राता । निसिचर बंस जनम सुरत्राता ॥
सहज पापप्रिय तामस देहा । जथा उलूकहि तम पर नेहा ॥

दो० - श्रवन सुजसु सुनि आयउँ, प्रभु भंजन भव भीर ।
त्राहि त्राहि आरति हरन, सरन सुखद रघुबीर ॥ ४५॥

अस कहि करत दंडवत देखा । तुरत उठे प्रभु हरष बिसेषा ॥
दीन बचन सुनि प्रभु मन भावा । भुज बिसाल प्रभु हृदयँ लगावा ॥
अनुज सहित मिलि ढ़िग बैठारी । बोले बचन भगत भयहारी ॥
कहु लंकेस सहित परिवारा । कुसल कुठाहर बास तुम्हारा ॥
खल मंडली बसहु दिनु राती । सखा धरम निबहइ केहि भाँती ॥
मैं जानउँ तुम्हारि सब रीती । अति नय निपुन न भाव अनीती ॥
बरु भल बास नरक कर ताता । दुष्ट संग जनि देइ बिधाता ॥
अब पद देखि कुसल रघुराया । जौं तुम्ह कीन्हि जानि जन दाया ॥

दो० - तब लगि कुसल न जीव कहुँ, सपनेहुँ मन बिश्राम ।
जब लगि भजत न राम कहुँ, सोक धाम तजि काम ॥ ४६॥

तब लगि हृदयँ बसत खल नाना । लोभ मोह मच्छर मद माना ॥
जब लगि उर न बसत रघुनाथा । धरें चाप सायक कटि माथा ॥
ममता तरुन तमी अँधिआरी । राग द्वेष उलूक सुखकारी ॥
तब लगि बसति जीव मन माहीं । जब लगि प्रभु प्रताप रबि नाहीं ॥
अब मैं कुसल मिटे भय भारे । देखि राम पद कमल तुम्हारे ॥
तुम्ह कृपाल जा पर अनुकूला । ताहि न ब्याप त्रिबिध भव सूला ॥
मैं निसिचर अति अधम सुभाऊ । सुभ आचरनु कीन्ह नहिं काऊ ॥
जासु रूप मुनि ध्यान न आवा । तेहिं प्रभु हरषि हृदयँ मोहि लावा ॥

दो० -अहोभाग्य मम अमित अति, राम कृपा सुख पुंज ।
देखेउँ नयन बिरंचि सिव, सेब्य जुगल पद कंज ॥ ४७॥

सुनहु सखा निज कहउँ सुभाऊँ। जान भुसुंडि संभु गिरिजाऊ ॥
जौं नर होइ चराचर द्रोही । आवै सभय सरन तकि मोही ॥
तजि मद मोह कपट छल नाना । करउँ सद्य तेहि साधु समाना ॥
जननी जनक बंधु सुत दारा । तनु धनु भवन सुहृद परिवारा ॥
सब कै ममता ताग बटोरी । मम पद मनहि बाँध बरि डोरी ॥
समदरसी इच्छा कछु नाहीं ॥ हरष सोक भय नहिं मन माहीं ॥
अस सज्जन मम उर बस कैसें । लोभी हृदयँ बसइ धनु जैसें ॥
तुम्ह सारिखे संत प्रिय मोरें । धरउँ देह नहिं आन निहोरें ॥

दो० - सगुन उपासक परहित, निरत नीति दृढ़ नेम ।
ते नर प्रान समान मम, जिन्ह कें द्विज पद प्रेम ॥ ४८॥

सुनु लंकेस सकल गुन तोरें । तातें तुम्ह अतिसय प्रिय मोरें ॥
राम बचन सुनि बानर जूथा । सकल कहहिं जय कृपा बरूथा ॥
सुनत बिभीषनु प्रभु कै बानी ॥ नहिं अघात श्रवनामृत जानी ॥
पद अंबुज गहि बारहिं बारा । हृदयँ समात न प्रेमु अपारा ॥
सुनहु देव सचराचर स्वामी । प्रनतपाल उर अंतरजामी ॥
उर कछु प्रथम बासना रही । प्रभु पद प्रीति सरित सो बही ॥
अब कृपाल निज भगति पावनी । देहु सदा सिव मन भावनीं ॥
एवमस्तु कहि प्रभु रनधीरा । मागा तुरत सिंधु कर नीरा ॥
जदपि सखा तव इच्छा नाहीं । मोर दरसु अमोघ जग माहीं ॥
अस कहि राम तिलक तेहि सारा । सुमन बृष्टि नभ भई अपारा ॥

दो०- रावन क्रोध अनल निज, स्वास समीर प्रचंड ।
जरत बिभीषनु राखेउ, दीन्हेउ राजु अखंड ॥ ४९ (क)॥
जो संपति सिव रावनहि, दीन्हि दिएँ दस माथ ।
सोइ संपदा बिभीषनहि, सकुचि दीन्हि रघुनाथ ॥ ४९ (ख)॥

अस प्रभु छाड़ि भजहिं जे आना । ते नर पसु बिनु पूँछ बिषाना ॥
निज जन जानि ताहि अपनावा । प्रभु सुभाव कपि कुल मन भावा ॥
पुनि सर्बग्य सर्ब उर बासी । सर्बरूप सब रहित उदासी ॥
बोले बचन नीति प्रतिपालक । कारन मनुज दनुज कुल घालक ॥
सुनु कपीस लंकापति बीरा । केहि बिधि तरिअ जलधि गंभीरा ॥
संकुल मकर उरग झष जाती । अति अगाध दुस्तर सब भाँती ॥
कह लंकेस सुनहु रघुनायक । कोटि सिंधु सोषक तव सायक ॥
जद्यपि तदपि नीति असि गाई । बिनय करिअ सागर सन जाई ॥

दो॰ - प्रभु तुम्हार कुलगुर जलधि, कहिहि उपाय बिचारि ।
बिनु प्रयास सागर तरिहि, सकल भालु कपि धारि ॥ ५० ॥

सखा कही तुम्ह नीकि उपाई । करिअ दैव जौं होई सहाई ॥
मंत्र न यह लछिमन मन भावा । राम बचन सुनि अति दुख पावा ॥
नाथ दैव कर कवन भरोसा । सोषिअ सिंधु करिअ मन रोसा ॥
कादर मन कहुँ एक अधारा । दैव दैव आलसी पुकारा ॥
सुनत बिहसि बोले रघुबीरा । ऐसेहिं करब धरहु मन धीरा ॥
अस कहि प्रभु अनुजहि समुझाई । सिंधु समीप गए रघुराई ॥
प्रथम प्रनाम कीन्ह सिरु नाई । बैठे पुनि तट दर्भ डसाई ॥
जबहिं बिभीषन प्रभु पहिं आए । पाछें रावन दूत पठाए ॥

दो॰ - सकल चरित तिन्ह देखे, धरें कपट कपि देह ।
प्रभु गुन हृदयँ सराहहि, सरनागत पर नेह ॥ ५१ ॥

प्रगट बखानहिं राम सुभाऊ । अति सप्रेम गा बिसरि दुराऊ ॥
रिपु के दूत कपिन्ह तब जाने । सकल बाँधि कपीस पहिं आने ॥
कह सुग्रीव सुनहु सब बानर । अंग भंग करि पठवहु निसिचर ॥
सुनि सुग्रीव बचन कपि धाए । बाँधि कटक चहु पास फिराए ॥

बहु प्रकार मारन कपि लागे । दीन पुकारत तदपि न त्यागे ॥
जो हमार हर नासा काना । तेहि कोसलाधीस कै आना ॥
सुनि लछिमन सब निकट बोलाए । दया लागि हँसि तुरत छोड़ाए ॥
रावन कर दीजहु यह पाती । लछिमन बचन बाचु कुलघाती ॥

दो॰ कहेहु मुखागर मूढ़ सन, मम संदेसु उदार ।
सीता देइ मिलहु न त, आवा कालु तुम्हार ॥ ५२॥

तुरत नाइ लछिमन पद माथा । चले दूत बरनत गुन गाथा ॥
कहत राम जसु लंकाँ आए । रावन चरन सीस तिन्ह नाए ॥
बिहसि दसानन पूँछी बाता । कहसि न सुक आपनि कुसलाता ॥
पुनि कहु खबरि बिभीषन केरी । जाहि मृत्यु आई अति नेरी ॥
करत राज लंका सठ त्यागी । होइहि जव कर कीट अभागी ॥
पुनि कहु भालु कीस कटकाई । कठिन काल प्रेरित चलि आई ॥
जिन्ह के जीवन कर रखवारा । भयउ मृदुल चित सिंधु बिचारा ॥
कहु तपसिन्ह कै बात बहोरी । जिन्ह के हृदयँ त्रास अति मोरी ॥

दो॰ - की भइ भेंट कि फिरि गए, श्रवन सुजसु सुनि मोर ।
कहसि न रिपु दल तेज बल, बहुत चकित चित तोर ॥ ५३॥

नाथ कृपा करि पूँछेहु जैसें । मानहु कहा क्रोध तजि तैसें ॥
मिला जाइ जब अनुज तुम्हारा । जातहिं राम तिलक तेहि सारा ॥
रावन दूत हमहि सुनि काना । कपिन्ह बाँधि दीन्हे दुख नाना ॥
श्रवन नासिका काटैं लागे । राम सपथ दीन्हें हम त्यागे ॥
पूँछिहु नाथ राम कटकाई । बदन कोटि सत बरनि न जाई ॥
नाना बरन भालु कपि धारी । बिकटानन बिसाल भयकारी ॥
जेहिं पुर दहेउ हतेउ सुत तोरा । सकल कपिन्ह महँ तेहि बलु थोरा ॥
अमित नाम भट कठिन कराला । अमित नाग बल बिपुल बिसाला ॥

दो॰ - द्विबिद मयंद नील नल, अंगद गद बिकटासि ।
दधिमुख केहरि निसठ सठ, जामवंत बलरासि ॥ ५४॥

ए कपि सब सुग्रीव समाना । इन्ह सम कोटिन्ह गनइ को नाना ॥
राम कृपाँ अतुलित बल तिन्हहीं । तृन समान त्रैलोकहिं गनहीं ॥
अस मैं सुना श्रवन दसकंधर । पदुम अठारह जूथप बंदर ॥
नाथ कटक महँ सो कपि नाहीं । जो न तुम्हहि जीतै रन माहीं ॥
परम क्रोध मीजहिं सब हाथा । आयसु पै न देहिं रघुनाथा ॥
सोषहिं सिंधु सहित झष ब्याला । पूरहिं न त भरि कुधर बिसाला ॥
मर्दि गर्द मिलवहिं दससीसा । ऐसेइ बचन कहहिं सब कीसा ॥
गर्जहिं तर्जहिं सहज असंका । मानहुँ ग्रसन चहत हहिं लंका ॥

दो॰ - सहज सूर कपि भालु सब, पुनि सिर पर प्रभु राम ।
रावन काल कोटि कहुँ, जीति सकहि संग्राम ॥ ५५॥

राम तेज बल बुधि बिपुलाई । सेष सहस सत सकहिं न गाई ॥
सक सर एक सोषि सत सागर । तव भ्रातहिं पूँछेउ नय नागर ॥
तासु बचन सुनि सागर पाहीं । मांगत पंथ कृपा मन माहीं ॥
सुनत बचन बिहसा दससीसा । जौं असि मति सहाय कृत कीसा ॥
सहज भीरु कर बचन दृढ़ाई । सागर सन ठानी मचलाई ॥
मूढ़ मृषा का करसि बड़ाई । रिपु बल बुद्धि थाह मैं पाई ॥
सचिव सभीत बिभीषन जाकें । बिजय बिभूति कहाँ जग ताकें ॥
सुनि खल बचन दूत रिस बाढ़ी । समय बिचारि पत्रिका काढ़ी ॥
रामानुज दीन्ही यह पाती । नाथ बचाइ जुड़ावहु छाती ॥
बिहसि बाम कर लीन्ही रावन । सचिव बोलि सठ लाग बचावन ॥

दो॰- बातन्ह मनहि रिझाइ सठ, जनि घालसि कुल खीस ।
राम बिरोध न उबरसि, सरन बिष्नु अज ईस ॥ ५६ (क)॥

की तजि मान अनुज इव, प्रभु पद पंकज भृंग ।
होहि कि राम सरानल, खल कुल सहित पतंग ॥ ५६ (ख)॥

सुनत सभय मन मुख मुसुकाई । कहत दसानन सबहि सुनाई ॥
भूमि परा कर गहत अकासा । लघु तापस कर बाग बिलासा ॥
कह सुक नाथ सत्य सब बानी । समुझहु छाड़ि प्रकृति अभिमानी ॥
सुनहु बचन मम परिहरि क्रोधा । नाथ राम सन तजहु बिरोधा ॥
अति कोमल रघुबीर सुभाऊ । जद्यपि अखिल लोक कर राऊ ॥
मिलत कृपा तुम्ह पर प्रभु करिही । उर अपराध न एकउ धरिही ॥
जनक सुता रघुनाथहि दीजे । एतना कहा मोर प्रभु कीजे ॥
जब तेहि कहा देन बैदेही । चरन प्रहार कीन्ह सठ तेही ॥
नाइ चरन सिरू चला सो तहाँ । कृपासिंधु रघुनायक जहाँ ॥
करि प्रनामु निज कथा सुनाई । राम कृपाँ आपनि गति पाई ॥
रिषि अगस्ति की साप भवानी । राछस भयउ रहा मुनि ग्यानी ॥
बंदि राम पद बारहिं बारा । मुनि निज आश्रम कहुँ पगु धारा ॥

दो॰ - बिनय न मानत जलधि जड़ गए तीनि दिन बीति ।
बोले राम सकोप तब ,भय बिनु होइ न प्रीति ॥ ५७॥

लछिमन बान सरासन आनू । सोषौं बारिधि बिसिख कृसानू ॥
सठ सन बिनय कुटिल सन प्रीती । सहज कृपन सन सुंदर नीती ॥
ममता रत सन ग्यान कहानी । अति लोभी सन बिरति बखानी ॥
क्रोधिहि सम कामिहि हरि कथा । ऊसर बीज बएँ फल जथा ॥
अस कहि रघुपति चाप चढ़ावा । यह मत लछिमन के मन भावा ॥
संधानेउ प्रभु बिसिख कराला । उठी उदधि उर अंतर ज्वाला ॥
मकर उरग झष गन अकुलाने । जरत जंतु जलनिधि जब जाने ॥
कनक थार भरि मनि गन नाना । बिप्र रूप आयउ तजि माना ॥

जयन्ती मंगला काली, भद्रकाली कपालिनी ।
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री, स्वाहा स्वधा नमोऽस्तुते ।।

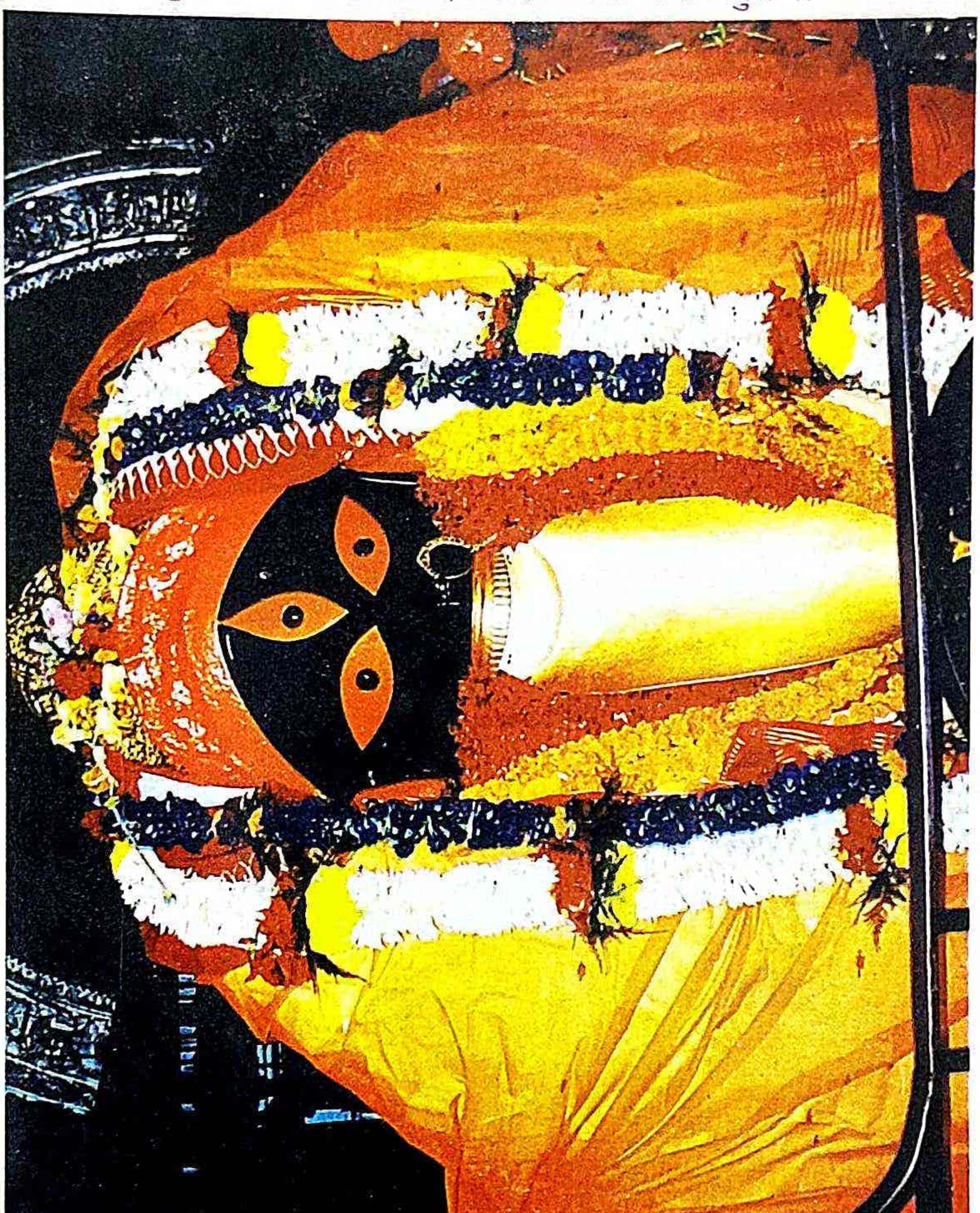

श्री कालीजी कालीघाट - कोलकाता

"शिव स्तुति" बाबा भूतनाथ धाम, कोलकाता

या देवी सर्वभूतेषु, मातृ रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥

श्री दुर्गाजी

"शिव स्तुति" बाबा भूतनाथ धाम, कोलकाता

दो॰ - काटेहिं पइ कदरी फरइ, कोटि जतन कोउ सींच ।
बिनय न मान खगेस सुनु, डाटेहिं पइ नव नीच ॥ ५८॥

सभय सिंधु गहि पद प्रभु केरे । छमहु नाथ सब अवगुन मेरे ॥
गगन समीर अनल जल धरनी । इन्ह कइ नाथ सहज जड़ करनी ॥
तव प्रेरित मायाँ उपजाए । सृष्टि हेतु सब ग्रंथनि गाए ॥
प्रभु आयसु जेहि कहँ जस अहई । सो तेहि भाँति रहें सुख लहई ॥
प्रभु भल कीन्ह मोहि सिख दीन्ही । मरजादा पुनि तुम्हरी कीन्ही ॥
ढोल गवाँर सुद्र पसु नारी । सकल ताड़ना के अधिकारी ॥
प्रभु प्रताप मैं जाब सुखाई । उतरिहि कटकु न मोरि बड़ाई ॥
प्रभु अग्या अपेल श्रुति गाई । करौं सो बेगि जो तुम्हहि सोहाई ॥

दो॰ - सुनत बिनीत बचन अति, कह कृपाल मुसुकाइ ।
जेहि बिधि उतरै कपि कटकु, तात सो कहहु उपाइ ॥ ५९॥

नाथ नील नल कपि द्वौ भाई । लरिकाईं रिषि आसिष पाई ॥
तिन्ह कें परस किएँ गिरि भारे । तरिहहिं जलधिं प्रताप तुम्हारे ॥
मैं पुनि उर धरि प्रभु प्रभुताई । करिहउँ बल अनुमान सहाई ॥
एहि बिधि नाथ पयोधि बँधाइअ । जेहिं यह सुजसु लोक तिहुँ गाइअ ॥
एहिं सर मम उत्तर तट बासी । हतहु नाथ खल नर अघ रासी ॥
सुनि कृपाल सागर मन पीरा । तुरतहिं हरी राम रनधीरा ॥
देखि राम बल पौरुष भारी । हरषि पयोनिधि भयउ सुखारी ॥
सकल चरित कहि प्रभुहि सुनावा । चरन बंदि पाथोधि सिधावा ॥

छं॰ - निज भवन गवनेउ सिंधु, श्रीरघुपतिहि यह मत भायऊ ।
यह चरित कलि मलहर, जथामति दास तुलसी गायऊ ॥
सुख भवन संसय समन दवन, बिषाद रघुपति गुन गना ।
तजि सकल आस भरोस गांवहि, सुनहिं संतत सठ मना ॥ १॥

दो॰- सकल सुमंगल दायक, रघुनायक गुन गान ।
सादर सुनहिं ते तरहिं भव, सिन्धु बिना जलज़ान ॥ ६०॥

इति श्रीमद्रामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने

पञ्चम : सोपान :समाप्त : ।

(सुन्दर काण्ड समाप्त)

॥ आरती श्रीरामयणजी की ॥

आरती श्री रामायणजीकी, कीरति कलित ललित सिय-पी की ।
गावत ब्रह्मादिक मुनि नारद् बालमीक विज्ञान - बिसारद ॥
सुक सनकादि सेष अरू सारद, बरनि पावसुत कीरति नीकी ।
संतत गाव संभु भवानी, अरू घटसंभव मुनि विज्ञानी ॥
व्यास आदि कबिबर्ज बखानी, काकभुसुंडि गरूड़ के ही की।
चारिउ वेद पुरान अष्टदश, छहौ शास्त्र सब ग्रंथनि को रस ॥
तन मन धन संतन को सर्वस, सार अंस सम्मत सबही की ।
कलि-मल-हरनि विषय-रस फीकी, सुभग सिंगार मुक्ति जुबतीकी ॥
हरनि रोग भव मूरि अमी की, तात मात सब बिधि "तुलसी" की ।
आरत्री श्री रामायण जी की ....॥

॥ श्री राम वन्दना ॥

आपदामपहर्तारं दातारं सर्वसम्पदाम्।
लोकाभिरामं श्रीरामं भूयो भूयो नमाम्यहम् ॥
रामाय रामभद्राय रामचन्द्राय मानसे।
रघुनाथ नाथाय सीताया: पतये नम: ॥
नीलाम्बुजश्यामलकोमलाङ्गं
सीतासमारोपितवामभागम् ॥
पाणौ महासायकचारूचापं
नमामि रामं रघुवंशनाथम् ॥

॥ श्री राम वन्दना ॥

छन्द :- भये प्रगट कृपाला दीन दयाला कौशल्या हितकारी ।
हरषित महतारी मुनि मन हारी अद्भुत रूप निहारी ॥
लोचन अभिरामा तनु घनश्यामा निज आयुध भुजचारी ।
भूषण वनमाला नयन विशाला शोभा सिन्धु खरारी ॥
कह दुहुँ कर जोरी अस्तुति तोरी केहि विधि करौं अनंता ।
माया गुणज्ञाना तीत अमाना वेद-पुराण भनन्ता ॥
करूणा सुख सागर सबगुण आगर जेहिगावहि श्रुतिसंता ।
सो मम हितलागी जन अनुरागी प्रगट भयउ श्रीकन्ता ॥
ब्रह्माण्ड निकाया निर्मित माया रोम रोम प्रति वेद कहै ।
सो मम उर वासी यह उपहासी सुनत धीर मति थिर न रहै ॥
उपजा जब ज्ञाना प्रभु मुसुकाना चरित बहुत विधि कीन्हचहै ।
कहि कथा सुनाई मातु बुझाइ जेहि प्रकार सुत प्रेम लहै ॥
माता पुनि वोली सो मति डोली तजहु तात यह रूपा ॥
कीजै शिशुलीला अति प्रियशीला यह सुख परम अनुपा ॥
सुनि बचन सुजाना रोदन ठाना होई बालक सुरभूपा ।
यह चरित जो गावहि हरिपद पावहि ते न परहि भव कूपा ॥
विप्र धेनु सुर सन्त हित, लीन मनुन अवतार ।
नित इच्छा निर्मित कर, श्री माया गुण गोपाल ॥

॥ श्रीराम -स्तुति ॥

श्रीरामचन्द्र कृपालु भजु मन, हरण भवभय दारूणम् ।
नवकंज-लोचन कंज-मुख कर-कंज पद कंजारूणम् ॥
कन्दर्प अगणित अमित छवि नवनील-नीरज सुन्दरम् ।
पट पीत मानहुँ तड़ित रूचि शुचि नौमि जनक सुतावरम् ॥
भजु दीनबन्धु दिनेश दानव-दैत्यवंश-निकन्दनम्।
रघुनन्द आनन्दकन्द कोशलचन्द, दशरथ नन्दनम् ॥
सिर मुकुट कुण्डल तिलक चारू उदारू अंग विभूषणम् ।
आजानु भुज शर-चाप-धर संग्राम जित खरदूषणम् ॥
इति वदति तुलसीदास शंकर-शेष-मुनि-मन-रंजनम् ।
मम हृदय-कंज निवास करू कामादि खल-दल गंजनम् ॥
मनु जाहिं राचेउ मिलहि सो वर सहज सुन्दर सावँरों ।
करूणा निधान सुजान शील सनेहु जानत रावरो ॥
एहि भाँति गौरी आसीस सुनि सिय सहित हिय हर्षित अली ।
तुलसी भवानी पूजि पुनि पुनि मुदित मन मन्दिर चली ॥

सोरठा-जानि गौरी अनुकूल सिय हिय हर्ष न जाई कहि ।
मंजुल मंगल मूल बाम अंग फरकन लगे ॥

॥ सियाराम रामचन्द्र की जय ॥

दोहा : मो सम दीन न दीन हित तुम्ह समान रघुवीर।
अस विचारि रघुवंस मनि हरहु विषम भव भीर॥

।। श्री राम कृष्णा लीला ।।

हे रामा, पुरूषोत्तमा नर हरे, नारायणा केशवा,
गोविन्दा गरुड़ध्वजा, गुणनिधे, दामोदरा माधवा।
हे, कृष्णा कमलापते, यदुपते, सीतापते, श्रीपते,
बैकुण्ठाधिपते चराचरपते, लक्ष्मीपते, पाहिमाम् ॥ १॥
आदौ राम तपोवनादि गमनम्, हत्वा मृगं कांचनम्,
वैदेही हरणं जटायु मरणं, सुग्रीव सम्भाषणम्।
वाली निग्रहणं समुद्र तरणं, लंकापुरी दाहनम्,
पश्चाद्रावण कुम्भकरण हननं ऐतद्धि रामायणम् ॥ २॥
आदौ देवकी देव गर्भ जननं, गोपी गृहे वर्द्धनम्
माया पूतन जीव ताप हरणं, गोवर्द्धनोधारणम् ।
कंसाच्छेदन कौरवादि हननं, कुन्ती सुता पालनम्,
एतद् श्रीमद्भागवत पुराण कथितं, श्रीकृष्ण लीलामृतम् ॥ ३॥
कस्तूरी तिलकं ललाटपटले, वक्षः स्थले कौस्तुभम्,
नासाग्रे वरमोक्तिकं कर तले, वेणु करे कंकणम् ।
सर्वाङ्गे हरिचन्दनं सुललितं, कण्ठे च मुक्तावली,
गोपस्त्री परिवेष्टितो विजयते, गोपाल चूड़ामणी: ॥ ४॥
फूल्लेन्दी वर कान्तिमिन्दु वदनं वर्हावतंसप्रियम्,
श्री वत्साङ्कमुदार कौस्तुमधरं पीताम्बरं सुन्दरम् ।
गोपीनां नयनोत्पलार्चित तनु, गो गोप संघावृतम्,
गोविन्दं कलवेणु वादनपरं, दिव्याङ्ग भूषं भजे ॥ ५॥

॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

करता था तो क्यों किया, अब करि क्यों पछताय ।
बोया पेड़ बबूल का, आम कहां से खाय ॥

।। आरती गणेशजी की ।।

गजानन भूतगणादि सेवितम्, कपित्थ जम्बूफल चारुभक्षणम् ।
उमासुतं शोक विनाशकारकम्, नमामि विघ्नेश्वर पादपंङ्कजम् ॥

जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा ।
माता थाँकी पार्वती पिता महादेवा ॥ जय० ॥

धूप चढ़े बील चढ़े और चढ़े मेवा ।
लड्डुवन को भोग लगे सन्त करे सेवा ॥ जय० ॥

एक दन्त दयावन्त चार भुजा धारी ।
मस्तक सिन्दूर सोहे मूसै की असवारी ॥ जय० ॥

अंधन को आंख देत कोढिन को काया ।
बांझिन को पुत्र देत निर्धन को माया ॥ जय० ॥

दीनन की लाज राखो, शंभू-सुत हमारी ।
कामना को पुरी करो, जाऊँ बलिहारी ॥ जय० ॥

जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा ।
माता थारी पार्वती पिता महादेवा ॥ जय० ॥

॥ गणेश स्तुतिः ॥

वक्रतुण्ड महाकाय सूर्य कोटि समप्रभ ।
निर्विघ्नं कुरूमेदेव सर्व कार्येषु सर्वदा ।

॥ आरती गणेशजी की ॥

गणपति की सेवा मंगल मेवा, सेवा से सब विघ्न टरें
तीन लोक तैंतीस देवता, द्वार खड़े सब अर्ज करें।
ऋद्धि सिद्धि दक्षिण बाम विराजे, अरू आनन्द सी चंवर करैं।
धूप दीप और लिये आरती, भक्त खड़े जयकार करैं।
गुड़ के मोदक भोग लगत है, मूषक वाहन चढ़ा करैं।
सौम्य रूप सेवा गणपति की, विध्न भाजज्या दूर परैं।
भादौ मास और शुक्ल चतुर्थी दिन दोपारा पूर परैं।
लियो जन्म गणपति प्रभुजी, दुर्गामन आनन्द भरैं ॥
अद्भुत बाजा बजा इन्द्र का देव बधू जहँ गान करैं।
श्री शंकर के आनन्द उपज्यो, नाम सुने सब विघ्न टरैं ॥
आनि विधाता बैठे आसन, इन्द्र अप्सरा नृत्य करैं ।
देख वेद ब्रह्माजी जाको, विध्न विनाशक नाम धरैं ।
एकदन्त गजबदन विनायक त्रिनयन रूप अनूप धरैं।
पग थंभासा उदर पुष्ट है देख चन्द्रमा हास्य करे ॥
दे श्राप श्री चन्द्रदेव को, कलाहीन तत्काल करै ।
चौदह लोक में फिरे गणपति तीन भुवन में राज्य करैं।
उठ प्रभात जप करे ध्यान कोई, ताके कारज सर्व सरैं।
पूजा काले गावे आरती, ताके सिर यश छत्र फिरे ॥
गणपति की पूजा पहले करनी, काम सभी निर्विध्न सरैं ।
भक्त सभी गणपति प्रभुजी की, हाथ जोड़कर स्तुति करैं ॥

।। आरती शिवजी की ।।

कर्पूरगौरं करूणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारम् ।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानि सहितं नमामि ॥

जय शिव ओंकारा, शिव पार्वती प्यारा ।
हो शिव ऊपर जल धारा ॥
ब्रह्मा, विष्णु, सदाशिव, अर्द्धङ्गी धारा ॥ ॐ हर हर हर महादेव ॥
एकानन चतुरानन पञ्चानन राजै।
हंसासन गरूड़ासन वृषवाहन साजै ॥ २ ॥ ॐ हर० ॥
दोय भुज चार चतुर्भुज दशभुज ते सोहै ।
तीनों रूप निरखता त्रिभुवन जन मोहै ॥ ३ ॥ ॐ हर० ॥
अक्षमाला वनमाला रूण्डमालाधारी ।
चन्दन मृगमद चंदा भोले शुभकारी ॥ ४ ॥ ॐ हर० ॥
श्वेताम्बर, पीताम्बर, बाघम्बर, अंगे ।
सनकादिक प्रभुतादिक, भूतादिक संगे ॥ ५ ॥ ॐ हर० ॥
करमध्ये च कमण्डलु चक्र त्रिशूलधर्त्ता ।
जगकर्त्ता, जगहर्त्ता, जगपालनकर्त्ता ॥ ६ ॥ ॐ हर० ॥
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका ।
प्रणवाक्षर ॐ मध्ये ये तीनों एका ॥ ७ ॥ ॐ हर० ॥
काशी में विश्वनाथ विराजत नन्दो ब्रह्मचारी ।
नित उठ भोग लगावत महिमा अतिभारी ॥ ८ ॥ ॐ हर० ॥
त्रिगुण स्वामी की आरती जो कोई नर गावै ।
भणत शिवानन्द स्वामी वांछित फल पावै ॥ ९ ॥ ॐ हर० ॥
हो शिव गलरूण्डन माला, हो शिव पार्वती प्यारा,
हो शिव भूरी जटा वाला, हो शिव ऊपर जल धारा,
हो शिव औढ़े मृग छाला, जटा में गंग विराजत,
मस्तक पर चन्द्र विराजत, शिव पीवत भंग प्याला
रहत मतवाला, शिव बैल चढ़नवाला ॥
ब्रह्मा, विष्णु, सदाशिव, अर्द्धङ्गी धारा ॥ ॐ हर० ॥

॥ आरती शिवजी की ॥

शीश गंग अर्द्धगं पार्वती, सदा विराजत कैलाशी ।
नन्दी भृंगी नृत्य करत हैं, गुण भक्तन शिव के दासी ॥
शीतल मन्द सुगन्ध पवन बहे, जहाँ बैठे शिव अविनाशी ।
करत गान गन्धर्व ससुर, राग रागिनी अति गासी ॥
यक्ष रक्ष भैरव जहाँ डोलत, बोलत, हैं बन के वासी ।
कोयल शब्द सुनावत सुन्दर, भँवर करत हैं गुंजासी ॥
कल्प वृक्ष अरू पारिजात तरू, लाग रहे हैं लक्षासी ।
काम धेनु कोटिक जहैं डोलत, करत फिरत हैं भिक्षासी ॥
सूर्यकान्त सम पर्वत सोहे, चन्द्रकान्त भव के वासी ।
छऊँ तो ऋतु-नित फलत रहत हैं, पुष्प चढ़त हैं वर्षासी ॥
देव मुनि जन की भीड़ पड़त है, निगम रहत जो नित गासी ।
ब्रह्मा विष्णु हर को ध्यान धरत है, कछु शिव हमको फरमासी ॥
ऋद्धि सिद्धि के दाता शंकर, सदा आनन्दित सुखरासी ।
जिनको सुमिरन सेवा करता, छूट जाय यम की फाँसी ।
त्रिशूलधरजी को ध्यान निरन्तर, मन लगाकर जो गासी ।
दूर करो विपदा शिव तन की, जन्म जन्म शिव पद पासी ॥
कैलाशी काशी के वासी बाबा, अविनासी मेरी सुध लीज्यो ।
सेवक जान सदा चरणन को, अपनो जान कृपा कीज्यो ॥
आप तो प्रभुजी सदा सयाने बाबा, अवगुण मेरो सब ढकियो ।
सब अपराध क्षमा कर शंकर, किंकर की विनती सुनियो ॥
अभयदान दीजो प्रभु मोको, सकल सृष्टि के हितकारी ।
भोलेनाथ बाबा भक्त निरंजन, भव भंजन भव शुभकारी ॥
काल हरो हर कष्ट हरो हर, दुख हरो दारिद्र हरो ।
नमामि शंकर भवानी भोले बाबा, हर हर शंकर आप शरणम् ॥

॥ आरती बाबा भूतनाथ की ॥

जय भूतनाथ बाबा, भोले जय भूतनाथ बाबा,
तुमको निशदिन ध्यावत, सुर नर मुनि बाबा ॥ जय भूत०
कर त्रिशूल विराजत, और डमरू बाजे,
जटा में गंग की धारा, माथे चन्दा साजे ॥ जय भूत०
नन्दी की असवारी सोहे, तन पर मृगछाला,
कानों में कुण्डल सोहे,गले में मुण्डमाला ॥ जय भूत०
तन पर भस्मी रमावे, संग गिरिजा माता,
सर्पो के गहने पहने, तुम शक्ति दाता ॥ जय भूत०
तुम बिन ज्ञान न होवे, मुक्ति न होवे बाबा,
भक्तों के रखवाले, तुम ही हो बाबा ॥ जय भूत०
भांग धतूरा खावो, ध्यान में मतवाला,
शिखर कैलाश विराजो, तुम मुक्ति दाता ॥ जय भूत०
या आरती भूतनाथ की, जो कोई नर गाता ,
उर भक्ति अति आती, सुख सम्पत्ति पाता ॥ जय भूत०
जय भूतनाथ बाबा, भोले जय भूतनाथ बाबा,
तुमको निशिदिन ध्यावत, सुर नर मुनि बाबा ॥ जय भूत०
बोल सच्चे दरबार की जय।
बोल बाबा भूतनाथ की जय ॥

तीन का भरण पोषण करो

(१) माता–पिता का (२) बाल बच्चों का
(३) दीन–दुःखियो का

-: दोहा :-

त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या द्रविणम् त्वमेव, त्वमेव सर्व मम देव देव ॥

सेवा पूजा बन्दगी, सभी आपके हाथ ।
मैं तो कछु जानू नहीं, आप जानो भोलेनाथ ॥
शिव समान दाता नहीं विपत्ती बिदारणहार ।
लज्जा सब की राखियो, शिव बैलन असवार ॥
सिंह चढ़ी दुर्गा मिली, गरूड़ चढ़े भगवान ।
बैल चढ़े बाबा मिले तो, पूरण हो सब काम ॥
कोई कहे कैलाशपति, कोई कहे भूतनाथ ।
मैं तो कहूँ सबकी सुनो, बाबा भोलेनाथ ॥
भेज रहा हुँ प्रेम पुष्प, हे भोले तुझे रिझाने को ।
हे भूतेश्वर भूतनाथ, तुम्हें सबकी याद दिलाने को ॥
बाबा तो कैलास बसे, संग में गौरी गणेश ।
सब भक्तों की विनती, दर्शन देवो महेश ॥
काली दुर्गा विन्ध्याचल, नाम रटे सब कोय ।
मैया के दरबार से, खाली जाय न कोय ॥
ॐ नाम में सार है, नाम जपो भोलेनाथ ।
बिगड़े काज संवारता, बाबा दीनानाथ ॥
दाता के दरबार में खड़े, सभी कर जोड़ ।
देने वाला एक है, मांगत लाख करोड़ ॥

बोल सच्चे दरबार की जय ।
बोल बाबा भूतनाथ की जय ॥

॥ आरती बाबा बासुकीनाथ की ॥

बिमल विभूति बूढ़ बरद बहनवां से,
लम्बे-लम्बे लट लटकावे बाबा बासुकी ॥ १ ॥
काल-कूट कंठ शोभे नील बरनवां से,
लाले-लाले लोचन घुमावे बाबा बासुकी ॥ २ ॥
ऐसन कलेवर बनाये देहो नागेश्वर,
देखि जन महिमा लोभावे बाबा बासुकी ॥ ३ ॥
अन्धे पावे लोचन विविध दुःख मोचन से,
कोढिया सुन्दर तन पावे बाबा बासुकी ॥ ४ ॥
निपुत्र के पुत्र देत कुमति-सुमति देत,
निर्धन के करत निहाल बाबा बासुकी ॥ ५ ॥
धन्य-धन्य दारूक बन जहाँ बसे आप हर,
भेटि देत विधि अंक भाल बाबा बासुकी ॥ ६ ॥
परम आरत हूँ मैं सुख शांति सब खोई,
तेरे द्वार भिक्षा मांगन आये बाबा बासुकी ॥ ७ ॥
कहत साधकगण मेरी बेरी काहे हर,
करूणा करत नहिं आवे बाबा बासुकी ॥ ८ ॥
सबके जे सुनि-सुनि दूर कैले दुःख सब,
हमरा के बेरिया निठुर बाबा बासुकी ॥ ९ ॥
कहि कहि कहु अब कहाँ कहाँ जाऊँ नाथ,
अनाथ के नाथ कहेले बाबा बासुकी ॥ १० ॥
देवघर देवलोक देव धन्य महादेव,
उहे जो हुकुम कइला जाहू बाबा बासुकी ॥ ११ ॥
तुम बिन अब कोई दृष्टि पथ आवे नाहीं,

केहि अब अरज सुनाऊँ बाबा बासुकी ॥ १२ ॥
सुनै छलियन बासुकीनाथ छबि बड़ दानी बाबा,
अब किये एहन निठुर बाबा बासुकी ॥ १३ ॥
मातु पिता परिजन सवके छोड़लो हम,
अहिं के शरण अब धईलों बाबा बासुकी ॥ १४ ॥
शरण यहाँ के हम सतत जे धईलीं बाबा,
अब अहाँ तजि कहाँ जाऊँ बाबा बासुकी ॥ १५ ॥
दीनानाथ दीनबन्धु आशुतोष विश्वम्भर,
आरती हरण नाम अछि बाबा बासुकी ॥ १६ ॥
कृपा के कटाक्ष दये एक हेरू हर,
दुःखिया के संकट हरहु बाबा बासुकी ॥ १७ ॥
हमहूँ जे अईलौं शरण में अहां के बाबा,
हमरा के देखि के डरेला बाबा बासुकी ॥ १८ ॥
जाहि दिन से ज्ञान भईल हमरा के अब बाबा,
ताहि दिन से शरण धइली बाबा बासुकी ॥ १९ ॥
जाहि दिन से शरण अहाँ के हम धइलों बाबा,
ह्रदय के वात सब सुनैलों बाबा बासुकी ॥ २० ॥
ग्राम-देव ग्राम-लोक ग्राम धन महादेव,
सेहो न सुनैलों दुःख मोर बाबा बासुकी ॥ २१ ॥
कहत भक्तगण दुहु कर जोरी बाबा,
निपुत्र के पुत्र अब देहु बाबा बासुकी ॥ २२ ॥
कहत सेवकगण दुहु कर जोरी बाबा,
दुःखिया के दुःख हरहु बाबा बासुकी ॥ २३ ॥
कहत विनय करि देश के सेवक बाबा,
भारत के संकट हरहु बाबा बासुकी ॥ २४ ॥

॥ श्री दुर्गास्तुति ॥

जयन्ती मंगला काली, भद्रकाली कपालिनी ।
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री, स्वाहा स्वधा नमोऽस्तुते ॥

॥ आरती दुर्गाजी की ॥

जय अम्बे गौरी, मैया जय मंगल मूर्ति, मैया जय आनन्द करणी,
तुमको निशिदिन ध्यावत, हर ब्रह्मा शिवरी ॥ १ ॥ जय अम्बे॰
मांग सिन्दूर विराजे, टीको मृगमद को ।
उज्जवल से दोउ नैना, चन्द्रबदन नीको ॥ २ ॥ जय अम्बे॰
कनक समान कलेवर, रक्ताम्बर राजे ।
रक्त पुष्प गल माला, कण्ठन पर साजे ॥ ३ ॥ जय अम्बे॰
केहरि वाहन राजत, खड्ग खप्पर धारी ।
सुर-नर-मुनि-जन सेवत, तिनके दुःख हारी ॥ ४ ॥ जय अम्बे॰
कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती ।
कोटिक चन्द्र दिवाकर, राजत सम ज्योति ॥ ५ ॥ जय अम्बे॰
शुम्भ-निशुम्भ बिदारे, महिषासुर घाती ।
धूम्र विलोचन नैना, निशिदिन मदमाती ॥ ६ ॥ जय अम्बे॰
चौसठ योगिनी गावत, नृत्य करत भैरू ।
बाजत ताल मृदंगा, और बाजत डमरू ॥ ७ ॥ जय अम्बे॰
भुजा चार अति शोभित, खड्ग खप्पर धारी ।
मनवांछित फल पावत, सेवत नर नारी ॥ ८ ॥ जय अम्बे॰
कंचन थाल बिराजत, अगर कर्पूर बाती ।
श्री मालकेतु में राजत कोटि रतन ज्योति ॥ ९ ॥ जय अम्बे॰
या अम्बे जी की आरती, जो कोई नर गावे ।
कहत शिवानन्द स्वामी, सुख सम्पत्ति पावे ॥ १० ॥ जय अम्बे॰

॥ पार्वती वन्दना ॥

ॐ नमो दैव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्मताम॥

॥ पार्वती श्लोक ॥

जय जय जय गिरिराज किशोरी जय महेश मूखचन्द्र चकोरी॥
जय गजवदन षडानन माता। जगत जननि दीमिनि दुति गाता॥
नहीं तव आदि मध्य अवसाना। अमित प्रभाउ बेदु नहिं जाना॥
भव भव विभव पराभव कारिनि। विश्वदिमोहनि स्वबस बिहारनी॥

दोहा – पतिदेवता सुतीय महुँ मातु प्रथम तव रेख।
महिमा अमित न सकहिं कहि सबस शारदा सेष।

सेवत तोहि सुलभ फल चारी। बरदायनी त्रिपुरारि पियारी॥
देवि पूजि पद कमल तुम्हारे। सुर नर मुनि सव होहिं सुखारे॥
मोर मनोरथु जानहु नीकें। बसहु सदा उर पुर सबही कें॥
कीन्हेउँ प्रगट न करन तेहीं। अस काहि चरण गहे वैदेही॥
विनय प्रेम बस भई भवानी। खसी माल मूरति मुसुकानी॥
सादर सियँ प्रसाद सिर धरेऊ। बोली गौरि हरषु हियँ भरेऊ॥
सुनु सिय सत्य असीस हमारी। पूजहि मन कामना तुम्हारी॥
नारद वचन सदा सुचि साचा। सो बरू मिलिहि जाहि मनु राचा॥

॥ छन्द ॥

मनु जाहि राचेउ मिलिहि सो वरू सहज सुन्दर सांवरो।
करूना निधान सुजान सीलु सनेह जानत रावरो॥
एहि भाँति गौरी असीस सुनि सिय सहित हियँ हरषीं अली।
तुलसी भवानिहि पूजि पुनि पुनि मुदित मन मंदिर चली॥

सो०- जानि गौरि अनुकूल सियं हिय हरषु न जाई कोई।
मंजुल मंगल मूल बाम अंग फरकन लगे।

:: नियम ::

१. कुंवारी कन्या को इसे प्रत्येक दिन आठ बार पाठ करना चाहिये । व्याह होने के बाद एक बार पाठ करना चाहिए । पार्वतीजी का ध्यान करके पाठ करना चाहिये।

२. मासिक धर्म के समय चार दिन तक पाठ नहीं करना चाहिये ।

३. जिस कन्या का विवाह नहीं होता हो, उस कन्या को इस पाठ की विधि बताने से उसे सौभाग्य, सन्तान और धन की प्राप्ति होती है ।

॥ सरस्वतीस्तुतिः ॥

या कुन्देन्दु-तुषारहार-धवला या शुभ्रवस्त्रावृता,
या वीणावरदण्ड-मण्डितकरा या श्वेतपद्मासना ।
या ब्रह्माच्युतशंकर- प्रभितिभि देवैः सदा वन्दिता,
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा ॥

॥ सरस्वती वन्दना ॥

माँ शारदे कहाँ तू, वीणा बजा रही है,
किस मंजूगान से तू, मन को लुभा रही है।
माँ शारदे कहाँ तू, वीणा बजा रही है॥
किस भाव में भवानी, तू मग्न हो रही है।।
विनती नहीं हमारी, माँ क्यों ना सुन रही है ।
हम दीनवान कबसे, विनती सुना रही हैं,
माँ शारदे कहाँ तू, वीणा बजा रही है॥
ममतामयी तू अपनी, ले गोद में सिखाओ,
अपनी दया के सागर में, तू मुझे नहाओ ।
बालक सभी जगत के, शिशु आए हैं तुम्हारे ॥
माँ शारदे कहाँ तू, वीणा बजा रही है।
किस मंजूगान से तू, मन को लुभा रही है॥

॥ लक्ष्मीस्तुतिः ॥

नमस्तेऽस्तु महामाये, श्रीपीठे सुरपूजिते ।
शंख - चक्र - गदा - हस्ते, महालक्ष्मी नमोऽस्तुते ॥

॥ आरती लक्ष्मीजी की ॥

महालक्ष्मी नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं सुरेश्वरी।
हरि प्रिये नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं दयानिधे ॥
ॐ जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता ।
तुमको निशिदिन सेवत हर बिष्णु धाता ॥ टेक॥
ब्रह्माणी रूद्राणी कमला, तुहि हो जग माता ।
सूर्य चन्द्रमा ध्यावत नारद ऋषि गाता ॥ जय०
दुर्गा रूप निरंजनि, सुख सम्पत्ति दाता ।
जो कोई तुमको ध्यावत ऋद्धि सिद्धि धन पाता ॥ जय०
तू ही है पाताल बसन्ती, तू ही है शुभ दाता ।
कर्म प्रभाव-प्रकाशिनि जगनिधि से त्राता ॥ जय०
जिस घर थारो बासो, जाहि में गुण आता ।
कर ना सकै सोई कर लै मन नहीं धड़काता ॥ जय०
तुम बिन यज्ञ न होवे, वस्त्र न होय राता।
खान पान को वैभव तुम बिन कुण दाता ॥ जय०
शुभ गुण सुन्दरयुक्ता, क्षीरनिधि जाता ।
रत्न चतुर्दश तोकूं, कोई भी नहीं पाता ॥ जय०
या आरती लक्ष्मीजी की जो कोई नर गाता ।
उर आनन्द अति उमंगे पाप उतर जाता ॥ जय०
स्थिर चर जगत बचावै कर्म प्रेर ल्याता ।
राम प्रताप मैया जी की शुभ दृष्टि चाहता ॥ जय०

॥ भगवती स्तुति ॥

जय भगवती देवी नमो वरदे, जय पापविनाशिनी बहुफलदे ।
जय शुम्भनिशुम्भकपालधरे, प्रणमामि तु देवि नरार्तिहरे ॥ १॥
जय चन्द्रदिवाकरनेत्रधरे, जय पावक भूषिते वक्त्र वरे ।
जय भैरवदेहनिलीनपरे, जये अन्धकदैत्यविशोषकरे ॥ २॥
जय महिष विमर्दिनि शूलकरे, जय लोगसमस्तकपापहरे ।
जय देवि पितामहविष्णुनते, जय भाष्करशक्रशिरोऽवनते ॥ ३॥
जय षणमुखसायुधईशनुते, जय सागरगामिनी शम्भुनुते ।
जय दुःखदरिद्रविनाशकरे, जय पुत्रकलत्रविवृद्धि करे ॥ ४॥
जय देवि समस्तशरीरधरे, जय नाकविदर्शिनी दुःखहरे ।
जयव्याधिविनाशिनि मोक्ष करे, जय वांछितदायिनि सिद्धिवरे॥ ५॥
एतद्व्यासकृतं स्तोत्रं यः पठेन्नियतः शुचिः ।
गृहे वा शुद्धभावेन, प्रीता भगवती सदा ॥ ६॥

।। इति व्यासकृतं श्री भगवती स्तोत्रं सम्पूर्ण॥

॥ आरती माँ विन्धाचल-वैष्णो देवी-भगवती की ॥

सुन मेरी देवी पर्वत वासिनी, कोई तेरा पार न पाया ॥ टेर॥
पान सुपारी ध्वजा नारियल, ले तेरी भेंट चढ़ाया ।
सुआ चोली तेरे अंग विराजे केसर तिलक लगाया ॥
ब्रह्मा वेद पढ़े तेरे द्वारे शंकर ध्यान लगाया ।
नंगे-नंगे पाँव तेरे अकबर आया सोने का छत्र चढ़ाया ॥
ऊँचे-उँचे पर्वत बन्यो देवालय नीचे शहर बसाया ।
सतयुग, द्वापर त्रेता मध्ये कलयुग राज सवाया ॥
धूप-दीप - नैवेद्य-आरती मोहन भोग लगाया ।
ध्यानुंभगत मैया तेरा गुण गावे मनवांछित फल पाया ॥

॥ आरती कालीजी की ॥

'मंगल' की सेवा, सुन मेरी देवा, हाथ जोड़ तेरे द्वार खड़े।
पान सुपारी, ध्वजा नारियल, ले ज्वाला तेरी भेंट धरें॥
सुन जगदम्बे कर न विलम्बे, सन्तन के भण्डार भरे।
सन्तन-प्रतिपाली सदा खुशाली, मैया जै काली कल्याण करे॥ स०
बुद्धि विधाता तू जग माता, मेरा कारज सिद्ध करे।
चरण कमल का लिया आसरा, शरण तुम्हारी आन पड़े॥
जब जब भीड़ पड़ी भक्तन पर, तब तब आय सहाय करे॥ स०
बार बार तैं सब जग मोहयो, तरूणी रूप अनूप धरे।
माता होकर पुत्र खिलावे, कहीं भार्या भोग करे॥
संतन सुखदाई सदा सहाई संत खड़े जयकार करें॥ स०
ब्रह्मा बिष्णु महेश सहसफण लिये भेंट तेरे द्वार खड़े।
अटल सिंहासन बैठी मेरी माता, सिर सोने का छत्र फिरे॥ स०
वार शनिश्चर कुंकुम बरणों, जब लुँकड़ पर हुकुम करे।
खड्ग खप्पर त्रिशुल हाथ लिये, रक्त बीज को भस्म करे॥
शुम्भ निशुम्भ को क्षण में मारे, महिषासुर को पकड़ दले॥ स०
'आदित' वारी आदि भवानी, जन अपने को कष्ट हरे॥
कुपित होय कर दानव मारे, चण्ड मुण्ड सब चूर करे।
जब तुम देखी दया रूप हो, पल में संकट दूर करे॥
सौम्य स्वभाव धर्‌यो मेरी माता, जन की अर्ज कबूल करे॥ स०
सात बारकी महिमा बरनी, सब गुण कौन बखान करे।
सिंह पीठ पर चढ़ी भवानी, अटल भवन में राज्य करे॥
दर्शन पावे मंगल गावे, सिद्ध साधक तेरी भेंट धरे।
ब्रह्मा वेद पढ़े तेरे द्वारे, शिव शंकर ध्यान धरे॥ स०
इन्द्र कृष्ण तेरी करे आरती, चँवर कुबेर डुलाय रहे।
जय जननी जय मातु भवानी, अटल भवन में राज्य करे॥ स०
संतन प्रतिपाली सदा खुशाली, मैया जय काली कल्याण करे ॥

॥ श्री गंगा महात्म्य ॥

गंगे ! गंगे ! नमस्तुभ्यं मातमतिर्नमो नमः।
कृपाया देहिं मे नित्यं त्वयिनिष्ठामखण्डिताम्॥

जगत तारिणी, पतित पावनी, जय गंगेः हर हर गंगे।
जटा जूट शिव शम्भू निवासिनी, जय गंगे हर हर गंगे॥ टेर॥

देवलोक में बसती गंगा, देवों के दुःख दूर करे।
सच्चे मन से जो कोई पूजे, उसकी नैया पार करे।
देवन में महादेव बड़े हैं, तीरथ में है श्री गंगे॥ १॥

हिम राजा की सुन्दर कन्या, पारवती गंगा माई।
कैलासीवासी भोले से, दोनों बहनें थी व्याही।
पारवती चरनन की दासी, मस्तक पर रहती गंगे॥ २॥

भागीरथ की देख तपस्या, धरणी पर गंगा आई।
गंगा जी के निर्मल जल से, सागर वंश मुक्ति पाई।
अन्न धन्न का भण्डार है भरणी, जय भागीरथी जय गंगे॥ ३॥

गोमुख से इटलाती गंगा, हरिद्वार आवास किया।
गंगा सागर संगम पावन कपिल मुनिश्वर संग गंगे॥ ४॥

गंगाजल से मुक्ति मिलती, निर्मल होती है काया।
गंगा तट पर प्रण तजे जो, कोटि यज्ञ फल वो पाया।
"भक्त दयालु" हर दम वोलो-जय गंगे हर हर गंगे॥ ५॥

॥ आरती शीतला माता की ॥

जय शीतला माता जय शीतला माता ।
आदि ज्योति महारानी सब फल की दाता ॥ जय०॥
रत्न सिंहासन शोभित, श्वेत छत्र भाता ।
रिद्धि सिद्धि मिल चवँर डोलावे, जगमग छवि छाता ॥ जय०॥
विष्णु सेवत ठाढ़े सेवे शिव धाता ।
वेद पुराण वरणत पारं नहीं पाता ॥ जय०॥
इन्द्र मृदंग बजावत चन्द्र वीणा हांथा ।
सूरज ताल बजावै नारद मुनि गाता ॥ जय०॥
घण्टा शंख शहनाई बाजे मन भाता ।
करे भक्त जन आरती लखि लखि हर्षाता ॥ जय०॥
ब्रह्म रूप वरदानी, तूही तीन काल ज्ञाता ।
भक्तन को सुख देती मातु पिता भ्राता ॥ जय०॥
जो जन ध्यान लगावे प्रेम शक्ति पाता ।
सकल मनोरथ पावै भवनिधि तर जाता ॥ जय०॥
रोगों से पीड़ित कोई शरणा तेरी आता ।
कोढ़ी पावे निर्मल काया अन्धा नेत्र पाता ॥ जय०॥
बाँझ पुत्र को पावे दारिद्र कट जाता ।
तोको भजै जो नाहीं सिर धुनि पछताता ॥ जय०॥
शीतल करती जन की तूही है त्राता ।
उत्पत्ति बाला बिनाशन तू सब की माता ॥ जय०॥
दास नारायण कर जोरी माता ।
भक्ति अपनी दीजै और न कछु माता ॥ जय०॥

॥ आरती संतोषी माता की ॥

जय सन्तोषी माता मैया जय सन्तोषी माता ।
अपने सेवक जन को, सुख सम्पत्ति दाता ॥ जय॥
सुन्दर चीर सुनहरी, मां धारण कीन्हों ।
हीरा पन्ना दमकें, तन श्रृंगार लीन्हों ॥ जय॥
गेरू लाल छटा छवि बदन कमल सोहे ।
मन्द हंसत करूणामयी, त्रिभुवन मन मोहे ॥ जय॥
स्वर्ग सिंहासन बैठी चंवर ढुरे प्यारे ।
धूप दीप मधु मेवा, भाग धरे न्यारे ॥ जय॥
गुड़ अरू चना परमप्रिय तातें मां संतोष कियो ।
संतोषी कहलाई, भक्तन वैभव दियो ॥ जय॥
शुक्रवार प्रिय मानत, आज दिवस सोही ।
भक्त मण्डली छाई, कथा सुनत मोही ॥ जय॥
मंदिर जगमग ज्योति मंगल ध्वनि छाई ।
विनय करें हम बालक, चरनन सिर नाई ॥ जय॥
भक्ति भावमय पूजा, अंगीकृत कीजै ।
जो मन बसै हमारे, इच्छा फल दीजै ॥ जय॥
दु:खी दरिदी रोगी, संकट मुक्त किए ।
बहु धन-धान्य भरे घर, सुख सौभाग्य दिए ॥ जय॥
ध्यान धर्‍यो जिस नर ने, मन वांछित फल पायो ।
पूजा कथा श्रवण कर, घर आनंद आयो ॥ जय॥
शरण गहे की लज्जा, रखियो जगदम्बे ।
संकट तू ही निवारे, दयामयी माँ अम्बे ॥ जय॥
संतोषी मां की आरती, जो कोई नर गावे ।
ऋद्धि-सिद्धि सुख सम्पत्ति जी भर के पावे ॥ जय॥

॥ बोलो संतोषी माता की जय ॥

।। आरती राणी सती की ।।

ॐ जय श्री राणी सतीजी मैया, जय जगदम्ब सतीजी ।
अपने भक्त जनन की , दूर करो विपती ॥ ॐ जय ...

अवनि अनन्तर ज्योति अखण्डित, मण्डित चहुँ कुकुँभा।
दुर्जन दलन खड़्ग सी, विद्युत सम प्रतिभा ॥ ॐ जय ...

मरकत मणि मन्दिर अति मंजुल, शोभा लखि न परे ।
ललित ध्वजा चहुँ ओरे, कंचन कलश धरे ॥ ॐ जय ...

घण्टा घनन घड़ावल बाजत, शंख मृदंग धुरे ।
किन्नर गायन करते, वेद ध्वनि उचरे ॥ ॐ जय ...

सप्त मातृका करें आरती, सुरगण ध्यान धरें ।
विविध प्रकार के व्यंजन, व श्रीफल भेंट करें ॥ ॐ जय ...

संकट विकट विदारिणी, नाशनि हो कुमति ।
सेवक जन हृदि पटले, मृदुल करन सुमति ॥ ॐ जय ...

अमल कमल दल लोचनि, मोचनि त्रय तापा ।
दास आयो शरण आपकी, लाज राखो माता ॥ ॐ जय ...

या मैयाजी की आरती, जो कोई नर गावे।
सदन सिद्धि नव निधि, मनवांछित फल पावे ॥ ॐ जय ...

॥ आरती जीण माता की ॥

ॐ जय श्री जीण मैया, बोलो जय श्री जीण मैया।
सच्चे मन से सुमरे, सब दुःख दूर भया॥ टेर॥

ऊँचे पर्वत मन्दिर, शोभा अति भारी।
दीखत रूप मनोहर, असुरन भयकारी॥ १॥

महा शृगांर सुहावन, ऊपर छत्र फिरे।
सिंह की सवारी सोहे, कर में खड़ग धरे॥ २॥

बाजत नौबत द्वारे, अरू मृदंग डमरू।
चौसठ जोगन नाचत, नृत्य करे भैरूँ॥ ३॥

बड़े - बड़े बलशाली, तेरा ध्यान धरें।
ऋषि मुनि नर देवा, चरणों आन परें॥ ४॥

जीण माता की आरती, जो कोई जन गावे।
कहत रूड़मल सेवक, सुख सम्पति पावे॥ ५॥

:: मनन करने योग्य ::

१ *सच बोलना।*
२ *किसी का दिल न दुखाना ।*
३ *मन और इन्द्रियों को वश में रखना।*
४ *आहार और व्यवहार ठीक रखना ।*
५ *कु:संगति से बचकर रहना।*
६ *काल को हर समय देखना ।*
७ *ईश्वर पर भरोसा रखना।*
८ *नित नेम करना।*
९ *मैं क्या हूँ ? संसार क्या है ?*
१० *बन्धन और मुक्ति का विचार करना।*
११ *अपने कर्मों का हिसाब प्रतिदिन देखते रहना।*

॥ आरती बदरीनाथजी की ॥

पवन मंद सुगन्ध सीतल, हेम मन्दिर शोभितं ।
निकट गंगा बहत निर्मल, श्रीबद्रीनाथ विश्वम्भरम् ॥ १॥

शेष सुमिरन करत निशिदिन ध्यान धरत महेश्वरं ।
श्री बेद ब्रह्मा करत स्तुति श्रीबद्रीनाथ विश्वम्भरम् ॥ २॥

इन्द्र चन्द्र कुबेर दिनकर, धूप दीप निवेदितं ।
सिद्ध मुनिजन करत जय जय, श्रीबद्रीनाथ विश्वम्भरम् ॥ ३॥

शक्ति गौरि गणेश शारद, नारद मुनि उच्चारणं ।
योग ध्यान अपार लीला, श्रीबद्रीनाथ विश्वम्भरम् ॥ ४॥

यक्ष किन्नर करत कौतुक, गान गन्धर्व प्रकाशितं ।
श्री भूमि लक्ष्मी चँवर डोलै, श्रीबद्रीनाथ विश्वम्भरम् ॥ ५॥

कैलास में एक देव निरंजन, शैल-शिखर महेश्वरं ।
राजा युधिष्ठिर करत स्तुति, श्रीबद्रीनाथ विश्वम्भरम् ॥ ६॥

श्रीबदरिनाथ (जी) की परम स्तुति यह पढ़त पाप विनाशनं।
कोटि-तीर्थ सुपुण्य सुन्दर सहज अति फलदाकम् ॥ ७॥

॥ विष्णुस्तुतिः ॥

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेश,
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्ण शुभागं।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगभ्यं,
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम् ॥
यं ब्रह्मा वरूणेन्द्ररूद्रमरूतः स्तुन्वन्ति दिव्यैः स्तवै
वेंदैः साङ्गपदक्रमोपनिषदैगायिन्ति यं सामगाः ।
ध्यानावस्थिततद्गतेन मनसा पश्यन्ति यं योगिनो,
यस्यान्तं विदुः सुरासुरगणा देवाय तस्मै नमः ॥

॥ आरती जगदीशजी की ॥

ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे ।
भक्त जनों के संकट, क्षण में दूर करे ।। ॐ जय ॥
जो ध्यावे फल पावे, दुःख बिन से मन का ।
सुख सम्पत्ति घर आवे, कष्ट मिटे तन का ।। ॐ जय ॥
मात पिता तुम मेरे, शरण गहूँ मैं किसकी ।
तुम बिन और न दूजा, आश करूँ मैं किसकी॥ ॐ जय॥
तुम पुरण परमात्मा, तुम अर्न्तयामी ।
पार ब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी ।। ॐ जय ॥
तुम करूणा के सागर, तुम पालन कर्त्ता।
मैं मुरख खलकामी, कृपा करो भर्त्ता ।। ॐ जय ॥
तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति ।
किस विधि मिलूँ दयामय, मैं तुमको कुमती।। ॐ जय ॥
दीनबन्धु दुःख हरता, तुम ठाकुर मेरे ।
अपने हाथ उठाओ, द्वार खड़ा तेरे ।। ॐ जय ॥
विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा ।
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओं, संतन की सेवा ।। ॐ जय ॥
तन, मन, धन, सब कुछ है तेरा,
तेरा तुझको अर्पण, क्या लागे मेरा ।। ॐ जय ॥

।। आरती सत्यनारायण भगवान की ।।

जय लक्ष्मी रमणा, स्वामी जय लक्ष्मी रमणा ।
सत्यनारायण स्वामी, जन पातक हरणा ॥ जय० ॥

रत्न जड़ित सिंहासन, अद्भुत छवि राजे ।
नारद करत निरंजन, घण्टा ध्वनि बाजे ॥ जय० ॥

प्रकट भये कलि कारण, द्विज को दरश दियो ।
बूढ़ो ब्राह्मण बनकर, कंचन महल कियो ॥ जय० ॥

दुर्बल भील कठारो, जिनपर कृपा करी ।
चन्द्रचूड़ एक राजा, जिनकी विपत्ति हरी ॥ जय० ॥

वैश्य मनोरथ पायो, श्रद्धा तज दीन्ही ।
सो फल भोग्यो प्रभुजी, फिर स्तुति कीन्ही ॥ जय० ॥

भाव भक्ति के कारण, छिण-छिण रूप धर्‌यो ।
श्रद्धा धारण कीनी, तिनको काज सर्‌यो ॥ जय० ॥

ग्वालबाल संग राजा, वन में भक्ति करी ।
मनवांछित फल दीन्हों, दीन दयाल हरी ॥ जय० ॥

चढ़त प्रसाद सवायो, कदली फल मेवा ।
धूप दीप तुलसी से, राजी सत्यदेवा ॥ जय० ॥

सत्यनारायण जी की आरती, जो कोई नर गावै ।
भणत शिवानन्द स्वामी, मनवांछित फल पावै ॥ जय० ॥

* * *

॥ आरती जानकीनाथ की ॥

कर्पूरगौरं करूणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारं ।
सदावसंतं हृदयार वन्दे भवं भवानीसहितं नमामि ॥

जय जानकी नाथा ओ प्रभु जय श्री रघुनाथा,
दोऊँ कर जोड़े विनहुँ प्रभु मेरी सुन बाता ।। टेर॥
तुम रघुनाथ हमारे प्राण पिता माता,
तुम ही सज्जन संगाती, भक्ति मुक्ति दाता ।
चौरासी प्रभु फन्द छुड़ावो मेटो यमत्रासा
निस दिन प्रभु मोहे राखो अपने संग साथा ॥
सीताराम लक्ष्मण भरत शत्रुघ्न संग चारो भ्राता,
जगमग ज्योति विराजे, शोभा अति भारी ॥
हनुमत नाद बजावत नेवर ठुमकाता,
सुवरण थाल आरती, करत कोशल्या माता ॥
क्रीट मुकुट अरू धनुष विराजत शोभा अति भारी,
''मनीराम'' दर्शन कर पल पल बलिहारी ।
शिव सनकादिक अरू ब्रहमादिक नारद ऋषिदेवा,
धन्य धन्य भाग्य हमारे, संतन की सेवा ।
तुलसीदास प्रभु तुम रखवारे भोलानाथ उपकारी,
श्री हरि हमें मिलाओ सीतारामजी धनुषधारी ॥
जानकीनाथ की आरती जो कोई नर गावे,
भणत शिवानन्द स्वामी सुख सम्पत्ति पावे ॥

तीन में देर करों

(१) मुकदमेबाजी में (२) लड़ाई झगड़े में
(३) किसी के दोष के निर्णय करने में

॥ भैरव स्तुति ॥

ॐ करकलितकपालः कुण्डली दण्डपाणि-
स्तरूणतिमिरेनील व्यालयज्ञोपवीती।
ऋतुसमयपर्या विघ्नविच्छेदहेतु-
जयति बटुकनाथः सिद्धिदः साधकानाम्॥

॥ आरती भैरवजी की ॥

जै भैरव लाला श्री भैरव लाला।
काशीनाथ कृपानिधि भक्तन प्रतिपाला॥ जै भैरव लाला ॥

हाथ त्रिशूलं खड्ग बलमूलं कर खप्पर चारा,
पायं घूंघरा बाजे कटि कच्छनी प्यारा। जै भैरव लाला ॥

पाप निकालं रूप विशालं कंठे रूण्डमाला,
यज्ञोपवित विराजत शोभित बारूणी अरूव्याला ॥ जै भैरव लाला॥

कानन कुंडल शोभित वारूणी रसमाता,
भृकुटि बंक विशाल चक्षू रसमाता॥ जै भैरव लाला॥

भक्तन भयहारी विघ्न निवारी महिमा अतिभारी,
साधन को सुखदायक निश्चय त्रिपुरारी॥ जै भैरव लाला॥

यहि वरदाना कृपानिधाना पूरो मनकामा,
सुखिया चितकर जोड़े वारूणी रसवासा ॥ जै भैरव लाला ॥

जै भैरव लाला श्री भैरव लाला, भैरूं है गोरा काला,
भैरूं श्वान चढ़न वाला, भैरूं पिवे मदिरा रा प्याला,
भैरूं रेवे मतवाला, काशी नाथ कृपा निधि भक्तन प्रतिपाला,
जै भैरव लाला श्री भैरव लाला॥

:: शनिदेव की स्तुति ::

शनिदेव सूरज के अवतारी, थाने सुमिरै दुनिया सारी॥
करड़ो दान शनिदेव मांगे, लोहा कंचन भारी।
भर्‌या तेल को पलियो मांगे, या छः भेंट हमारी॥ शनि..

राजा पर कोप, राम पर कोप्या, सीता पर अति भारी।
राजा हरिश्चन्द्र पर ऐसो कोप्यो, भरत नीच घर झारी॥ शनि..

हाथी भी चढ़ता, घोड़ा भी चढ़ता, भैंसा की असवारी।
कर असवारी शहर में निकल्यो, सिर नावै दुनिया सारी॥ शनि..

सुमिरत जांकी करत सहायता, बिन सुमिरै दुःख भारी।
दोउ कर जोड़े दास "सुन्द्रिका" गावे, रखियो लाज हमारी॥ शनि..

-: याद रखो :-

१. घर में लक्ष्मी को माता की तरह रखोगे तो सुख पाओगे, उसके स्वामी बनना चाहोगे तो लात मारेगी।
२. इतना ही कमाओ जिससे तुम्हारी जरूरतें पूरी हो जाय।
३. जिओ और दूसरों को भी जीने दो।
४. किसी का पाप न देखो न सुनो। अन्यथा वह पाप तुम्हें भ्रष्ट कर देगा।
५. दान से धन, सेवा से तन, भक्ति से मन पवित्र होता है।
६. ईश्वर का प्रत्येक विधान आपके परम हित के लिये हैं।
७. चार चीजों का सदा सेवन करे-सत्संग, सन्तोष, दान और दया।
८. जो करेगा वह भरेगा, जैसी करणी वैसी भरणी।
९. निज पर शासन फिर अनुशासन।
१०. यदि आप दुसरों का भला नहीं कर सकते तो पाप से बचो।
११. देखते नहीं सब मर रहे हैं, तो क्या तुम अमर रहोगे?
१२. दिल को सुधार लो दुनिया स्वयं सुधर जायेगी।
१३. कफन में जेब नही होती रूपये रखोगे कहाँ ?

॥ आरती कृष्णजी की ॥

आरती कुंजबिहारीकी। श्रीगिरधर कृष्णमुरारी की ॥
गले में बैजंतीमाला, बजावै मुरली मधुर बाला ।
श्रवन में कुण्डल झलकाता, नंदके आनंद नंदलाला ॥
गगन सम अंग कांति काली, राधिका चमक रही आली ।
लतन में ठाढ़े वनपाली ॥ आरती॥

भ्रमर सी अलक, कस्तूरी-तिलक, चंद्र-सी झलक ।
ललित छवि स्यामा प्यारी की। श्री गिरधर कृष्णमुरारी की ॥
कनकमय मोर मुकुट बिलसै, देवता दरसन कों तरसै ।
गगन से सुमन रासि बरसैं ॥ आरती॥

बजे मुरचंग, मधुर मिरढंग ग्वालनी संग ॥
अतुल रति गोपकुमारी की। श्री गिरधर कृष्णमुरारी की ॥
जहां ते प्रगट भई गंगा, कलुष कलि हारिणि श्रीगंगा ।
सुमिरण ते होत मोह-भंगा ॥ आरती॥

बसी शिव शीश, जटा के बीच, हरे अघ कीच ।
चरण छवि श्रीबनवारी की। श्री गिरधर कृष्णमुरारी की ॥
चमकती उज्जवल तट रेनू, बज रही वृन्दावन बेनू ।
चहूं दिसि गोपी ग्वाला धेनू ॥ आरती॥

हँसत मृदु मंद चांदनी चंद कटत भव-फंद ।
टेर सुनु दीन दुःखारी की। श्री गिरधर कृष्णमुरारी की ।
आरती कुजंबिहारी की । श्री गिरधर कृष्णमुरारी की ॥

।। आरती श्यामजी की ।।

ओउम् जय श्रीश्याम हरे, बाबा जै श्रीश्याम हरे ।
खाटू धाम विराजत, अनुपम रूप धरे ॥ टेर॥

रतन जड़ित सिंहासन, सिर पर चंवर ढूरे ।
तन केसरिया बागो, कुण्डल श्रवण पड़े ॥ १॥

गल पुष्पों की माला, सिर पर मुकुट धरे ।
खेवत धूप अग्नि पर, दीपक ज्योति जरे ॥ २॥

मोदक खीर चूरमा, सुवरण थाल भरे ।
सेवक भोग लगावत, सेवा नित्य करे ॥ ३॥

झांझ कटोरा और धड़ियावल, शंख मृदंग धुरे ।
भक्त आरती गावे, जय जयकार करे ॥ ४॥

जो ध्यावे फल पावे, सब दुःख से उबरे ।
सेवक जन निज मुख से, श्री श्याम श्याम उचरे ॥ ५॥

श्री श्याम बिहारीजी की आरती, जो कोई नर गावे ।
कहत भक्तजन स्वामी, मनवांछित फल पावे ॥ ६॥

जै श्री श्याम हरे बाबा जै श्री श्याम हरे ।
निज भक्तों के तुमने, पूरण काम करे ॥ ७॥

卐

श्रीताम्रपर्णीजलराशियोगे निबध्य सेतुं निधी बिल्वपत्रैः ।
श्री रामचन्द्रेण समर्पितं तम् रामेश्वराख्यं सततं नमामि ॥

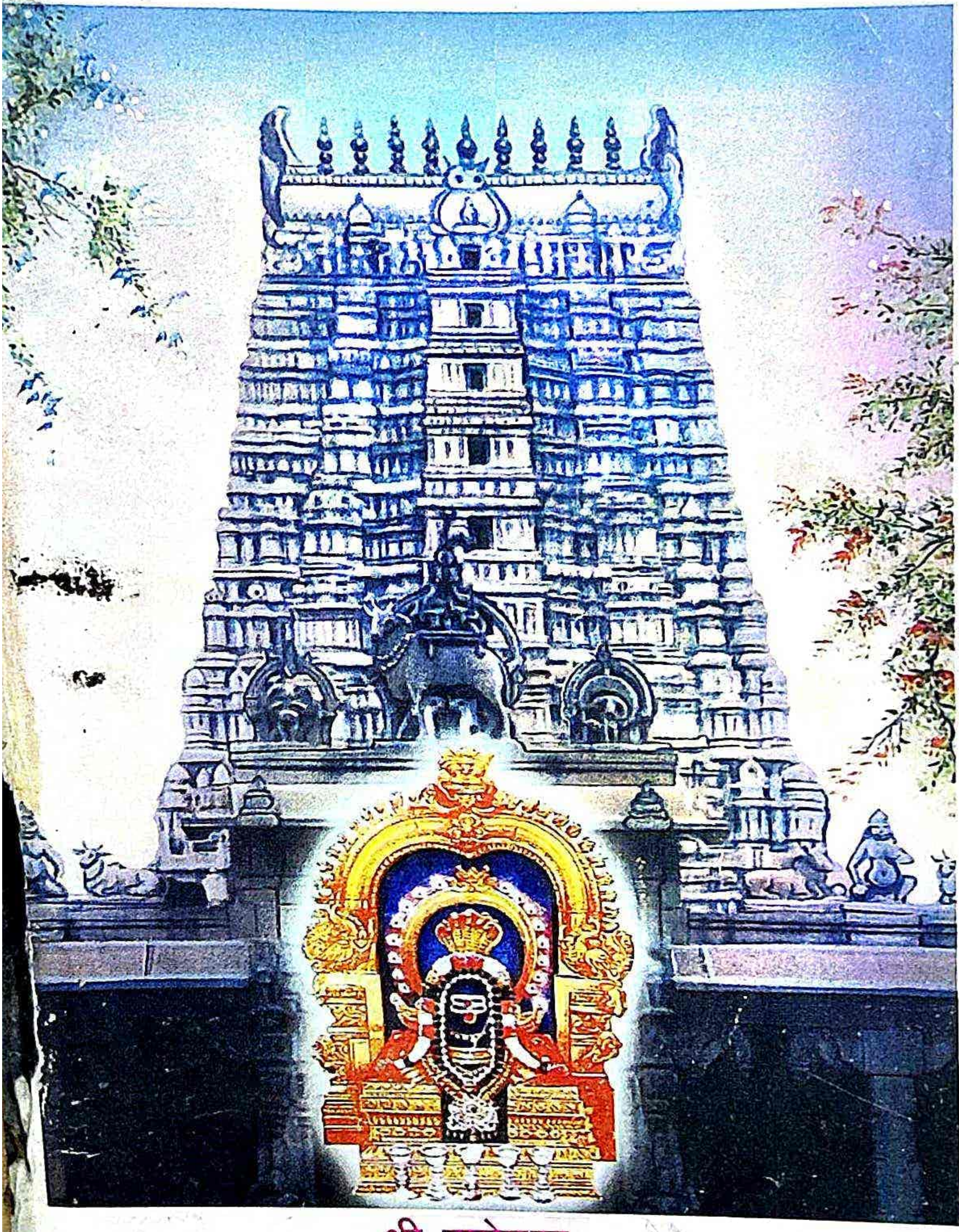

श्री रामेश्वर

"शिव स्तुति" बाबा भूतनाथ धाम, कोलकाता

इलापुरे रम्यशिवालयेऽस्मिन् समुल्लसन्त त्रिजगद्वरेण्यम् ।
वन्दे महोदारतरस्वभावम् सदाशिवं तं घिषणेश्वराख्यम् ॥

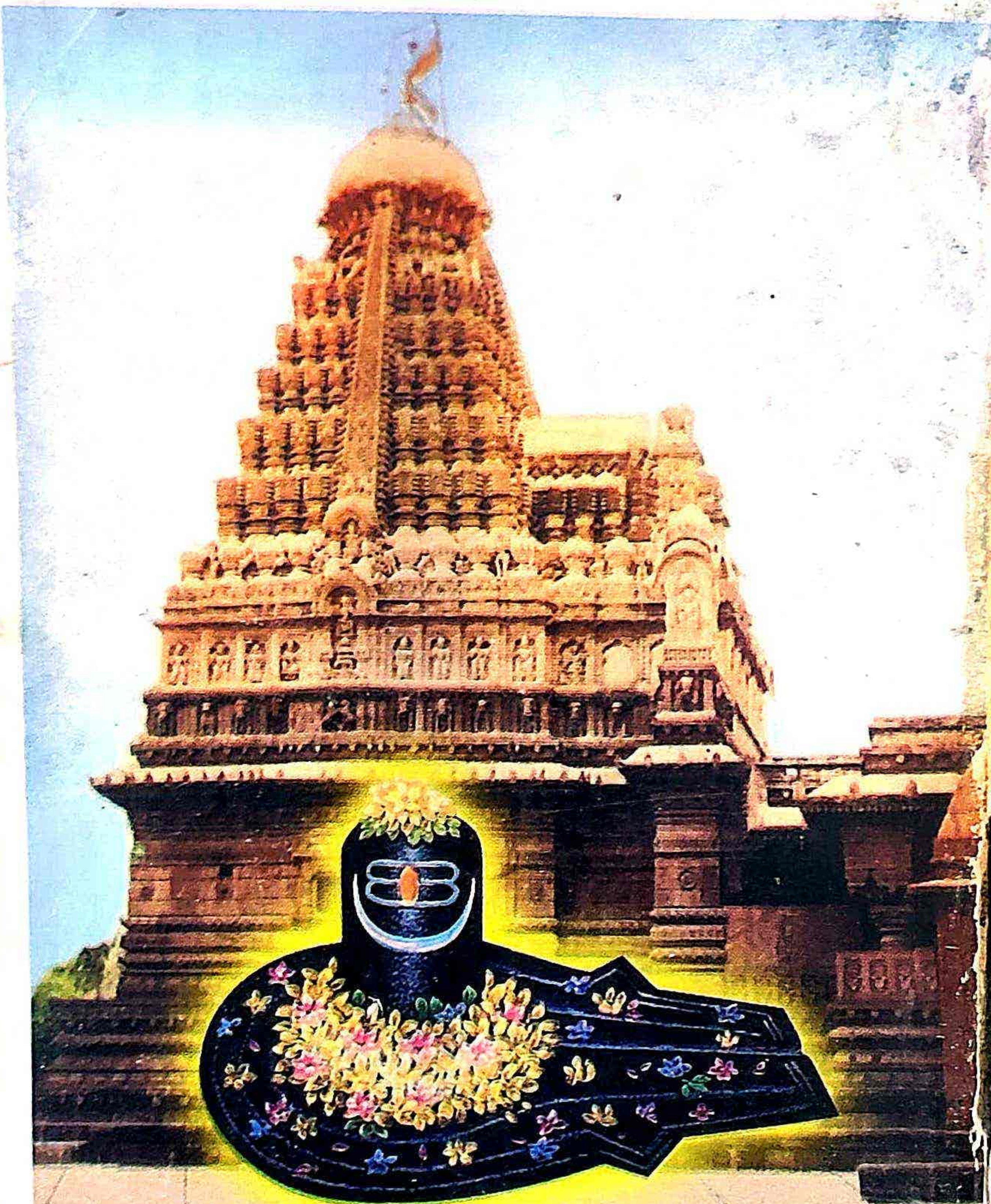

श्री घृष्णेश्वर

"शिव स्तुति" बाबा भूतनाथ धाम, कोलकाता

॥ महावीर स्तुतिः ॥

मनोजवं मारूत-तुल्य-वेगं, जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम्।
वातात्मजं वानरयूथ-मुख्यं, श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये ॥

॥ आरती हनुमान जी की ॥

आरती कीजै हनुमान लला की, दुष्टदलन रघुनाथ कलाकी ॥ टेर ॥
जाके बल से गिरिवर काँपै, रोग-दोष जाके निकट न झांकै ॥
अंजनि पुत्र महा बलदाई, सन्तन के प्रभु सदा सहाई ॥
दे बीरा रघुनाथ पठाये, लंका जारि सिया सुधि लाये ॥
लंका सो कोट, समुद्र-सी खाई, जात पवनसुत बार न लाई ॥
लंका जारि असुर संहारे, सियारामजी के काज संवारे ॥
लक्ष्मण मूर्च्छित परे सकारे, आनि संजीवन प्राण उबारे ॥
पैठि पाताल तोरि जम-कारे, अहिरावन की भुजा उखारे ॥
बायें भुजा असुरदल मारे, दाहिनी भुजा सन्तजन तारे ॥
सुरनर मुनि आरती उतारे, जै जै जै हनुमान उचारे ॥
कंचन थार कपूर लौ छाई, आरति करत अंजनी माई ॥
जो हनुमानजी की आरती गावे, बसि बैकुण्ठ परम पद पावै ॥
लंका विध्वंस किये रघुराई, तुलसीदास स्वामी कीरति गाई।
आरती कीजै हनुमान लला की, दुष्टदलन रघुनाथ कलाकी।

।। आरती श्रीमद्भागवत्‌जी ।।

आरती अतिपावन पुरानकी, धर्म-भक्ति-विज्ञान-खानकी ॥
माहपूराण भागवत निर्मल, शुक-मुख विगलित निगम-कल्प फल।
परमानन्दसुधा-रसमय कल, लीला-रति-रस-रसनिधानकी ॥
कलिमल-मथनि त्रिताप-निवारिणि, जन्ममृत्युमय भव भयहारिणि ।
सेवत सतत सकल सुखकारिणि, सुमहौषधि हरि-चरित-गानकी ॥
विषय-विलास-विमोह-विनाशिनी, विमल विराग विवेक विकाशिनि ।
भगवत् तत्त्व रहस्य प्रकाशिनि, परम ज्योति परमात्मज्ञानकी ॥
परमहंस मुनि-मन-उल्लासिनि, रसिक-हृदयरस-रास-विलासिनि ।
भक्ति-मुक्ति रति प्रेम-सुदासिनि, कथा अकिञ्चन प्रिय सुजानकी ॥

।। आरती तुलसीजी की ।।

तुलसी महारानी नमो नमो! हरि की पटरानी नमो नमो!!

धन्य तपस्या तेरी हरि को पति पाया।
धन्य हरि, तुलसी को तुमने अपनाया॥
तुम बिन भोग न लगता ऐसी हरि की प्यारी।
तब दल देखकर हरषें, गोवर्धनधारी॥ तुलसी॥
नव मणियों की कंठी जो करते धारण।
हरि कर देते उनकी यमबाधा वारण॥
तुलसी युक्त चरणामृत जो नर हैं पीते।
पार और रोगों से हो जाते हैं रीते॥ तुलसी॥
जय जय तुलसीजी तू हरि सी वर पाया।
कृपाया पूत बना दे, मेरी यह काया॥ तुलसी॥

॥ आरती रामदेवजी की ॥

ॐ जय अजमल लाला प्रभु जय अजमल लाला।
भक्त काज कलयुग में. लीन्यो अवतारा॥ ॐ जय० ॥ १ ॥
अश्वन की बाणा असवारी सोहे, केशरिया जामा।
शीश तुर्रहिद सोहे, हात लिये भाला॥ ॐ जय० ॥ २ ॥
डूबत जहाज तिराई, भैरू दैत्य त्यारा।
कृष्णकला भय भंजन, राम रूणीचे वाला॥ ॐ जय० ॥ ३ ॥
अन्धन को प्रभु नेत्र देत हैं, रूणीचे सुख सम्पति माया।
कानों में कुण्डल झिल मिल गल पुष्पन माला॥ ॐ जय० ॥४॥
कोढ़ी जब करूणी कर आवत, होय दु:खी काया।
शरणगत प्रभु तेरी, भक्तन सुखदाया॥ ॐ जय० ॥ ५ ॥
आरती श्रीरामदेव जी की, जो कोई नर गावे।
कटे पाप तन मन का, सुख सम्पति पावै॥ ॐ जय० ॥ ६ ॥

॥ आरती रामदेवजी की ॥

पिछम धरां सूँ म्हारा बाप जी पधारिया।
घर अजमल अवतार लियो ।
लाछां सुगना करे हर री आरती ।
हरजी तो भाटी चंवर ढुले । टेर ।
वीणा रे तंदूरा धणी थारे नौबत बाजे ।
झांझर री झनकार पड़े । १ । लाछां सुगना
गंगा यमुना बहे रे सरस्वती ।
जठे रामदेव बाबो स्नान करे । २। लाछां सुगना
दूरां रे देशां रा बाबा आवे थारे जातरी ।
दरगा आगे बापजी ने नमन करे । ३। लाछां सुगना
हरी शरणां में भाटी हरजी रे बोले ।
नवों रे खण्डों में निशान घुरे ॥ ४॥ लाछां सुगना

॥ स्तुति ॥

दोहा – *है पितरेश्वर आपको, दे देवो आशीर्वाद ।*
चरणा शीश नवा दियो, रख देयो सिर पर हाथ ॥

सबसे पहल्या गणपत, पाद्य घर का देव मनायाजी ।
हे पितरेश्वर दया राखियों, करियो मन का चायाजी ॥
गल पुष्पन को हार पहरायो, चरणां फूल चढ़ायाजी ।
श्रद्धापूर्वक हाथ जोड़कर थारो ध्यान लगायाजी ॥
सुख दुख म्हारो जो भी होसी, म्हें तो थान कहस्याजी ।
हरदम थारी महिमा गास्या, थारी शरण में रहस्याँ जी ॥
थे तो म्हार घर की ज्योति, टाबर का रखवालाजी ।
'भक्तसभी' चाहे जो हो जावे, थारो हुकम नहीं टाला जी ॥

॥ आरती पीतरजी की ॥

जय जय पितरजी महाराज, मैं शरण पडयो हूँ थारी।
शरण पडयो हूँ थारी बाबा, शरण पड़यो हूँ थारी ॥
आप ही रक्षक आप ही दाता, आप ही खेवनहारे ।
मैं मुरख हूं कछु नहि जाणू, आप ही हो रखवारे॥
जय जय ....

आप खड़े हैं हरदम हर घड़ी, करने मेरी रखवारी ।
हम सब जन है शरण आपकी, है ये अरज गुजारी ॥
जय जय .....

देश और परदेश सब जगह, आप ही करो सहाई ।
काम पड़े पर नाम आपको, लगे बहुत सुखदाई ॥
जय जय ......

भक्त सभी है शरण आपकी, अपने सहित परिवार
रक्षा करो आप ही सबकी, रटूँ मैं बारम्बार ॥
जय जय ....

:: भजन ::

गणपत बलकारी जी, फतेह म्हारी आज करो ।
आज करों महाराज, फतेह म्हारी आज करो ।
रिद्धि सिद्धि के दाता जी फतेह म्हारी आज करो ।
कुण थारो देवा पिता रे कुहावै ।
कुण थारी माता जी, फतेह म्हारी आज करो ॥
पिता तुम्हारो देवा है शिव - शंकर ।
माता पार्वती, फतेह म्हारी आज करो ॥
गुड़ के मोदक भोग लगत हैं।
फुलड़ां री माला जी, फतेह म्हारी आज करो ॥
रणत भवन से आवो जी विनायक।
रिद्धि सिद्ध ल्यावो जी, फतेह म्हारी आज करो ॥
गणपत बलकारी जी, फतेह म्हारी आज करो ॥

:: भजन ::

म्हारा प्यारा रे गजानन्द आईजो, जी, ...
रिद्ध - सिद्ध न साग लाइजो जी ॥ म्हारा प्यारा ...
थान सब से पहला मनावाँ, लड्डूवन को भोग लगावां,
थे मूसे चढ़कर आईजो जी ॥ म्हारा प्यारा ...
माँ पार्वती का प्यारा, शिव शंकर लाल दुलारा,
थे बाँध पागड़ी आईजो जी ॥ म्हारा प्यारा ...
थान ध्याव दुनिया सारी,
म्हारा अट्क्या काज बनाईजो जी ॥ म्हारा प्यारा ...
थारो काका मण्डल यश गावे, थारे चरण शीश नवावे,
म्हारी नैंया पार लगाईजो जी ॥ म्हारा प्यारा ...

:: भजन ::

(तर्ज : अंजनी को लाल निरालो....)

दोहा : सदा भवानी दाहिनी, सन्मुख रहे गणेश
पांच देव रक्षा करें, ब्रह्मा विष्णु महेश।

गणपत न प्रथम मनावांजी, गणपत न ।

रिद्धि-सिद्धि लेकर आवो जी गजानन्द।
आवोजी गजानन्द बैठो जी गजानन्द।
चरणां म धोक लगावांजी, गणपत न ॥ गणपत॥

अन्न-धन्न से भर दियो भण्डारो।
भर द्यो भण्डारो भर द्यो भण्डारो।
मन से ध्यान लगावांजी, गणपत न ॥ गणपत॥

पग म थारे घुँघरु बाँधकर।
घुँघरु बाँधकर, घुँघरु बाँधकर।
कीर्त्तन में नाच नचावां जी, गणपत न ॥ गणपत॥

न्हाय धोय कर करां आरती ।
करां आरती करां आरती ।
'बनवारी' चंवर ढुलावां जी, गणपत न ॥ गणपत॥

तुलसी विलम्ब न कीजिये, भजिये नाम सुजान।
जगत मजूरी देते हैं, क्यों राखे भगवान॥

प्रभु बैठा आकाश पे, लेकर कलम दवात।
खाते में वो हर घड़ी, लिखता सबकी बात॥

❖ श्री गुरु वन्दना ❖

माता पिता गुरु प्रभु चरणों में प्रणवत बारम्बार।
हम पर किया बड़ा उपकार, हम पर किया... ॥ टेर ॥

माता ने जो कष्ट उठाया, वह ऋण जाये न कभी चुकाया,
अंगुली पकड़कर चलना सिखाया, ममता की दी शीतल छाया,
जिनकी गोद में पलकर हम, कहलाते हैं हुशियार ॥
हम पर.. ॥ १ ॥

पिता ने हमको योग्य बनाया, कमा कमाकर अन्न खिलाया,
पढ़ा लिखा गुणवान बनाया, जीवन पथ पर चलना सिखाया,
जोड़ जोड़ अपनी सम्पत्ति का, बना दिया हकदार ॥
हम पर.. ॥ २ ॥

तत्व ज्ञान गुरु ने बतलाया, अन्धकार सब दूर भगाया,
हृदय में भक्ति दीप जलाकर, हरि दर्शन का मार्ग बतलाया,
बिन स्वार्थ ही कृपा करें ये, कितने बड़े हैं उदार ॥
हम पर... ॥ ३ ॥

प्रभु कृपा से नर तन पाया, संत मिलन का साज सजाया,
बल बुद्धि और विद्या देकर, सब जीवों में श्रेष्ठ बनाया,
जो भी इनकी शरण में आता-२, कर देता उद्धार ॥
हम पर... ॥ ४ ॥

❖ भजन ❖

(तर्ज-तेरा जादू ना चलेगा ओ सपेरे)

हरि ॐ की तू माला क्यों न फेरे,
मिट जायेंगे सब दुःख तेरे॥ टेर॥

वो भोला भण्डारी है, भक्तों का प्रतिपाला,
निर्धन के मन वास करे, सृष्टि रचाने वाला,
क्यों भूला है कौल को तेरे॥ हरि... ॥ १॥

जो उसपे विश्वास करे, पूरी करे वो आशा,
कभी न उसे निराश करे, कभी न रखता प्यासा,
भण्डार भरे वो तेरे॥ हरि... ॥ २॥

बहुत बड़ा वो दानी है, पार्वती का प्यारा,
निर्धन को है धनी करे, जो सब कुछ है वारा,
माला फेरो नित साँझ सेवेरे॥ हरि... ॥ ३॥

एक बार जो ॐ कहे, पापों से छुट जाये,
जिसके सिर पर हाथ धरे, भक्ति मुक्ति पा जाये,
काटे जनम जनम के फेरे॥ हरि... ॥ ४॥

सच्चे मन से ध्यान धरे, वह है शिव का प्यारा,
झूठ कपट का त्याग करें, आ जाये डमरु वाला,
रहे कदम कदम संग में तेरे॥ हरि... ॥ ५॥

:: भजन ::

(तर्ज : देख तेरे संसार की हालत...)

सूँड सुँडाला दूँद दुँदाला, मस्तक मोटा कान
गणपति देव बड़ा बलवान

जो गणपति को प्रथम मनाता, उसका सारा दुःख मिट जाता ।
रिद्धि-सिद्धि सुख सम्पति पाता, भव से बेड़ा पार लगाता ॥
मेरी नैया पार करो, मैं तेरा लगाऊँ ध्यान ॥ १ ॥

पार्वती के पुत्र हो प्यारे, सारे जग के तुम रखवारे ।
भोलेनाथ हैं पिता तुम्हारे, सूर्य चन्द्रमा मस्तक धारे ।
मेरा सारा दुःख मिट जावे, देवो यही वरदान ॥ २ ॥

रिद्धि-सिद्धि तेरे संग संग में सोहे, मूष सवारी मन को मोहे ।
तेरी दया जिसपर हो जावे, उसका दुःख सुख में मिल जावे ।
माला जपूँ मैं तेरी गणपति, करुँ तेरा गुणगान ॥ ३ ॥

अन्नधन में प्रभु बरकत तुम हो, विद्या में तुम बड़े निपुण हो ।
प्रथम सभी में तुमे ही बने हो, नाम गजानन्द पा-ही गये हो ।
दूर करो प्रभु कष्ट हमारे, देव दया के निधान ॥ ४ ॥

अमृतमय प्रभु भजन से, मिले परम विश्राम ।
हम सब मिलि सुमिरन करें, कोटिशः करे प्रणाम ॥

सागर से भी गहरा बन्दे, गुरूदेव का प्यार है ।
देख लगा कर गोता इकबार, तेरा बेड़ा पार है ॥

:: गुरू वन्दना ::

(तर्ज :- ऐ मेरे दिले नादां ....)

गुरूदेव दया करके, मुझको अपना लेना।
मैं शरण पड़ा तेरी, चरणों में जगह देना।
गुरूदेव० ॥ १ ॥

करूणा निधि नाम तेरा, करूणा दिखलाओं तुम ।
सोये हुए भाग्यों को, हे नाथ जगाओं तुम ।
मेरी नाव भँवर डोले, उसे पार लगा देना ।
गुरूदेव० ॥ २ ॥

तुम सुख के सागर हो, निर्धन के सहारे हो।
इस तन में समाये हो, मुझे प्राणों से प्यारे हो ॥
नित माला जपुँ तेरी, नहीं दिल से भुला देना ।
गुरूदेव० ॥ ३ ॥

पापी हूँ या कपटी हूँ, जैसा भी हूँ तेरा हूँ ।
घर बार छोड़ कर मैं, जीवन से खेला हूँ ॥
दु:ख का मारा हूँ मैं, मेरा दुखड़ा मिटा देना ।
गुरूदेव० ॥ ४ ॥

मैं सबका सेवक हूँ, तेरे चरणों का चेरा हूँ।
नहीं नाथ भुलाना मुझे, इस जग में अकेला हूँ ॥
तेरे दर का भिखारी हूँ, मेरे दोष मिटा देना ।
गुरूदेव० ॥ ५ ॥

हाथ छुड़ाकर जात हो, निर्बल जानके मोहे।
हृदय से जब जाओ तो, सबल मैं जानू तोहे॥

:: भजन ::

(तर्ज : चाँद सी मेहबुबा हो मेरी...)

गंगा किनारे मन्दिर तेरा, भूतों का तू स्वामी है,
सारी दुनिया कहती तुझको, बाबा औघड़दानी है॥

मरघट के पास में डेरा है, क्या अद्भूत तेरा बसेरा है,
पीछे में गंगा की धारा है, तेरा धाम बड़ा ही प्यारा है-२
देव तुम्हारी महिमा गावें, माया किसने जानी है॥ १॥

माथे पर तेरे चन्दा है, और बहती जटा में गंगा है,
भूतों के साथ में रहता है, और काटे यम का फंदा है-२,
शमशानों में धुनी रमावे, ये क्या तूने ठानी है॥ २॥

जिसने भी तेरा नाम जपा, उसका तुने कल्याण किया,
जो रोज नियम से पुजा करें, उसको तो मालामाल किया-२
तीनों लोको में दूजा ना, तुझसा कोई दानी है॥ ३॥

जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि मैं नाहि।
प्रेम गली अति सांकरी, जामें दो न समाहि॥

दान करो दिल खोलकर, मत न होऊ अधीर।
धर्म करयाँ धन ना घटे, कह गये दास कबीर॥

कबिरा जब पैदा हुये, जग हंसे हम रोये।
ऐसी करनी कर चलो, हम हँसे जग रोये॥

:: प्रार्थना ::

श्री शंकर शरणम् मम्, श्री शंकर शरणम् मम्।
श्री शंकर शरणम् मम्, जय श्रीशंकर शरणम् मम् ॥

:: भजन ::

भोलानाथ अमली। म्हारा शंकर अमली
हो जटाधारी अमली, बगिया में भंगिया घोटाय राखूंली
रे छणाय राखूंगी ....

रत्न कटोरे बिजिया छाण राखूँगी, रे छणाय राखूंली ।
भोलानाथ अमली .....

कांई बोऊँ काशीजी में काँई जी प्रयाग । (रामजी)
कांई बोऊँ हरकी, पेड़ी, कांई जी कैलाश ॥ शिवशंकर अमली

काशीजी में केशर बोऊँ, चन्दन प्रयाग । (रामजी)
हर की पेड़ी बिजिया बोऊँ, धतूरों कैलाश ॥ शिवशंकर अमली

कांई मांगे नांदियोजी, कांई जी गणेश । (रामजी)
कांई मांगे भोला शम्भु, योगियां को भेष॥ शिवशंकर अमली

दुर्बा मांगे नांदियोजी, मोदक गणेश । (रामजी)
बिजिया माँगे भोला शम्भु, योगियां को भेष ॥ शिवशंकर अमली

दुर्बा देस्यां नांदियोजी, मोदक गणेश । (रामजी)
बिजिया देस्यां भोला शम्भू, योगियां को भेष ॥ शिवशंकर अमली

घोटे घोटे नांदियोजी, छाणत गणेश । (रामजी)
भर–भर प्याला देवे गवरजा, पीवे भोलानाथ ॥ शिवशंकर अमली

आकरे की रोटी पोऊँ, धतूरा को साग । (रामजी)
बिजिया की तरकारी छमकूँ, जीमो भोलानाथ ॥ शिवशंकर अमली

चन्दन चढ़ाऊँ कमल चढ़ाऊँ ओर चढ़ाऊँ बेल । (रामजी)
धतूरा को फूल चढ़ाऊँ , गंगाजी को नीर ॥ शिवशंकर अमली

नाचे-नाचे नांदियो जी, नाचे जी गणेश । (रामजी)
नाचे-म्हारो भोलो शम्भू, जोगियां को भेष ॥ शिवशंकर अमली

निर्धनियो तो धनड़ो मांगे, राजा मांगे रूप । (रामजी)
कुष्ठी मांगे निर्मल काया, बाँझ मांगे पूत ॥ शिवशंकर अमली

आगे-आगे नांदियो चाले, लारे रे गणेश । (रामजी)
बीज बिचाले चाले गवरजा, जोगिनी को भेष ॥ शिवशंकर अमली

कैलाश पर्वत तपे महादेव, नन्दियो चेलो साथ । (रामजी)
भक्त सभी भगवन से मांगे, भक्तिज्ञान वैराग्य ॥ शिवशंकर अमली

सत-उपदेश

१. तन, मन, धन, प्रभु, की देन है, इन्हे प्रभु की ही समझें।
२. जाति, वर्ण, आश्रम का अभिमान न करें ।
३. गृहस्थ को छोड़ कर वेशधारी साधु न बनें ।
४. किसी के खान-पान, वेश-भूषा से घृणा न करें।
५. हर धर्म और उनके महात्माओं का आदर करें ।
६. मौत को याद रखें पर डरें नहीं क्यों कि उसका वक्त नियत है ।
७. प्रभु मिलन, मन का मान गंवाने पर ही होता है ।

तीन न्यायकारी है

१. चोर को चोर न कहने वाले
२. चोर का भरोसा न करने वाले
३. अपने विश्वासी को धोखा न देने वाले

॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

:: भजन ::

(तर्ज- जै हम तुम चोरी से)

रे बम बम बोलो ना, हृदय पट खोलो ना, आ जायेंगें भूतनाथ,
अरे क्या सोचें है बाँवरे, रे बम बम.......

बम ब्रम के नारे से मेरे बाबा खुश हो जाए,
अपने भगत के खातिर वो पल भर में आ जाए ,
हाजिर है वो सदा वो सदा भक्तों के द्वार पें,
रे बम बम.......

भव सागर तरने की बस एंक यहीं है,
भजले नाम प्रभु का तुझे मिल जायेगी मुक्ति ,
आ जाओं अब जरा भक्ति की राह में,
रे बम बम.......

युग-युग से मे वाणी गुंजे घरती अम्बर में,
तू क्यूँ पड़ा है, भैया बस माया के चक्कर में,
ले लो ना नाम को अपनी जुबान पें
रे बम बम.......

शिव भोले भंडारी ओघड़दानी कहलाऐ,
बिन सोचे बिना विचारे वरदान प्रभु दे जाए,
जाकर के देख लो देख बाबा के धाम पें,
रे बम बम.......

:: भजन ::

(तर्ज : चुड़ी जो खनके हाथों में....)

डमरु जो बाजे हाथों में-२, नाचे धरती और आकाश,
कि भोले बाबा नाच रहे ॥

भांग धतूरा भोग लगे गल सर्पों की माला सजे,
गोदी में श्री गणेश रहे, संग में माँ गौरी ही सजे,
तीन लोक के स्वामी है, खुशियाँ ये बाँट रहें,
कि भोले बाबा नाच रहे ॥ १ ॥

आये जी इनके द्वारे, करते है वारे न्यारे।
भूतों के स्वामी, भूतेश्वर , ये सबका है काम करे,
तेरी भी झोली आज भरें, तू भी भजन सुना प्यारें,
कि भोले बाबा नाच रहे ॥ २ ॥

ये विश्वास मेरे मन में, मैं शिव का शिव है मुझ में ,
नित्य नियम से जो ध्यावें, भोले है उसके वश में,
देवों के ये महादेव है, ये सबकी विपदा टारें॥
कि भोले बाबा नाच रहे ॥ ३ ॥

रात गंवाई सोय कर, दिवस गवाँयो खाय।
हीरा जनम अमोल था, कौड़ी बदले जाय॥

आये हैं सो जायेंगे, राजा रंक फकीर।
एक सिंहासन चढ़ि चला, एक बंधा जंजीर॥

:: भजन ::

(तर्ज : देना हो तो दीजीये)

शमशानों के वासी हो, भूतों का है साथ,
तेरा गंगा किनारे डेरा-२, ओ बाबा भूतनाथ।

देवों में महादेव हो बाबा, सारी दुनियां ध्याती है,
श्रद्धा के चरणों में तेरे, आकर शीश झुकाती है।
जो पाँव पकड़ले तेरे-२, तू पकड़े उनका हाथ ।

सृष्टि के ओ सिरजन हारे, तेरे ढंग निराले है,
देवों की रक्षा के खातिर, पीता विष के प्याले है,
हम भोले भगतों का तू -२, रक्षक है भूतनाथ ।

सोमवार को तेरा दर्शन, बहुत बड़ा शुभकारी है,
तेरी दया से हम भगतों की, कटती विपदा सारी है।
इस हर्ष का भोले बाबा-२, तू देना हर दम साथ॥

**जाति न पुछो साधु की, पुछ लीजिए ज्ञान।
मोल करो तलवार का, पड़ी रहन दो म्यान॥**

**काल करै सो आज कर, आज करै सौ अब।
पल में प्रलय होयगी, बहुरि करोगे कब॥**

**माला फेरत जुग गया, मिटा न मन का फेर।
कर का मनका डारिकै, मन का मनका फेर॥**

:: भजन ::

बाबा भूतेश्वर भोलेनाथ बाबा भोले हैं ।
माथे पर थारे ओ बाबा सोहे चन्द्रमा ॥
थारे गल सर्पों का हार ।
बाबा भोले हैं ॥ बाबा॥
कानों में कुण्डल ओ बाबा थारे सोहे।
थारी जटा में गंग की धार, बाबा भोले हैं ॥ बाबा॥
नन्दी की असवारी ओ बाबा थारे सोहे ।
थारे संग में गौरी गणेश, बाबा भोले हैं ॥ बाबा॥
आक धतूरा ओ बाबा थारे भोग लगे ।
थे तो भंगिया पीवो भरपूर, बाबा भोले हैं ॥ बाबा ॥
भक्त मण्डल बाबा ओ थासूँ अरदास करे ।
म्हानै दरस दिखावो आज, बाबा भोले हैं ॥ बाबा॥

:: भजन ::

मिलता है सच्चा सुख केवल, भोलेनाथ तुम्हारे चरणों में।
यह विनती है पल-पल, क्षण क्षण, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में ॥
चाहे बैरी कुल संसार बने, मेरे रोज सबेरे आने में ।
चाहे मौत गले का हार बने, रहे ध्यान बाबा तेरे चरणों में ॥
चाहे पावक मे मुझे जलना हो, चाहे काँटों पर मुझे चलना हो।
चाहे छोड़ के देश निकलना हो, रहे ध्यान भोला तेरे चरणों में ॥
चाहे संकट ने मुझे घेरा हो, चाहे चारों ओर अन्धेरा हो।
पर मन नहीं डगमग मेरा हो, रहे ध्यान बाबा तेरे चरणों में॥
जिहवा पर तेरा नाम रहे, तेरा ध्यान सुबह और शाम रहे ।
तेरी याद तो आठों याम रहे, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में ॥

:: भजन ::

जय-जय हरि हर गौरीशंकर ईश्वर दीन दयाला है ।
राम नाम में समय बिताना, सच्चा धर्म हमारा है ॥ जय-जय॥

हरि भजन में चित्त लगाना, सच्चा धर्म हमारा है ।
सुबह शाम दिन रात रटे तो, हो कल्याण हमारा है ॥ जय-जय॥

कैलाशी काशी के वासी, भोला डमरू वाला है ।
जटा जूट में गंग विराजे, अर्ध चन्द्रमा न्यारा है ॥ जय-जय॥

गले बीच लिपटे हैं विषधर, कानन कुण्डल वाला है ।
नाव पड़ी मझधार बीच में, दीखत नहीं किनारा है॥ जय-जय॥

अलख निरंजन भव दुःख भंजन भक्तों का प्रतिपाला है।
जो ध्यावे इच्छा फल पावे, पल में करत निहाला है ॥ जय-जय॥

आंख खोलकर देखरे मनवा, जग में कौन हमारा है।
भजन किये भव बन्धन टूटे, छूटे सब संसारा है।
जय जय हरि हर गौरीशंकर ईश्वर दीन दयाला है।

- **"हम सोचते हैं कि समझदार को सब प्रश्नों के उत्तर मिल जाते हैं, गलत है यह बात, समझदार को उत्तर नहीं मिलते समझदार के सब प्रश्न ही गिर जाते हैं।"**
- **"सार सूत्र उससे सीखाना जो जानता हो—उससे नहीं जो मानता हो।**
- **उसके पास बैठना जो परमात्मा के पास बैठा हो—उसके पास नहीं जिसके पास केवल शब्द हो।"**

:: भजन ::

फरियाद मेरी सुनके, भोले नाथ चले आना ।
नित ध्यान धरूँ तेरा बिगड़ी को बना जाना ॥ फरियाद ॥

तुझे अपना समझकर मैं, फरियाद सुनाता हूं ।
तेरे दर पर आकर मैं, नित धूनि रमाता हूं ।
क्यों भूल गये भगवन, मुझे समझ के बेगाना ॥ फरियाद ॥

मेरी नाव भँवर डोले, तुम ही तो खेवैया हो।
जग के रखवाले तुम, तुम ही तो कन्हैया हो।
कर बैल सवारी तुम, भवपार लगा जाना ॥ फरियाद ॥
तुम बिन न कोई मेरा, अब नाथ सहारा है।
इस जीवन को मैने, तुझ पर ही वारा है।
मर्जी है तेरी बाबा, अच्छा नहीं तड़पाना ॥ फरियाद ॥

नैनों में भरे आंसू, क्यों तरस न खाता है ।
क्या दोष हुआ मुझ से, मुझे क्यों ठुकराता है ।
अब म्हैर करो बाबा, सुनके मेरा अफसाना ॥ फरियाद॥

इक दिन शहर हम निकले,
दिल में बड़े अरमान थे।
एक तरफ थी झोपड़ियाँ,
और इक तरफ श्मशान थे॥
पैर तले इक हड्डी आई,
उसके यही बयान थे॥
ऐ! चलने वाले, सम्हल के चलना,
हम भी कभी ईन्सान थे॥

:: भजन ::

हे भूतेश्वर तेरे मन्दिर में, हम तुझे रिझाने आये हैं ।
हम तुझे रिझाने आये हैं, हम तुझे मनाने आये हैं ।
फूलों की पुड़िया, गंगा जल हम तुझे चढ़ाने आये हैं ।
तेरी महिमा जग से न्यारी है, तू तीन लोक त्रिपुरारी है ।
तेरा गुण गाते नर नारी हैं, चरणों में शीश झुकाये हैं ।
तेरी डमरू की धुन को सुन कर प्रभु काँप उठे दिकपाला है ।
तेरे गल मुण्डों की माला है, तेरी महिमा गाने आये हैं ।
सारी सृष्टि के तुम ही रचैया हो, बृन्दावन रास रचैया हो ।
गोपेश्वर हो, तुम कन्हैया हो, तुझे अपना बनाने आये हैं ।
शिव शंकर हो अविनाशी हो, तुमहीं घट-घट के वासी हो ।
तुम काटो यम की फांसी हो, तुम्हें दिल में बैठाने आये हैं ।
तुम तन पे भस्मी रमाते हो, श्री राम का ध्यान लगाते हो ।
तुम भाँग धतूरा खाते हो, तेरा दर्शन पाने आये हैं।
तुम विश्वनाथ कहलाते हो, तुम लोकनाथ कहलाते हो ।
तुम तारक नाथ कहलाते हो, हम प्रीत लगाने आये हैं ।
शक्ति दो भक्ति का वर दो, और पाप सभी मेरे हर लो ।
झोली खुशियों से अब भर दो, यही अर्जी लगाने आये हैं ।

:: भजन ::

(तर्ज : दीनानाथ मेरी बात....)

भोला बाबा डमरुवाला, भूतों का सरदार है,
सच्चे मन से जो कोई ध्यावे, उसका बेड़ा पार है।

माथे पे चन्दा सोहे, गंगाजी की धारा है,
ओ डमरुवाले तेरा , रुप बड़ा प्यारा है,
रुप बड़ा प्यारा बाबा, भक्तों का सहारा है,
पालनहार, तू दातार , सबका खेवनहार है॥ १॥

भस्मी रमायें बैठा, ध्यान लगाता है,
सारी दुनिया तुझे मनाती, तू किसको मनाता है,
तू किसको मनाता बाबा, किसका ध्यान लगाता है ,
तू दातार, लखदातार , जीवन का आधार है॥ २॥

सावन के महीने मे हम दौड़े चले आयेगें,
काँधे काँवड़ होगी, जिसमें गंगा जल लायेगें,
गंगा जल लाकर बाबा तूझपे चढ़ायेंगें ,
खेवनहार, तू दातार, सबका पालनहार है॥ ३॥

बिगड़ी बनाने वाले, बिगड़ी बनाओ ना,
मित्र मण्डल कहता बाबा, एक बार आओ ना,
एक बार आके बाबा, दरश दिखाओ ना,
पालनहार, लखदातार, जीवन का आधार है॥ ४॥

:: भजन ::

कर दे दीनों का दुःख दूर, ओ बाघम्बर वाले।
कर दे तू मेरा बेड़ा पार ओ शिवशंकर भोले ॥
कोई चढ़ावे शिवजी जल की ओ धारा ,
कोई चढ़ावे कच्चा दूध ॥ ओ बाघम्बर ॥
हरी हरी बेल की पत्तियाँ चन्दन चावल,
और चढ़ाऊँ फल फूल ॥ ओ बाघम्बर ॥
आक धतुरा शिवजी भोग लगत हैं,
भंगिया पीओ भरपूर ॥ ओ बाघम्बर ॥
नन्दी रे गण असवारी ओ शिवजी,
हाथ लिये हैं त्रिशूल ॥ ओ बाघम्बर ॥
गोरे गोरे अंग पर भस्मी रमावे,
गले सर्पो का हार ॥ ओ बाघम्बर ॥
बायें अंग मां गिरिजा बिराजे ,
गोदी लियो है गणेश ॥ ओ बाघम्बर ॥
कंचन थाल कपूर की बात्ती भोला,
आरती करता नरनार ॥ ओ बाघम्बर ॥
सेवा न जानूं बाबा पूजा न जानूं,
जानूं तुम्हरो एक नाम ॥ ओ बाघम्बर ॥
श्री सत्यानारायण स्वामी शरण तिहारी भोला,
शरण आये री राखो लाज ॥ ओ बाघम्बर ॥
अर्जी हमारी भोला मर्जी तुम्हारी,
अर्जी करो मंजुर ॥ ओ बाघम्बर ॥

:: भजन ::

जैसा चाहे मुझको समझना, बस तुमसे इतना कहना
माँगने की आदत जाती नहीं
तेरे आगे लाज मुझे आती नहीं

अन्तरा

बड़े बड़े पैसे वाले भी तेरे द्वारे आते है
मुझको ये मालूम है वो भी तुझसे मांग के खाते है
तुझसे माँगने में इज्जत जाती नहीं
तेरे आगे लाज.....

तुमसे बाबा शर्म करु तो और कहाँ मैं जाऊँगा
मैं अपने परिवार का खर्चा और कहाँ से लाऊँगा
दुनिया तो बिगड़ी बनाती नही
तेरे आगे लाज ....

तू ही करता मेरी चिन्ता तो ही गुजारा चलता है
कहे भक्त तुझसे ज्यादा कोई नहीं कर सकता है
झोली हर कहीं फैलाई जाती नही
तेरे आगे लाज....

कबीरा इतना दीजिये, जामें कुटुम्ब समाय।
मैं भी भुखा ना रहूँ, साधू न भूखा जाय॥

तुलसी या संसार में, मिलिये सबसे धाय।
ना जाने किस रूप में, नारायण मिल जाय॥

:: भजन ::

(तर्ज : दिल चुराके ले गई ....)

॥ अस्थाई ॥

देना हो तो दीजिए जनम-जनम का साथ,
मेरे सर पर रख दे बाबा अपने ये दोंनो हाथ।

देने वाले भूतनाथ प्रभु तो, धन और दौलत क्या मांगे
भूतनाथ प्रभु से मांगे तो फिर, नाम और ईज्जत क्या मांगे,
मेरे जीवन में अब करदे, तु किरपा की बरसात ॥ १ ॥

भोले तेरे चरणों की धूली, धन दौलत से महंगी है,
एक नजर किरपा की बाबा, नाम इज्जत से महंगी है,
मेरे दिल की तमन्ना यही है, करूँ सेवा दिन और रात ॥ २ ॥

झूलस रहे हैं गम की धूप में, प्यार की छँईया करदे तू,
बिन पानी के नाव चले ना, अब पतवार पकड़ ले तू,
मेरा रास्ता रोशन कर दे, छाई अंधियारी रात ॥ ३ ॥

इस जनम में सेवा देकर, बहुत बड़ा एहसान किया,
तू ही राम और कृष्ण है बाबा, हमने तुम्हें पहचान लिया,
हम साथ रहें जनमों तक, बस रख लो इतनी बात ॥ ४ ॥

सुना है हमने शरणागत को, अपने गले लगाते हो,
ऐसा हमने क्या मांगा जो, देने में हिचकाते हो,
चाहे जैसे रख "बनवारी", बस होती रहे मुलाकात ॥ ५ ॥

अर्द्धनारेश्वर

"शिव स्तुति" बाबा भूतनाथ धाम, कोलकाता

श्री कृष्ण गोविन्द हरे मुरारी, हे नाथ नारायण वासुदेव ॥

श्री .राधाकृष्णजी

"शिव स्तुति" बाबा भूतनाथ धाम, कोलकाता

:: भजन ::

(तर्ज : सौ बार जन्म लेगे....)

हर बार तेरे दर पे, नवगीत सुनायेंगे।
मां जगदम्बे सुन ले, तेरी महिमा गायेंगे॥
हर बार तेरे.....॥

तुम से मिलने को हमें, रोकोगी भला कैसे,
कदमों से लिपट जाये, वृक्षों से लता जैसे।
सपनों में मिली माँ को, हम सामने पायेंगे॥
हर बार तेरे.....॥

होगी तृष्णा भी पूरी, प्यासी इन अखिंयन की,
माथे से लगा लेंगे, धूली तेरे चरणन की।
चरणामृत लेकर माँ हम भव तर जायेंगे॥
हर बार तेरे.....॥

सदियों से सदा हमने, तेरी आश लगाई है,
पागल मनवाँ कहता, माँ मुझ को भुलाई है।
पाकर के तेरे दर्शन, मन को समझायेंगे॥
हर बार तेरे.....॥

चुनकर बन उपवन से, पुष्पों की मधुर लड़ियां
एक हार बनाया है, बीती है कई घड़ियां
यह पुष्प-भजनमाला, तुझें भेंट चढ़ायेंगे॥
हर बार तेरे.....॥

:: भजन ::

(तर्ज - वो दिल कहाँ से लाऊँ)

इस योग्य हम कहाँ है, भगवन तुम्हें मनायें।
फिर भी मना रहे हैं, शायद तू मान जायें॥ टेर॥

जब से जन्म लिया है, विषयों ने हमको घेरा।
छल और कपट ने डाला, इस भोले मन पे डेरा।
सद्बुद्धि को अहम् ने, हरदम रखा दबाये॥ १॥

निश्चय ही हम पतित हैं, लोभी हैं, स्वार्थी हैं।
जब तेरा ध्यान लगायें, माया पुकारती है।
सुख भोगने की इच्छा, कभी तृप्त हो न पाये॥ २॥

जग में जहाँ भी देखा, बस एक ही चलन है।
एक दूसरे के सुख में, खुद को बड़ी जलन है।
कर्मों का लेखा जोखा, कोई समझ ना पाये॥ ३॥

जब कुछ ना कर सके तो, तो तेरी शरण में आये।
अपराध मानते हैं, झेलेंगे सब सजायें।
बस दर्श तूँ दिखादे, कुछ और हम न चाहें॥ ४॥

:तीन का त्याग सदा करें :

(१) पर निन्दा परित्याग
(२) पराई स्त्री का त्याग
(३) पराई सम्पत्ति का त्याग

:: भजन ::

दुनिया चले न श्रीराम के बिना।
रामजी चले न हनुमान के बिना॥

जब से रामायण पढ़ली है,
एक बात मैंने समझ ली है,
रावण मरे न श्रीराम के बिना,
लंका जले न हनुमान के बिना॥ दुनिया चले...

लक्ष्मण का बचना मुश्किल था,
कौन बूटी लाने के काबिल था,
लक्ष्मण बचे न श्रीराम के बिना,
बूटी मिले न हनुमान के बिना ॥ दुनिया चले...

सीता हरण की कहानी सुनो,
बनवारी मेरी जुबानी सुनो,
सीता मिले न श्रीराम के बिना,
पता लगे न हनुमान के बिना ॥ दुनिया चले...

बैठे सिंहासन पर सीयाराम जी
चरणों में बैठे देखो हनुमान जी,
मुक्ति मिले न श्रीराम के बिना,
भक्ति मिले न हनुमान के बिना,
शक्ति मिले न हनुमान के बिना -२॥

पिता म्हारो रामचन्द्र माता म्हारी जानकी।
जय हो वीर बाँकुरे हठीले हनुमान की॥
हठीले हनुमान की दयालु भगवान की।
जय हो वीर बाँकुरे हठीले हनुमान की॥

:: भजन ::

ना स्वर है ना सरगम है, ना लय ना तराना है ।
हनुमान के चरणों में, एक फूल चढ़ाना है ॥ टेर॥

तुम बाल रूप में प्रभु, सूरज को निगल डाले ।
अभिमानी सुरपति के, सब दर्प मसल डाले ।
बजरंग हुए तब से, संसार ये जाना है ॥ १॥ ना स्वर॰

सब दुर्ग ढहा करके, लंका को जलाये तुम ।
सीता की खबर लाये, लक्ष्मण को बचाये तुम ।
प्रिय भरत सरिस तुमको, श्रीराम ने माना है ॥ २॥ ना स्वर॰

जब राम नाम तुमने, पाया था नगीने में ।
तुम फाड़ दिये सीना, सिया राम थे सीने में ।
विस्मित जग ने देखा, कपि राम दीवाना है ॥ ३॥ ना स्वर ॰

हे अजर अमर स्वामी, तुम हो अन्तर्यामी ।
ये दीन हीन ''चंचल'' अभिमानी अज्ञानी ।
तुमने जो नजर फेरी, फिर कौन ठिकाना है ॥ ४॥ ना स्वर॰

तीन दुःखी नहीं होते हैं

(१) फिजुल खर्च न करने वाले
(२) सादा रहन-सहन रखने वाले
(३) पापचार से दूर रहने वाले

धर्म गुरु के पास धर्म होता ही नहीं, सिर्फ साख होती है। सदगुरु के पास धर्म होता है—साख नहीं होती।

:: सालासर की महिमा ::

दोहा :- बजरंगी बलवान को, सालासर में धाम।
संकट में हाजिर रहे, ऐसे वीर महान॥

:: भजन ::

ढोलक शंख मंजीरा बाजे रे।
सालासर के मंदर में हनुमान विराजे रे॥
हनुमान विराजे रे, बठे बजरंग विराजे रे।

भारत राजस्थान मँ जी सालासर एक धाम।
सूरज स्यामी बण्यो देवरो महिमा अपरंपार।
थारे लाल ध्वजा फहरावे रे। सालासर के ॥ १ ॥

नारेलाँ की गिनती नहीं बाबा सुवरण छत्र हजार।
दूर देश का दरसण करने आवे भक्त अपार।
बाबो अटक्यो काज बणावे रे। सालासर के ॥ २ ॥

चैत सुदी पूनम को मेलो भीड़ लगे अति भारी।
नर नारी थारा दरसण करने आवे बारी-बारी।
थारे जात जडूला लागे रे। सालासर के ॥ ३ ॥

रामदूत अंजनी का सुत को धरो हमेशा ध्यान।
'चैनसिंह' चरणाँ रो चाकर लाज रखे हनुमान।
बाबो बेडो पार लगावे रे। सालासर के ॥ ४ ॥

-: तीन जगह न जाओ :-

(१) वेश्या के घर (२) जुआरी के घर (३) शराबी के घर

:: भजन ::

(तर्ज -तूने हीरो सो जनम गंवायो)

म्हारो सांचो घणी रे हनुमान, सुमँरु बाबा बजरंग नै ॥
म्हारो देव बड़ो रे बलवान, सुमँरु बाबा बजरंग नै ॥
बजरंग नं सुमँरु , बजरंग न रे बाबा बजरंग नै.... ॥ टेर ॥

शीष मुकुट और लाल लंगोटा, शोभा बरणी न जाय,
एक हाथ में गदा बिराजै, दूजै में ध्वजा रे फहराय ॥ १ ॥

बालपणे में खेलत-खेलत सुरजी पकड्यो जाय,
देवन आय करी है विनती, मुख से दियो छिटकाय ॥ २ ॥

सीता की सुधि लेवण ने तूँ, गयो समुन्दर पार,
लंका जाय दहन कर डारी, मारय्यो है अक्षय कुमार ॥ ३ ॥

शक्तिबाण लग्यो लक्ष्मण के, पड्यो धरणी अकुलाय,
लाय संजीवन लखन जिलाये, मगन भये रघुराय ॥ ४ ॥

राम लखन ने चुरा कर ले गयो, अहिरावण निज धाम,
जाय पाताल रधुनन्दन ल्यायो, असुर पठायो सुरधाम ॥ ५ ॥

बड़ा-बड़ा थे कारज सार्या, अंजनी के हनुमान,
'तुलसीदास' भजो भगवाना, चरण कमल चित लाय ॥ ६ ॥

सीतापति रामचन्द्र रघुवर को मनाये जा।
श्री बालाजी बजरंगबली के चरणों में शीश नवाये जा॥
चरणोंमें शीश नवाये जा चरणों में ध्यान लगाये जा।
श्री बालाजी बजरंगबली के चरणों में ध्यान लगाये जा॥

:: भजन ::

रखवाला प्रतिपाला, मेरो लाल लंगोटे वाला ।
कदम कदम पर रक्षा करता, घर घर करे उजाला उजाला ॥

निश दिन इसका ध्यान लगाऊँ, जपूँ इसी की माला ।
धूप दीप नैवैद्य चढ़ाऊँ, पड़े ना यम से पाला रे पाला ॥

मन मन्दिर में वास करो, तुम हे अंजनी के लाला ।
पापों का मेरे नाश करो तुम, बनके दीन दयाला दयाला ॥

लाल सूरत मेरे मन को मोहे, शीश मुकुट अति प्यारा ।
कानन कुण्डल तिलक विशाला, गल मोतियन की माला रे माला ॥

राम-सिया थारे उर में सोहे, अजर-अमर थारी माया ।
घर घर होवे पूजा थारी, सिया सुधि लाने वाला रे वाला ॥

लक्ष्मण मुर्छित पड़े धरनी पर, वैद्य बुलाकर लाया ।
आज्ञा पा संजीवन लाने, पवन वेग सा चाला रे चाला ॥

लक्ष्मण जी के प्राण बचाये, पहाड़ उखाड़ के लाये ।
अपने स्वामी को धीरज दीनां, भाई से भाई को मिलाया मिलाया ॥

नेम नियम से जो कोई ध्यावे, मन की मुरादे पावे ।
बिछुड़े साथी फिर से मिलाकर, घर घर प्रेम बढ़ाया बढ़ाया ॥

★

माटी कहे कुम्हार से, तू क्या रौदे मोंहि।
एक दिन ऐसा आयगा, मैं रोंदूंगी तोंहि॥

दुःख में सुमिरन सब करें, सुख में करे न कोंय।
जो सुख में सुमिरन करे, तो दुःख काहे को होय॥

:: भजन ::

बजरंग बली मेरी नाव चली, जरा बली कृपा की लगा देना
मुझे रोग ने शोक ने घेर लिया, मेरे ताप को नाथ मिटा देना ।।
मैं दास तो आपका जनम से हूँ, बालक और शिष्य भी धर्म से हूँ
बेशर्म विमुख निज कर्म से हूँ, चित्त से मेरे दोष भुला देना ॥
दुर्बल हूँ दीन गरीब हूँ, मैं जिन कर्म क्रिया गत क्षीण हूँ मैं
बलवीर तेरे अधीन हूँ, मैं मेरे बिगड़ी हुई को बना देना ॥
बल देके मुझे निर्भय कर, दो यश शक्ति मेरी अक्षय कर दो
मेरे जीवन को सुखमय कर, दो संजीवन लाय पीला देना ॥
करूणानिधि आपका नाम भी है, शरणागत राधेश्याम भी है
इसके अतिरिक्त ये काम भी है, श्री राम से मोहे मिला देना ॥

:: भजन ::

तर्ज : वारी जाऊँ चिरयी

लाल लंगोटो हाथ में घोटो, थारी जै हो पनवकुमार
वारी जाऊँ बालाजी ॥ टेर॥
सालासर थारो देवरो, मेंहदीपुर भी देवरो,
थारै नौबत बाजे द्वार । वारी जाऊँ ......
चैत सुदी पूनम को मेलो, थारै आवै भक्त अपार ।
गठ जोड़ा की जात जडूला, देवे लाखों नर और नार ।
ध्वजा नारियल चढ़े चुरमों थारै सिर पर छत्र हजार ।
घर-घर म थारी ज्योत जगै है, भक्त करै जै जै कार ।
घृत सिन्दुर चढ़ावै थारे, कोई मंगल और शनिवार ।
भक्ताँ का थे कारज सारया थारी महिमा है अपरम्पार ।
ताराचन्द की विनती बाबा, म्हारो बेड़ों लगा दीज्यो पार ।
वारी जाऊँ । .....

:: भजन ::

आओ कन्हैया, आओ मुरारी, तेरे दर पे आया सुदामा भिखारी ॥ टेर ॥

क्या मैं बताऊँ, क्या मैं सुनाऊँ, एक दुःख नहीं जो मन में छिपाऊँ।
घट-घट की जानत हो, तुम हे मुरारी, तेरे दर पे आया सुदामा भिखारी ॥ १ ॥

ना तो डगर है, ना कोई घर है, फटे हुऐ कपड़े हैं , तुझे सब खबर है।
क्या तुम परीक्षा, लेते मुरारी , तेरे दर पे आया सुदामा भिखारी ॥ २ ॥

नैनों में आँसू, उठे ना कदम है, आवो कन्हैया अब तो होठों पे दम है।
आकर के देखो, दशा तुम हमारी, तेरे दरपे आया सुदामा भिखारी ॥ ३ ॥

आवज मेरी, पहूँची नहीं क्या, दरबान ने तुझ को खबर नहीं दी क्या।
जरा आके देखो, दशा तो हमारी,तेरे दर पे आया सुदामा भिखारी ॥ ४ ॥

क्या मुझसे दोष हुआ, हुआ क्या गुनाह है, दीनों के नाथ क्यों निठुर बना है।
पाप किया क्या, है मैंने भारी, तेरे दरपे आया सुदामा भिखारी ॥ ५ ॥

आओ कन्हैया, छुटे अब तो दम है, अगर अब ना आये तो मां की कसम है।
सुनके कसम पहुँचे , मिलने मुरारी, तेरे दर पे आया सुदामा भिखारी ॥ ६ ॥

☆ **वह जो वस्तुओं का मालिक है, वस्तुओं का गुलाम होता है।**

☆ **स्वयं के द्वारा स्वयं की खोज ही तो सन्यास है।**

☆ **जो व्यक्ति जीवन के सत्यों का मुकाबला नहीं कर सकता है वो धार्मिक कैसे हो सकता है?**

☆ **संचय करना सुख प्राप्त करने की पहली सीढ़ी होती है।**

:: भजन ::

छोटी छोटी गउऐं छोटे छोटे ग्वाल ।
छोटो सो मेरो मदन गोपाल ॥

आगे आगे गैया पीछे पीछे ग्वाल ।
बीच में मेरो मदन गोपाल ।

काली काली गैया गोरे गोरे ग्वाल ।
श्याम वरण मेरो मदन गोपाल ॥

घास खाये गैया दूध पीवें ग्वाल ।
माखन खावे मेरो मदन गोपाल ॥

छोटी छोटी लंकुटी छोटे छोटे हाथ ।
वंशी बजावे मेरो मदन गोपाल ॥

छोटी छोटी सखियाँ मधुवन बाग ।
रास रचावे मेरो मदन गोपाल ॥

नन्हीं नन्हीं राधा, नन्हें-नन्हें ग्वाल ।
नन्हीं सी मुरली बजावे नन्दलाल ॥

बिना श्रद्धा के कोई ज्ञान नहीं होता। श्रद्धा हमारी मन:स्थिति को स्थिर करने में सबसे बड़ी सहायक है। श्रद्धा ही हमको स्थिर करती है।

:: भजन ::

मेरा एक साथी है, बड़ा ही भोला भाला है,
मिले ना उस जैसा, वो जग से निराला है....
जब जब दिल ये उदास होता है,
मेरा मुरली वाला मेरे पास होता है।

जब तक रहा अकेला बड़ा दुख पाया मैं,
जब-जब दुख ने घेरा तो घबराया मैं....
ये सारी दुनिया में, कन्हैया का सहारा है ॥ मिले ॥

सब कुछ बदल गया है इसके आने से ,
हिम्मत आ गई है उसके समझाने से,
फंसा मैं जब-जब भी, उसी ने तो निकाला है ॥ मिले ॥

नई-नई पहचान बदल गई रिश्ते में,
'बनवारी' मेरा सौदा पट गया सस्ते में,
गिरा मैं जब-जब भी, उसी ने तो सम्हाला है ॥ मिले ॥

बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलिया कोय।
जो दिल खोजा आपना, मुझसे बुरा न कोय॥

पाँ पकरे हरि मिले, पाँ पकरे सुख होय।
पाँ पकरे मुक्ति मिले, पाँ पकरे सब कोय॥
(माँ का)

॥ देव्याः स्तुतिः ॥

(क्षमा-प्रार्थना)

अपराधसहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया।
दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वरि ॥ १॥

आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।
पूंजा चैव न जानामि क्षम्यतां परमेश्वरी ॥ २॥

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरी।
यत्पूजितं मया देवि परिपूर्ण तदस्तु में ॥ ३॥

अपराधशतं कृत्वा जगदम्बेति चोच्चरेत्।
यां गतिं समवाप्नोति न तां ब्रह्मादयः सुराः ॥ ४॥

सापराधोऽस्मि शरणं प्राप्तत्वां जगदम्बिके।
इदानी म नुकम्प्योऽहं यथेच्छसि तथा कुरु ॥ ५॥

अज्ञानाद्विस्मृतेर्भ्रान्तिया प्यन्नयूनमधिकं कृतम्।
तत्सर्व क्षम्यतां देवि प्रसीद परमेश्वरि ॥ ६॥

कामेश्वरि जगन्मातः सच्चिदानन्दविग्रहे ।
गृहाणार्चामिमां प्रीत्या प्रसीद परमेश्वरि ॥ ७॥

गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणाऽस्मकृतंजपम्।
सिद्धर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादात् सुरेश्वरि॥ ८॥

चार चीजों से उम्र बढ़ती है

(१) हवन के धूँये से
(२) खीर खाने से
(३) सूर्योदय के दर्शन से
(४) झरने का पानी पीने से

:: विश्वकल्याण के लिए प्रार्थना ::

सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, नम कश्चिद् दुःखभाग भवेत् ॥

:: स्तुति ::

पूजां अहं न जानामि त्वं शरणं जगदीश्वरम।
सर्व पाप हरो बाबा अभयं करोमि भूतेश्वरम्॥
पूजां अहं न जानामि त्व शरणं जगदीश्वरम्
सर्व पाप हरो बाबा अभयं करोमि महेश्वरम्॥
पूजां अहं न जानामि त्वं शरणं जगदीश्वरम्
सर्व पाप हरो बाबा अभयं करोमि शंकरम्॥

* * *

(१)

अंग में लगाते हैं सदा से चिता की भस्म,
फिर भी शिव परम पवित्र कहलाते हैं ।
गोद में बिठाये गिरिजा को रहते सदा,
फिर भी शिव अखण्ड योगिराज कहलाते हैं।

(२)

घर नहीं, धन नहीं अन्न और भूषण नहीं,
फिर भी शिव महादानी कहलाते हैं।
देखत भयंकर, पर नाम शिव शंकर,
नाश करते हैं तो भी नाथ कहलाते हैं।

(३)

दिगम्बर है स्वयं दीनों को पीताम्बर दिया करते ।
भिखारी होके घर औरों का धन से भर दिया करते ॥
यहाँ दुर्भाग्य भी सौभाग्य के ढाँचे में ढल जाये।
चरण पर भाल रखते भाल की रेखा बदल जाये॥

।। माँ बाप को भूलो नहीं ।।

भूलो सभी को तुम, मगर माँ-बाप को भूलो नहीं ।
उपकार अगणित है, कभी इस बात को भूलो नहीं ।
पत्थर कई पूजे, तुम्हारे जन्म के खातिर अरे ।
पत्थर बने माँ-बाप की छाती कभी कुचलो नहीं ।
मुख का निवाला दे अरे जिन्होंने तुम्हे मोटा किया ।
अमृत दिया तुमको, जहर उनके लिये उगलो नहीं ।
कितने लड़ाए लाड़, सब पर अरमान भी पूरे किए ।
पूरे करो अरमान उनके, बात यह बदलो नहीं ।
लाखों कमाते हो भले, माँ-बाप से ज्यादा दै नहीं ।
सेवा बिना सब राख है, मद में कभी फूलो नहीं ।
सन्तान की सेवा मिले, सन्तान बन सेवा करो ।
जैसा करो, वैसा भरो, इस सत्य को भूलो नहीं ।
जो स्वयं गीले में, सुलाती थी तुम्हे सूखी जगह ।
माँ की बरसती भावना को, तुम कभी कुचलो नहीं ।
जिसने बिछाये फूल थे, हर दम तुम्हारी राह में ।
उस राहबर के प्राण को, कण्टक बने कुचलो नहीं ।
धन तो मिलेगा फिर, मगर माँ-बाप क्या मिल पाएँगे ।
उनके चरण की धूल लेना, तुम कभी भूलो नहीं ।
दुःख सहना माँ-बाप की खातिर, फर्ज तो है एहसान नहीं ।
कर्ज है इनका तेरे सिर पर, भिक्षा या कोई दान नहीं ।
माता-पिता के चरण छुए जो, चार धाम तीर्थ फल पावे ।
जो आशीष वह दिल से दे, भगवान् से भी टाली न जावे ।

॥ कुछ विशिष्ट चौपाईयां ॥

मंगल भवन अमंगल हारी, द्रवहुँ सो दशरथ अजिर बिहारी।
होई हैं वही जो राम रचि राखा, कोकरि तर्क बढ़ावहि साखा।
धीरज धर्म मित्र अरु नारी, आपद काल परखिये चारी।
जाकी रही भावना जैसी, प्रभु मूरति देखी तिन तैसी।
रघुकुल रीति सदा चली आई, प्राण जाय पर वचन न जाई।
हरि अनन्त हरि कथा अनन्ता, कहिहिं सुनहिं बहुविध सब संता।
जांपर कृपा राम की होई, तां पर कृपा करें सब कोई।
दीन दयाल विरद सम्भारी, हरहु नाथ मम संकट भारी
मोरे मन प्रभु अस विश्वासा, राम से अधिक राम के दासा।

❖ पाठ की समाप्ति पर पठनीय ❖

कथा विसर्जन होत है, सुनहु वीर हनुमान।
निज आसन पर जायके, सदा करहु कल्यान॥

कहेहु दण्डवत प्रभुहि सन, तुम्हहिं कहहुं कर जोरि।
बार बार रघुनायक ही, सरति कराएहु मोरि॥

जोजन जहाँ ते आयेहुं, कथा सुनेहु चितलाय।
सियाराम पद उर धरी, जाहु सकल हरषाय॥

जासु नाम भव भेषज, हरन घोर त्रय सूल।
सो कृपालु मोहि तोहि पर, सदा रहहु अनुकूल॥